ग्रह-नक्षत्र-तन्त्रम्

खगोल मण्डल के प्रमुख संचालक नवग्रह एवं
सत्ताईस नक्षत्रों का पूर्ण परिचय एवं
मानव जीवन पर उनके प्रभाव
तथा गतिचक्र का अनुपम
विवेचन।

लेखक :
पं. शंकर दयालु त्रिवेदी

फोन : 0565
ऑफिस : 2405633
मो : 94122806090

प्रकाशक :
भाषा भवन
(लक्ष्मीनारायण धर्मशाला वाली गली)
हालनगंज, कच्ची सड़क, मथुरा-281001

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

विषय-क्रम

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गो देवस्य धीमहिः धियो
योनः प्रचोदयात्

सौर-परिवार

ब्रह्माण्ड-स्थित समस्त ताराओं में सबसे विशाल-काय सूर्य है । उसे ग्रहराज अथवा ग्रहपति भी कहा जाता है । उससे सम्बद्ध उपरोक्त आठ तारे सौर-परिवार के सदस्य माने जाते हैं । इस प्रकार 'सौर-परिवार' का अर्थ है— सूर्य और उससे सम्बद्ध शेष आठ ग्रहों— चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति (गुरु), शुक्र, शनि, राहु और केतु का समूह । वैसे, पारिभाषिक रूप में सौर-परिवार में वे सब उपग्रह और तारे भी आ जाते हैं, जो इन ग्रहों से स्वतन्त्र रूप में सम्बद्ध हैं ।

जिसे हम महाशून्य अथवा आकाश कहते हैं, उसका कोई भी कोना या क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहाँ कुछ-न-कुछ तारे न हों । इस प्रकार समस्त आकाश तारों से आच्छादित हैं । अन्धेरी रातों में आकाश का यह वैभव सरलता से देखा जा सकता है । उपरोक्त नौ ग्रह और उनके उपग्रह, यह सब मिलाकर भी बहुत छोटी संख्या बनाते हैं । शेष समस्त ताराओं को मुख्य समूहों में विभक्त करके, खगोल-शास्त्रियों ने गहन अनुसन्धान के उपरान्त कितने ही रोचक और रहस्यात्मक तथ्यों का उद्घाटन किया है ।

आकाश-स्थित लाखों मील के दायरे में फैले हुए, तारा मण्डल के विवेचन की सुविधा के लिए सत्ताईस प्रमुख समूहों में विभक्त किया गया है । प्रत्येक समूह को 'नक्षत्र' कहा जाता है । प्रत्येक नक्षत्र के रूपाकार, क्षेत्र, दूरी, प्रकाश, विकिरणीय प्रभाव तथा गति और स्थिति-काल का भी विवेचन किया गया है । नक्षत्रों की संख्या सत्ताईस है, और प्रत्येक नक्षत्र का एक विशिष्ट नाम, रूप, प्रभाव-क्षेत्र तथा तारा-समूह निर्धारित किया गया है । स्मरण रहे कि यह सारी गवेषणा एक व्यक्ति के द्वारा एक-दो महीनों या वर्ष में नहीं की गयी, अपितु इस अनुसन्धान और गवेषणा में पीढ़ियों का श्रम लगा है । समय भी कम नहीं, कल्पनातीत रूप में पार हुआ है— शताब्दियों का । फिर भी, यह हजारों वर्ष पूर्व की गयी गवेषणा, यह अनुसन्धान और शोध- 'इत्यलम्' नहीं माना जाता । जो है, वह प्रामाणिक है, फिर भी उसमें कुछ नया और इसके अतिरिक्त कुछ और भी खोज लेने की लालसा अदृश्य के रहस्य-बोध की जिज्ञासा आज भी विद्वानों, वैज्ञानिकों को अनुसन्धान-रत बनाये हुए हैं । क्योंकि ज्ञान की खोज पर पूर्ण-विराम लगाने का अर्थ होता है- अज्ञान का आह्वान करना ।

जिस प्रकार अनन्त तारा समूहों को सत्ताईस नक्षत्रों के क्षेत्रों में सीमाबद्ध किया गया है, उसी प्रकार उन सत्ताईस नक्षत्रों को बारह मुख्य भागों में समायोजित करके राशि-समूह की कल्पना की गई है । राशियों की संख्या बारह है, और प्रत्येक राशि-क्षेत्र के अन्तर्गत दो या तीन नक्षत्र का प्रभाव-क्षेत्र सीमित रहता है ।

इस प्रकार समस्त आकाश का तारा-जगत् सत्ताईस नक्षत्रों की सीमा में आबद्ध है, और वे सत्ताईसों नक्षत्र, बारह राशियों के नियन्त्रण में आते हैं। नवग्रहों की स्थिति इनसे भिन्न है। वे परम स्वतंत्र हैं। किसी तारे या तारा-समूह से वे नियन्त्रित नहीं होते। उनका एकमात्र प्रधान (नियन्त्रक भी कह सकते हैं) सूर्य है। किन्तु स्वयं में स्वतन्त्र होने पर भी उपरोक्त नवग्रह एक-दूसरे से सामीप्य और दूरी की अवस्थिति के अनुसार परस्पर प्रभावित होते रहते हैं।

सारांशतः आकाश में स्थित सभी तारे सीधे, अथवा अन्य तारों (ग्रहों) के माध्यम से, सूर्य से ही सम्बन्धित हैं। सौर-परिवार में इन सभी की गणना की जाती है। किन्तु जहाँ तक 'सौर-मण्डल' की बात है, उसमें सूर्य और उससे सम्बन्धित उपरोक्त आठ ग्रहों की गणना होती है।

सत्ताईस नक्षत्र :

नक्षत्रों की संख्या सत्ताईस है, 1. अश्विनी, 2. भरणी, 3. कृतिका, 4. रोहिणी, 5. मृगशिरा, 6. आर्द्रा, 7. पुनर्वसु, 8. पुष्य, 9. आश्लेषा, 10. मघा, 11. पूर्वाफाल्गुनी, 12. उत्तराफाल्गुनी, 13. हस्त, 14. चित्रा, 15. स्वाति, 16. विशाखा, 17. अनुराधा, 18. ज्येष्ठा, 19. मूल, 20. पूर्वापाढ़ा, 21. उत्तरापाढ़ा, 22. श्रवण, 23. धनिष्ठा, 24. शतभिषा, 25. पूर्वाभाद्रपद, 26. उत्तराभाद्रपद, 27. रेवती।

अभिजित को 28वाँ नक्षत्र माना गया है। ज्योतिषाचार्यों का मत है कि अभिजित नक्षत्र उत्तरापाढ़ा की अन्तिम 15 और श्रवण की प्रारम्भिक चार घटियों से मिलकर बना है। इसे समस्त कार्यों के लिए शुभ माना जाता है।

राशियों की भाँति नक्षत्रों के भी स्वामी होते हैं, यथा— अश्विनी के अश्विन-कुमार, भरणी के काल, कृतिका के अग्नि, रोहिणी के ब्रह्मा, मृगशिरा के चन्द्रमा, आर्द्रा के रुद्र, पुनर्वसु के आदित्त्य, पुष्य के गुरु, आश्लेषा के सर्प, मघा के पितर, पूर्वा-फाल्गुनी के भग, उत्तराफाल्गुनी के अचर्मा, हस्त के सूर्य, चित्रा के विश्वकर्मा, स्वाति के पवन, विशाखा के शुक्राग्नि, अनुराधा के मित्र, मूल के निऋति, ज्येष्ठा के इन्द्र, पूर्वाषाढ़ा के जल, उत्तराषाढ़ा के विश्वेदेवा, श्रवण के विष्णु, धनिष्ठा के वसु, पूर्वाभाद्रपद के अजैकपाद, उत्तराभाद्रपद के अहिर्बुध्न्य, शतभिषा के वरुण, रेवती के पूषा, अभिजित के ब्रह्मा।

जिस प्रकार शुभ तथा अशुभ ग्रहों का प्रभाव मानव पर पड़ता है, उसी प्रकार शुभ-अशुभ नक्षत्र भी अपना प्रभाव मानव पर डालते हैं। नक्षत्रों के देवताओं के स्वभावानुसार नक्षत्रों के भावी शुभ और अशुभ फल का विचार किया जाता है।

धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती— इन पाँचों नक्षत्रों को 'पञ्चक' कहा जाता है । ये अशुभ-फलदायक होते हैं । यदि किसी बालक का जन्म ज्येष्ठा, आश्लेषा, रेवती, मघा, मूल अथवा अश्विनी में होता है, तो सत्ताईस दिन बाद फिर वही नक्षत्र आने पर 'ग्रह-शान्ति' कराई जाती है । ये नक्षत्र 'मूल-संज्ञक' नक्षत्र कहे जाते हैं । उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तराभाद्रपदा और रोहिणी नक्षत्र भी अशुभ माने जाते हैं । मूल, ज्येष्ठा, आर्द्रा और आश्लेषा पीड़ादायक नक्षत्र हैं । मृगशिरा, रेवती, चित्रा और अनुराधा सामान्य हैं, तथा हस्त, अश्विनी, पुष्य और अभिजित शुभ नक्षत्रों के रूप में जाने जाते हैं ।

प्राचीन-काल से ही भारतीय-संस्कृति में नक्षत्रों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । प्रत्येक मांगलिक-कार्य जैसे गृहारम्भ, गृह-प्रवेश, यात्रा, अन्नप्राशन, विद्यारम्भ, मुण्डन तथा विवाह आदि के लिए मुहूर्त्त का आश्रय लेते समय नक्षत्रों की गणना की जाती है ।

ग्रह

भारतीय-ज्योतिष में ग्रहों की संख्या 9 मानी गयी है, जिनके नाम क्रमशः इस प्रकार हैं— (1) सूर्य, (2) चन्द्र, (3) मंगल, (4) बुध, (5) गुरु या बृहस्पति, (6) शुक्र, (7) शनि, (8) राहु, (9) केतु ।

इनमें प्रथम 7 ग्रहों के पिण्ड आकाश में दिखायी देते हैं । राहु तथा केतु छाया-ग्रह हैं । नभ चक्र में इनके पिण्ड नहीं हैं । पाश्चात्त्य खगोलशास्त्रियों द्वारा अनुसन्धानित (1) हर्शल अथवा यूरेनश, (2) नेपच्यून तथा (3) प्लूटो— इन तीन ग्रहों को भारतीय ज्योतिष में स्थान प्राप्त नहीं है । पृथ्वी-वासियों पर पड़ने वाले इनके प्रभाव का अभी तक अध्ययन ही किया जा रहा है ।

यहाँ सर्वप्रथम उक्त नवग्रहों के परिचय में पौराणिक तथा खगोलविदों के मतों का उल्लेख किया जा रहा है ।

सूर्य :

नाम— संस्कृत, हिन्दी— अर्क, अर्हस्कर, भानुमान्, दीप्तरश्मि, चण्डांशु, मार्त्तण्ड, रवि, आदित्त्य, अर्यमा, दिनेश, प्रभाकर, भास्कर, दिनकर, काश्यप, सविता, इन, तपन, दिनकत्, भानु, पूषन्, हेलि, तिग्मांशु, तरणि, उण्णांशु माली आदि । अंग्रेजी— 'सन' (Sun) । उर्दू-फारसी— आफताब और शम्स ।

पौराणिक-परिचय— श्रीमद्भागवत् के अनुसार— पृथ्वी तथा स्वर्ग के बीच ब्रह्माण्ड का केन्द्र-स्थान है, सूर्य की स्थिति वहीं है । सूर्य तथा ब्रह्माण्ड-मण्डल के मध्य सब ओर 25 करोड़ योजन का अन्तर है, अर्थात् सूर्य से सब ओर 25 करोड़ योजन की दूरी तक

ब्रह्माण्ड-गोलक की सीमा है । इस अचेतन खण्ड में सूर्य 'वैराज' रूप में प्रतिष्ठित है, इसी कारण सूर्य को 'मार्त्तण्ड' नाम से भी सम्बोधित किया गया है ।

सूर्य के द्वारा ही दिशा, आकाश, अन्तरिक्ष-लोक, भूलोक, स्वर्गलोक, नरक, रसातल तथा अन्य लोक एक दूसरे से विभाजित होते हैं ।

चन्द्रमा :

नाम— संस्कृत, हिन्दी— उडुपति, चन्द्र, सोम, तारापति, तारेश, ग्लौ, हिमकर, निशाकर, शीतांशुमाली, इन्द्र, मृगांक, शीतद्युति, शीतरश्मि, शीतांशु, कलाधर, कलानिधि, द्विजराज, मयंक, राकेश, रजनीश, शशि, शशांक, कलेश, शशधर, सुधाकर, अब्ज, हिमांशु, आत्रेय आदि । अँग्रेजी. 'मून' (Moon) । उर्दू, फारसी, अरबी— कमर, माह, फार ।

पौराणिक परिचय— 'पद्म पुराण' के अनुसार— ब्रह्मा के पुत्र महर्षि 'अत्रि' ने अपने पिता के आदेश-पालनार्थ 'अनुत्तर' नामक तप किया था । तप की समाप्ति पर, महर्षि के नेत्रों से जल की बूँदें गिरीं । उन महाप्रकाशवान् अश्रु-कणों की प्रभा से सम्पूर्ण जगत् प्रकाशित हो उठा । उस समय दिशाओं ने स्त्री-रूप में उपस्थित होकर, उस जल को 'पुत्र-प्राप्ति' के उद्देश्य से स्वयं ग्रहण कर लिया, परन्तु वे उस जलरूप गर्भ को धारण किये रहने में समर्थ नहीं हो सकीं, तब उन्होंने उसे त्याग दिया । दिशाओं द्वारा परित्यक्त उस गर्भ को ब्रह्मा ने एक युवा-पुरुष के रूप में परिवर्तित कर दिया और तत्पश्चात् पितामह उस तरुण को अपने साथ ब्रह्मलोक में ले गये तथा उसका नाम 'चन्द्रमा' रखा । ब्रह्मलोक में देवता, गन्धर्व, ऋषि-मुनि तथा अप्सराओं द्वारा स्तुति किये जाने पर चन्द्रमा के तेज में अत्यधिक वृद्धि हो गई, जिसके प्रसारित होने से पृथ्वी पर अनेक प्रकार की दिव्य औषधियों की उत्पत्ति हुई । तदुपरान्त प्रचेताओं के पुत्र प्रजापति दक्ष ने अपनी सत्ताईस कन्याओं का विवाह चन्द्रमा के साथ कर दिया । तदनन्तर चन्द्रमा ने राजसूय-यज्ञ करके महान् ऐश्वर्य तथा यश की उपलब्धि की । चन्द्रमा की वे 27 पत्नियाँ ही 27 नक्षत्र हैं ।

मंगल :

नाम— संस्कृत, हिन्दी— भौम, यक्र, आवनेय, पापी, कुज, अंगारक, भूमि-पुत्र, भूसुत, कुपुत्र, धराज, भूमिसुत, क्रूरनेत्र, रुधिर, क्षितिज, आर, भूतनय, महीसुत, लोहितांग, अवनिज, क्षितिनन्दन आदि । अँग्रेजी— 'मार्स' (Mars) । उर्दू, फारसी, अरबी— मारीक, मिर्रीख, बेहराम ।

पौराणिक परिचय— पुराणों में मंगल को 'पृथ्वी का पुत्र' कहा गया है तथा सौर-जगत् में इसकी स्थिति बुध से 2 लाख योजन ऊपर मानी गयी है । यह भी कहा गया

है कि यदि यह वक्र-गति से न चले, तो तीन-तीन पक्ष (45 दिन) में एक-एक राशि पर संचरण करता हुआ कुल 1 ½ वर्ष में सम्पूर्ण राशि-चक्र को पार कर लेता है । यह ग्रह अनेक कल्पित-कथाओं का पुञ्ज भी है । यह अनेक बातों पृथ्वी के समान है, सम्भवतः इसी कारण इसे 'भूमि-पुत्र' माना गया है ।

बुध :

नाम— संस्कृत, हिन्दी— सौम्य, चान्द्रि, शान्त, अतिदीर्घ, इन्द्रसुत, चन्द्रपुत्र, ज्ञ, बोधन, विद्, वित्, तारातनय, रोहिणेय, हेम्न, श्यामगात्र, चन्द्रात्मज आदि । अंग्रेजी— 'मर्करी' (Mercury) । उर्दू, फारसी, अरबी— उतारद्, तीर ।

पौराणिक परिचय— पुराणों के अनुसार 'बुध' चन्द्रमा की पत्नी 'रोहिणी' का पुत्र है । श्राद्धदेव वैवस्वत मनु की पुत्री 'इला' बुध की पत्नी है । 'इला' के गर्भ से उत्पन्न तथा 'पुरुरवा' के नाम से प्रसिद्ध बुध के धर्मात्मा पुत्र ने 100 से भी अधिक अश्वमेध-यज्ञ किये थे ।

गुरु :

नाम— संस्कृत, हिन्दी— बृहस्पति, प्रशान्त, त्रिदिवेशवन्द्य, सुरगुरु, देवगुरु, सुराचार्य, देवाचार्य, वाचस्पति, मन्त्री, देवेज्य, ईज्य, अमरमन्त्री, अंगिरा, अंगिरस, आर्य, जीव, सूरि आदि । अंग्रेजी— 'जुपीटर' (Jupiter) । उर्दू, फारसी, अरबी— मुश्तरी, अइरमभन्द ।

पौराणिक परिचय— 'कर्दम' ऋषि की तीसरी पुत्री 'श्रद्धा' का विवाह 'अंगिरा' ऋषि के साथ हुआ था । उन्हीं के गर्भ से 'बृहस्पति' का जन्म हुआ है । ये देवताओं के गुरु-पद पर अभिषिक्त हैं, अतः इन्हें 'गुरु' भी कहा जाता है । पुराणों के अनुसार— बृहस्पति की स्थिति मंगल से ऊपर दो लाख योजन की दूरी पर है । यदि यह ग्रह वक्र गति से न चले तो एक राशि को एक वर्ष में पार कर लेता है ।

शुक्र :

नाम— संस्कृत, हिन्दी— कवि, काव्य, भृगु, भार्गवसुनु, दैत्त्यगुरु, भृगुसुत, भार्गव, सित, दानवेज्य, सूरि, उशनस, उशना, अच्छ, आस्फुजित्, काण, सूनु आदि । अंग्रेजी— 'बीनस' (Venus) । उर्दू, फारसी, अरबी— जुहरी, जुहारो, जुहरा ।

पौराणिक परिचय— 'शुक्र' महर्षि 'भृगु' के पुत्र हैं । ये एक नेत्र से विहीन तथा दैत्त्यों के गुरु हैं । कथा प्रसिद्ध है कि वामन वेषधारी विष्णु जब दैत्त्यराज बलि को छलने के लिए गये, उस समय राजा बलि दान का संकल्प न करने पाये, इस उद्देश्य से वे जल

की झारी (गंगासागर) की टोंटी के छिद्र में घुस गये थे । विष्णु ने उन्हें पहचान लिया और झारी के छिद्र में 'कुश' डाल दिया, जिसके कारण उसमें छिपे हुए शुक्र की एक आँख नष्ट हो गयी, तभी से वे काने हैं ।

'श्रीमद्भागवत्' के अनुसार— चन्द्रमा से तीन लाख योजन की ऊँचाई पर 'अभिजित्' आदि 28 नक्षत्रों की स्थिति है तथा उनसे भी दो लाख योजन अधिक ऊँचाई पर 'शुक्र' अवस्थित है । यह ग्रह वर्षाकारक है ।

शनि :

नाम— संस्कृत, हिन्दी— शनैश्चर, मन्द, अर्कपुत्र, अस्ति, नील, छायासुत, सूर्यपुत्र, भानुज, यम, तरणितनय, सौरि, छायात्मज, रविज, भास्करि, पंगु, आर्कि, कोण आदि । अंग्रेजी— 'सैटर्न' (Saturn) । उर्दू, फारसी, अरबी— जुदुल, केदवान, जुह्ल् ।

पौराणिक परिचय— सूर्य की द्वितीय-पत्नी 'छाया' के गर्भ से 'शनि' का जन्म हुआ है । पौराणिक मतानुसार— आकाशमण्डल में बृहस्पति से दो लाख योजन की दूरी पर शनि की स्थिति है । यह एक राशि पर भ्रमण करने में लगभग 30 माह का समय लेता है तथा 30 वर्ष में सम्पूर्ण राशिचक्र का भ्रमण पूरा करता है ।

राहु :

नाम— संस्कृत, हिन्दी— सेहिकेय, अगु, स्वर्भानु, विधुतुन्द, फणि, तम, सर्व, असुर, क्रूर, अभि, कृष्णांग, गुह, दीर्घ, कविलाक्ष, आगव आदि । अंग्रेजी 'ड्रैगन्सहैड' (Dragons Head Or The Ascending node) उर्दू, फारसी, अरबी— रास ।

पौराणिक परिचय— हिरण्यकशिपु की 'सिंहिका' नामक पुत्री का विवाह 'विप्रचित्ति' नामक दानव के साथ हुआ था, उसी के गर्भ से 'राहु' ने जन्म लिया है । समुद्र-मन्थन के समय राहु देव-स्वरूप धारण कर, देवताओं की पंक्ति में जा बैठा और वहाँ अमृत-पान भी कर लिया । तभी सूर्य तथा चन्द्रमा द्वारा संकेत किये जाने पर विष्णु ने अपने सुदर्शन-चक्र का उस पर प्रहार कर दिया, जिसके कारण राहु का मस्तक कटकर अलग हो गया । इस प्रकार उसका शरीर (1) सिर तथा (2) धड़— इन दो टुकड़ों में बँट गया । अमृत-पान कर लेने के कारण ये दो टुकड़े जीवित बने रहे । तब से सिर का नाम 'राहु' तथा धड़ का नाम 'केतु' हुआ । बाद में दोनों अलग-अलग ग्रह के रूप में प्रसिद्ध हुए । सूर्य तथा चन्द्रमा द्वारा विष्णु को संकेत किये जाने के कारण ही वे उनसे शत्रुता मानते हैं । तथा समय-समय पर सूर्य तथा चन्द्रमा को अपना ग्रास बनाने का प्रयत्न करते हैं, जिसे 'ग्रहण लगना' कहते हैं ।

पौराणिक-मान्यता के अनुसार— राहु 'सूर्य' से 10 हजार योजन नीचे रहकर आकाश में संचरण करता है । एक प्राचीन मतानुसार— राहु ग्रह का व्यास 3 लाख मील है तथा पृथ्वी से इसकी दूरी 90 लाख मील है ।
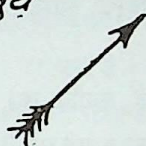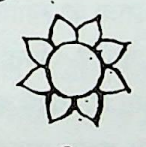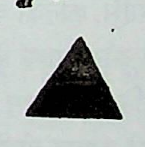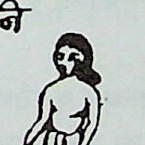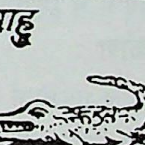
केतु :

नाम— संस्कृत, हिन्दी— शिखी, ध्वज, राहुपुच्छ आदि । अंग्रेजी— 'ड्रैगन्स टेल' (Dragon's Tail Or The Descending node) उर्दू, फारसी, अरबी— जनब ।

पौराणिक परिचय— राहु के समान ।

जिस भाँति नवग्रहों के वाहन, वृत्त तथा रूपाकार की कल्पना की गई है, उसी भाँति नवग्रहों के रूप-रंग की कल्पना भी भारतीय मनीषियों ने की है । नीचे के चित्र में सभी ग्रहों के वर्ण (रंग) का चित्रण किया गया है ।

नवग्रह का वर्ण चित्र

ॐ गं गणपतये नमः

यश एवं प्रतिष्ठा का जनक सूर्य ग्रह

परिचय :

ब्रह्माण्ड के असंख्य तारा समूह में सूर्य का सर्वाधिक महत्त्व व सर्वोच्च स्थान है। खगोल-शास्त्रियों ने वर्षों के शोध व अनुसंधान के पश्चात् अनेक महत्त्वपूर्ण व रोचक तथ्य प्रस्तुत किए हैं। उनके अनुसार सूर्य से ही ग्रहों पर ताप व शीत का प्रभाव पड़ता है। भारतीय पौराणिक मान्यताओं में इस तथ्य की पुष्टि होती है कि सभी नवग्रह सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हैं। पाश्चात्त्य खगोल-शास्त्रियों व भौतिक विज्ञान के ज्ञाताओं ने भी भारतीय विचारों की पुष्टि की है।

भारतीय साहित्य में सूर्य के अनेक पर्याय हैं, यथा आदित्त्य, भास्कर, प्रभाकर, दिवाकर, रवि, भानु, अर्क, मार्त्तण्ड, दिनकर आदि।

नवग्रहों में सूर्य को विशेष प्रधानता व मान्यता दी गई है, क्योंकि सूर्य के प्रभाव से ही व्यक्ति के यश, प्रतिष्ठा सामाजिक गौरव, राजनैतिक प्रतिष्ठा व धन प्राप्ति के विषय में भविष्यवाणी की जा सकती है। समस्त तारा-समूह बारह राशियों में बँटा हुआ है। सूर्य ग्रह को सिंह राशि, कृतिका व उत्तरा फाल्गुणी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्रों का स्वामित्त्व प्राप्त है। भारतीय वेदों और पुराणों में सूर्य को शनि का पिता माना गया है। पिता पुत्र होने के उपरान्त भी शनि-सूर्य आपस में शत्रुभाव रखते हैं। सूर्य देवता को महर्षि कश्यप का वंशज होने के नाते कश्यप गोत्रीय कहा जाता है। सूर्य का शुभ-अशुभ प्रभाव जन्मांक चक्र के विभिन्न भावों व राशियों पर भिन्न-भिन्न होता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण :

विभिन्न खगोल-शास्त्रियों ने अनुसन्धान व परीक्षण के उपरान्त सूर्य को हाइड्रोजन, हिलियम, अमोनिया आदि प्रमुख गैसों का जलता हुआ लावा माना है। उसके अनुसार सूर्य आकाश-मण्डल के ठीक मध्य भाग में स्थित है। सूर्य के कारण ही ग्रहण पड़ता है। सूर्य के चारों ओर मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि परिक्रमा करते हैं।

पृथ्वी से सूर्य लगभग 14.90.00.000 किलोमीटर दूर स्थित है। इसका व्यास

1372400 किलोमीटर है । भार का दबाव सूर्य पर पृथ्वी से 27 गुना अधिक है । पृथ्वी पर सूर्य के प्रभाव से ही सभी प्रकार के अनाज, धातु तथा पेट्रोलियम पदार्थों की उत्पत्ति हुई है ।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण :

ज्योतिष शास्त्र में सूर्य को शूरवीर, कम बालों वाला, पिंगल वर्ण युक्त, क्षत्रिय जाति का, पित्त प्रकृति का तथा प्रभावशाली ग्रह माना गया है । सूर्य की दैनिक गति एक अंश है तथा मास में एक राशि का यह परिभ्रमण करता है । 24 जुलाई से 23 अगस्त के बीच जन्म लेने वाले व्यक्ति सूर्य से विशेष प्रभावित रहते हैं । इसी प्रकार यह मेष राशि में एक विशिष्ट प्रभाव देता है । मेष राशि में सूर्य उच्च राशि का माना जाता है । जबकि तुला राशि में नीच का माना जाता है । इसी प्रकार अंकशास्त्र में सूर्य मूलांक 1 का प्रतिनिधित्त्व करता है ।

प्रभाव :

जन्मांक चक्र में किसी भी ग्रह का प्रभाव दो प्रकार से पड़ता है । प्रथम राशि-गत प्रभाव तथा द्वितीय भावगत प्रभाव । राशि-गत प्रभाव का आशय सम्बन्धित ग्रह जन्मांक चक्र में किस राशि पर पड़ा है । जन्मांक चक्र में बारह राशियाँ क्रमबार पड़ी रहती हैं । जिस राशि में ग्रह उपस्थित रहता है, वही उसका राशिगत प्रभाव का कारण बनता है । इसी प्रकार भावों की स्थिति होती है । जन्मांक चक्र के प्रथम भाव को लग्न भाव कहा जाता है । प्रथम भाव में जब कोई ग्रह पड़ जाता है तो यह कहा जाता है कि अमुक ग्रह लग्न भाव में पड़ा है ।

उपरोक्त सिद्धान्त सभी ग्रहों के ऊपर लागू होता है । सूर्य का भी जन्मांक चक्र पर राशिगत तथा भावगत प्रभाव पड़ता है । विभिन्न राशियों तथा भावों पर इसके शुभ, अशुभ परिणाम निकलते हैं । किन्हीं राशियों पर शुभ प्रभाव पड़ता है तो किन्हीं राशियों में अशुभ प्रभाव पड़ने लगता है । इसी प्रकार विभिन्न भावों में भिन्न-भिन्न शुभा-शुभ विचार फलित होते हैं ।

सूर्य का राशिगत प्रभाव :

सूर्य का विभिन्न राशियों में निम्नानुसार फल होता है—

मेष राशि :

मेष राशि में सूर्य होने पर जातक आत्मबली, प्रतापी, गम्भीर, उदार, अधिक मित्रों वाला, उदर रोगी, सत्यवादी, युद्धप्रिय व महत्त्वाकांक्षी होता है । ऐसा जातक दुर्बल-शरीर,

चौड़े कंधे वाला तथा नेत्र पिंगल वर्ण रहता है । इस राशि में सूर्य उच्च का माना जाता है, अतः जातक यशस्वी व धनवान होता है । बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था में भी सुखी रहता है तथा जातक पित्त विकार से पीड़ित रहता है ।

वृष राशि :

वृष राशि में सूर्य रहने से जातक का दाम्पत्त्य-जीवन सुखमय नहीं रहता । जातक स्त्री-द्वेषी रहता है तथा उसके प्रेम सम्बन्ध अन्य स्त्रियों से रहते हैं । जातक स्वाभिमानी, व्यवहार-कुशल, शांत, पापभीरु तथा मुखरोगी रहता है । उसे बाल्यावस्था में चोट लगने का भय रहता है । जातक वस्त्र, आभूषण, सुगंधित वस्तुओं का शौकीन तथा संगीत-प्रेमी होता है ।

मिथुन राशि :

मिथुन राशि में सूर्य होने पर जातक ज्योतिष विषय में रुचि रखता है । वह गणितज्ञ, वाकपटु तथा नीतिज्ञ, इतिहास-प्रेमी, मधुर–भाषी, नम्र तथा बुद्धिमान होता है । उसकी स्मरण-शक्ति बहुत तीव्र रहती है । उसका दाम्पत्त्य-जीवन कलह-पूर्ण रहता है तथा उसे सट्टा, लाटरी, शेयर मार्केट में लाभ प्राप्त होता है ।

कर्क राशि :

इस राशि में सूर्य रहने पर जातक कर्त्तव्य-परायण, चंचल, परोपकारी, इतिहासज्ञ तथा कफ-रोगी रहता है । पिता व भाइयों से वैचारिक-भिन्नता रहती है तथा धन की सदैव आवश्यकता बनी रहती है । उसे अपने जीवन में अनेक यात्रायें करनी पड़ती हैं तथा सामान्यतया नौकरी के द्वारा ही इनका उदर-पोषण हो पाता है । विपरीत परिस्थितियों में भी धैर्य बनाए रखना उसकी विशिष्टता रहती है । उसे पत्नी-सुख कभी-कभी ही मिल पाता है ।

सिंह राशि :

सूर्य सिंह में हो तो जातक योगाभ्यासी, सत्संगी, पुरुषार्थी, धैर्यशाली, तेजस्वी, उत्साही, गम्भीर किन्तु क्रोधी स्वभाव के होते हैं । इनके जीवन में विपत्ति तो अनेक आती हैं किन्तु वे अपने साहस, धैर्य व पराक्रम के बल पर विजय प्राप्त कर लेते हैं । माता से इनका विशेष स्नेह रहता है । दाम्पत्त्य-जीवन उनका सुखमय नहीं रहता तथा वे मानसिक रूप से सदैव चिंतित रहते हैं । वे वन, पर्वत-भ्रमण के शौकीन तथा सिंहक प्रकृति के होते हैं । उसे राजकीय क्षेत्र में सफलता मिलती है ।

कन्या राशि :

सूर्य कन्या राशि में हो तो जातक राजा से धन पाने वाला, संगीतज्ञ, लेखन-कुशल, पुत्र की अपेक्षा अधिक कन्या संतति वाला, पर-स्त्रियों पर आशक्त रहने वाला तथा गौरवर्ण का होता है। वह अनेक दिशाओं का जानकार, ब्राह्मण-भक्त, धर्मात्मा, सत्कर्म करने वाला, मित्रों द्वारा प्रशंसित तथा दुर्बल शरीर का होता है। अपने व्यर्थ बकवादी स्वभाव के कारण उसे मानसिक यन्त्रणा मिलती है। यश, प्रतिष्ठा भी खोनी पड़ती है। किशोरावस्था में इन्हें गम्भीर चोट लगने का भय रहता है।

तुला राशि :

इस राशि में सूर्य होने पर जातक नौकरी करने वाले होते हैं। ये स्वाभिमानी, खर्चीले तथा संगीत व शिल्प सम्बन्धी कार्यों में रुचि रखने वाले होते हैं। इसमें आज के काम को कल पर डालने की बुरी आदत होती है तथा ये मद्यपान के भी शौकीन होते हैं। ये साहसी, कपटी, भुलक्कड़, मन्दाग्नि-रोगी, परदेशाभिलाषी तथा कभी-कभी मद्यपान भी करने वाले होते हैं। यदि सूर्य उच्च नवांश में हो तो जातक विद्वान, दयालु तथा संगीत में रुचि रखने वाला होता है। इसमें क्रोध की अधिकता रहती है। अग्नि और शस्त्राघात का भय तथा माता-पिता विरोधी रहता है।

वृश्चिक राशि :

सूर्य वृश्चिक राशि में हो तो जातक गुप्त उद्योगी, उदर रोगी, क्रोधी, साहसी, लोभी माता-पिता विरोधी, चिकित्सक तथा इंजीनियरिंग, अथवा सामाजिक कार्यों के क्षेत्र में प्रगति करने वाला होता है। उसके जीवन का उत्तरार्द्ध विशेष सुखमय रहता है। उसे यात्रा करने का विशेष शौक रहता है। अपनी गल्तियों के कारण उसे उन्नति करने में अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। उसे अग्नि तथा शस्त्र से भय रहता है।

धनु राशि :

सूर्य धनु राशि में हो तो जातक बुद्धिमान, योगमार्गरत, विवेकी, धनी, आस्तिक, व्यवहार-कुशल तथा दयालु स्वभाव के होते हैं। इनका दाम्पत्त्य-जीवन बड़ा सुखमय रहता है तथा पुत्रादि सुख इन्हें प्राप्त होता है। ये चित्रकार, मातृ-पितृभक्त, यशस्वी, ऐश्वर्य-शाली किन्तु स्वजनों पर कोप करने वाले होते हैं। इनमें नेतृत्त्व करने की क्षमता विद्यमान रहती है। ये अपनी सुबुद्धि से लोगों की बुद्धि और सन्तोष को बढ़ाने वाले होते हैं।

मकर राशि :

सूर्य मकर में हो तो जातक चंचल, झगड़ालू, दुराचारी, लोभी तथा बकवादी होते हैं। अपने व्यर्थ के बकवादी स्वभाव के कारण इन्हें मित्रों तथा परिवार में सम्मान नहीं मिलता। ये स्वतंत्र विचार के होते हैं तथा इनमें उत्साह नहीं होता है। ये सुखहीन, धनहीन, भ्रमणशील, परावलम्बी तथा चिन्तित रहते हैं। इन्हें शत्रुओं से सदैव लाभ प्राप्त होता रहता है।

कुम्भ राशि :

सूर्य कुम्भ राशि में हो तो वे जातक परम शठ, सौहार्दहीन, मलिनता से युक्त, दया रहित तथा कभी सुख कभी दुःख उठाने वाले होते हैं। जातक स्थिर-चित्त, कार्यदक्ष, क्रोधी तथा स्वार्थी होते हैं। वे मानसिक रूप से सदैव परेशान रहते हैं। दाम्पत्य-जीवन का सुख उन्हें बहुत कम मिलता है। नेत्र रोगी, सामाजिक प्राचीन रूढ़ियों के विरोधी, अपरिचितों से भी शीघ्र मित्रता बनाने में सक्षम होते हैं। इन्हें संगीत, शिल्प तथा साहित्य-सृजन में भी रुचि रहती है।

मीन राशि :

सूर्य मीन राशि में हो तो जातक ज्ञानी, विवेकी, योगी, बुद्धिमान, यशस्वी, व्यापारी तथा समस्त देश में विख्यात कीर्तिवाला होता है। जातक व्यवसाय द्वारा धन की वृद्धि करने वाला रक्त एवं पित्त विकारादि से शारीरिक कष्ट पाने वाला, साहित्य सम्बन्धी कार्यों से लाभ उठाने वाला, निष्ठुर व्यवहार को सहन करने वाला तथा श्वसुर से लाभान्वित होता है। वह अपने जीवन में मित्रों के कथन पर विश्वास करके धन-हानि उठाता है। वह स्वभाव से गम्भीर, कभी असहिष्णु कभी हठी, शान्त उत्साही तथा सज्जनों का प्रिय होता है।

सूर्य का भावगत प्रभाव :

जिस प्रकार सूर्य का शुभ-अशुभ प्रभाव उसके जन्मांग चक्र की विभिन्न राशियों पर भिन्न-भिन्न होता है उसी प्रकार जन्मांग चक्र के बारह भावों में सूर्य का शुभ-अशुभ प्रभाव अलग-अलग तथा निम्न प्रकार से होता है—

प्रथम भाव :

सूर्य लग्न में हो तो जातक स्वाभिमानी, क्रोधी, पित्त-वात रोगी, प्रवासी, कृशदेही, उन्नत नासिका तथा विशाल ललाट वाला होता है। वह जातक नेत्र-रोगी, बाल्यावस्था में रोगी अथवा सिर में चोट खाने वाला, वेश्यागामी, भाइयों का विरोधी, आलसी, कंठ, नेत्र

अथवा गुदा में तिल तथा थोड़े केशों वाला होता है । किशोर अवस्था में उसे शारीरिक कष्ट होता है ।

द्वितीय भाव :

सूर्य द्वितीय भाव में हो तो जातक मुख-रोगी, संपत्तिवान, भाग्यवान झगड़ालू, नेत्र, कर्ण, दन्त रोगी, राजभीरु तथा स्त्री के लिए कुटुम्बियों से लड़ने वाला होता है । उसका दाम्पत्त्य-जीवन दुःखमय रहता है तथा लोहा और ताँबा के व्यवसाय से धन अर्जित करता है । उसे पशु-सुख तो प्राप्त होता है किन्तु वाहन सुख से रहित रहता है । यदि सूर्य राहु से युक्त हो तो उसे धन एवं ऐश्वर्य प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है । वह दुर्बल स्मरण-शक्ति वाला होता है तथा राज कोप से कष्ट पाने वाला भी ।

तृतीय भाव :

सूर्य तृतीय भाव में हो तो जातक के छोटे भाई जीवित नहीं रहते और अगर जीवित रह जाते हैं तो वैचारिक मतभेद बने रहते हैं । जातक अपने मित्रों का हितकारी, स्त्री-पुत्रादि युक्त, धनी, धैर्यवान, क्षमाशील तथा स्त्रियों का प्रिय होता है । वह सुन्दर शरीर वाला, तीक्ष्ण बुद्धि, उद्योगी मधुर-भाषी, दृढ़-निश्चयी, वाहन-सुख सम्पन्न तथा घुड़-सवारी का शौकीन होता है ।

चतुर्थ भाव :

सूर्य चतुर्थ भाव में हो तो जातक चिन्ता ग्रस्त, परम सुन्दर, कठोर पितृधन-नाशक, भाइयों से बैर रखने वाला, गुप्त विद्याप्रिय तथा वाहन सुखहीन होता है । वह मिलन-सार, कोमल हृदय, युद्ध में विजयी, संगीतज्ञ तथा परदेशवासी होता है । इसके जीवन में कई स्त्रियाँ आती हैं तथा पिता से इनके वैचारिक मतभेद रहते हैं । उसका भाग्योदय 22 वें वर्ष में होता है । यदि सूर्य उच्चस्थ, शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक 40 वर्ष के उपरान्त राज्य सम्मान प्राप्त करने वाला होता है ।

पंचम भाव :

पंचम भाव में सूर्य होने पर जातक एक पुत्र वाला, परघरवासी, क्रूर, चंचल, नीच कर्म करने वाला, बुद्धिमान, शीघ्र क्रोधी एवं वंचक होता है । जातक मोटे शरीर वाला, बाल्यावस्था में दुःखी, अधिक कन्या संतति वाला तथा नाट्य-प्रेमी होता है । सट्टा, लाटरी तथा शेयर के द्वारा इन्हें लाभ प्राप्त होता है । वे यदि सूर्य स्वग्रही हो तो प्रथम सन्तान की हानि अथवा गर्भपात होता है ।

षष्ठ भाव :

षष्ठ भाव में सूर्य हो तो जातक रोगी, सुबुद्धि, अपने परिजनों का पोषक, ज्ञानियों

में श्रेष्ठ, कृशदेह, ग्रह-सुख से युक्त, उत्तम रूप, शत्रु को जीतने वाला, सत्कर्म से लोक में पूज्य तथा मातृ पक्ष से धन पाने वाला होता है। ऐसे जातक नौकरी से लाभ अर्जित करने वाला होता है। अपनी स्पष्टवादिता के कारण इनके अनेक शत्रु बन जाते हैं। ये समाज में विख्यात होते हैं तथा राज्य द्वारा सम्मानित होते हैं।

सप्तम भाव :

सप्तम भाव में सूर्य हो तो जातक स्त्री के साथ विलास करने वाला, चंचल, कुरूप, स्त्री-क्लेश कारक तथा राज्य द्वारा अपमानित होता है। जातक स्वभाव से कठोर तथा चिंता-ग्रस्त रहता है। उसे साझेदारी तथा यांत्रिक शक्ति से विशेष लाभ मिलता है। वह व्यर्थ की बात करने वाला, मध्यम कद, चिरकाल तक स्त्री वियोगी, शारीरिक पीड़ा से युक्त तथा कुटुम्ब की हानि से युक्त होता है।

अष्टम भाव :

अष्टम भाव में सूर्य हो तो जातक चंचल, विद्वानों का आदर करने वाला, व्यर्थ अधिक बोलने वाला, भाग्यहीन, शील रहित, नीच सेवी, सदा रोग से पीड़ित तथा परदेशवासी होता है। जातक को क्रोध अधिक आता है तथा जातक नेत्र-रोगी, दीर्घायु, पित्तरोगी, अधीर तथा त्यागी स्वभाव का होता है। उसे बन्धु वर्ग से अपमान तथा धोखा खाना पड़ता है तथा धन का अभाव सर्वदा बना रहता है।

नवम भाव :

नवम भाव में सूर्य स्वक्षेत्री अथवा उच्चस्थ हो तो जातक के पिता की आयु अधिक रहती है। जातक सत्य-वक्ता, सुन्दर केश वाला, अपने परिजनों का हित करने वाला, देव और ब्राह्मणों का भक्त, बाल्यावस्था में रोगी, धनवान तथा अच्छी सूझ-बूझ वाला होता है। पिता से वैचारिक मतभेद रहते हैं तथा स्वोपार्जित धन से धनी बनता है। ज्योतिष शास्त्र तथा सौरमण्डल की गति विधियों में ये विशेष रुचि रखता है। वह योगी, तपस्वी, सदाचारी, नेता, साहसी तथा वाहन-सुख से युक्त होता है। उसकी बाल्यावस्था रोग से ग्रसित रहती है।

दशम भाव :

सूर्य दशम भाव में होने पर जातक प्रतापी, व्यवसाय-कुशल, राजमान्य, लब्ध प्रतिष्ठित, उदार, ऐश्वर्य-सम्पन्न एवं लोक-मान्य होता है। जातक नाटे कद का तथा नृत्य व संगीत में रुचि रखने वाला होता है। इनका अन्तिम जीवन रोगमय रहता है। जातक शूरवीर, साहसी तथा पितृसुख व धन का लाभ पाने वाला होता है। यदि सूर्य स्वक्षेत्री अथवा उच्चस्थ हो तो जातक भवन, मन्दिर जलाशयादि का निर्माण करके प्रसिद्धि पाता है।

एकादश भाव :

एकादश भाव में सूर्य हो तो जातक बहुत धनवान, राजा का सेवक, भोगहीन, गुणग्राही, धन-युक्त, स्त्रियों का प्रिय, बुद्धिमान, चंचल, स्वाभिमानी, मितभाषी, अल्पसन्तति एवं उदर रोगी रहता है । उसके ऊपर उच्चाधिकारियों, धनिकों, सज्जनों सभी का स्नेह रहता है । उसकी पत्नी सुन्दर होती है तथा उसे अनेक माध्यमों से आर्थिक लाभ होते हैं । उसे जीवन में वाहन-सुख पर्याप्त मिलता है । वह राज्य द्वारा सम्मानित होता है । यदि सूर्य स्वक्षेत्री अथवा उच्चस्थ हो तो राजा, उच्च अधिकारी, कोर्ट, कचहरी तथा शत्रुओं से धन-लाभ होता है ।

द्वादश भाव :

द्वादश भाव में सूर्य हो तो जातक उदासीन, मानसिक रोगी, आलसी, परदेशवासी तथा कृश शरीर का होता है । उसे नेत्र रोग से पीड़ित रहना पड़ता है, पिता का सुख नहीं मिलता तथा वह अपव्ययी, धनहीन, पर-स्त्री गामी, एवं व्यर्थ का बकवादी होता है । यदि सूर्य पष्ठेश से युक्त हो तो कुष्ठ रोग का भय रहता है तथा शनि तथा चन्द्रमा से युक्त हो तो जातक दिवालिया हो जाता है ।

सूर्य ग्रह के अशुभ प्रभाव के कारण उत्पन्न होने वाले रोग

जन्म कुण्डली में सूर्य की अशुभ स्थिति होने पर निम्न रोग उत्पन्न होते हैं :—

- पाण्डु रोग
- क्षय रोग (T.B.)
- ज्वर
- नेत्र रोग
- हृदय रोग
- मस्तिष्क की दुर्बलता
- मृगी (अपस्मार)
- उदासीनता

द्वादश भावों में सूर्य-फल तथा उत्पन्न होने वाले रोग :

जिस प्रकार सूर्य ग्रह का जन्मांक-चक्र के द्वादश भाव में विभिन्न स्थितियों पर भिन्न-भिन्न फल प्राप्त होते हैं उसी प्रकार प्रत्येक भाव में सूर्य के अशुभ प्रभाव से विभिन्न रोग भी होते हैं जिनकी व्याख्या निम्न प्रकार से है—

प्रथम भाव

प्रथम भाव में यदि सूर्य मकर अथवा सिंह राशि पर हो तो रतौंधी एवं हृदय रोग होता है । कर्क, वृश्चिक अथवा मीन राशि में सूर्य हो तो जातक किसी दुर्घटना का शिकार हो जाता है । उस के सिर पर चोट लगती है तथा वह बाल्यावस्था में रोगी रहता है । प्रथम भाव में सूर्य रहने पर जातक वात रोग से भी पीड़ित रहता है ।

द्वितीय भाव :

द्वितीय भाव में सूर्य होने पर जातक मुख तथा नेत्र रोगी होता है । जातक मुँहासे, गले की खराबी, नाक का अधिक बहना तथा गर्दन के ऊपर सूजन से पीड़ित रहता है । उसके मुख पर झाइयाँ भी पड़ जाती हैं ।

तृतीय भाव :

तृतीय भाव में सूर्य अशुभ होने पर विष तथा अग्नि से भय, हड्डी टूटने अथवा चर्म रोग होने की सम्भावना रहती है । साइटिका, गठिया तथा अंगों के ढीलापन का रोग उसे बुढ़ापे में पीड़ित करता है ।

चतुर्थ भाव

चौथे भाव में सूर्य के अशुभ प्रभाव होने पर जातक अंगहीन अथवा विकृतांग हो जाता है । जातक को जीवन में दुर्घटना का शिकार होना पड़ता है ।

पंचम भाव :

पंचम भाव में सूर्य होने से महिलाओं को गर्भपात अथवा प्रथम सन्तान की हानि होती है । हृदय रोग तथा फेफड़ों सम्बन्धी रोग होते हैं । शारीरिक रूप से भी जातक रोगी बना रहता है । अजीर्ण तथा वायु-विकार से जातक प्रायः पीड़ित रहता है ।

षष्ठ भाव :

सूर्य षष्ठ भाव में रहने से जातक रोगी होता है । यदि षष्ठ भाव में वृष, वृश्चिक अथवा कुम्भ राशि हो तो जातक को दमा या हृदय सम्बन्धी रोग होते हैं । यदि षष्ठ भाव में मिथुन राशि कन्या अथवा मीन राशि हो तो जातक क्षय रोग अथवा अम्ल-विकार से पीड़ित रहता है । इसी प्रकार उदर-विकार तथा संधिवात षष्ठ भाव में कर्क, तुला, अथवा मकर राशि होने पर होता है ।

सप्तम भाव :

सप्तम भाव में सूर्य के रहने पर जातक के सिर के बाल बहुत जल्दी झड़ जाते हैं । उसे नेत्र-रोग तथा अनिद्रा की शिकायत रहती है । रात में नींद न आना, आलस्य तथा चिंताग्रस्त होने आदि रोग विकार उसे पीड़ित करते हैं । अजीर्ण तथा गुप्त रोग भी उसे पीड़ित रखते हैं ।

अष्टम भाव :

अष्टम भाव में सूर्य के रहने पर जातक पित्त रोग, नेत्र रोग तथा क्षय रोग से ग्रसित रहता है । उसके सिर में चोट भी लगती है । अग्राह्य वस्तुओं के सेवन करने

से जातक उदर रोग तथा अजीर्ण से पीड़ित रहता है । जातक की पत्नी भी रोग-ग्रसित रहती है ।

नवम भाव :

सूर्य नवम भाव में रहने से जातक बाल्यावस्था में रोगी रहता है । जातक के पिता सूर्य के अशुभ प्रभाव के कारण रोगी रहते हैं । जातक दीर्घायु, सुन्दर केशवाला तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है ।

दशम भाव :

सूर्य दशम भाव में रहने से जातक वृद्धावस्था में रोगी रहता है । नेत्र विकार तथा उदर सम्बन्धी रोग से जातक ग्रसित होता है । जातक को हृदय सम्बन्धी रोग भी रोग होते हैं । उपरोक्त रोग-विकार सूर्य के अशुभ राशि अथवा अस्त होने व नीच राशि में होने पर भी होते हैं ।

एकादश भाव :

एकादश भाव में के रहने पर जातक बाल्यावस्था में उदर रोग से पीड़ित रहता है । निर्बल, अस्त अथवा नीच राशिगत सूर्य के अशुभ प्रभाव से वात रोग तथा नेत्र रोग से जातक पीड़ित रहता है ।

द्वादश भाव :

सूर्य के द्वादश भाव में रहने से जातक नेत्र रोग से पीड़ित रहता है । आलस्य तथा कामुकता के कारण उसे गुप्त रोग पीड़ित करते हैं । यदि द्वादश भाव में सूर्य षष्ठेश से युक्त हो तो जातक को कुष्ठ रोग का भय रहता है परन्तु यदि शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो ऐसा भय नहीं होता । महिलाओं को गर्भाशय सम्बन्धी रोग रहते हैं ।

पाण्डु रोग (पीलिया)

यह बहुत ही खतरनाक रोग होता है । इसमें कभी-कभी व्यक्ति का प्राणान्त तक हो जाता है । पीलिया रोग, अधिक खट्टे, तेज मसाले युक्त तथा मांसाहार-युक्त आहार लेने पर होता है । इसमें पित्त पित्ताशय में जाने की अपेक्षा रक्त में मिलने लगता है । फलतः रोगी का सारा शरीर पीला हो जाता है । आँखें हल्दी सी पीली हो जाती है । शरीर में खून बनना बन्द हो जाता है ।

घरेलू चिकित्सा :

- मूली के पत्ते धोकर साफ कर लें तथा इसके रस में शक्कर डालकर इसे दिन

में तीन बार लें । पीते ही आराम मिलेगा तथा सप्ताह भर में रोग नष्ट हो जायेगा । एक बार में दवा की खुराक 50 ग्राम होनी चाहिए ।

- एक तोला त्रिफला को रात में पानी में भिगो दें और सुबह छानकर पियें । यह दवा बहुत शीघ्र आराम पहुँचाती है ।
- कलमी शोरा 10 ग्राम, कुटकी 50 ग्राम दोनों को पीसकर रख लें । 300 ग्राम दही में 1 लिटर पानी तथा भुना हुआ जीरा आधा चम्मच डालकर रख लें । फिर 3 से 6 ग्राम तक पिसी हुई औषधि इस घोल के साथ दिन में 3 बार लें । हफ्ते भर में रोग समूल नष्ट हो जायेगा ।
- कच्ची फिटकरी 20 ग्राम बारीक पीस लें । प्रतिदिन मक्खन के साथ पिसी हुई फिटकिरी की 1 ग्राम मात्रा रोगी को खिलायें । पुराने से पुराना पाण्डु रोग इस औषधि के प्रयोग से नष्ट हो जायेगा ।
- चने के बराबर फिटकरी भूनकर फुला लें व बारीक पीस लें । फिर पके हुए केले को चाकू से चीरकर उसमें पिसी हुई औषधि को बुरक कर खाली पेट खा लें । हप्ते भर सेवन करने से पाण्डु रोग से मुक्ति मिल जायेगी ।
- पुनर्नवा बूटी की जड़ को साफ करके छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लें । इसकी माला रोगी को पहना दें । कुछ दिनों में पाण्डु रोग से मक्ति मिल जायेगी ।
- कच्ची फ़िटकरी को फुलाकर 4 रत्ती मात्रा में [illegible]कर मिश्री मिलाकर दिन में तीन बार सेवन करें । पाण्डु रोग से मुक्ति के लिए श्रेप्ठ व अचूक साधन है ।
- पाँच ग्राम पीली अथवा बड़ी हरड़ को करेले के पत्तों के रस में घिसकर रोगी को दिन में तीन बार पिला दें । इस मिश्रण के नियमित सेवन से पुराने से पुराने पाण्डु रोग से मुक्ति मिलती है ।
- शहद और गिलोय का काढ़ा मिलाकर पीने से पाण्डु रोग दूर होता है ।

विशेष :—

पाण्डु रोग से ग्रसित व्यक्ति को उबाल कर ठण्डा किया हुआ पानी पीना चाहिए। भोजन में दही और चावल खाने को दें । जिसे दस्त साफ न होता हो उसे पीने को दूध अधिक मात्रा में दें । नारियल का पानी, गन्ने का रस, नीबू का शरबत पीने और चिकनाई युक्त आहार का परित्याग करने से रोगी को बहुत जल्दी लाभ होता है ।

होमियोपैथिक चिकित्सा :—

सल्फर 200— पीलिया होने पर रोगी को इसकी चार-पाँच गोलियाँ दिन में चार बार चूसने को दें । तुरन्त आराम होगा ।

नक्सवोमिका 6, 30—यह औषध तब दी जाती है जब रोगी चिड़चिड़ा तथा क्रोधी स्वभाव का होता है । इस औषधि की चार-पाँच गोलियाँ दिन में तीन-चार बार रोगी को दें । दो-तीन दिन में आराम हो जायेगा ।

चुम्बकीय चिकित्सा :—

चुम्बक का जल दिन में 5-6 बार सेवन करने से पाण्डु रोग मिट जाता है ।

चुम्बकीय बेल्ट को पेट पर आगे से पीछे बाँधने पर पुराने से पुराने पाण्डु रोग से मुक्ति मिलती है ।

विशेष— उपरोक्त प्रयोग रविवार के दिन प्रारम्भ करें । कृतिका, उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में प्रारम्भ किया गया उपरोक्त प्रयोग चमत्कारिक रूप में लाभकारी होता है ।

यन्त्र प्रयोग :—

सूर्य यन्त्र के प्रयोग द्वारा पाण्डु रोग से मुक्ति मिलती है । इस सूर्य यन्त्र को विधि विधान पूर्वक रवि-पुष्य योग के दिन भोजपत्र पर अष्टगन्ध से लिखना चाहिए । यन्त्र अनार की कलम से लाल चन्दन या अष्टगन्ध की स्याही से लिखा जाता है । यंत्र लेखन के उपरान्त पंचोपचार अथवा शोडशोपचार पद्यति से यंत्र का पूजन व प्राण-प्रतिष्ठा की जाती है । प्राण प्रतिष्ठा किया हुआ सूर्य यन्त्र धारण करने से सूर्य-जनित अशुभ प्रभाव से उत्पन्न रोगों का नाश हो जाता है । सूर्य यन्त्र धारण करने के पश्चात् प्रातः नियमित रूप से सूर्य दर्शन व पूजन भी करना चाहिए ।

६	१	८
७	५	३
२	६	४

नेत्र-रोग

सूर्य के अशुभ प्रभाव से निम्न नेत्र रोग होते हैं—

- आँख आना
- पलकों में दाने
- आँख से पानी बहना
- पलकों में खुजली
- आँख की सूजन
- पलकों का लटकना
- मोतियाबिन्द
- रतौंधी
- नेत्राभिष्यन्द (कान्जेक्ट वाइटिस) (नेत्रों में गन्दगी आना)

यह सर्वविदित है कि हमारी पाँचों ज्ञानेन्द्रियों में आँखों का स्थान सर्वोपरि है । आँख संसार के कीमती से कीमती कैमरे के बहुत उत्कृष्ट क्वालिटी के लेंस की तरह

काम करने वाली अमूल्य वस्तु है । विशेषज्ञों का अनुमान है कि दुनिया में डेढ़ करोड़ से भी अधिक लोग आँखों के रोग से पीड़ित हैं, जिनमें दो तिहाई केवल भारतवर्ष में हैं ।

अतः शरीर के इस अति महत्त्वपूर्ण अंग के विषय में हमें सदैव जागरूक रहना चाहिए । उपरोक्त नेत्र रोगों की कुछ घरेलू औषधियाँ निम्न हैं—

घरेलू चिकित्सा :—

- गर्मी के दिनों में आँखों की लाली, दर्द व खुजली होने की स्थिति में गाय का ताजा दूध ड्रापर से आँखों में दो-दो बूँद डालें । इसके प्रयोग से आँखों की लाली, दर्द व खुजली से तुरन्त फायदा होगा ।
- रतौंधी नामक नेत्र रोग में गाय के ताजे गोबर को कपड़े में रखकर निचोड़ें । इसकी एक-दो बूँद आँख में डालें । तुरन्त लाभ होगा । नियमित लगाने से नेत्र के सभी रोग दूर रहते हैं ।
- गोरखमुण्डी के फूल, जितने निगल सकें, बिना पानी के निगल जायें । जितने फूल निगलेंगे उतने वर्ष तक आँखें दुखनी नहीं आयेंगी ।
- विषखपरा का रस आँखों में डालने से नेत्र-ज्योति सुरक्षित रहती है । इसके नियमित प्रयोग से नेत्रज्योंति की क्षीणता समाप्त होती है ।
- रतौंधी नामक नेत्र रोग में ढाक (पलाश) के पेड़ का दूध नियमित आँखों में 12 बूँद टपकायें । तुरन्त लाभ होगा । हफ्ते-भर नियमित डालते रहने से नेत्र ज्योति लौट आती है ।
- कच्ची फिटकरी को आग में भूनकर फूला कर लें । अब भुनी हुई फिटकरी को खरल में डालकर बारीक पीस लें । 100 ग्राम शुद्ध गुलाबजल में पिसी हुई फिटकरी को दो चुटकी डालकर खूब हिलायें । गल जाने पर कपड़े से छान लें । रात्रि को शयन के समय नियमित दो बूँद आँखों में डालने से नेत्र रोग बहुत जल्दी ठीक हो जाते हैं । इसके नित्य डालने से नेत्र रोग उत्पन्न नहीं होते ।
- शुद्ध बढ़िया शहद काजल की तरह आँखों में लगाने से नेत्र के रोग और विकार नष्ट होते हैं ।
- स्वर्णक्षीरी के दूध में रुई को भिगोकर छाया में सुखायें । सूखने पर पुनः दूध में भिगोयें तथा पुनः सुखायें । इस प्रकार यह क्रिया कम से कम सोलह बार अवश्य करें । फिर इसकी बत्ती बना लें और कड़वा तेल के दीपक में जलाकर काजल बनायें । नित्य इस काजल को आँखों में लगायें । इस काजल के नियमित प्रयोग से नेत्र-ज्योति की क्षीणता समाप्त हो जाती है । यह चमत्कारिक काजल है तथा इसके नियमित प्रयोग से चश्मा लगाने वालों का चश्मा तक छूट जाता है ।

- नीम की पत्तियों को बारीक पीसकर रुई की बत्तियों पर गाढ़ा-गाढ़ा लेप चढ़ा दें तथा बत्तियों को छाया में रखकर सुखा लें। इन बत्तियों को सरसों के तेल में डालकर दीपक जलाकर काजल बना लें। अगर सम्भव हो तो कड़वा तेल में थोड़ा कपूर मिला दें। यह काजल नेत्र-रोगों के लिए चमत्कारिक है। इसके नित्य प्रयोग से आँखें नहीं दुखती तथा नेत्र-ज्योति भी बढ़ती है।
- नेत्र रोग विटामिन ए की कमी से होता है। गाजर में प्रचुर मात्रा में विटामिन ए होता है। अतः गाजर का भरपूर उपयोग नेत्रों के स्वास्थ्य के लिए सर्वोत्तम औषधि है।

होमियोपैथिक चिकित्सा :—

सल्फर 30 :— यदि आँखें लाल होकर सूज जायें, आँखों में सदैव चुभन सी महसूस होती रहे तथा गर्मी का वातावरण असहनीय हो तो यह औषधि श्रेष्ठ लाभदायक रहती है। रोगी उपरोक्त दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार खायें, तुरन्त लाभ होगा।

क्रोटेलस 3, 6 :— यदि आँखों में तीव्र दर्द हो, रोशनी में आँखें न खुलें, सुबह को पलकें सूजी मिलें तथा महिलाओं को मासिक स्नान के समय दर्द बढ़े तो ऐसे लक्षणों वाले नेत्र रोग के लिए यह बहुत ही लाभकारी औषधि है। दिन में तीन-चार बार उपरोक्त दवा की चार-पाँच गोली खा लें। नेत्र-रोगों से मुक्ति के लिए यह श्रेष्ठ अचूक दवा है।

एकोनाइट 30 :— यदि ठण्ड लगने से आँखों से पानी बहुत आता है तो इस दवा की चार पाँच गोली दिन में तीन बार सेवन करें। इसके प्रयोग करने से उपरोक्त नेत्र-रोग समाप्त हो जाते हैं। कंजक्टिवाइटिस नामक नेत्र-रोग में यह दवा रामबाण का कार्य करती है।

रसटाक्स 30 :— यदि पलक का भीतरी हिस्सा लाल हो जाता है। आँखों से गर्म पानी निकलता है, तब इस दवा की दो-दो बूँद आँखों में दिन में चार-चार घण्टे के अन्तराल से डालें। रोगी को तुरन्त आराम होगा। इस दवा के 2-3 दिन सेवन ही रोगी की आँखें एकदम ठीक हो जाती हैं।

सल्फर 30, 200 :— मोतियाबिन्द में इस दवा की दो बूँद दिन में तीन-चार बार आँखों में डालनी चाहिएं। मोतियाबिन्द को दूर करने में यह दवा प्रमुख स्थान रखती है।

थूजा 12 :— पलकों में दाने पड़ जाने पर अथवा पलकें पूज जाने पर रोगी

के नेत्रों में इस दवा को डाला जाता है । थूजा मूल अर्क पाँच बूँदों को एक औंस पानी में डालकर लोशन बना लिया जाता है । इस लोशन को ही रोगी के नेत्र में डालते हैं ।

फोरमिक एसिड 3x अथवा 12 :— यदि दृष्टि निरन्तर कमजोर होती जा रही हो तो उपरोक्त दवा का इस्तेमाल किया जाता है ।

बेलाडोना 30 :— यदि पढ़ने लिखने में आँखें दुखती हैं तथा लाल भी हो जाती हैं तो उपरोक्त दवा के लोशन से आँखें धोनी चाहिएं तथा उपरोक्त दवा के मूल अर्क की दो बूँद करके दिन में तीन बार लेते रहें । तुरन्त आराम होगा । उन विद्यार्थियों के लिए यह दवा बहुत उपयोगी है, जिन्हें अत्यधिक अध्ययन से नेत्र पीड़ा होती है ।

चुम्बकीय चिकित्सा :—

- आँखों का दुखना, आँखों से मवाद निकलना, निगाह कम हो जाना, मोतियाबिन्द, फुन्सी हो जाना, आँखों से पानी बहना, प्रत्येक वस्तु दो-दो दिखलाई पड़ना आदि सभी रोगों में 'चुम्बक-ऐनक' का प्रयोग प्रातः स्नानादि से निवृत्त होने के पश्चात तथा रात्रि को सोते समय 10 से 20 मिनट तक करें ।
- चुम्बकीय जल से दिन में तीन-चार बार आँखें धोयें । नेत्र रोगों में तुरन्त आराम मिलेगा ।
- दाँये हाथ से चुम्बक के उत्तरी ध्रुव को बारी-बारी से 10-11 मिनट दोनों आँखों पर लगायें तथा बाँयें हाथ की हथेली को चुम्बक जोड़ा F/4 के दक्षिणी ध्रुव पर रखें । यह प्रयोग दिन में तीन-चार बार दुहरायें ।

रत्न प्रयोग :—

सूर्य के अशुभ प्रभाव से उत्पन्न सभी रोगों के लिए माणिक्य रत्न धारण करना चाहिए । सूर्य रत्न सदैव दाहिनी अनामिका में धारण किया जाता है । माणिक्य के अभाव में उपरत्न, गारनेट, संग सितारा, रतवा हकीक, लाल, लाल मूनस्टोन, मानक, स्टार में से किसी एक को धारण किया जा सकता है ।

विशेष— सूर्य-रत्न माणिक्य तथा उसके उपरत्नों के विषय में विस्तृत जानकारी पुस्तक के अन्तिम परिशिष्ट में देखिये ।

तन्त्र प्रयोग :—

- किसी रविवार को कृतिका नक्षत्र के योग में बेल की जड़ गुलाबी डोरे में बाँधकर दाहिनी भुजा में धारण करें ।

■ पाँचमुखी रुद्राक्ष को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र में गुलाबी डोरे में बाँधकर गले में धारण करें।

विशेष— उपरोक्त तांत्रिक प्रयोग में बेल की जड़ अथवा पाँच-मुखी रुद्राक्ष को सर्वप्रथम विधि-विधान से प्राण-प्रतिष्ठा करके पवित्र कर लेना चाहिये। तांत्रिक प्रयोग में विशेष रूप से नक्षत्र घड़ी, वार तथा मुहूर्त्त का ध्यान रखा जाता है। ऐसा नहीं करने से तांत्रिक प्रयोग प्रभावशाली नहीं रहते और साधक को उसका पूर्ण लाभ नहीं मिलता।

रत्न प्रयोग :— सूर्य के अशुभ प्रभाव से उत्पन्न सभी रोगों के लिए माणिक्य रत्न धारण करना चाहिए। सूर्य रत्न सदैव दाहिनी अनामिका में धारण किया जाता है। माणिक्य के अभाव में उपरत्न गारनेट, रंग सितारा, रतव-हकीक, लाल मूनस्टोन, मानक स्टार में से किसी को धारण किया जा सकता है।

विशेष :— सूर्य रत्न माणिक्य तथा उसके उपरत्नों के विषय में विस्तृत जानकारी पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट में देखिए।

नेत्र-रोगों से मुक्ति दिलाने में यह यन्त्र चमत्कारिक फल देने वाला सिद्ध हुआ है। इस यन्त्र को किसी रविवार को कृतिका नक्षत्र अथवा उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के योग होने पर अष्टगन्ध की स्याही एवं अनार की कलम से भोजपत्र पर लिखा जाता है। यन्त्र लेखन के पश्चात् सूर्य के मन्त्र का जप करते हुए यन्त्र की प्रतिष्ठा करें। फिर इस यन्त्र को लाल कपड़े अथवा ताबीज में भरकर रोगी को धारण करा दें। इस यन्त्र को धारण करने से समस्त नेत्र-विकार दूर हो जाते हैं तथा आँखें स्वस्थ व तेजमय होती हैं।

२	७	७७	८४
८१	८०	६	३
८	१	८३	७८
७६	८२	४	५

तन्त्र प्रयोग :

■ उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के योग के दिन शीतल जल से आँखों पर छींटा मारकर धोने से समस्त नेत्र विकार दूर होते हैं। यह प्रयोग रविवार के दिन भी किया जा सकता है।

■ सूर्योदय काल में सूर्य की तरफ मुख करके सूर्य देवता को जल अर्पित करें। यह तांत्रिक प्रयोग चमत्कारिक रूप से नेत्र-रोगों के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ है। सूर्य को अर्घ्य देने के पूर्व यथा-सम्भव कुछ भी ग्रहण न करें।

रत्न प्रयोग : सूर्य के अशुभ प्रभाव से उत्पन्न नेत्र-रोग के लिए सामान्य रूप से गारनेट रत्न को दाहिनी अनामिका में धारण करना चाहिए। रत्न को चाँदी की

अँगूठी में मढ़ाकर रविवार के दिन कृतिका नक्षत्र तथा शुभ घड़ी के योग में धारण करना चाहिए । गारनेट रत्न कम से कम पाँच रत्ती वजन का अवश्य होना चाहिए तथा रत्न में कोई दोष नहीं होना चाहिए ।

मन्त्र प्रयोग : नेत्र रोगों में सामान्य रूप से इस सूर्य मन्त्र का जप किया जाता है— **ॐ घृणि : सूर्याय नमः ।**

सूर्य पुराण के अनुसार उपरोक्त मन्त्र की ग्यारह माला नित्य जप करने से समस्त नेत्र रोगों से मुक्ति मिल जाती है । उपरोक्त सूर्य मंत्र के जप का आरम्भ उत्तराषाढ़ा नक्षत्र के योग में किसी रविवार से ही आरम्भ करना चाहिए ।

हृदय रोग

आयुर्वेद के अनुसार वात, पित, कफ और इन तीनों के सामूहिक प्रकोप होने पर त्रिदोषज तथा कृमि उत्पन्न होने से हृदय रोग होता है ।

हृदय-रोग किसी भी उम्र के व्यक्ति को हो सकता है । हृदय रोग होने में हमारा अनुचित आहार विहार और अति करने की प्रवृत्ति ही मुख्य कारण है । चरक संहिता के अनुसार मुख का स्वाद खराब होना, भोजन में अरुचि होना, श्वास-वेग, ज्वर, खाँसी, कफ, प्रकोप, उल्टी आदि हृदय रोग के प्रारम्भिक लक्षण हैं ।

अच्छा खासा और चंगा दिखने वाला व्यक्ति भी हृदय रोग अथवा दिल के दौरे की चपेट में आ जाता है और ऐसे मामलों में कभी-कभी रोगी की अचानक मृत्यु तक हो जाती है ।

अनुसंधान, अनुभव और सर्वेक्षणों के उपरान्त यह निष्कर्ष निकला है कि धूम्रपान, अधिक चिन्ता व तनाव, अधिक जागरण, ज्यादा चिकनाई, अधिक अय्याशी तथा कोलेस्ट्रोल बढ़ाने वाले पदार्थों का सेवन करने से हृदय रोग होने की सम्भावना रहती है । अत्यधिक मोटापा होना भी खतरनाक है । क्योंकि इससे चर्बी बढ़कर खून की नलियों में जमने लगती है और इसका परिणाम हृदय रोग के रूप में सामने आता है ।

घरेलू चिकित्सा—

- तुलसी के पत्तों के रस के साथ शहद मिलाकर एक चम्मच प्रातः-सायं चाटने से रक्त-शुद्धि होती है और हृदय की दुर्बलता दूर होती है ।
- अर्जुन की छाल का चूर्ण बनालें । फिर इस चूर्ण को गो-दुग्ध में डालकर पकायें

फिर इसे छानकर आवश्यकता के अनुसार गुड़ मिलाकर रोगी को पिलायें, तुरन्त लाभ होता है । इसके सेवन से पुराने से पुराने हृदय रोग से मुक्ति मिलती है ।

- 6 ग्राम मेथी के काढ़े में शहद मिलाकर पीने से पुराना हृदय रोग भी ठीक हो जाता है ।
- अगर को खरल में डालकर पीस लें । फिर इसकी 5-6 ग्राम मात्रा शहद के साथ मिलाकर रोगी को चटायें । यह औषधि हृदय की शक्ति को बढ़ाती है ।
- रेहां के बीज 10 ग्राम रात्रि में मिट्टी के बर्तन में आधा लीटर पानी में भिगो दें । इसे खुली छत पर रात भर पड़ा रहने दें । सुबह इसे छान कर स्वाद के अनुसार मिश्री मिलाकर सेवन करें । हृदय रोगों से मुक्ति के लिए श्रेष्ठ व रामबाण औषधि है । कम से कम एक सप्ताह इसका प्रयोग नियमित करना चाहिए ।
- काली मिर्च तथा गिलोय को समभाग लेकर खरल में कूटकर कपड़छन कर लें । इस मिश्रित चूर्ण की 4-5 ग्राम मात्रा गर्म जल के साथ नियमित सेवन करें । हफ्तेभर नियमित सेवन से हृदय सम्बन्धी दुर्बलता दूर हो जायेगी ।
- ताजा गुड़ तथा गोघृत का नित्य सेवन करने से भी हृदय सम्बन्धी दुर्बलता दूर होती है तथा हृदय पुष्ट एवं मजबूत होता है ।
- पीपलामूल को खरल में कूटकर महीन कर लें । अब इसकी एक ग्रेन मात्रा को शहद के साथ रोगी को चटायें । तुरन्त लाभ होगा । यह औषधि विशेष तौर से छोटे उम्र के बालकों के लिए प्रभावशाली सिद्ध होती है ।
- अनार का रस नित्य सेवन करने से हृदय मजबूत होता है तथा हृदय की शिथिलता दूर होती है ।
- सूखे आँवला तथा मिश्री दोनों को समभाग लेकर खरल में बारीक कूट पीस लें और कपड़छन कर किसी शीशी में सुरक्षित करके रख लें । इस मिश्रण का नित्य सेवन (आधा तोला वजन के बराबर) जल के साथ करें । कुछ ही दिनों के नियमित सेवन करने से पुराने से पुराना हृदय रोग दूर हो जायेगा ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :—

लाइकोपोडियम 30 अथवा **200**— यदि भोजन करने के बाद धड़कन बढ़ जाती हो, घबराहट होने लगती हो, छाती में दर्द होता हो तथा साँस लेने में कठिनाई होती हो तो ऐसे रोगी को दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देना चाहिए । कुछ ही देर में रोगी आराम महसूस करने लगेगा ।

लिलियम टिग्रिनम 30 अथवा 200— हृदय के आस पास दर्द, पूरे शरीर में धड़कन

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

महसूस हो, नाड़ी तेज, हृदय जकड़ा हुआ एवं बोझिल सा तथा छाती में बोझ-सा ये लक्षण दिखलाई पड़ने पर दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार रोगी को पिलानी चाहिए ।

मर्कसोल 30 अथवा 200— रोगी के अन्दर मरने का भय उत्पन्न हो जाय, हृदय इतना कमजोर प्रतीत हो कि साँस भी खाँसी लाता हो, हृदय में कम्पन तथा थूक में खून आये तो ऐसे लक्षण दिखलाई पड़ने पर दवा की चार पाँच गोली दिन में तीन बार देनी चाहिए ।

आर्निका 1M— रात में घबराहट बढ़ती हो, रोगी उदासीन तथा चिड़चिड़े स्वभाव का हो, रोगी थका-थका तथा दुःखी रहता हो तो दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ हफ्ते में एक बार देना चाहिए । इस दवा के लेने से यदि हृदय में जमे खून की गिलट अटकी हो तो वह भी बाहर निकल आती है ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

- हृदय रोग में चुम्कीय जल का नित्य सेवन चमत्कारिक रूप से प्रभाव डालता है । यदि रोगी नित्य चुम्बकीय जल का सेवन करे तो कुछ ही दिनों में यह भयानक तथा जान-लेवा रोग समूल नष्ट हो जाता है ।
- हृदय-शूल के समय चुम्बक के उत्तरी ध्रुव को 10 मिनट के लिए कष्ट के स्थान पर लगाने से तुरन्त लाभ होता है ।
- सभी प्रकार के हृदय रोग में चुम्बकीय पेटी रामबाण औषधि का कार्य करती है । प्रतिदिन चुम्बकीय पेटी को पीठ पर बाँधने से हृदय रोग नहीं होता ।

यन्त्र प्रयोग— सभी प्रकार के हृदय रोग में सूर्य यन्त्र का प्रयोग सर्वश्रेष्ठ फल देता है । सूर्य यन्त्र का विस्तृत विवरण पीछे के पृष्ठों में आ चुका है । अतः पाठक उसे देख लें ।

मन्त्र प्रयोग— हृदय रोग से निवृत्ति के लिये सूर्य के निम्न मंत्र का जप कम से कम 21 माला नित्य करें—

सूर्य मन्त्र इस प्रकार है— **ॐ श्रीं ह्रीं सूर्याय नमः ।**

सूर्य मण्डलाष्टकम् के नित्य स्तुति पाठ से भी सभी प्रकार के शारीरिक कष्टों तथा हृदय रोग से मुक्ति मिलती है ।

तन्त्र प्रयोग :—

- रवि-पुष्य योग में आँवले के बराबर का एक पाँच मुखी रुद्राक्ष गुलाबी रंग के डोरे

की सहायता से गले में धारण करने से सभी प्रकार के हृदय रोगों से मुक्ति मिलती है। पंचमुखी रुद्राक्ष धारण करने से पूर्व विधि-विधान से प्राण प्रतिष्ठित कर लेना चाहिए।

- जिस दिन कृतिका नक्षत्र पड़े अथवा किसी रविवार को पंचमुखी रुद्राक्ष को ताम्र-पात्र (ताँबे के कलश) में जल भरकर भीगने के लिए डाल दें। तदुपरान्त दूसरे दिन से खाली पेट इस जल का सर्वप्रथम सेवन करें। इस क्रिया को कम से कम ग्यारह सप्ताह तक करें। सभी प्रकार के हृदय रोगों में से आराम मिलता है। इसके नित्य सेवन से पुराने से पुराने हृदय रोग से मुक्ति मिलती है।
- उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में बेंत की जड़ खोदकर घर लावें। इस जड़ को विधि विधान से गुलाबी धागे की सहायता से दाहिनी भुजा में धारण करें। ऐसा करने से हृदय पुष्ट होता है तथा रक्त-संचार संतुलित रहता है।

रत्न प्रयोग :—

रत्न-विशेषज्ञों तथा रत्नविद् ज्योतिर्विज्ञों के अनुसार हृदय रोग से पीड़ित व्यक्तियों को संग-सितारा रत्न दाहिनी अनामिका में उत्तराषाढ़ा नक्षत्र अथवा किसी रविवार के दिन चाँदी की अँगूठी में धारण करना चाहिए। रत्न धारण करने से पूर्व उसकी विधि-पूर्वक जाँच कर लेनी चाहिए कि कहीं रत्न दूषित तो नहीं है। दूषित रत्न लाभ की बजाय हानि करने लगता है। रत्न को धारण करने से पूर्व उसे विधि पूर्वक शोधन कर लेना चाहिए।

क्षय रोग (T.B.)— सूर्य के अशुभ प्रभाव से व्यक्ति इस असाध्य एवं कष्टकारी रोग से पीड़ित होता है। टी. बी., तपैदिक अथवा क्षय आदि एक ही रोग के नाम हैं। यह रोग ''बैसीलस ट्युबर्क्युलोसिस'' नामक कीटाणु से होता है। यह रोग शरीर के किसी भी भाग में हो सकता है किन्तु यह फेफड़ों में अधिकांशतः होता है।

क्षय से आक्रान्त व्यक्ति दिन प्रतिदिन सूखता जाता है। रोगी को सदैव ज्वर कुछ न कुछ बना ही रहता है। खाँसी और जुकाम हो जाने पर ठीक होने का नाम न ले। खाँसते-खाँसते छाती में काटने के साथ दर्द होता रहता है। फेफड़ों की टी. बी. की अन्तिम दशा में इतनी खाँसी आती है कि गला रुँध जाता है, रोगी का सारा शरीर हिल जाता है, बदबूदार थूक निकलता है तथा खाँसते-खाँसते रोगी हाँफने लगता है।

क्षय रोग प्रायः अत्यधिक मात्रा में शराब पीने वालों को, धूम्रपान करने वालों को, अत्यधिक रति-क्रिया करने वालों को, अत्यधिक शारीरिक श्रम तथा अनियमित और कुपोषण

युक्त आहार करने पर अधिक होता है। यह रोग वंशानुक्रमण से नहीं होता किन्तु छुआछूत से अवश्य हो जाता है। अतः क्षय रोग से ग्रसित व्यक्ति के लिए अलग से खाने-पीने तथा बिस्तर की व्यवस्था करनी चाहिए।

घरेलू चिकित्सा :

- गोमूत्र के नियमित सेवन से क्षय रोग दूर हो जाता है। तीन दिन तक रोगी को 10 ग्राम गोमूत्र (प्रतिदिन) पिलायें। तीन दिन पश्चात् 15 ग्राम गोमूत्र पिलायें। इसी तरह प्रत्येक तीन दिन के अन्तराल में 5 ग्राम गोमूत्र की मात्रा बढ़ाते जायें। महीने भर यह क्रिया करें। फिर यह क्रम पूर्ववत बढ़ाने की बजाय कम कर दें। यह गोमूत्र-कल्प कहलाता है, इसके नियमित सेवन से पुराने से पुराना क्षय रोग अवश्य ठीक हो जाता है।
- आयुर्वेद ग्रन्थों के अनुसार प्रातःकाल सर्वप्रथम गधी का आधा पाव दूध नित्य सेवन किया जाए तो इसका सेवन यह क्षय रोग को समूल नष्ट कर देता है।
- शुद्ध गो-दुग्ध से निकला हुआ मक्खन तथा मिश्री का नियमित एक साथ सेवन करने से क्षय रोग से मुक्ति मिलती है। यह प्रयोग क्षय रोग के प्रारम्भिक काल में रामबाण औषधि का कार्य करता है।
- छोटी इलायची के दाने, गिलोय सत्त्व, असली वंशलोचन, काली मिर्च तथा शुद्ध भिलावा सभी को समभाग में लेकर खरल में डालकर कूट पीस कर कपड़छन कर लें। इस महीन चूर्ण की एक रत्ती मात्रा मक्खन अथवा मलाई के साथ रोगी को चटायें। तुरन्त लाभ करेगा। नियमित सेवन करने से क्षय रोग से मुक्ति मिलती है। क्षय रोग से मुक्ति के लिए यह श्रेष्ठ व अचूक साधन है।
- नीम पर चढ़ी गिलोय की डंडी का रस तथा शुद्ध शहद दो चम्मच मात्रा समभाग में लेकर एक माह तक रोगी को नियमित चटायें। इस मिश्रण के नियमित सेवन से क्षय रोग से मुक्ति मिलती है।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

कैल्केरिया कार्ब 6— टी. बी. की आशंका होने पर औषधि की चार पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए रोगी को दी जाती हैं।

ट्युबर्क्युलीनम 200, 1M, C.M.— सदैव खाँसी जुकाम हो जाय, रोगी थका सा हो, कंधे झुके हुए हों तथा तपैदिक की आशंका हो तो ऐसे व्यक्ति को इस दवा की दो बूँद सुबह-शाम देनी चाहिए।

ब्रायोनिया 30— यदि सुबह को बहुत अधिक खाँसी आए, तो खाँसते खाँसते छाती में काटने जैसा दर्द उठे तब इस दवा की दो-बूँद चार-चार घंटे में रोगी को देनी चाहिए। एक माह में रोगी को लाभ हो जायेगा।

फास्फोरस 30— हड्डियों तथा आँतों की टी. बी. में यह दवा बहुत फायदेमंद होती है। इसकी चार-पाँच गोली चार-चार घंटे में रोगी को देनी चाहिए।

लाइकोपोडियम 30— जब फेफड़ों की सूजन तपैदिक बन जाती है तो ऐसी अवस्था में यह दवा चमत्कारिक रूप से लाभ करती है। इस दवा की दो बूँद 6-6 घंटे के अन्तराल से रोगी को देनी चाहिए।

कार्बो एनीमैलिस 30— तपैदिक की अन्तिम अवस्था में यह दवा दी जाती है। इस दवा की दो बूँद आधे कप जल में दिन में चार बार रोगी को दी जानी चाहिए।

चुम्बकीय चिकित्सा :

चुम्बकीय जल का सेवन रोगी को नियमित रूप से करायें। चुम्बकीय जल चमत्कारिक रूप से क्षय रोग को नष्ट करने वाला होता है।

कृतिका नक्षत्र अथवा किसी रविवार से चुम्बकीय पेटी रोगी की पीठ पर 20 से 40 मिनट तक बाँधें। यह प्रयोग दिन में तीन बार अवश्य करें। रोगी को क्षय रोग से उत्पन्न कष्ट से तुरन्त आराम मिलेगा। यह क्रिया नियमित करते रहें।

विशेष— चुम्बकीय पेटी भोजन करने के तत्काल बाद न बाँधें और प्रयोग की अवधि में ठण्डे पेय पदार्थ न लें।

५२	५९	२	७
६	३	५६	५५
५८	५३	८	१
४	५	५४	५७

क्षयरोग से मुक्ति दिलाने में यह यन्त्र प्रयोग बड़ा चमत्कारिक प्रभाव दिखाता है। अभी तक यह यन्त्र प्रयोग बहुत गुप्त था। मेरे एक अति सहयोगी व घनिष्ट मित्र जो कि कई मन्त्र तन्त्र पुस्तकों के लेखक तथा विद्वान हैं, की कृपा से इस दुर्लभ यन्त्र के विषय में जानकारी हुई है।

इस क्षय निवारक यन्त्र को रवि-पुष्य योग के दिन अथवा उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रगत किसी भी रविवार को प्रातःकाल स्नानादि से निवृत्त होकर शुद्ध एवं पवित्र होकर श्रद्धा एवं विश्वास के साथ लिखा जाना चाहिए। यंत्र-लेखन भोजपत्र पर अनार की कलम तथा अष्टगंध की स्याही से किया जाना चाहिए। यंत्र-लेखन के उपरान्त इसे पंचोपचार विधि से शोधित कर पूजन करें। तदुपरान्त गुलाबी रंग के धागे की सहायता से दाहिनी भुजा अथवा गले में धारण करें।

यन्त्र को ताम्रपत्र की ताबीज में भरकर धारण करना चाहिए अन्यथा वह खराब हो जाता है ।

मन्त्र प्रयोग— क्षय रोग से मुक्ति पाने के लिए निम्न सूर्य मन्त्र का किसी भी रविवार से जप प्रारम्भ करें । प्रत्येक दिन कम से कम ग्यारह माला का जप अवश्य करना चाहिए—
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः ।

अगर संभव हो सके तो प्रत्येक रविवार को उपवास भी करें ।

तन्त्र प्रयोग :

- उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रगत किसी रविवार को ताँबे का टुकड़ा अथवा सिक्का किसी बहती हुए नदी या झरना में प्रवाहित करें । यह तन्त्र प्रयोग क्षय रोग को समाप्त करता है ।
- किसी भी रविवार को प्रातः सूर्योदय के समय गो-दुग्ध और गौ-घृत में ताँबे की अँगूठी डुबोकर उसे सूर्य की तरफ मुख करके धारण करें । इस तंत्र प्रयोग से पुराने से पुराना क्षय रोग ठीक होने लगता है ।
- लोबान पौधे की जड़ उत्तराषाढ़ा नक्षत्रगत किसी रविवार को घर लाकर विधि विधान से शोधन व पूजन करने के उपरान्त क्षय रोग से पीड़ित रोगी के गले में गुलाबी धागे की सहायता से धारण करायें । रोगी की खाँसी की शिकायत मिट जाती है तथा आराम मिलता है ।

रत्न प्रयोग :

- क्षय रोग से पीड़ित व्यक्ति को कम से कम पाँच रत्ती वजन का लाल मून स्टोन चाँदी की अँगूठी में मढ़ा कर दाहिनी अनामिका में धारण करना चाहिए । रत्न-धारण किसी रविवार के दिन शुभ घड़ी व मुहूर्त्त में करना चाहिए ।
- सवा तीन रत्ती वजन का गुलाबी रंग का माणिक्य रत्न धारण करने से क्षय रोग से ग्रसित व्यक्ति को तुरन्त लाभ मिलता है । माणिक्य रत्न असली तथा दोष रहित होना चाहिए तथा रत्न धारण रविवार के दिन उत्तराषाढ़ा नक्षत्र योग में करना चाहिए ।

श्वेताणु-वृद्धि एवं ज्वर

आयुर्वेद के अनुसार विपरीत आहार-विहार से कुपित हुए आमाशय में रहने वाले वात, पित्त, कफ दोष रस धातु के साथ होकर कोष्ठ की अग्नि को बाहर करके शरीर को तपा देते हैं, इसे ही ज्वर कहा जाता है ।

जब शरीर तपने लगे, पसीना न आये, पूरे शरीर में ऐंठन होने लगे तो यह समझा जाता है कि ज्वर आने वाला है । आयुर्वेद में ज्वर आने सब रोगों से कठिन माना गया है क्योंकि यह शरीर और मन दोनों को संतप्त कर रोगों को बहुत पीड़ा देता है और बहुत कमजोर कर देता है । ज्वर के कई रूप होते हैं ।

- साधारण ज्वर
- मलेरिया ज्वर
- टाइफाइड ज्वर
- प्रसूतिका ज्वर
- टी. बी. का बुखार
- शीत ज्वर

मानव शरीर के खून में दो प्रकार के कण होते हैं-- लाल और सफेद । लाल कण जीवन–तत्त्व हैं तथा रोगों से लड़ने की शक्ति रखते हैं । जब सफेद कण बढ़ जाते हैं तो रोग सताने लगते हैं तथा व्यक्ति कमजोरी महसूस करने लगता है । अतः श्वेताणु-वृद्धि ही ज्वर का मुख्य कारण होता है ।

घरेलू औषधियाँ—

- काली मिर्च और तुलसी के पत्ते दोनों को लेकर महीन पीस लें । अब इनकी चने के बराबर गोलियाँ बना लें । ज्वर आने पर इसकी दो गोली प्रतिदिन दूध अथवा जल के साथ लें । तुरन्त लाभ होता है ।
- आक के पीले पत्ते आग में जलाकर भस्म कर लें । शहद के साथ आधा ग्राम भस्म रोगी को चटायें । शीत-ज्वर में तुरन्त प्रभावकारी, अतीव लाभप्रद है ।
- फुलाई हुई फिटकरी, चूना, गोदन्ती भस्म, देशी नौसादर, सोना गेरू सभी को समभाग में लेकर पानी में घोट लें । फिर इसकी 2-2 रत्ती वजन की गोली बना लें । इसकी एक गोली दिन में चार बार गुनगुने पानी अथवा चाय के साथ रोगी को खिलायें । यह औषधि कफ ज्वर, इन्फ्लूऐन्जा, प्रतिश्य-जन्य ज्वर में बहुत लाभकारी होती है ।
- नीम की छाल 100 ग्राम लेकर खरल में कूट लें फिर आधा लीटर पानी में इतना उबालें कि पानी 100 ग्राम रह जाय । उस पानी को छान लें तथा इसमें शहद अथवा मिश्री मिलाकर पी जायें । इस काढ़े को पीने के बाद रोगी को कपड़ा ओढ़कर लेट जाना चाहिए । थोड़ी देर में पसीना आकर ज्वर उतर जायेगा । मलेरिया और शीत ज्वर में यह औषधि चमत्कारिक रूप से लाभ करती है, 4-5 दिन तक इसका प्रयोग करना चाहिए ।
- धतूरे के पत्तों का रस निकाल लें तथा कुछ देर तक इसे एक पात्र में पड़ा रहने दें । बाद में ऊपर-ऊपर का साफ रस निथार कर अलग पात्र में रख लें । बाकी

बचा रस फेंक दें । ऊपर के साफ रस में इतना शुद्ध सोना–गेरू मिलायें कि गोली बनायी जा सकें । 2-2 रत्ती की चने चने के बराबर गोलियाँ बना लें । शीत ज्वर अथवा मलेरिया ज्वर आने पर रोगी को उपरोक्त औषधि की एक गोली उबालकर ठण्डे किए पानी के साथ दो-तीन तक दिन में तीन बार रोगी को देना चाहिए । ज्वर उतर जायेगा ।

- ताजा लाल मिर्च का रस निकाल कर दो तीन बूँद दोनों कानों में डालें । दवा डालने के कुछ समय उपरांत ज्वर उतर जायेगा ।
  त्रिकुटा (सोंठ, काली मिर्च, पीपल), दालचीनी और जीरा तीनों को समभाग में लेकर खरल में कूट पीस कर कपड़छन कर लें । अब इस चूर्ण की एक से दो ग्राम तक मात्रा तीन-तीन घण्टे के अन्तराल से रोगी को गुनगुने पानी के साथ दें । फ्लू के लिए यह एक अचूक औषधि है ।
- साधारण ज्वर में रोगी को अजवाइन और दालचीनी दोनों को पानी में उबालकर पिलाना चाहिए, तुरन्त लाभ होता है ।
- बीस पत्ती तुलसी, तीन चार दाने काली मिर्च, एक चुटकी सोंठ का चूर्ण और एक चुटकी सेंधा नमक इन चारों को दो कप पानी में इतना उबालें कि आधा कप शेष बचे । अब इसे छान लें तथा गुनगुना गर्म रात को सोते समय पीकर ओढ़कर सो जायें । थोड़ी देर में पसीना आकर ज्वर उतर जायेगा । तुलसी का यह काढ़ा मलेरिया ज्वर, सर्दी जुकाम तथा शीत ज्वर में रामबाण है ।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

रसटाक्स 30— भीगने से ज्वर हो या ज्वर में जाड़ा लगने से पूर्व सूखी खाँसी उठे, तब इस औषधि को तीन बार चूसने को दें । बुखार तुरन्त उतर जायेगा ।

कैम्फर मूल अर्क— सर्दी लगकर जब बुखार आये तथा नाक बहने लगे तब आधा कप पानी में इसकी दो बूँद दवा दिन में तीन चार बार रोगी को दें । तुरन्त लाभ होगा ।

आर्सेनिक 30— मलेरिया ज्वर में यह औषधि दी जाती है । इसकी एक बूँद दवा आधा कप जल में दिन में चार बार रोगी को दी जाती है ।

सल्फर 30 अथवा 200— मलेरिया ज्वर में इसकी चार-पाँच गोली दिन में तीन चार बार दी जाती है ।

ब्रायोनिया 12 अथवा 30— टाइफाइड ज्वर में यह दवा दी जाती है । जब टाइफाइड में कब्ज प्रधान हो, प्यास तेज हो, रोगी चुपचाप पड़ा रहना चाहता हो तो

ऐसी दशा में उपरोक्त दवा की एक बूँद आधा कप जल में दिन में तीन बार रोगी को देने से शीघ्र आराम मिलता है ।

रसटाक्स 30— यदि टाइफाइड पतले दस्तों से हुआ हो, रोगी बेचैन हो, करवटें बदलने से चैन पड़ता हो तो इस औषधि की चार पाँच गोलियाँ दिन में 6 घण्टे के अन्तराल से रोगी को चुसा दें । तुरन्त लाभ होगा तथा धीरे-धीरे उतर जायेगा ।

लाइकोपोडियम 30—यह दवा तब दी जाती है जब प्रसूति-ज्वर में गर्म पसीना आए, एक के बाद एक जोड़ की सिहरन उठती चली जाए ।

पल्सेटिला 30—तपेदिक ज्वर में यह दवा रोगी को आधा कप जल में एक वूँद डालकर दिन में तीन बार दी जाती है ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

सभी प्रकार के रोगों में चुम्बकीय जल का सेवन तुरन्त लाभ देता है । चुम्बकीय जल के नित्य सेवन से रोग अधिक दिन तक रोगी को पीड़ित नहीं करता ।

यन्त्र प्रयोग :

सभी प्रकार के ज्वर में सूर्य यन्त्र का प्रयोग सर्वश्रेष्ठ फल देता है । सूर्य यन्त्र का विवरण पीछे के पृष्ठों में उल्लखित है । अतः पाठक उसे वहाँ देख लें ।

सभी प्रकार के ज्वर में सूर्य के इस मन्त्र का कम से कम पाँच माला का जप प्रभावकारी होता है– **ॐ ह्रीं हं सः सूर्याय नमः ।**

विशेष— उत्तराषाढ़ा नक्षत्रगत रविवार को प्रारम्भ किया गया मन्त्र जप विशेष प्रभावशाली होता है ।

तन्त्र प्रयोग—

- शनिवार के दिन बबूल की जड़ सफेद धागे की सहायता से दाहिनी भुजा में बाँधने से शीत-ज्वर से मुक्ति मिलती है ।
- अश्विनी नक्षत्र में निर्गुण्डी पौधे की छाल तथा फूल को घर में लाकर पीस लें और बकरे के बालों में लपेटकर, कपड़े के सहारे दाहिनी भुजा में बाँधें । इसके प्रयोग से सन्निपात-ज्वर से आराम मिलता है ।
- कृतिका नक्षत्र गत रविवार को हुरहुर पौधे की जड़ भूत-ज्वर से आक्रान्त व्यक्ति के कान पर रखने पर रखने से, रोगी को तुरन्त लाभ मिलता है ।
- सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति पाने के लिए निर्गुण्डी तथा सहदेवी पौधे की जड़ कमर में गुलाबी धागे की सहायता से रविवार के दिन बाँधे । तुरन्त लाभ होगा ।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

रत्न प्रयोग—

रत्नविद ज्योतिर्विज्ञों के मतानुसार सभी प्रकार के रोगों में अम्बर रत्न धारण करना सर्वश्रेष्ठ होता है ।

मस्तिष्क की दुर्बलता

जन्म-कुण्डली में सूर्य की अशुभ स्थिति मस्तिष्क की दुर्बलता का कारण बनती है । स्नायविक तथा मस्तिष्क की दुर्बलता से कुछ व्याधियाँ उत्पन्न हो जाती हैं जैसे— याददाश्त कमजोर हो जाना, अपस्मार, चित्त-भ्रम, मूर्च्छा, घबराहट, थकावट, शारीरिक कमजोरी, धड़कन बढ़ना आदि ।

जीवन में सफलता तथा प्रगति के लिए मस्तिष्क का पुष्ट तथा स्वस्थ रहना नितांत आवश्यक है । क्षीण-मस्तिष्क-युक्त व्यक्ति जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में असफल होते हैं ।

घरेलू चिकित्सा—

- बादाम की गिरी सात दाने, सौंफ तथा मिश्री प्रत्येक 6 ग्राम लेकर तीनों को खरल में महीन कूट लें तथा रात्रि को सोते समय एक पाव गोदुग्ध के साथ सेवन करें । इसके सेवन के उपरान्त जल पीना वर्जित है । चालीस दिन तक इस क्रिया को नियमित करते रहें । इससे मस्तिष्क सम्बन्धी दुर्बलता दूर हो जायेगी ।
- भोजन के उपरान्त दो ग्राम वजन भर बच को चाकू से छीलकर मुख में रखकर चबाते रहें । एक मास तक नियमित इसका सेवन करने से मस्तिष्क सम्बन्धी दुर्बलता दूर हो जायेगी तथा मेघा-शक्ति की वृद्धि होती है ।
- शंखपुष्पी एवं मिश्री दोनों 50-50 ग्राम लेकर खरल में कूट पीस कर चूर्ण बना लें । नियमित रूप से इस चूर्ण को (6 ग्राम वजन भर) गोदुग्ध के साथ लें । इसके नियमित सेवन से समस्त प्रकार की मस्तिष्क की दुर्बलता दूर हो जाती है । इसका प्रयोग प्रातःकाल ही करना चाहिए ।
- नियमित रूप से कलौंजी का चूर्ण 3 ग्राम शहद में मिलाकर चाटने से स्मरण-शक्ति बढ़ती है ।
- सूखा धनियाँ तथा खस-खस के दाने दोनों समान मात्रा में लेकर कूट पीस कर महीन चूर्ण बना लें । फिर इसके बराबर वजन में मिश्री पीसकर इसमें मिला लें । नियमित रूप से सुबह तथा भोजन के उपरान्त इस चूर्ण को एक चाय चम्मच की मात्रा में गुनगुने–मीठे गोदुग्ध से लेने से स्मरण-शक्ति अकल्पित रूप से बढ़ जाती है । अगर

गोदुग्ध सुलभ न हो तो चूर्ण की एक चाय चम्मच की फंकी शीतल जल से ले लें। मस्तिष्क की दुर्बलता से मुक्ति के लिए श्रेष्ठ व अचूक साधन है ।

- नियमित रूप से बादाम की गिरी का छिलका उतार कर पत्थर पर चंदन की तरह घिसकर एक चम्मच शुद्ध शहद के साथ सेवन करने से आशातीत तथा चमत्कारिक परिणाम प्राप्त होते हैं । उपरोक्त औषधि-सेवन के उपरान्त यदि गौदुग्ध (एक कप) भी लिया जाए तो विशेष लाभ होता है ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

ऐनाकार्डियम 6, 200— इस औषधि को विशेष रूप से अध्ययनरत छात्र-छात्राओं को दिया जाता है । जब रोगी में अपना काम करने की रुचि न हो आत्म-विश्वाम कम हो जाए, कुछ भी करने को जी न चाहे, तब इस औषधि की चार पाँच गोली दिन में तीन बार रोगी को चूसने को दें । तुरन्त लाभ होगा ।

इथूजा 3 अथवा 30— जब चित्त एकाग्र न रह सकता हो, किसी भी काम में मन न लगे, तब इस दवा की एक बूँद आधा कप जल के साथ दिन में तीन बार दें । यह समस्त प्रकार के मस्तिष्क की दुर्बलता दूर करती है ।

लाइकोपोडियम 30— जब बोलने में बार-बार भूल हो, शब्द भूल जायें, बोले हुए शब्दों के अर्थ याद न रहें, दिमागी थकावट हो, तब इस दवा की चार पाँच गोली रोगी को दिन में तीन बार चूसने को देनी चाहिए ।

पिकरिक एसिड 6 —यह दवा तब दी जाती है जब स्नायु-शक्ति का ह्रास हो जाय, मानसिक कार्य करने से सिर में दर्द होने लगे, हर समय थकान रहे, पढ़ने या आँखों की हरकत में कष्ट हो तथा सिर में बाँधने से आराम मिलता हो । इस दवा की दो बूँद आधा कप पानी में छः-छः घण्टे के अन्तराल से रोगी को दिया जाता है।

साइलीशिया 30— जब दिल कमजोर हो जाय, शारीरिक तथा मानसिक शक्ति की कमी, दिमागी थकावट बनी रहे, तब इस दवा की चार-पाँच गोली दिन में चार बार रोगी को चूसने को दी जाती है ।

चुम्बकीय चिकित्सा :—

- नियमित रूप से चुम्बकीय जल के सेवन से मस्तिष्क की दुर्बलता दूर होती है तथा स्मरण-शक्ति का विकास होता है ।
- नियमित रूप से मैगनेटिक हेड बेल्ट प्रातः तथा सायंकाल 30-40 मिनट तक रोगी को बाँधें । इसके एक माह नियमित प्रयोग करने से चमत्कारिक रूप से स्मरण-

शक्ति का विकास होता है तथा मस्तिष्क की दुर्बलता समाप्त होने लगती है ।

विशेष— मैगनेटिक हेड बेल्ट का प्रयोग करते समय इस बात का विशेष ध्यान रखें कि शरीर का कोई हिस्सा पृथ्वी से छू न रहा हो तथा लकड़ी की मेज अथवा तख्त पर बैठकर इसका प्रयोग करना चाहिए । अन्यथा इसका कोई लाभ रोगी को न मिलेगा ।

यंत्र प्रयोग— सभी प्रकार के मस्तिष्क की दुर्बलता सम्बन्धी रोगों में सूर्य यन्त्र की साधना सर्वश्रेष्ठ फल देती है । सूर्य यन्त्र का विवरण पीछे के पृष्ठों में उल्लिखित है । अतः पाठक उसे देख लें ।

विशेष— सूर्य यन्त्र की साधना व पूजा सूर्य के होरा में करने से चमत्कारिक रूप से लाभ मिलता है ।

तन्त्र प्रयोग :

- सूर्य की होरा में किसी भी रविवार को खरगोश के दाँत को ताबीज में धारण करने से स्मरण-शक्ति की वृद्धि होती है तथा सभी प्रकार की मानसिक चिंताओं से मुक्ति मिलती है ।
- उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्रगत रविवार को हुदहुद पक्षी का सिर अपने पास में रखने से स्मरण-शक्ति चमत्कारिक रूप से बढ़ जाती है तथा मानसिक दुर्बलता समाप्त हो जाती है ।

रत्न प्रयोग—

- सभी प्रकार की मस्तिष्क की दुर्बलता को समाप्त करने के लिए कृतिका नक्षत्रगत रविवार को सूर्यकान्त रत्न धारण करना चाहिए । बेहतर होगा किसी रत्नविज्ञ ज्योतिर्विज्ञ से जन्म-कुण्डली दिखाकर परामर्श ले लें ।

मंत्र प्रयोग—

नियमित रूप से "ॐ सूर्याय नमः" का जप करते हुए सूर्य भगवान को अर्घ्य दें कुछ दिनों में लाभ होना प्रारम्भ हो जायेगा ।

चर्म रोग

जब मानव शरीर के रक्त में विकार होते हैं तो उसकी परिणति चर्म रोग के रूप में सामने आती है । सामान्य बोलचाल की भाषा में त्वचा में उत्पन्न होने वाले समस्त प्रकार के विकार चर्मरोग कहलाते हैं । कुछ प्रमुख चर्मरोग निम्न हैं—

- दाद

- खुजली
- एक्जिमा
- रसपित्ती

खुजली :— रक्त में विकार होने पर शरीर की त्वचा में जगह-जगह दाने निकल आते हैं जिन्हें खुजलाने अथवा सहलाने में आनन्द की अनुभूति होती है । कभी-कभी तो खुजाते-खुजाते रक्त भी निकल आता है । यह एक संक्रामक रोग है अतः इस रोग से ग्रसित व्यक्ति से दूर रहना चाहिए अन्यथा यह आक्रमण कर देता है ।

दाद :— खुजली की तरह दाद भी संक्रामक तथा पीड़ादायक रोग है । सामान्य रूप से यह रोग गीले वस्त्र धारण करने से होता है । इसमें दाद चकत्ते के रूप में शरीर की त्वचा में उभर आते हैं । जिन्हें खुजलाने में पीड़ित व्यक्ति को बड़ा आनन्द आता है ।

एक्जिमा :— यह भी दाद की भाँति एक पीड़ादायक चर्मरोग होता है । इसमें शरीर में चकत्ते जैसे निशान ऊपर आते हैं । जिनमें छोटे-छोटे दाने निकल आते हैं। बाद में इन दानों से पानी जैसा मवाद ही रोग वृद्धि का मुख्य कारण है । इसमें भी रोगी को खुजलाने की प्रबल इच्छा बनी रहती है । यह भी एक संक्रामक रोग है ।

रस पित्ती— यह भी रक्त विकार से उत्पन्न होने वाला चर्मरोग है । इस रोग में सारे शरीर में लाल-लाल चकत्ते पड़ जाते हैं । खुजली तथा दाद की भाँति इसमें भी खुजलाने को प्रबल इच्छा उत्पन्न होती है । सामान्य रूप में जिन व्यक्तियों की त्वचा अत्यन्त संवेदनशील होती है । उन को मौसम के परिवर्त्तन में यह रोग उभर आता है ।

घरेलू चिकित्सा :—

- कनेर की जड़ की छान को चौगुने तिल्ली के तेल में डालकर आग में इतना पकायें कि छाल जलकर काली हो जाय । इस तेल को छानकर शीशी में भरकर रख लें तथा प्रतिदिन एक्जिमा पर लगाऐं । इस प्रयोग के साथ-साथ प्रतिदिन पीपल की **3-4** नरम कोंपलें चबा चबाकर खा जाऐं । हफ्तेभर में पुराने से पुराना एक्जिमा ठीक हो जायेगा ।
- नीम की पत्तियाँ साफ करके पानी में डालकर उबालें । उबल जाने पर पत्तियाँ निकाल कर फेंक दें और पानी को ठण्डा कर इस पानी से स्नान करें । खुजली या त्वचा पर उठी फुन्सियाँ आदि चर्म रोगों को यह समूल नष्ट कर देता है ।
- गौमूत्र में थोड़ा सा सेंधा नमक डालकर शरीर पर मलने से उठी हुई रस पित्ती शान्त हो जाती है ।

- नाग-केसर को खरल में डालकर महीन पीस लें । अब तीन ग्राम चूर्ण को एक चम्मच शहद के साथ रोगी को दिन में तीन-चार बार चटायें । कुछ ही दिनों में रोग से मुक्ति मिल जायेगी तथा पित्ती उछलना बन्द हो जायेगा ।
- कच्चे सुहागे को आग में भूनकर फुला लें तथा महीन पीस लें । अब इसे किसी लोहे के पात्र में घी मिलाकर मलहम सा बना लें । इस मलहम को दाद पर लगाने से शीघ्र लाभ होता है ।
- गेंदा के पत्तों को पीसकर खुजली, दाद आदि चर्म-रोगों में लेप करने से बहुत शीघ्र लाभ होता है ।
- सत्यानाशी के बीज 10 ग्राम तथा नीला थोथा 2 ग्राम लेकर खरल में डालकर महीन चूर्ण बना लें । अब इस चूर्ण को शुद्ध कड़ुवे तेल में मिलाकर दाद पर लगायें । इसके नियमित प्रयोग से पुराने से पुराना दाद एक माह में ठीक हो जाता है ।
- नारियल के तेल में देशी कपूर मिलाकर लगाने से सभी प्रकार के चर्मरोग ठीक हो जाते हैं ।
- 50 ग्राम बकरी की मैंगनी को 200 ग्राम शुद्ध कड़ुवे तेल में औटाकर छान लें तथा इस तेल की मालिश करें । इसके नियमित मालिश से सभी प्रकार के चर्म रोग नष्ट हो जाते हैं ।
- चालमोगरा के तेल का नित्य नियमित सेवन करने से सभी प्रकार के चर्म रोग ठीक हो जाते हैं ।
- तारकोल और कड़ुवा तेल दोनों को सम भाग में लेकर आग पर गरम करें । अब खदक पड़ने लगे तब उतार लें । इस मिश्रण को एक्जिमा पर नित्य दिन में तीन बार लगायें । कुछ ही दिनों में एक्जिमा रोग समूल नष्ट हो जायेगा ।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

सल्फर 30— स्त्री के यौन अंगों में ऐसी भयंकर खुजली हो कि खुजाते-खुजाते खून निकल आए, तब इस औषधि की दो बूँद आधे कप जल के साथ दिन में चार बार छः घण्टे के अन्तराल से रोगी को दें । लाभ होगा ।

ऐलुमिना 6 अथवा 30— खुजली से त्वचा फटना, लेटते ही खुजली मचना, खुजाते-खुजाते खून निकल आना, त्वचा पर खुरचने से पीड़ा, त्वचा पर खुश्की बहुत हो, खुजली भी खुश्की से हुई हो तब इस औषधि की चार पाँच गोली रोगी को दिन में तीन बार चूसने को दें । इसके सेवन करने से खुजली से मुक्ति मिलती है ।

रसटाक्स 6 अथवा 30— खुजली के दाने वालों वाली जगह में ही, त्वचा लाल, छोटे-छोटे छाले जैसे दाने, सूजन हो जाती है, पपड़ी पड़ जाती है, जहाँ ठीक हो जाए वहाँ दुबारा नहीं होते इन सब लक्षणों में इस औषधि की चार-पाँच गोली रोगी को चूसने के लिए दिन में चार बार दें । कुछ ही दिनों में रोग से मुक्ति मिल जाती है ।

टेल्युरियम 6 अथवा 30— शेव बनवाने से होने वाली खुजली, हाथ-पाँव की खुजली, कान के पीछे के एक्जिमा में इस औषधि की 5-4 बूँद आधे कप में डालकर रोगी को दिन में चार बार दें । तुरन्त लाभ होगा ।

कल्केरिया सल्फ 3x अथवा 12— यह औषधि बच्चों के खुश्क एक्जिमा तथा सिर में फुन्सियों के लिए बहुत लाभप्रद है । इसकी दो तीन गोली रोगी को दिन में तीन बार चूसने को दें । कुछ दिनों में ही रोग से मुक्ति मिल जाती है ।

सल्फर 30— दबी हुई खुजली, जिसके दबने से कोई अन्य रोग उभर आए, तब यह देनी चाहिए । खुजली पुनः प्रकट होकर जड़ से चली जायेगी और वह अन्य रोग भी इसी दवाई से ठीक हो सकेगा, जो दबी खुजली के कारण नहीं जा रहा था।

पैट्रोलियम 3 अथवा 30— जाड़ों में बिवाई वाली खुजली या फुन्सी की अधिकता, अण्डकोष अथवा मलद्वार के पास खुजली होने पर इस दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन चार बार रोगी को चूसने को दें, लाभ होगा ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

- चुम्बकीय जल से चर्म-रोग ग्रस्त क्षेत्र को दिन में तीन चार बार धोयें । कुछ ही दिनों में चर्म रोग समूल नष्ट हो जायेगा ।
- दाद-खुजली तथा एग्जिमा युक्त स्थान में चुम्बकीय तेल को नियमित लगाने से कुछ ही दिनों में रोग ठीक हो जाता है ।
- जब भी प्यास लगे, चुम्बकीय जल का ही सेवन करें । चुम्बकीय जल का नियमित सेवन करने से किसी भी प्रकार के चर्म रोग नहीं होते ।

मन्त्र प्रयोग—

नियमित रूप से इस मंत्र का जप कम से कम ग्यारह माला नित्य करें । कुछ दिनों में सभी प्रकार के चर्म रोग शान्त होने लगेंगे मन्त्र है— **ॐ घृणि सूर्याय नमः ।**

मन्त्र साधना—

सूर्य यन्त्र को धारण करने से चर्म रोगों से मुक्ति मिलती है । सूर्य यन्त्र का उल्लेख पीछे पृष्ठ में है । अतः पाठक उसे देख लें ।

विशेष—सूर्य यन्त्र उत्तराषाढ़ा नक्षत्रगत रविवार को ही सूर्य की होरा में धारण करें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

सूर्य की होरा में पाटल अथवा रतनजोत की जड़ रविवार के दिन घर में लाकर शोधन व पूजन के उपरान्त दाहिनी भुजा में गुलाबी धागे की सहायता से बाँधने से समस्त प्रकार के चर्म रोगों से मुक्ति मिलती है ।

रत्न प्रयोग—

चर्म रोग से मुक्ति के लिए लाल मूनस्टोन रत्न सूर्य की होरा में किसी भी रविवार को धारण करें । सूर्य-रत्न की अँगूठी दाहिनी अनामिका में धारण करनी चाहिए ।

सूर्य रत्न :

सूर्य ग्रह के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने के लिए ज्योतिषीय परामर्श माणिक्य रत्न धारण करना बताया गया है । माणिक्य रत्न विभिन्न राशियों के लिए भिन्न-भिन्न वजन (तौल) में धारण किया जाता है ।

माणिक्य परिचय— माणिक्य सूर्य का रत्न है । यह देखने में लाल-गुलाबी रंग का होता है । यह बहुत ही मँहगा रत्न होता है । वर्मा का माणिक्य सर्वश्रेष्ठ माना जाता है । सबसे मूल्यवान एवं अच्छा माणिक्य कबूतर के रक्त या कंधारी अनार के समान रंग वाला माना जाता है । सूर्य के ग्रहीय प्रभाव को समाप्त करने के लिए शुद्ध व पवित्र माणिक्य रत्न धारण करना चाहिए । कटा हुआ, मटमैला, विकृत, चमक रहित, बेडौल, जालयुक्त, खंडित तथा त्रुटिपूर्ण माणिक्य लाभ के बजाय हानिकारक होते हैं । माणिक्य विशेषकर वर्मा, श्याम और सीलोन में अधिक मात्रा में पाये जाते हैं । वैसे तो माणिक्य अन्य देशों में भी मिलते हैं लेकिन वे प्रायः अच्छी श्रेणी के नहीं होते । अतः व्यवसायिक दृष्टिकोण से केवल वर्मा, सीलोन तथा श्याम देश के माणिक्य महत्त्वपूर्ण होते हैं । भारत में भी मैसूर तथा तामिलनाडू में माणिक्य के गुण के पत्थर पाए जाते हैं । लेकिन ये उच्च कोटि के नहीं होते हैं ।

माणिक्य को कई नामों से जाना जाता है । इसके अनेक नाम हैं यथा– रवि रत्न, बसुरत्न, पद्मराग, शोणरन, कुरनविन्द आदि । पंजाबी तथा हिन्दी में इसे चुन्नी के नाम से जाना जाता है । उर्दू तथा फारसी में यह याकूत कहलाता है तथा अंग्रेजी में रूबी नाम से प्रसिद्ध है ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण—

सूर्य के इस प्रसिद्ध रत्न माणिक्य को वैज्ञानिक दृष्टि से देखने पर हम पाते हैं कि यह बेशकीमती, (बहुमूल्य) रत्न कोरण्डय जाति का सबसे बहुमूल्य रत्न है । यह अल्मूनियम और आक्सीजन का यौगिक है तथा इसमें कुछ मात्रा में क्रोमियम एवं लोहा भी मिला होता है ।

प्रसिद्ध जर्मनी खनिज-शास्त्री, फ्रेडरिक मोह के अनुसार, माणिक्य में निम्न भौतिक गुण पाये जाते हैं- कठोरता-9, सापेक्षिक घनत्व-4.03 वर्तनांक-1.716 से 1.771 माणिक्य में रासायनिक रचना अल्यूनियम आक्साइड के रूप में पायी जाती है । माणिक्य पर ताप का कोई प्रभाव नहीं पड़ता ।

माणिक्य रत्न और ज्योतिषीय परामर्श—

माणिक्य रत्न सूर्य के अनिष्टकारी प्रभावों को नष्ट करता है । माणिक्य रत्न 15 अगस्त से 14 सितम्बर के मध्य जन्म लेने वाले व्यक्तियों के लिए विशेष लाभकारी होता है । कोई भी रत्न प्रत्येक व्यक्ति के लिए लाभकारी तथा शुभ फलप्रद नहीं होता। माणिक्य रत्न के लिए भी उपरोक्त कथन सही तथा सत्य प्रभाव रखता है । रत्न धारण करने के पहले अपने जन्मांक चक्र में सूर्य की राशि-स्थिति तथा भाव-स्थिति पर विचार करना आवश्यक रहता है । माणिक्य रत्न के विषय में निम्न ज्योतिषीय परामर्श का विशेष रूप से पालन करना चाहिए—

(1) मेष लग्न— मेष लग्न वालों के लिए सूर्य पंचम भाव का स्वामी होता है । पंचम भाव बुद्धि, संतान तथा प्रसिद्धि दिलाने वाला होता है । अतः मेष लग्न में जातक को माणिक्य रत्न धारण करना सुख, ऐश्वर्य तथा पदोन्नति की अभिवृद्धि कराने वाला साबित होगा ।

(2) वृष लग्न— वृष लग्न में सूर्य चतुर्थ केन्द्र का स्वामी होता है इसलिए लाभकारक होगा, वाहन-सुख दिलायेगा किन्तु लग्नेश शुक्र के साथ शत्रुभाव रखने से इस राशि वालों को माणिक्य रत्न केवल सूर्य की महादशा व अन्तर्दशा में लाभप्रद रहेगा ।

(3) मिथुन लग्न— इस लग्न वालों को माणिक्य कभी नहीं धारण करना चाहिए क्योंकि सूर्य मिथुन लग्न में तृतीय भाव का स्वामी होता है ।

(4) कर्क लग्न— कर्क लग्न के जातक को माणिक्य रत्न अकेला धारण नहीं करना चाहिए, माणिक्य के साथ मोती भी धारण करें । इस लग्न में सूर्य द्वितीय भाव का स्वामी होने के कारण मारकेश भी हो जाता है । नेत्र-पीड़ा तथा आर्थिक कष्ट के समय माणिक्य रत्न तथा मोती धारण करने से शुभ फल प्राप्त होते हैं ।

(5) सिंह लग्न— इस लग्न वालों के लिए माणिक्य सदैव धारण करना चाहिए, क्योंकि सूर्य लग्नेश होने के कारण परम लाभकारी सिद्ध होगा । अगर सिंह लग्न वाले माणिक्य धारण करें तो उन्हें शत्रु से सदैव विजय प्राप्त होगी तथा मानसिक सन्तुलन, शारीरिक स्वास्थ्य तथा आत्मवल की बढ़ोत्तरी होगी ।

(6) कन्या लग्न— इस लग्न वालों के लिए माणिक्य धारण करना सदैव हानिप्रद व कष्टकारी रहेगा । अतः इस लग्न वालों को कभी भी माणिक्य धारण नहीं करना चाहिए क्योंकि इस लग्न वाले माणिक्य में सूर्य की राशि का आधिपत्त्य रहता है । अगर इस लग्न वाले माणिक्य रत्न धारण कर लेते हैं तो उन्हें भयंकर दुर्घटना व नेत्र-विकार से पीड़ित होना पड़ता है ।

(7) तुला लग्न— वृष लग्न वालों की भाँति तुला लग्न वालों को भी केवल सूर्य की महादशा, अन्तर्दशा व प्रयन्तर्दशा में माणिक्य रत्न धारण करना चाहिए ।

(8) वृश्चिक लग्न— इस लग्न वालों की माणिक्य रत्न धारण करना लाभप्रद रहता है । माणिक्य धारण करने से जातक यश, प्रतिष्ठा, व्यवसाय में लाभ व नौकरी में पदोन्नति करता है । इस लग्न में सूर्य दशम भाव का स्वामी होता है । अतः जातक को पिता से व व्यवसाय से लाभ मिलता है ।

(9) धनु लग्न— इस लग्न में सूर्य नवम भाव का स्वामी है तथा लग्नेश वृहस्पति का मित्र है । अतः इस लग्न वालों के लिए माणिक्य धारण करना लाभप्रद रहेगा ।

(10) मकर लग्न— इस लग्न के जातक को माणिक्य कभी नहीं धारण करना चाहिए । इस लग्न में सूर्य अष्टम भाव का स्वामी होता है । चूँकि मकर लग्न का लग्नेश शनि है तथा शनि एवं सूर्य आपस में शत्रुभाव रखते हैं अतः यदि इस लग्न वाले जातक माणिक्य रत्न धारण करते हैं तो उन्हें शारीरिक कष्ट, रोग व दुर्घटना का शिकार होना पड़ता है ।

(11) कुम्भ लग्न— कुम्भ लग्न के जातक को भी मकर लग्न के जातकों की भाँति माणिक्य रत्न धारण नहीं करना चाहिए । इस लग्न में सूर्य सप्तम भाव का स्वामी होता है । सप्तम भाव को मारक स्थान माना जाता है तथा कुम्भ लग्न का लग्नेश शनि है । अतः लग्नेश शनि तथा सूर्य की शत्रुता के कारण जातक को माणिक्य हानि पहुँचाता है ।

(12) मीन लग्न— इस लग्न के जातकों को माणिक्य धारण किसी विशेष स्थिति में लाभप्रद रहता है अन्यथा यह रत्न नुकसान ही करता है । इस लग्न में सूर्य षष्ठ भाव का स्वामी होता है । इस लग्न का लग्नेश वृहस्पति चूँकि सूर्य का मित्र है, अतः यदि मीन लग्न में सूर्य यदि षष्ठ भाव में बैठा हुआ है तो ऐसी स्थिति में माणिक्य धारण करना जातक के लिए लाभप्रद व महत्त्वपूर्ण रहेगा ।

सूर्य-रत्न तथा इससे जुड़े कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य :

माणिक्य बहुत ही बेशकीमती (बहुमूल्य) रत्न है । इसकी कीमत कभी-कभी हीरे से भी अधिक होती है । प्राकृतिक रूप में यह चमकीला नहीं होता । इसे तराश कर पालिश किया जाता है । 24 रत्ती से अधिक भार वाला माणिक्य ''लाल'' कहलाता है । सामान्य तौर पर माणिक्य रत्न छोटे-छोटे रूप में मिलते हैं । संसार का सबसे बड़ा माणिक्य 3421 कैरेट का है जो कि U.S.S.R. की यूराल खान से 1817 ई० में निकला था ।

सभी माणिक्यों को तराशा नहीं जाता । धुँधले एवं कान्तिहीन माणिक्य तराशे नहीं जाते, क्योंकि इनका कोई व्यवसायिक महत्त्व नहीं होता है । छोटे तथा बड़े माणिक्य को भिन्न-भिन्न तरीकों के तराशा जाता है । छोटे एवं सपाट माणिक्य जहाँ गुलाब-काट में तराशे जाते हैं तथा मूल्यवान व दुर्लभ माणिक्यों को कैवोकोन तराश में काटा जाता है ।

प्रत्येक माणिक्य के रंग समान नहीं होते तथा उनमें समरूपता भी नहीं होती । कुछ माणिक्य गुलाबी रंग के होते हैं, कुछ पीलापन लिए होते हैं तथा कुछ में रंगहीन परदे व बिन्दु पाए जाते हैं । पीलापन लिए लाल रंग रखने वाला माणिक्य फेमोनिन रूबी कहलाता है । माणिक्य रत्न को रंग बदलते हुए भी देखा गया है । ऐसी धारणा है कि जब कोई विपत्ति अथवा परेशानी आने वाली होती है तो माणिक्य रत्न अपना मौलिक रंग बदल देता है । लंका में बौद्ध धर्म के मानने वाले इसे अत्यन्त सम्मान व आदर के भाव से धारण करते हैं ।

भारत में भी माणिक्य का चलन प्राचीन काल से होता आया है । वेदों, पुराणों व शास्त्रों में भगवान द्वारा माणिक्य व रत्न धारण किए जाने का कई जगहों में उल्लेख है । मुगल काल में भी माणिक्य रत्न को बहुत सम्मान प्राप्त था । बड़े-बड़े नवाब व बादशाह अपने ताज व सिंहासनों में इस रत्न को जड़वाते रहते थे ।

जहाँगीर के पास एक ऐसी ही बेशकीमती अँगूठी थी जिसे गुजरात से मुरतुजा खां ने भेजा था । इस अँगूठी के संदर्भ में जहाँगीर का कथन था कि ऐसी खूबसूरत अँगूठी उसने इससे पूर्व नहीं देखी थी । उस अँगूठी में एक लाल लगा हुआ था, जिसकी कीमत उस समय 25 हजार रुपये थी ।

जहाँगीर के 11 वें साले जुलूस में खुर्रम ने जहाँगीर को एक लाल नजराने में भेंट किया था, जिसकी कीमत 30 हजार रुपये थी । उस लाल में बेइन्तहा चमक थी । शाहजहाँ के तख्ते-हाऊस में जो लाल जड़ा था, उसे जहाँगीर को ईरान के शाह अब्बास ने उसके 15वें 'साल ए जलूस' में नजराने के रूप में भेंट किया था ।

माणिक्य को धारण करने के पूर्व यह जानना आवश्यक होता है कि कितने वजन

का रत्न धारण करें । क्योंकि बिना इसके रत्नों का समुचित प्रभाव नहीं पड़ता । माणिक्य रत्न कम से कम तीन रत्ती का अवश्य होना चाहिए । अगर रत्न तीन रत्ती से कम है तो वह लाभ नहीं करेगा । इसी प्रकार माणिक्य रत्न की अँगूठी बनवा कर पहले उसे धार्मिक विधि से शुद्ध करना चाहिए ।

प्रत्येक रत्न एक निश्चित समय तक ही प्रभावशाली रहता है इसके उपरान्त उसका प्रभाव क्षीण होने लगता है । माणिक्य रत्न एक बार अँगूठी में जड़वाने के उपरान्त चार वर्ष तक प्रभावशाली रहता है । माणिक्य की अँगूठी विधि–विधान से पूजन करने के उपरान्त किसी शुभ मुहूर्त्त में रविवार, सोमवार या गुरुवार को धारण करना चाहिए । रत्न को अंगूठी में इस प्रकार जड़ा होना चाहिए कि वह त्वचा का स्पर्श करता रहे । अंगूठी को यथा-संभव शुक्ल पक्ष में किसी रविवार को ही सूर्योदय के समय धारण करना चाहिए । अगर संभव हो तो धारण करने के पश्चात "**ॐ घृणिः सूर्याय नमः**" का मन्त्र जप कम से कम ग्यांरह माला करना चाहिए । इस प्रकार प्राण-प्रतिष्ठित किया हुआ रत्न धारक को यश, कीर्ति व धन लाभ करायेगा ।

सूर्य रत्न माणिक्य और उसके उपरत्न —

सूर्य का रत्न माणिक्य होता है । माणिक्य एक महँगा रत्न होता है, जिसे सभी वर्ग के लोग नहीं खरीद सकते । सूर्य ग्रह का दुष्प्रभाव धनी एवं गरीब दोनों वर्गों पर पड़ता है । ऐसी स्थिति में गरीब वर्ग कभी भी सुर्य के दुष्प्रभाव से मुक्त न हो पाता क्योंकि माणिक्य रत्न हजारों की कीमत में मिल जाता है । इसी वजह से रत्नों के विशेषज्ञों ने वर्षों की खोज व अनुसंधान से अनेक उपरत्नों को ढूँढ़ निकाला है जिसका चमत्कारिक प्रभाव स्वयं मैंने भी देखा है । ये उपरत्न कभी-कभी तो मुख्य रत्न से भी अधिक लाभकारी सिद्ध होते हैं तथा इनका मूल्य भी बहुत कम होता है । ये अल्पमोती रत्न गरीब तथा सामान्य व्यक्ति की पहुँच के अन्दर आते हैं ।

माणिक्य के उपरत्न निम्न हैं—

(1) लाल रंग का तामड़ा— इसे अँग्रेजी में गारनेट कहते हैं । यह देखने में गहरा लाल, भूरा, सफेद, पीला व काले रंग का होता है । भारत में यह उत्तरी भारत में पाया जाता है । आजकल माणिक्य की जगह ज्योतिर्विज्ञ प्रायः तामड़ा धारण करने की सलाह देते हैं ।

(2) स्पाइनल— इसे हिन्दी में कटकिज कहते हैं । कुछ लोग इसे लालडी या सूर्य-मणि भी कहते हैं । यह बहुत नरम पत्थर होता है तथा अनेक रंगों में मिलता है । संसार के अनेक देशों में यह पाया जाता है । इसकी कठोरता 8, आपेक्षिक घनत्व 3.60 तथा वर्तनांक 0.72 होता है । हल्के गुलाबी रंग का स्पाइनल उत्तम माना जाता है ।

(3) माणिक्य के रंग का जिरकान अथवा हकीक— इसमें समानान्तर लहरदार धारियाँ होती हैं तथा इसमें मोम जैसी चमक व चिकनाहट होती है। यह विश्व के कई देशों में पाया जाता है।

माणिक्य रत्न तथा चिकित्सा में उसका प्रयोग—

आयुर्वेद के अनुसार सूर्य-जनित उत्पन्न रोगों से मुक्ति पाने के लिए माणिक्य भस्म बहुत उपयोगी सिद्ध होती है। वात, पित्त, कफ इन तीनों तत्त्वों को शरीर में सम भाव में बनाए रखने में नियमित माणिक्य भस्म का सेवन चमत्कारिक प्रभाव डालता है। इसी प्रकार क्षय रोग, उदर-शूल, फोड़ा, फुन्सी, घाव तथा नेत्र रोग में यह बहुत उपयोगी सिद्ध होता है। यह भस्म पीलिया, रक्त प्रवाह, लकवा, हर्नियाँ, बुद्धिहीनता तथा कोष्ठबद्धता को दूर करती है।

माणिक्य रत्न की अंगूठी धारण करने पर विष का प्रभाव नहीं पड़ता। इसी कारण प्राचीन काल में राजा महाराजा माणिक्य रत्न की अँगूठी धारण किया करते थे। प्लेग जैसी महामारी का प्रभाव भी माणिक्य धारण करने वाले व्यक्ति पर नहीं पड़ता।

■ ■ ■

सौम्य एवं शीतलता का प्रतीक
चंद्र ग्रह

परिचय— खगोल विज्ञान में चन्द्रमा को ग्रह नहीं माना गया है । क्योंकि अन्य ग्रह सदैव सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करते हैं जबकि चन्द्रमा पृथ्वी के चारों ओर परिक्रमा करता है । इसलिए खगोल-शास्त्री चन्द्रमा को उपग्रह की संज्ञा देते हैं । लेकिन ज्योतिष शास्त्र में चन्द्रमा को एक ग्रह की कोटि में रखा गया है । इसलिए हम यहाँ चन्द्रमा को ग्रह मानकर ही चलेंगे ।

चन्द्रमा भी पृथ्वी, बुध, शुक्र, शनि तथा मंगल की भाँति सौर-मण्डल का एक सदस्य है । भारतीय ज्योतिष में मुख्य ग्रह सात माने गए हैं, जिनके नाम इस प्रकार हैं— 1. सूर्य, 2. चन्द्रमा, 3. मंगल, 4. बुध, 5. बृहस्पति, 6. शुक्र और 7. शनि । राहु और केतु को छाया-ग्रह माना गया है । चन्द्रमा यद्यपि पृथ्वी का उपग्रह है, लेकिन पृथ्वी के अत्यन्त निकट होने के कारण एक पूर्ण ग्रह की भाँति प्रभावित करने की क्षमता रखता है । इसी कारण से इसे ज्योतिष शास्त्र में एक ग्रह के रूप में मान्यता दी गई है ।

चन्द्रमा को हिन्दी साहित्य में निम्न नामों से जाना जाता है— इन्द्र, शीतांशु, मयंक, शशि, सोम, सुधाकर, हिमांशु, राकेश, रजनीश, निशाकर, तारापति, आत्रेय आदि । उर्दू, फारसी तथा अरबी में चन्द्रमा को क्रमशः कभट, माह, फार आदि के नाम से सम्बोधित किया जाता है । अंग्रेजी में इसके मून के नाम से सब परिचित हैं ।

पौराणिक परिचय— चन्द्रमा के संदर्भ में पौराणिक परिचय यह है कि चन्द्रमा ब्रह्मा के पुत्र महर्षि ''अत्रि'' के नेत्र-जल से उत्पन्न हुए हैं । इसी कारण चन्द्रमा का नाम आत्रेय भी पड़ा है । चन्द्रमा का विवाह प्रजापति दक्ष ने अपनी 27 कन्याओं से कर दिया था । चन्द्रमा के 27 पत्नियाँ ही 27 नक्षत्र के रूप से जानी जाती हैं ।

चन्द्रमा के सम्बन्ध में एक अन्य पौराणिक कथा है कि चन्द्रमा अनुसूया के तीन पुत्रों में से एक हैं ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— चन्द्रमा के सम्बन्ध में वैज्ञानिक दृष्टिकोण प्राचीन भारतीय पौराणिक दृष्टिकोण तथा ज्योतिषीय दृष्टिकोण से एकदम भिन्न यथार्थ पर निर्भर है । चन्द्रमा पर मानव के अवतरण के पश्चात् वैज्ञानिकों ने जो तथ्य निकाला है वह यह है

कि चन्द्रमा में धूल एवं पर्वतों से भरे धरातल हैं तथा वहाँ आक्सीजन नाम की कोई गैस नहीं है जिससे किसी प्राणी (जीवजन्तु अथवा मनुष्य) के होने की कल्पना की जा सके ।

खगोल विज्ञान के अनुसार सर्वप्रथम चन्द्रमा भी पृथ्वी का ही एक अंग था जो कि बाद में पृथ्वी से अलग हो गया । इस प्रकार चन्द्रमा, पृथ्वी की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से अलग हटकर सौर मंडल में एक ग्रह की भाँति पृथ्वी के चक्कर लगाता रहता है । कुछ वैज्ञानिक चन्द्रमा को सूर्य के एक भाग के रूप में मानते हैं । जो कुछ भी हो— चन्द्रमा में मानव के अवतरण के उपरान्त केवल एक उपग्रह का स्थान रखता है ।

चन्द्रमा पृथ्वी से 2,38,000 मील दूर स्थित है तथा इसका व्यास 2,163 मील है । 27 ½ दिन में पृथ्वी की एक परिक्रमा पूरा कर लेता है । उसमें स्वयं का प्रकाश नहीं होता । यह सूर्य के प्रकाश से प्रकाशित होता है । पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा पर सूर्य की पूरी किरणें पड़ती हैं, अतः उस दिन वह पूरा दिखलाई पड़ता है । जबकि अमावस्या के दिन चन्द्रमा के सूर्य और पृथ्वी के बीच आ जाने से वह सूर्य की ओर तो चमकता है किन्तु पृथ्वी की ओर पूर्ण अन्धकार दिखलाई पड़ता है । सूर्य ग्रहण और चन्द्र ग्रहण भी चन्द्रमा की स्थितियों के कारण ही होते हैं तथा समुद्र में ज्वार-भाटा भी चन्द्रमा के कारण ही होता है ।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण— ज्योतिष शास्त्र में चन्द्रमा को सूर्य तथा बुध का नैसर्गिक मित्र माना गया है । शुक्र, मंगल और शनि के साथ इसका समभाव माना गया है । राहु तथा केतु इसके शत्रु माने गये हैं ।

चन्द्रमा बुध राशि में उच्च का तथा वृश्चिक राशि में नीच का होता है । इसकी स्वराशि ''कर्क'' है चन्द्रमा की योग-कारक राशियाँ निम्न हैं— 1. मेष राशि, 2. तुला राशि, 3. मीन राशि । चन्द्रमा का प्रभाव जातक के जीवन पर 24 से 26 वर्ष की आयु तक पड़ता है । चन्द्रमा का अशुभ फल कृतिका, उत्तरा, फाल्गुनी, अश्लेषा, ज्येष्ठा, उत्तराषाढ़ा तथा रेवती नक्षत्रों पर होता है । रोहिणी, श्रवण, पुर्नवसु, विशाखा तथा पूर्वा-भाद्रपदा नक्षत्रों पर चन्द्रमा का शुभ प्रभाव पड़ता है । यदि किसी जातक का जन्म उपरोक्त नक्षत्रों में होता है तो ऐसे विशिष्ट जातकों पर चन्द्रमा श्रेष्ठ फल प्रदान करेगा । चन्द्रमा पुर्नवसु, पुष्य तथा अश्लेषा नक्षत्रों का स्वामी होता है । चन्द्रमा को चतुर्थ भाव का कारक माना गया है किन्तु बली चन्द्रमा ही चतुर्थ भाव से अपना श्रेष्ठ फल प्रदान करता है । यदि चन्द्रमा चतुर्थ भाव में जन्मांक चक्र में पड़ा हो किन्तु निर्बल हो अथवा राहु के साथ मिलकर ग्रहण योग बना रहा हो तो ऐसी स्थिति में चन्द्रमा चतुर्थ भाव में होते हुए भी अपना सम्पूर्ण फल नहीं देगा ।

चन्द्रमा को ज्योतिष शास्त्र में कालपुरुष का ''मन'' माना गया है । यद्यपि नवग्रहों में सूर्य और चन्द्रमा को राजा की संज्ञा दी गई है किन्तु ज्योतिष शास्त्र में चंद्रमा को सूर्य की अर्द्धांगिनी के रूप में स्वीकार किया गया है । भारतीय फलित ज्योतिष में पूर्ण चन्द्र को सौम्य ग्रह तथा क्षीण चन्द्र को पाप ग्रह के रूप में माना जाता है । जन्म कुण्डली में 5, 9, 12, 2, 4 तथा 8 स्थान चंद्रमा के विरुद्ध स्थान माने गये हैं जबकि 1, 3, 6, 7, 10 तथा 11 भाव में चंद्रमा को शुभ स्थान के रूप में मान्यता प्राप्त है ।

चन्द्रमा : आधिपत्त्य तथा उत्पन्न होने वाले रोग—

चन्द्रमा जन्मांक चक्र में मन का प्रतिनिधित्त्व करता है । इसके द्वारा जातक के मन, अन्तःकरण, मानसिक स्थिति, कोमलता तथा हृदय की दयालुता के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त होती है । इसका अधिकार क्षेत्र मनुष्य के शरीर में गले से हृदय तक अण्डकोष तथा गर्भाशय है । इसके द्वारा मनुष्य के शरीर में होने वाले रोगों के विषय में जानकारी प्राप्त हो सकती है । चंद्रमा के जन्मांक चक्र में शुभ स्थिति होने पर जातक का पारिवारिक-जीवन, कल्पना-शक्ति, विनम्रता, मानसिक स्थिति, सुख सम्पत्ति तथा उत्तम पास पड़ौस मिलता है । ज्योतिष विद्या में रुचि होती है तथा उसका जीवन, यश, प्रतिष्ठा व समृद्धि वैभव की वृद्धि में बीतता है । कर्क राशि वाले जातक अधिकांशतः चन्द्रमा के प्रभाव से प्रभावित रहते हैं । कर्क राशि चन्द्रमा की स्वराशि है । अतः इस राशि वालों को चन्द्रमा का प्रभाव विशेष रूप से प्रभावित करता है । यदि कर्क राशि का चन्द्रमा बली हो तथा जन्मांक चक्र के शुभ भाव में बैंटा हो तो जातक कलाकार, प्रणयी, सुन्दर, कवि, साहित्यकार तथा उदार प्रकृति का होता है । इस राशि से प्रभावित व्यक्ति स्त्री सुख को प्राप्त करने में सदैव लालायित रहते हैं ।

चन्द्रमा ग्रह के अशुभ प्रभाव से जातक आलस्य, नेत्र-रोग, पाण्डु रोग, जल रोग, कफ रोग से पीड़ित रहता है । चन्द्रमा के अशुभ प्रभाव से स्त्री संसर्गजन्य रोग, पीनस रोग तथा मानसिक विकार जैसे रोग उत्पन्न होते हैं । उपरोक्त रोगों से व्यक्ति के प्रभावित रहने का कारण यह है कि चन्द्रमा ग्रह उपरोक्त रोगों का प्रतिनिधित्त्व करता है । जब जातक के जन्मांक चक्र में चन्द्रमा अशुभ भाव में बैठा हो अथवा क्षीण चन्द्र हो अथवा मीन राशि में हो अथवा शत्रु ग्रहों के साथ विद्यमान हो तो जातक को उपरोक्त रोगों में से किसी एक अथवा अधिक रोगों से पीड़ित रहना पड़ता है ।

चन्द्रमा से स्त्री के मासिक धर्म का विचार किया जाता है । क्षीण चन्द्र होने की स्थिति में जातक कैल्शियम सम्बन्धित रोगों में पीड़ित रहता है । उसके शरीर में कैल्शियम की कमी बनी रहती है ।

चन्द्रमा को वैश्य जाति का घर, सदैव गतिशील रहने वाला, चंचल स्वभाव वाला, गौर वर्ण, सत्वगुण प्रधान, मीठी वाणी का अधिपति, वर्षा ऋतु तथा सुन्दर नेत्रों का स्वामी माना गया है । अंकशास्त्र में चन्द्रमा भाग्यांक **2** का प्रतिनिधित्त्व करता है ।

द्वादश भावों में चन्द्रमा से उत्पन्न रोग—

जन्मांक-चक्र में सभी ग्रह द्वादश स्थानों में से किसी एक स्थान में अवश्य रहता है । चंद्रमा भी जन्मांक चक्र के भिन्न-भिन्न स्थान में रहकर निम्न अशुभ प्रभाव करता है जिससे जातक को विभिन्न रोग आ घेरते हैं ।

प्रथम भाव— यदि जन्मांक चक्र के प्रथम भाव में क्षीण चन्द्र हो तो जातक नेत्र-रोगी, गूँगा, बहरा, उन्माद रोगी तथा अन्य रोगों से पीड़ित रहता है । इसी प्रकार जब चंद्रमा प्रथम भाव में नीच राशि का होता है अथवा शत्रु क्षेत्रीय होता है तो जातक को उपरोक्त रोगों में से किसी प्रकार का रोग अवश्य होता है । प्रथम भाव को लग्न भाव कहा जाता है । यदि लग्नेश निर्बल होता है तो जातक का शरीर रोगी रहता है तथा जातक किसी न किसी दुःख से पीड़ित रहता है ।

द्वितीय भाव— द्वितीय भाव में जब क्षीण चन्द्रमा विद्यमान हो तो जातक बोलने में तुतलाता है, उसकी जवान लगती है तथा वह अटक-अटक कर बोलता है । उसकी बुद्धि अल्प होती है । इसी प्रकार जब द्वितीय भाव में नीचस्थ चन्द्रमा विद्यमान होता है तब जातक दुःखी, दुर्बुद्धि तथा कमजोर स्मरण-शक्ति वाला होता है । यदि द्वितीय भाव में चन्द्रमा मंगल के साथ वृश्चिक अथवा मकर राशि में हो तो जातक चर्मरोग से पीड़ित रहता है ।

तृतीय भाव— तृतीय भाव में चंद्रमा रहने से जातक दुबले-पतले शरीर का होता है । जातक कफ रोग तथा कण्ठ सम्बन्धी रोगों से पीड़ित रहता है । यदि चन्द्रमा तृतीय भाव में शुक्र के साथ हो तो जातक को कर्ण रोग से पीड़ित होना पड़ता है, किन्तु ऐसा तभी होता है जब चन्द्रमा अपनी नीच राशि वृश्चिक में हो । जातक को श्वास तथा उदर सम्बन्धी रोग तब होते हैं जबकि चन्द्रमा लग्नेश अथवा षष्ठेश से योग रखता हो । अनुभव के आधार पर अधिकांश श्वास–रोगी चन्द्रमा तथा लग्नेश व षष्ठेश के योग पर पाए जाते हैं ।

चतुर्थ भाव— यदि चतुर्थ स्थान पर चन्द्रमा अपनी स्वराशि, उच्च राशि पर अथवा मित्र राशि पर हो तो जातक का शरीर निरोग रहता है । किन्तु जातक का बाल्यकाल सुखद नहीं रहता । उसे शारीरिक पीड़ा तथा रोग परेशान करते रहते हैं । युवावस्था में पहुँचने के उपरान्त उसका स्वास्थ्य ठीक होता है । यदि चंद्रमा शुक्र से युति रखता हुआ चतुर्थ

भाव में विद्यमान हो तो जातक व्यसनी होता है तथा उसे मद्यपान करने की लत होती है। जातक टी. बी., लीवर-वृद्धि, अजीर्ण तथा अपच का रोगी होता है।

पंचम भाव— यदि पंचम भाव में चन्द्रमा पाप ग्रह से युक्त हो तो जातक को वीर्य सम्बन्धी रोग रहता है। उसका वीर्य शीघ्र स्खलित हो जाता है। उसे सन्तान का दुःख हमेशा पीड़ित करता रहता है। महिलाएं गर्भ सम्बन्धी रोग से पीड़ित रहती हैं। चन्द्रमा की अशुभ स्थिति होने पर मूत्रकृच्छ (सूजाक) भी जातक को पीड़ित करता है।

षष्ठ भाव— षष्ठ भाव में चन्द्रमा की उपस्थिति जातक को वात, कफ रोगी, नेत्र रोगी, मन्दाग्नि रोगी एवं वीर्य-मूत्र रोगी बनाती हैं। जातक का बाल्यकाल उदर विकार तथा अस्वस्थता में बीतता है। यदि षष्ठभाव में चन्द्रमा वृषभ राशि पर विद्यमान हो तो जातक को कुष्ठ रोग होता है। उसके गले में खराबी बनी रहती है। इसी प्रकार यदि षष्ठ भाव में वृश्चिक राशि में चन्द्रमा विद्यमान है तो जातक निश्चय ही बवासीर, भगन्दर जैसे गुप्त रोग से पीड़ित रहता है। यदि चन्द्रमा षष्ठ भाव में राहु अथवा केतु से युति करते हुए विद्यमान है तो जातक निश्चय ही जलोदर, गलगण्ड तथा पेट के रोग से ग्रसित रहता है।

सप्तम भाव— यदि जन्मांक चक्र में सप्तम भाव में चन्द्रमा उपस्थित रहता है तो जातक दुबले-पतले शरीर का होता है। सप्तम भाव में यदि वृषभ राशि का चन्द्रमा हो तो जातक स्थूल शरीर का होता है। सप्तम भाव में चन्द्रमा शुभ तथा प्रभावशाली तभी होता है जब वह उच्च राशि अथवा पाप ग्रह से दृष्ट न हो। यदि सप्तम भाव में वृष राशि है तथा निर्बल चन्द्रमा सप्तम भाव में विद्यमान है तो ऐसी दशा में जातक वीर्य अथवा मूत्राशय के रोग से अवश्य ग्रसित होगा। इसी प्रकार यदि चन्द्रमा के साथ शनि की युति सप्तम भाव में हो तो ऐसी अवस्था में जातक का विवाह विलम्ब से होता है नपुन्सकता, स्त्री-वियोग आदि कष्ट उसे पीड़ित करते हैं।

अष्टम भाव— अष्टम भाव में चन्द्रमा की उपस्थिति अनेक प्रकार की शारीरिक व्याधियाँ उत्पन्न करती हैं। उसका बाल्यकाल अनेक रोगों से कष्टप्रद रहता है। जातक को नेत्र-रोग, पित्त-रोग तथा प्रमेह सम्बन्धी रोग होते हैं। यदि अष्टम भाव में चन्द्रमा स्वक्षेत्री अथवा मित्र राशि में हो तो जातक को श्वास की तकलीफ रहती है। इसी प्रकार यदि चन्द्रमा अष्टम-भाव में बुध के साथ युति कर रहा हो तो जातक को टी. बी. जैसे रोग होते हैं। अष्टम भाव में चन्द्रमा चाहे अकेला हो अथवा किसी भी ग्रह के साथ युति करते हुए विद्यमान हो जातक के लिए अशुभ फलदायी सिद्ध होता है। ऐसे जातक सदैव किसी न किसी बीमारी से ग्रसित रहते हैं। जातक निर्बल शरीर का स्वामी होता है तथा उसे मूत्राशय सम्बन्धी रोग होते हैं।

नवम भाव— नवम भाव में चन्द्रमा विद्यमान होने से जातक शरीर से निरोग तथा सुन्दर व्यक्तित्त्व का होता है । जातक दीर्घायु, सौभाग्यशाली तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है । किन्तु यदि चन्द्रमा नवम भाव में नीच राशि का होकर विद्यमान है तो जातक उदर रोग, कमर दर्द तथा अकाल मृत्यु का भय पाने वाला होता है ।

दशम भाव— दशम भाव में पूर्ण चन्द्र अथवा उच्च राशिस्थ चन्द्रमा होने पर जातक निरोग, स्वस्थ तथा प्रसन्नचित्त स्वभाव का होता है । बाल्यावस्था में कुछ शारीरिक कष्ट होते हैं किन्तु युवावस्था पूर्ण सुखी, ऐश्वर्य तथा निरोगमय रहती है । यदि दशम भाव में चन्द्रमा पाप ग्रह अथवा शत्रु क्षेत्री अथवा नीच राशिस्थ होकर विद्यमान है तो जातक दुर्बल शरीर वाला तथा पापी स्वभाव का होता है ।

एकादश भाव— एकादश भाव में चन्द्रमा की उपस्थिति सामान्य तौर पर जातक के लिए मंगलकारी तथा शारीरिक दृष्टि से निरोगी रखने वाली है । जातक गौरवर्ण तथा दीर्घायु जीवन को प्राप्त करता है । किन्तु यदि चन्द्रमा एकादश भाव में शत्रु राशिस्थ अथवा नीच राशि का अथवा क्षीण रहता है तो जातक के लिए हानिप्रद होता है । जातक को शारीरिक कष्ट व रोगों का सामना करना पड़ता है ।

द्वादश भाव में चन्द्रमा की उपस्थिति जातक के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती है । जातक कफ–विकार, नेत्र रोगी, शीत विकार तथा दुर्बल देह वाला होता है । किन्तु यदि चन्द्रमा द्वादश भाव में शुभ ग्रहों से युक्त हो अथवा बली हो तो जातक के लिए लाभदायक होता है । यदि द्वादश भाव में चंद्रमा मंगल की युक्ति हो तो जातक नेत्र-रोग से पीड़ित रहता है तथा उसका दाम्पत्त्य जीवन कलहपूर्ण होता है । इसी प्रकार यदि द्वादश भाव में चंद्रमा कन्या, कर्क अथवा मीन राशि में विद्यमान हो तो जातक शीत विकार से पीड़ित रहता है ।

जन्मांक चक्र में चन्द्रमा और उसका प्रभाव—

सूर्य ग्रह की भाँति चन्द्रमा जन्मांक चक्र में मुख्य रूप से दो प्रकार के प्रभाव डालता है । 1. राशिगत प्रभाव और 2. भावगत प्रभाव । जातक के सम्पूर्ण जीवन काल में इन्हीं का असर रहता है । वैसे तो ग्रहों के छः प्रकार के बल होते हैं और उन सभी का जातक के जीवन पर प्रभाव पड़ता है । स्थान, बल, दिग्बल, काल बल, नैसर्गिक बल, चेष्टा बल और दृग्बल । ये छः प्रकार के बल होते हैं । इसी प्रकार सूर्य से शनि, शनि से मंगल, मंगल से गुरु, गुरु से चन्द्रमा, चन्द्रमा से शुक्र, शुक्र से बुध एवं बुध से चन्द्रमा का बल बढ़ता है । यहाँ हम मुख्य रूप से चन्द्रमा के राशिगत प्रभाव तथा भावगत प्रभाव की विवेचना कर रहे हैं—

चन्द्रमा और उसका राशिगत प्रभाव—

चन्द्रमा का राशिगत प्रभाव जन्मांक चक्र की द्वादश राशियों पर ऐसे पड़ता है।

मेष राशि— जन्मांक चक्र में मेष राशि पर चन्द्रमा के विद्यमान रहने पर जातक को माता का सुख नहीं मिलता। जातक स्वभाव से चिड़चिड़ा, कामुक, भ्रमणशील, शूर तथा चंचल होता है। उसे मित्रों तथा स्वजनों का सहयोग नहीं मिलता। इन्हें जल तथा ऊँचे स्थानों से भय बना रहता है। स्वतंत्र व्यवसाय अथवा युद्ध विभाग में ये सफलता प्राप्त करते हैं। आर्थिक रूप से इन्हें परेशान नहीं होना पड़ता है।

वृष राशि— यदि वृष राशि में चन्द्रमा हो तो जातक सर्वप्रिय, सुन्दर, प्रफुल्ल, अधिक कन्या संतति वाला, संगीत में रुचि रखने वाला, चित्रकार, कवि तथा मिष्ठान्न-प्रेमी होता है। जातक को आजीवन माता पिता का सुख प्राप्त होता है तथा उसके जीवन में अनेकों बार आर्थिक लाभ अर्जित करने के अवसर आते हैं। जातक का कई स्त्रियों से सम्बन्ध होता है। जातक गुरुजनों, ब्राह्मण तथा साधु सन्तों का भक्त होता है। यदि चन्द्रमा वृष राशि में निर्बल अथवा क्षीण हो तो जातक को उपरोक्त फल नहीं प्राप्त होता। जातक अजीर्ण, शीत विकार, कफ विकार तथा नेत्र रोग से पीड़ित रहता है। अशुभ प्रभाव के कारण जातक को कारावास का दण्ड भी भोगना पड़ता है।

मिथुन राशि— मिथुन राशि में चन्द्रमा होने से जातक सुन्दर नेत्र वाला, विद्वान, रति-प्रिय तथा धन संपति, भवन वाहन तथा नौकर आदि से युक्त होता है उसकी मानसिक शक्ति विलक्षण होती है तथा यशस्वी, बुद्धिमान व प्रसन्नतापूर्वक विलासी जीवन व्यतीत करता है। इनका बालपन विशेष सुखी होता है। इस राशि में उत्पन्न हुए जातक सफल नेत्र-चिकित्सक बनते हैं। माता-पिता के भक्त होते हैं तथा जीवन में अनेक बार व्यवसाय में परिवर्तन करते हैं। इनकी संतान कम होती हैं तथा इन्हें कर्ण-रोग तथा शत्रु-भय का सामना करना पड़ता है। इस राशि के जातक शारीरिक तथा मानसिक दोनों रूप में कार्य करने में सफल होते हैं।

कर्क राशि— यदि चन्द्रमा कर्क राशि में हो तो जातक के अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रहते हैं। इस राशि में चन्द्रमा होने पर जातक स्वभाव से संवेदनशील, धर्मात्मा, पुण्य कर्म करने वाला, यशस्वी, माता-पिता तथा गुरुजनों का भक्त, श्रेष्ठ बुद्धि, कामी, उन्माद-रोगी अथवा ज्योतिषी होता है। उसे संगीत, काव्य, साहित्य तथा चित्रकला से प्रेम होता है। आर्थिक स्थिति ज्यादा सुदृढ़ नहीं रहती। जातक पतिव्रता स्त्री का पति होता है किन्तु स्वयं परस्त्री-गामी होता है। उसके कई सन्तानें होती हैं किन्तु उनमें से केवल एक ही योग्य होती है।

सिंह राशि— चन्द्रमा यदि जन्मांक चक्र में सिंह राशि में विद्यमान हो तो जातक दाँत तथा पेट का रोगी होता है। उसकी सन्तानें कम होती हैं तथा वह वन, पर्वत-स्थलों में भ्रमण करने की रुचि रखता है। स्वभाव से हँसमुख, पराक्रमी, शूरवीर, गम्भीर, सत्यवादी तथा संगीत-प्रेमी होता है। उसका दाम्पत्त्य जीवन सुखमय नहीं रहता तथा पत्नी से वैचारिक मतभेद बने रहते हैं। जातक जीवन में उन्नति करता है तथा उसे अर्थाभाव कभी नहीं रहता। माता से विशेष स्नेह रहता है। जातक घर में कलह करने वाला, हिंसक, माँस खाने वाला तथा क्रोधी होता है।

कन्या राशि— यदि जन्मांक चक्र में चन्द्रमा कन्या राशि में विद्यमान हो तो जातक देखने में सुन्दर, मधुर-भाषी, कामी तथा अधिक कन्या संतति वाला होता है। जातक बुद्धिमान, विनम्र तथा विद्याभ्यासी होता है। उसके आमदनी के स्रोत कई होते हैं तथा वह अनेक विद्याओं का जानकार होता है। उसे दूसरे की सम्पत्ति प्राप्त होती है तथा मित्रों में उसका आदर रहता है। जातक का दाम्पत्त्य जीवन सुखमय बीतता है तथा उसे कई बार परदेश यात्रा करनी पड़ती है। उसकी पत्नी कटु स्वभाव वाली होती है। उसे अपने सम्बन्धियों तथा परिवार के सहयोग से लाभ प्राप्त होता है। युवावस्था में उसे किसी भारी वस्तु के गिरने से चोट लगने की सम्भावना अथवा शस्त्र-भय रहता है।

तुला राशि— जन्मांक चक्र में तुला राशि में चन्द्रमा के विद्यमान रहने पर जातक आस्तिक, धनवान, परोपकारी तथा कला-प्रेमी होता है। स्वभाव से स्त्री-लोलुप, विषयी, वस्तु-संग्रही तथा सामाजिक कार्यों में दिलचस्पी रखने वाला होता है। ब्राह्मण तथा माता पिता की आज्ञा पालन करने वाला होता है। तुला राशि वाले जातक प्रायः द्विभार्या योग वाले होते हैं। ये जातक कभी-कभी लोभवश अथवा दुष्ट जनों की संगति के प्रभाव से अपमान भी सहते हैं, निराशा तथा विक्षिप्त के समान आचरण करने वाले होते हैं। इन्हें धन प्राप्त करने में अनेक परेशानियों का समना करना पड़ता है तथा सदैव धन की कमी इनके पास बनी रहती है। आमदनी से अधिक खर्च करने वाले होते हैं तथा प्रत्येक कार्य के लिए दूसरों पर आश्रित रहने की प्रवृत्ति रहती है।

वृश्चिक राशि— यदि जन्मांक चक्र में चंद्रमा वृश्चिक राशि में हो तो जातक नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन तथा परस्त्रीरत होता है। उसे मादक द्रव्यों के सेवन की लत होती है तथा वह असंतोषी, स्वजनों से शत्रुता करने वाला तथा विश्वासघाती होता है। उसकी एक कन्या अथवा पुत्र उसे सुख देते हैं। अपनी गल्तियों के कारण उसे कारावास का दण्ड भी भोगना पड़ता है तथा किसी-किसी की दो पत्नी होती हैं। वृश्चिक राशि में चन्द्रमा होने पर जातक को व्यवसाय में हानि उठानी पड़ती है। अगर अन्य कोई ग्रह

अनुकूल न हुए तो जातक कभी भी व्यवसाय में प्रगति नहीं कर सकता । जातक के मन में ईर्ष्या की प्रवृत्ति की अधिकता रहती है ।

धनु राशि— जन्मांक चक्र में चन्द्रमा धनु राशि में स्थित हो तो जातक एक सफल वक्ता, शोभन व्यक्तित्त्व शिल्पज्ञ तथा भविष्य-वक्ता होता है । उसका चरित्र निर्मल होता है तथा वह ईश्वर का उपासक होता है । उसकी बाल्यवस्था सुख तथा वैभव से परिपूर्ण बीतती है । शत्रु सदैव उससे पराजित होते हैं तथा उसे राज्य द्वारा सम्मान प्राप्त होता है । जातक बुद्धिमान, शान्त-स्वभाव, कुलदीप, कवि-हृदय, धनवान तथा स्पष्टवादी होता है । प्रेम में अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाला किन्तु बल प्रयोग करने पर किसी के वश में न आने वाला इनके विलक्षण स्वभाव का एक अंग है । इन्हें स्त्री जाति के प्रति विशेष आकर्षण रहता है । इनका दुभार्या विवाह भी सम्भव है । किशोरावस्था में शारीरिक कष्ट सहना पड़ता है ।

मकर राशि— यदि चन्द्रमा किसी जातक के जन्मांक चक्र में मकर राशि में विद्यमान हो तो ऐसा जातक तीव्र स्मरण-शक्ति वाला, क्रोधी, यशस्वी, संगीत तथा काव्य के प्रति रुचि रखने वाला, दानशील, सत्यवादी तथा गुप्त चिन्ताओं से ग्रसित रहता है । उसका व्यक्तित्त्व शोभन तथा कान्तिमय होता है । मकर राशि में चन्द्रमा होने पर विवाह उससे बड़ी आयु के स्त्री के साथ होना सम्भव रहता है । वह लोभवश कभी-कभी अपमान व निराशा से ग्रसित भी होता है उसे अपने पूर्वजों द्वारा बनाए गए रीति-रिवाज को कायम रखने की ललक रहती है तथा वह अपने कुल में काफी प्रगति करता है ।

कुम्भ राशि— कुम्भ राशि में चन्द्रमा स्थित होने पर जातक आलसी दुःखी, मद्यपान करने वाला, परस्त्री-आशक्त तथा अपनी पत्नी के संग वैचारिक मतभेद रखने वाला, देखने में दुर्बल शरीर तथा नीच संगति में बैठने वाला होता है । यदि चन्द्रमा कुम्भ राशि में किसी शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक कार्य-कुशल, शत्रुहन्ता, मिष्ठान्न प्रेमी, दयालु तथा प्रवासी होता है । जातक राजनैतिक क्षेत्र में रुचि रखता है तथा उसके जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं । जातक का भाग्योदय तीसवें वर्ष के उपरान्त होता है ।

मीन राशि— जन्मांक चक्र में मीन राशिस्थ चन्द्रमा होने पर जातक शिल्पकार, धार्मिक, प्रसन्नचित्त, अनेक शास्त्रों का जानकार, कामी तथा स्त्रियों से प्रेम करने वाला होता है । इनमें मादक द्रव्यों को लेने की प्रवृत्ति पाई जाती है तथा इनके पुत्र सौभाग्यशाली तथा कुलदीपक होते हैं । जातक बोलने में प्रवीण, चतुर तथा निर्मल हृदय का होता है । शत्रु इनके सम्मुख कभी नहीं टिकते । ये कंजूस प्रवृत्ति के नहीं होते तथा मित्र इनके सहयोगी होते हैं । संगीत, कला, काव्य, साहित्य, लेखन में इनकी अभिरुचि होती है । इन्हें जल

से बड़ा लगाव रहता है फलतः जलोत्पन्न पदार्थों के व्यवसाय में इनकी अभिरुचि रहती है । उससे ये लाभ भी अर्जित करते हैं ।

चन्द्रमा का भावगत प्रभाव—

जिस प्रकार चन्द्रमा का शुभ-अशुभ प्रभाव जातक के जन्मांक चक्र की विभिन्न राशियों पर अलग-अलग पड़ता है उसी प्रकार जन्मांक चक्र के बारह भावों में चंद्रमा का शुभ-अशुभ प्रभाव अलग-अलग तथा निम्न प्रकार से होता है—

प्रथम भाव— यदि प्रथम भाव में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान, ऐश्वर्य शाली, सुखी, व्यवसायी तथा स्थूल शरीर का होता है । प्रथम भाव को लग्न भी कहा जाता है तथा प्रथम भाव में जो राशि स्थित रहती है उसके स्वामी को लग्नेश कहते हैं । यदि लग्नेश निर्बल हो तो जातक रोगी रहता है किन्तु यदि लग्नेश शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक स्वस्थ रहता है तथा युद्ध अथवा मुकदमे के बाद उसे धन-लाभ होता है । यदि प्रथम भाव में उच्च राशि का चन्द्रमा विद्यमान हो तो जातक के सन्तान अधिक होती हैं तथा उसे धन ऐश्वर्य की कमी नहीं रहती किन्तु यदि क्षीण चंद्र प्रथम भाव में रहता है तो जातक नेत्र-रोगी, उन्माद रोगी, नीच स्वभाव का, व्याधि-ग्रस्त तथा दरिद्र होता है । प्रथम भाव में मीन राशि का चंद्र उपस्थित हो तो जातक लोकप्रिय तथा समाज का गौरव बढ़ाने वाला होता है । इसी प्रकार यदि चंद्रमा प्रथम भाव में वृश्चिक राशि का हो तो जातक रोगी एवं सिंह राशि अथवा कन्या राशि होने पर नेत्र-रोगी होता है । मिथुन, कन्या, धनु, कुम्भ अथवा तुला राशि में चंद्र प्रथम भाव में पड़े तो जातक विद्वान तथा शास्त्रों का ज्ञाता होता है ।

द्वितीय भाव— द्वितीय भाव में चंद्रमा होने पर जातक परम भाग्यशाली होता है । यदि द्वितीय भाव में उच्च राशि का चंद्रमा हो अथवा बली चंद्रमा हो तो जातक का व्यक्तित्त्व अति शोभन तथा कांतिमय होता है । यदि क्षीण चंद्र द्वितीय भाव में विद्यमान हो तो जातक मुख–रोगी, अल्प बुद्धि तथा धनहीन होता है । शुभ चन्द्र होने की दशा में जातक मधुरभाषी, परदेशवासी, सहनशील, शान्तिप्रिय, उदार, विद्याप्रेमी, स्त्री विलासी तथा मित्रों का सुख पाने वाला होता है । द्वितीय भाव में चन्द्रमा के विद्यमान रहने से जातक को 18 वर्ष की आयु में धनलाभ होता है । जातक को सोने, चाँदी के व्यवसाय में धन-लाभ होता है किन्तु नीचस्थ चन्द्र होने पर जातक दुखी, दुर्बुद्धि, धनहीन होता है ।

तृतीय भाव— जन्मांक चक्र में तृतीय भाव में चन्द्र रहने पर जातक प्रसन्नचित्त, आस्तिक, मधुरभाषी, कफरोगी तथा मिलनसार प्रकृति का होता है । तृतीय भाव में चन्द्रमा यदि शुभ राशि में हो अथवा उच्च का हो अथवा मित्र-क्षेत्री हो तो जातक काव्य प्रेमी, साहसी, छोटे भाइयों से प्रेम पाने वाला तथा तपस्वी होता है । यदि चन्द्रमा नीच राशिस्थ

हो अथवा लग्नेश तथा षष्ठेश का योग हो तो जातक राज-दण्ड, चोर-भय तथा गले के रोग से पीड़ित रहता है। जातक स्वभाव से मनमौजी, धार्मिक, बन्धु-प्रेमी तथा विद्वान होता है। उसे आर्थोपार्जन हेतु प्रवास करना पड़ता है। यदि तृतीय भाव में चन्द्रमा शुक्र ग्रह के साथ युति करते हुए विद्यमान हो तो उसे अपनी बहिन से सुख मिलता है।

चतुर्थ भाव— चन्द्रमा जन्मांक चक्र में चतुर्थ भाव में विद्यमान हो तो जातक दानशील, सुखी, उदार, शोभन व्यक्तित्त्व, उत्तम स्वास्थ्य, कृषि से लाभ अर्जित करने वाला, जल से प्रेम करने वाला, बुद्धिमान तथा प्रेमी होता है। इनका भाग्योदय विवाह के उपरान्त होता है। यदि चतुर्थ भाव में चन्द्रमा बली होकर विद्यमान है अथवा उच्च राशिस्थ है तो जातक को वाहन-सुख मिलता है। जातक अपने भाइयों में श्रेष्ठ होता है, समाज में यश तथा कीर्ति अर्जित करता है। जातक की बाल्यावस्था आर्थिक अभाव तथा शारीरिक कष्ट में बीतती है। यदि चतुर्थ भाव में क्षीण चन्द्र हो अथवा नीच राशिस्थ चन्द्र हो तो जातक व्यसनी, नीचों का सेवक, ग्रह तथा वाहन-सुख से हीन होता है। यदि चतुर्थ भाव में चन्द्रमा मंगल की युति हो तो जातक पेटू होता है।

पंचम भाव— यदि जातक के जन्मांक चक्र के पंचम भाव में चन्द्रमा विद्यमान हो तो जातक चंचल स्वभाव का होता है तथा उसकी कन्या संतति अधिक होती है। जातक को आकस्मिक धन सट्टे तथा लाटरी आदि से प्राप्त होता है। जातक स्वभाव से शर्मीला होता है। तन्त्र मन्त्र जैसी गुप्त विद्या में उसकी रुचि रहती है। उसके आर्थिक स्रोत कई होते हैं पर वह व्यवसाय से आर्थिक उन्नति करता है। उसकी पत्नी सुन्दर होती है। यदि पंचम भाव में बली तथा पूर्ण चन्द्र हो तो जातक की ससुराल धनवान होती है तथा पत्नी सुशिक्षिता, पतिव्रता एवं आज्ञाकारिणी होती है। यदि पंचम भाव में चन्द्रमा क्षीण तथा नीच राशिस्थ हो तो उपरोक्त फल विपरीत पड़ता है। जन्मांक चक्र में चन्द्रमा शुभ राशिगत हो तो जातक तेजस्वी, शोभन व्यक्तित्त्व तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। यदि चन्द्रमा पंचम भाव में वृष अथवा कर्क राशि में हो तो जातक को शेयर मार्केट, सट्टे एवं लाटरी से लाभ होता है। चन्द्रमा गुरु के साथ युति करके अपना शुभ प्रभाव खो बैठता है।

षष्ठम भाव— षष्ठ भाव में चन्द्रमा होने पर जातक कफ-रोगी, खर्चीले स्वभाव वाला, नेत्र-रोगी तथा भाइयों के प्रति प्रेम रखने वाला होता है। यदि षष्ठ भाव से पूर्ण चन्द्र होतो जातक दीर्घायु, बलिष्ठ तथा शत्रुहंता होता है। उसे नोकरी में चमत्कारिक लाभ प्राप्त होता है। यदि चन्द्रमा षष्ठ भाव में वृष राशि का हो तो जातक कब्ज रोगी होता है। क्षीण चन्द्र षष्ठ भाव में अशुभ फल प्रदान करता है तथा मानसिक रूप से पीड़ित रखता है। जातक का बाल्यकाल उदर रोग तथा मंदाग्नि रोग से पीड़ित रहता है। चन्द्रमा

राहु अथवा केतु के साथ युति करे तो अशुभ फल प्राप्त हेता है । षष्ठ भाव में उच्च राशि का शनि तथा चन्द्र का योग शुभ फलकारी होता है । यदि चन्द्रमा शुक्र के साथ युति करे तो जातक बन्धु–द्वेषी होता है । किन्तु स्त्री वर्ग के पीछे अत्यधिक धन खर्च करता है ।

सप्तम भाव— सप्तम भाव में चन्द्र होने पर जातक व्यवसाय करने वाला, समाज सेवी, शान्त स्वभाव, अहंकारी तथा धैर्यवान होता है । जातक अपनी पत्नी का भक्त होता है । यदि सप्तम भाव में बली तथा उच्च राशिस्थ चन्द्र होतो जातक की पत्नी सुन्दर, शोभन व्यक्तित्त्व, सुशीला तथा धनाढ़्य परिवार की होती है । यदि सप्तम भाव में शनि चन्द्र की युति होतो जातक का विवाह देर से होता है । यदि चन्द्रमा क्षीण तथा शत्रु राशिस्थ होतो जातक का दाम्पत्त्य-जीवन कष्टप्रद बीतता है ।

अष्टम भाव— यदि जन्मांक चक्र में चन्द्रमा अष्टम भाव में होतो जातक ईर्ष्यालु स्वभाव का, प्रमेह रोगी और कामुक होता है । व्यवसाय से लाभ उठाने वाला, स्वभाव से वाचाल, स्वाभिमानी तथा कमजोर शरीर का होता है । उसे शत्रुओं से नुकसान होता है तथा मित्रों द्वारा वहिष्कृत होता है । चन्द्रमा गुरु की युति अष्टम भाव में होने पर जातक क्षय रोग से पीड़ित रहता है तथा जल में डूबने का भय रहता है । यदि अष्टम भाव में चन्द्रमा मित्र राशिस्थ अथवा स्वक्षेत्री होकर विद्यमान होतो वह सर्दी तथा कफ रोग से ग्रसित रहता है । अष्टम भाव में चन्द्रमा शुभ ग्रह से युति करके जातक को लाभ दिलाता है । क्षीण चन्द्र अष्टम भाव में विद्यमान होतो जातक की बाल्यावस्था में मृत्यु हो जाती है ।

नवम भाव— जन्मांक चक्र में यदि नवम भाव में चन्द्रमा होतो जातक प्रवल भाग्यशाली होता है । उसका सम्पूर्ण जीवन भोग-विलास, सुख, ऐश्वर्य तथा समृद्धि-पूर्वक बीतता है । उसे जीवन के सभी सुख प्राप्त होते हैं । जातक धर्मात्मा, प्रवास- प्रिय, विद्वान, साहसी, सम्पत्तिवान, उद्यमी देखने में सुन्दर तथा उत्तम सन्तान वाला होता है । जातक का दाम्पत्य जीवन सुखमय बीतता है । जातक को जीवन में तीर्थ यात्रा तथा पर्यटन का सौभीग्य प्राप्त होता है । यदि नवम भाव में चन्द्रमा शुभ ग्रह से युक्त होकर विद्‌यमान होतो जातक दीर्घायु होता है । यदि नवम भाव में पूर्ण चन्द्र विद्‌यमान होतो जातक की पत्नी सुन्दर, सुशीला, ग्रह कार्य में दक्ष तथा मनभावन होती है । किन्तु यदि नवम भाव में क्षीण चन्द्र अथवा नीच राशिस्थ होतो जातक धनहीन, श्रीहीन, ऐश्वर्यहीन, कुटिल पत्नी युक्त, मूर्ख तथा उद्योगहीन होता है तथा उसे माता पिता का सुख भी नहीं मिलता ।

दशम भाव— दशम भाव में चन्द्रमा होने पर जातक कुलदीपक, प्रसन्न चित्त, दीर्घायु, दयालु, व्यवसाय करने वाला, सुखी तथा जीवन में यश कमाने वाला होता है । जातक का अपने परिवार तथा कुटुम्ब के प्रति विशेष प्रेम व लगाव रहता है । जातक जीवन

में श्रृंगार सम्बन्धी वस्तुओं का व्यवसाय करके अर्थोपार्जन करता है । जातक को औषधि-व्यवसाय में भी लाभ होता है । यदि दशम भाव में चन्द्रमा मंगल के साथ युति करते हुए विद्यमान हो तो जातक को व्यवसाय में हानि होती है । इसी प्रकार शनि के साथ चन्द्र की दशम भाव में युति व्यवसाय में अनेक कठिनाइयाँ उत्पन्न करती है । दशम भाव में चन्द्रमा पाप ग्रहों से युति करें तो जातक का सम्बन्ध किसी विधवा स्त्री के संग होता है । जातक पापी किन्तु मित्रों का सहयोग प्राप्त करने वाला होता है ।

एकादश भाव— एकादश भाव में जन्माक चक्र में चंद्रमा हो तो जातक यशस्वी, दीर्घायु, लोकप्रिय किन्तु चंचल स्वभाव का होता है । जातक का जीवन परदेश में ही बीतता है तथा उसे राज्य द्वारा सम्मानित किया जाता है । उस की सन्तान गुणी तथा सम्पत्ति से युक्त होती है । जातक ज्योतिष तथा तन्त्र-मन्त्र विद्या में रुचि रखने वाला होता है । जातक की पत्नी सुन्दर, सुशीला तथा गृह कार्य में दक्ष होती है । जातक की कन्या सन्तान अधिक होती है । जातक के जीवन में गृह सुख, वाहन सुख तथा नौकर-चाकरों को सुख प्राप्त ह्मेता है । किन्तु यदि एकादश भाव में क्षीण चंद्र है तो जातक का जीवन बहुत संघर्ष-मय तथा शरीर रोग ग्रस्त रहता है, उसे दाम्पत्य तथा ऐश्वर्य सुख प्राप्त नहीं होता । एकादश भाव में चंद्रमा शुक्र की युति जातक को वाहन सुख दिलाती है । इसी प्रकार एकादश भाव में शनि चन्द्र युति राजयोग कारक होती है । ऐसा योग होने पर जातक अनेक विद्याओं का जानकार तथा समाज में यश प्राप्त करने वाला होता है ।

द्वादश भाव— यदि जन्मांक चक्र में चंद्रमा द्वादश भाव में विद्यमान हो तो जातक कफ रोगी, चंचल स्वभाव वाला, एकान्त प्रिय, नेत्र रोगी तथा मधुर वाणी बोलने वाला होता है । जातक के शत्रु अनेक होते हैं, वह स्त्रियों के प्रति कम आसक्त होता है । यदि द्वादश भाव में चंद्र मंगल की युति हो तो जातक नेत्र रोगी, राजदण्ड पाने बाला तथा नीच बुद्धि का होता है । यदि द्वादश भाव में चंद्रमा कर्क, कन्या अथवा मीन राशि का हो तो जातक को राजयोग प्राप्त होता है । वह धार्मिक प्रवृति का होता है तथा उसका सम्बन्ध कई स्त्रियों से रहता है । द्वादश भाव में पूर्ण चंद्र जातक को साहसी, ज्ञानी, गुप्त विद्याओं में रुचि रखने वाला, क्रोधी तथा जुआरी बनाता है ।

चन्द्रमा से उत्पन्न होने वाले रोगों का उपचार :

सूर्य की भाँति चंद्रमा का भी अशुभ प्रभाव मानव शरीर पर पड़ता है । जन्मांक चक्र में चंद्रमा की अलग- अलग स्थितियाँ जातक पर भिन्न-भिन्न प्रभाव डालती हैं । जिसके फलस्वरूप उसे विभिन्न प्रकार के रोगों का सामना करना पड़ता है । प्राचीन काल से लेकर

आज के वैज्ञानिक तथा आधुनिक युग में रोगों से बचने तथा छुटकारा पाने के लिए अनुसंधान तथा प्रयोग होते चले आरहे हैं । चंद्रमा का प्रतिकूल एवं अनुकूल प्रभाव मानव पर त्वरित एवं प्रभावशाली रूप में पड़ता है । जिसका मुख्य कारण एक यह भी है कि चन्द्रमा पृथ्वी के सबसे समीप स्थित है । जिसके फलस्वरूप चंद्र-किरणें अपना महत्त्वपूर्ण व चमत्कारिक प्रभाव मानव पर डालती हैं । सामान्य जन भी चन्द्रमा के पूर्णिमा तथा अमावस्या के प्रभाव के कारण उत्पन्न फाइलेरिया जैसे दुखदायी रोग से परिचित हैं ।

ज्योतिष में चन्द्रमा के अशुभ प्रभाव को दूर करने हेतु मोती रत्न धारण करना सर्वोत्कृष्ट माना गया है । आयुर्वेद में भी मोती भस्म को रोगोपचार हेतु देने की प्रथा प्राचीन काल से चली आ रही है ।

जन्म कुण्डली में चंद्रमा की अशुभ स्थिति होने पर निम्नलिखित रोग विशेष तौर से उत्पन्न होते हैं—

- खाँसी
- मासिक स्राव (अनियमित)
- मानसिक चिन्ता
- आमवात
- पेशाव की जलन
- पित्ताशय की पथरी
- कीटाणु ज्वर
- सर्दी-जुकाम

खाँसी

नाक और मुख से फेफड़ों तक साँस लेने की जो प्रक्रिया है उसकी जो प्रणालिका है, उसके अलग-अलग स्थानों में सूजन आ जाने से खाँसी हो जाती है । यह सूजन ठंड से, किसी अवांछनीय चीज खाने से अथवा मौसम की बदली से हो जाती है ।

खाँसी प्राय दो प्रकार की होती है । (1) कफ युक्त खाँसी तथा (2) सूखी खाँसी । कफ युक्त खाँसी में खाँसने से गले से कफ निकलता है । जबकि खुश्क खाँसी में ऐसा नहीं होता ।

घरेलू चिकित्सा :

- कत्था, गोंद-बबूल और मुलहठी तीनों को समभाग में लेकर कूट पीस तथा कपड़छन करलें । फिर अदरक के रस में 2-3 घण्टे घोट कर बेर के बराबर छोटी-छोटी गोलियाँ बना लें । दिन में तीन चार बार एक-एक गोली को चूसने को दें । कुछ ही घण्टों में रोगी को आराम मिलेगा ।
- तुलसी के पत्ते 10 काली मिर्च 7 डालकर चाय बनाकर पीने से खाँसी, जुखाम आदि रोग दूर होते है ।

- अदरक का रस तथा मधु, दोनों को सम भाग में मिलाकर चाटने से भी खाँसी में आराम मिलता है ।
- तुलसी के पत्तों का काढ़ा पीने से सूखी खाँसी दूर होती है ।
- भुनी हुई फिटकरी तथा देशी खाँड़ को खरल में डालकर कूट-पीस लें । फिर इसके चूर्ण की एक ग्राम मात्रा सूखी खाँसी वाले रोगी को दूध से और कफ युक्त खाँसी वाले को जल से खिलायें । खाँसी से मुक्ति के लिए यह श्रेष्ठ व अचूक साधन है ।
- केले के सूखे पत्तों की राख बनाकर थोड़ी-थोड़ी मात्रा में गर्मी में नमक तथा शीतकाल में शहद मिलाकर रोगी को दिन में तीन चार बार चाटने को दें । इस मिश्रण के नियमित सेवन से पुराने से पुरानी खाँसी से मुक्ति मिलती है ।
- आँवला, हरड़, बहेड़ा, कालीमिर्च, सोंठ और पीपल सभी को समभाग में लेकर खरल में कूट पीस कर चूर्ण बना लें । इस चूर्ण की तीन ग्राम मात्रा शुद्ध शहद के साथ रोगी को दिन में चार पाँच बार चटायें । इसके नियमित सेवन से सभी प्रकार की खाँसी दूर हो जाती है ।
- हींग सोंठ, तथा मुलहठी तीनों को समभाग में लेकर खरल में कूट पीस कर चूर्ण बना लें । इस चूर्ण को गुड़ अथवा शहद में मिलाकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें । इसकी एक एक गोली दिन में तीन चार बार रोगी को चूसने को दें । 2-3 दिनों में पूर्ण आराम मिल जायेगा ।
- 15 ग्राम फिटकरी और चार दाने पीपलें तवे पर सेक कर फुला लें और पीस लें । इस चूर्ण की 2 ग्राम मात्रा शहद के साथ रोगी को दिन में तीन चार बार चटायें । सूखी खाँसी जड़ से चली जायेगी ।
- पुराना गुड़ और सरसों का तेल सम भाग में लेकर आपस में मिला लें । इस मिश्रण को दिन में तीन-चार बार रोगी को चटायें, लाभ होगा ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

ब्रायोनिया 30— सूखी खाँसी, जरा बोलते ही खाँसी उठ आए, ठण्डे से गर्म अथवा गर्म से सर्द वातावरण में आते ही खाँसी, रोगी लेट न सके, खाँसने से सिर व छाती में दर्द हो तो इसकी चार-पाँच गोली रोगी को दिन में तीन चार बार चूसने को दें । शीघ्र लाभ होगा ।

एन्टिम टार्ट 30— कफयुक्त खाँसी के लिए यह रामवाण औषधि है । कफ की घरघराहट सुनाई दे, बहुत खाँसने पर भी कफ न निकले, फेफड़ों में कफ भरा हो पर फेफड़ों की कमजोरी से कफ न निकलता हो तब इसकी चार-पाँच गोली दिन में तीन

चार बार रोगी को चुसायें । पुराने से पुराना मर्ज जड़ से ठीक हो जाता है । इस दवा को जुकाम, दमा, ब्रोंकाइटिस आदि के कारण कफ वाली खाँसी उठने पर भी देते है ।

ड्रोसेरा 12— यह दवा कुकर-खाँसी उठने पर अथवा खाँसते-खाँसते उल्टी हो जाए ऐसे लक्षणों पर दी जाती है ।

एकोनाइट 30— गला रुँधता सा महसूस होता हो, रोग का हमला अचानक खाँसी सर्दी से हुआ हो, आधी रात को ज्यादा खाँसी आए, प्यास लगे, गला सूखे, रोगी शीत प्रकृति तथा भय चिंता से ग्रसित हो तब इस दवा की दो बूँद आधे कप जल के साथ रोगी को दिन में चार बार दें । अति शीघ्र आराम मिलेगा ।

बेलाडोना 6, 30, अथवा 200— सूखी खाँसी विशेषकर रात को, बड़ी कठिनाई से थोड़ा बहुत कफ आना, श्वास-नलिका में खुश्की बढ़ते जाना, खाँसते-खाँसते चेहरा लाल, रोगी शीत प्रकृति का हो तथा उसे शोर, प्रकाश तथा छेड़छाड़ पसन्द न हो तो इस दवा की दो तीन बूँद आधे कप जल के साथ रोगी को दिन में चार बार पिलायें । पुरानी से पुरानी खाँसी दूर हो जायेगी ।

स्टैनम 30—टी. बी. के रोगी को यह दवा विशेष रूप से दी जाती है । रात को अत्यधिक पसीना आता हो, खाँसी शरीर को हिला देने वाली, थूक पीलापन लिए सफेद तथा शाम को टी. बी. का बुखार आता हो तब इस दवा की चार-पाँच गोली रोगी को दिन में तीन चार बार चूसने को दें ।

फास्फोरस 30— खुश्क खाँसी लगातार, साँस लेने से भी खाँसी उठे, गला व छाती से पकने जैसा दर्द, खाने के बाद खाँसी उठे, किसी गंध से या किसी अजनबी के आने के खाँसी उठे, रोगी शीत प्रकृति का तथा अँधेरे से डरने वाला व सन्देहशील हो तब इस दवा की दो बूँद आधे कप जल के साथ दिन में चार बार रोगी को देनी चाहिए । इसके नियमित सेवन से खाँसी जड़ से चली जाती है ।

इपिकाक 30— छाती में कफ बोले, साँस लेने में आवाज हो, उल्टी की इच्छा हो और उल्टी होने पर भी आराम न हो, जीभ साफ हो बच्चे को खाँसी हो तो खाँसते-खाँसते अकड़ जाए, दमे जैसा लक्षण, इन लक्षणों के होने पर इस दवा की दो बूँद आधा कप जल के साथ रोगी को देनी चाहिए । कफ निकालने में मदद करती है ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

चुम्बकीय बेल्ट को दिन में तीन बार 30-40 मिनट तक बाँधें तथा चुम्बकीय जल का सेवन करें । उपरोक्त दोनों प्रयोग साथ-साथ करते रहें । महीने भर में आराम मिल जायेगा । खाँसी समूल चली जायेगी ।

विशेष— चुम्बकीय चिकित्सा को हस्त नक्षत्र गत किसी सोमवार के दिन से चन्द्रमा की होरा में प्रारम्भ करने के विशेष लाभ होता है ।

मन्त्र प्रयोग—

जन्म कुण्डली में चन्द्रमा के अशुभ होने पर उत्पन्न रोगों से मुक्ति के लिए इस मंत्र का जप कल्याणकारी माना गया है– **ॐ ऐं ह्रीं सोमाय नमः ।**

उपरोक्त मन्त्र का जप नित्य ग्यारह माला करने से सभी प्रकार के चन्द्र-दोषों से उत्पन्न होने वाले रोगों से मुक्ति मिलती है । खाँसी के लिए उपरोक्त मन्त्र का जप विशेष लाभदायक माना गया है । उपरोक्त मन्त्र का नियमित जप करने से खाँसी से मुक्ति मिलती है ।

यन्त्र प्रयोग —

खाँसी से मुक्ति हेतु चंद्र यन्त्र का प्रयोग करना चाहिए।

चंद्र-यन्त्र की रचना रवि पुष्य अथवा रोहिणी नक्षत्र गत किसी सोमवार के दिन करनी चाहिए । चंद्र-यन्त्र की रचना कपूर मिश्रित सफेद चन्दन से तुलसी अथवा अनार की लेखनी से की जाती है । चंद्र यन्त्र को सामान्य कागज तथा भोजपत्र पर ही लिखा जाता है । किन्तु विशेष परिस्थितियों में इस यन्त्र को रजत पत्र पर भी उत्कीर्ण कराया जाता है ।

७	२	९
८	६	४
३	१०	५

चंद्रयन्त्र को विधिवत पूजन करने के उपरान्त चाँदी के ताबीज में भरकर सफेद डोरे की सहायता से दाहिनी भुजा में चंद्र की होरा में सोमवार के दिन धारण करना चाहिए ।

तान्त्रिक प्रयोग—

किसी रोहिणी नक्षत्रगत सोमवार को चमेली की जड़ चंद्र की होरा में सफेद डोरे में बाँधकर दाहिनी भुजा में धारण करें ।

चन्द्रमा की होरा में अथवा नक्षत्र में अथवा सोमवार के दिन बार-बार शीशा देखने से भी खाँसी में बहुत लाभ होता है ।

रत्न प्रयोग—

खाँसी से मुक्ति पाने हेतु सामान्य तथा मोती रत्न चाँदी की अँगूठी में जड़ाकर सोमवार के दिन चन्द्रमा की होरा में दाहिनी कनिष्ठा में धारण करना चाहिए ।

मासिक-धर्म सम्बन्धी रोग

प्रत्येक स्वस्थ स्त्री को गर्भावस्था को छोड़कर पैंतालीस वर्ष की आयु तक मासिक स्राव आता है। यह ऋतुस्राव चौदह पन्द्रह वर्ष की आयु में पहुँचने तक शुरू हो जाता है। यह स्त्री की वह प्राकृतिक स्थिति है जब प्रति माह इसके मर्भाशय से योनि मार्ग द्वारा रक्त आता है। प्रायः महिलाओं को, शरीर में उष्णता और पित्त प्रकोप बढ़ जाने से अथवा गर्भाशय की विकृति के कारण मासिक ऋतु के दिनों में अधिक रक्त-स्राव होने लगता है और इससे वे अधिक कमजोर हो जाती हैं।

मासिक धर्म सम्बन्धी निम्न रोग होते हैं—

- मासिक में रुकावट
- मासिक के समय पीड़ा
- अनियमितता
- अधिक स्राव
- बहुत कम स्राव

घरेलू औषधियाँ–

कलिहारी की जड़ को पानी में पीसकर दिन में दो तीन बार योनि पर लेप करने से महिलाओं का बन्द मासिक खुल जाता है। इस जड़ी का लेप एक सप्ताह नियमित रूप से करें। समस्त मासिक सम्बन्धी रोग दूर हो जायेंगे।

पठानी लोध और मिश्री समभाग में लेकर खरल में कूट पीसकर रख लें। अब इस चूर्ण की **10** ग्राम मात्रा एक पाव दूध के साथ सुबह–शाम रोगी को दें। **10-11** दिनों तक इसका नियमित सेवन करने से मासिक धर्म की अनियमितता समाप्त हो जायेगी।

कच्चा सुहागा तीन ग्राम तथा दो ग्रेन केसर को खरल में बारीक घोंटकर प्रातःकाल शीतल जल के साथ दें। मासिक-धर्म की अनियमितता दूर हो जायेगी। इस औषधि का सेवन अनुमानतः मासिक तिथि के दो तीन दिन पूर्व करें।

मुलहठी का छिलका उतार कर एवं कूट पीसकर चूर्ण बना लें। फिर इस चूर्ण की तीन ग्राम मात्रा चावल के धोवन के साथ दिन में तीन बार रोगी को पिलायें। **7-8** दिन में मासिक धर्म की अधिकता सम्बन्धी रोग ठीक हो जायेगा।

पच्चीस ग्राम धनिया को पावभर पानी में औटायें। जब पानी **50** ग्राम रह जाए, तब छानकर रोगी को पिलायें। यह प्रक्रिया दिन में दो बार करें। इसके सेवन से अधिक रक्तस्राव बन्द हो जायेगा।

दस ग्राम समुद्रसोख को खरल में कूट पीसकर कपड़छन कर लें। इस चूर्ण की एक ग्राम मात्रा दिन में दो बार सुबह-शाम ठण्डे जल के साथ रोगी को पिलायें। दो तीन दिन में एकदम आराम हो जायेगा तथा अधिक रक्तस्राव बन्द हो जायेगा।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

सल्फर 30 अथवा 200— एक बार मासिक होकर फिर न हो अथवा एक दिन शुरू होकर रुकने लगे तब इसकी दो बूँद दवा आधे कप शीतल जल के साथ रोगिणी को दिन में तीन बार दें। मासिक खुलकर होने लगेगा।

नैट्रमप्यूर 30 अथवा 200— सोकर उठते समय ठण्डक लगे, सिर-दर्द होता हो, चित्त म्लान हो, कब्ज हो, दोपहर को शरीर में भारीपन महसूस हो, ऐसे लक्षण होने पर इस दवा की चार पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने को दें। मासिक खुलकर होने लगेगा।

इग्नेशिया 200—यदि मासिक समय से पूर्व यानि 15-20 दिन में ही होने लगे अथवा बहुत अधिक रक्त निकलता हो, पेड़ू में दर्द होता है। स्राव कालापन लिये रहता है। ऐसे लक्षण उत्पन्न होने पर दवा की दो बूँद आधे कप शीतल जल में डालकर रोगिणी को सुबह-शाम पिलायें। उपरोक्त सभी विकार दूर हो जायेंगे।

चायना 6 अथवा 30 — यदि ऋतुस्राव देर तक हो, समय से पूर्व होने लगे, दर्द भी हो, स्त्री दुर्बल तथा कमजोर हो तो यह दवा बहुत लाभकारी होती है।

कैल्केरिया कार्ब 30 अथवा 200 — ऋतु-स्राव अधिक होता हो, समय से पूर्व होने लगे, स्त्री मोटी हो, सिर में पसीना आता हो, पैर ठण्डे चिपचिपे रहते हों, इन लक्षणों के होने पर इस दवा की चार-पाँच गोली रोगिणी को दिन में चार बार चूसने को दें। सभी विकार दूर हो जायेंगे।

कैमोमिला 30 — अधिक ऋतु-स्राव के साथ-साथ रोगिणी चिड़चिड़े स्वभाव की हो जाए, दर्द तेज हो, स्राव में काला-काला खून आता हो तब इस दवा की दो बूँद एक कप जल के साथ रोगिणी को दी जाती है।

सीपिया 30 अथवा 200—रोगिणी पतली दुबली हो, रोगिणी का रंग गोरा हो, ठण्डी प्रकृति, थका शरीर, खून की कमी, स्राव बहुत कम आए तब इस दवा की चार पाँच गोली 6-6 घण्टे के अन्तराल से रोगिणी को चूसने के लिए देनी चाहिए।

पल्सेटिला 30— रोगिणी मोटी, काली, अधिक गर्मी वाली, ऋतु-स्राव बहुत कम, अनियमित देर से आता हो, चेहरा पीला हो, सिर में दर्द होता हो, आलस्य हो, तब इस दवा को दो बूँद आधे कप शीतल जल के साथ रोगिणी को दिन में तीन बार दिया जाता है। इस दवा के सेवन से उपरोक्त सभी रोग-लक्षण समूल नष्ट हो जाते हैं।

चुम्बकीय चिकित्सा :

- दिन भर में कम से कम चार-पाँच बार चुम्बकीय जल का सेवन करें । मासिक-धर्म शुरू होने के एक सप्ताह पूर्व से नियमित चुम्बकीय जल के सेवन करने से किसी भी प्रकार का मासिक सम्बन्धी रोग नहीं होता ।
- चन्द्र की होरा में चुम्बक सैट का प्रयोग करें ।

मन्त्र प्रयोग—

मासिक सम्बन्धी रोगों से मुक्ति पाने के लिए इस चन्द्र मन्त्र का किसी भी सोमवार से जप आरम्भ करें । प्रत्येक दिन कम से कम ग्यारह माला का जप करना चाहिए । मन्त्र— **ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्राय नमः ।**

यन्त्र प्रयोग—

मासिक धर्म सम्बन्धी रोगों से मुक्ति पाने के लिए नियमित रूप से चन्द्र यन्त्र की पूजा व दर्शन करना चाहिए । किसी रोगिणी नक्षत्र गत सोमवार को चन्द्र यन्त्र तावीज में भरकर सफेद डोरे की सहायता से कमर में धारण करने से सभी प्रकार के मासिक धर्म सम्बन्धी रोगों से मुक्ति मिल जाती है । चन्द्र-यन्त्र का उल्लेख पिछले पृष्ठ में आ चुका है । अतः पाठक उसका अवलोकन करें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

किसी श्रवण नक्षत्रगत सोमवार के दिन प्रातःकाल खिरनी वृक्ष की जड़ खोदकर घर ले आवें । फिर विधि-विधान से उसकी पूजा करके दाहिनी भुजा में सफेद डोरे की सहायता से धारण करें इस तांत्रिक प्रयोग करने से सभी प्रकार के मासिक धर्म सम्बन्धी विकार दूर हो जाते हैं ।

रत्न प्रयोग—

मासिक धर्म सम्बन्धी रोगों से मुक्ति पाने के लिए रोहिणी नक्षत्रगत किसी सोमवार को सफेद मून स्टोन दाहिनी कनिष्ठा में धारण करें । रत्न को धारण करने से पूर्व उसका शोधन अवश्य कर लें अथवा किसी योग्य रत्नविज्ञ, ज्योतिर्विज्ञ से करवा लें । बिना शोधन किए रत्न धारण करने से उसका पूर्ण फल जातक को नहीं मिलता ।

पेशाब की जलन

गर्मी अथवा धूप के प्रभाव से अथवा शरीर में बढ़ी हुई उष्णता के कारण कभी-कभी पेशाब में जलन होने की शिकायत हो जाती है । पेशाब में जलन होने पर रोगी का

पेशाब खुलकर नहीं होता तथा पेशाब करते समय मूत्र-नली में बहुत जलन होती है । इस अवस्था में रोगी का पेशाब बूँद-बूँद करके निकलता है तथा उसे असहनीय वेदना का सामना करना पड़ता है ।

घरेलू चिकित्सा :

- पाँच ग्राम मात्रा में मूली के बीजों को महीन पीस कर एक गिलास पानी में घोलकर कपड़छन कर लें । अब इसमें ताजी मूली का रस दो तीन चम्मच मिलाकर रोगी को दिनभर में दो तीन बार पिलायें । इसके सेवन करने से पेशाब की जलन शान्त हो जाती है तथा पेशाब खुलकर होने लगता है ।
- चन्दनादि वटी की 2-2 गोली दिन में तीन बार शीतल जल के साथ लेने से भी पेशाब की जलन शान्त हो जाती है ।
- कबावचीनी (शीतल चीनी) को खरल में डालकर कूट पीसकर कपड़छन कर लें । अब इसकी 4-5 ग्राम मात्रा सुबह-शाम शीतल जल के साथ रोगी को सेवन करायें । कुछ ही दिनों में रोग समूल नष्ट हो जायेगा तथा पेशाब खुलकर होने लगेगा ।
- आँवलों को पानी में पीसकर नाभि के नीचे लेप करने से पेशाब खुल कर होने लगता है ।
- ढाक के फल को पानी में पीसकर नाभि के नीचे लेप करने से पेशाब खुलकर होने लगता है ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

कैन्थरिस 3 अथवा 30— पेशाब करने में जलन महसूस हो, पेशाब खुलकर न होता हो तो इस दवा की दो बूँद आधे कप जल के साथ मिलाकर देने से मूत्रनली की जलन बन्द हो जाती है तथा पेशाब खुलकर होने लगता है ।

इक्विसेटम मूल अर्क या 6— पेशाब करने में जलन, मूत्र जाने की लगातार इच्छा बनी रहती हो तथा पेशाब थोड़ा-थोड़ा आता हो तब इसकी दो बूँद दवा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार रोगी को पिलायें । पेशाब की जलन शान्त हो जायेगी तथा पेशाब खुलकर आने लगेगा ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

- चुम्बकीय जल का सेवन जब भी प्यास लगे, करते रहें । इसके सेवन मात्र से ही पेशाब में जलन होनी बन्द हो जाती है ।

- चुम्बकीय पेटी दिन में दो तीन बार 20-25 मिनट बाँधते रहें । दो-तीन दिनों में रोग समूल (जड़ से) चला जायेगा ।

मन्त्र प्रयोग—

इस मन्त्र का जप करने से मूत्र सम्बन्धी समस्त विकार दूर हो जाते हैं—

- **दधि शंख तुषाराभं, क्षीरोदार्णव सव्यहम् ।**
  नमामि शशिनं सोमं, शम्भोमुर्कुट भूषणम् ॥

यंत्र साधना—

चन्द्र यन्त्र की साधना व नित्य दर्शन मात्र से पेशाब की जलन सम्बन्धी रोग दूर हो जाते हैं । चंद्र यन्त्र का विवरण पीछे के पृष्ठों में उल्लिखित है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक प्रयोग— चन्द्र की होरा में केले के वृक्ष की छाल का रस गौ घृत के साथ मिलाकर रोगी को देने से पेशाब की जलन शान्त हो जाती है तथा पेशाब खुलकर आने लगता है ।

रत्न प्रयोग—

पुर्नवसु नक्षत्र अथवा चंद्र की होरा में सफेद हकीक रत्न चाँदी की अंगूठी मढ़ाकर दाहिनी कनिष्ठा में धारण करने से समस्त मूत्र सम्बन्धी रोग दूर हो जाते हैं ।

विशेष— सफेद हकीक रत्न कम से कम पाँच रत्ती वजन का होना चाहिए तथा रत्न धारण करने से पूर्व उसे विधि पूर्वक शोधित कर लेना चाहिए, अन्यथा रत्न प्रभावहीन रहता है ।

पित्ताशय की पथरी

यह एक लीवर-विकार है जो कि पित्त रस जम जाने के कारण उत्पन्न होता है । आयुर्वेद के अनुसार पथरी चार प्रकार की होती है—

(1) वातज (2) पित्तज (3) कफज और (4) शुक्रज ।

पथरी से उत्पन्न होने का मुख्य कारण मूत्र में तरलता की कमी, घनत्व में वृद्धि, मेटावोलिज्म की विकृति में यूरिक एसिड और फास्फेट जैसे पदार्थों में वृद्धि होना है । यूरिक एसिड और फास्फेट जैसे पदार्थों में वृद्धि होने पर इनके कण धीरे-धीरे एकत्र होकर अन्ततः पथरी का रूप धारण कर लेते हैं ।

घरेलू चिकित्सा :

- चार पाँच चम्मच मूली के बीजों को एक पाव पानी में डालकर उबालें । जब एक चौथाई पानी रह जाय तब उतार कर छान लें । इस कपड़छन पानी को रोगी को नियमित रूप दिन में दो बार देने से पथरी गल कर बाहर निकल जाती है । इसका प्रयोग कम से कम 15-20 दिन नियमित करना चाहिए ।
- सुबह खाली पेट चन्द्रप्रभा वटी की दो गोली एक चम्मच गुनगुने गर्म घी के साथ लेकर ऊपर से गुनगुना गर्म जल पिएं । इसका सेवन लगातार कुछ दिन करने से पित्ताशय की पथरी गलकर बाहर निकल जाती है ।
- 20-20 ग्राम गाजर और मूली के बीज, 40 ग्राम पहाड़ी गोखरू, 10-10 ग्राम यजरूल यहूद और यवक्षार इन सबको लेकर खरल में कूट पीसकर कपड़छन कर लें । इस चूर्ण की तीन ग्राम मात्रा सुबह, शाम दूध-पानी की लस्सी के साथ रोगी को पिलायें । कुछ ही दिनों में पथरी गलकर बाहर निकल जायेगी । यह पथरी के लिये आश्चर्यजनक और परीक्षित योग है ।
- 4-5 चम्मच मूली के पत्तों का रस और 3 ग्राम अजमोद का चूर्ण मिलाकर सुबह-शाम पीने से भी पथरी गलकर बाहर निकल आती है ।
- कुलथी का काढ़ा बनाकर एक कप मात्रा में सुबह-शाम नियमित सेवन करने से भी पथरी बिना आपरेशन के गलकर मूत्राशय के मार्ग से बाहर निकल आती है ।

विशेष— पथरी के रोगी को भोजन में कैल्शियम-युक्त पदार्थों का सेवन करना एकदम से बन्द कर देना चाहिए अन्यथा उपरोक्त औषधियाँ लाभ न करेंगी ।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

कैलकेरिया कार्ब 30 अथवा 200— यह दवा पित्ताशय की पथरी में रामवाण जैसा कार्य करती है । इस दवा के मूल अर्क को दो बूँद आधे कप शीतल जल के साथ पन्द्रह मिनट के अन्तराल से रोगी को देना चाहिए । पथरी से उत्पन्न दर्द बन्द हो जाने पर दवा देना बन्द कर दें ।

कोलेस्टरीन 3— पथरी से उत्पन्न दर्द से मुक्ति दिलाने में यह दवा अचूक तथा तुरन्त लाभकारी है । इसकी चार-पाँच गोली दिन में तीन बार रोगी को चूसने को दें ।

बरबेरिस बलगेरिस मूल अर्क— जब उपरोक्त दोनों दवाओं से लाभ न हो तब इस दवा का मूल अर्क दस-बीस बूँद बीस-बीस मिनट में दें । यह तुरन्त लाभ करती है ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

- चुम्बकीय जल का सेवन अधिक से अधिक मात्रा में करें । इसके नियमित सेवन से पथरी बिना किसी आपरेशन के मूत्राशय के मार्ग से गलकर बाहर निकल आती है ।
- नित्य चन्द्र की होरा में चुम्बकीय बेल्ट को कमर में बाँधने से भी पथरी गलकर बाहर निकल आती है ।

मंत्र प्रयोग—

इस मंत्र का जप ग्यारह माला करने से भी पथरी बिना किसी आपरेशन के गलकर बाहर निकल आती है— **मन्त्र— ॐ सों सोमाय नमः**

विशेष— ध्यान रहे कि मन्त्र का जप किसी सोमवार से ही प्रारम्भ करें ।

यन्त्र साधना—

समस्त प्रकार की पथरी से मुक्ति पाने के लिए चन्द्र- यन्त्र साधना करें । चन्द्र-यन्त्र पीछे के पृष्ठों में उल्लखित है ।

तान्त्रिक प्रयोग—

लोहे की अँगूठी बनवाकर उसे दाहिनी मध्यमा में धारण करने से पथरी रोग शान्त हो जाते हैं । ध्यान रहे कि लोहे की अँगूठी सोमवार के दिन ही चन्द्र की होरा में धारण करें । ऐसा नहीं करने से अँगूठी प्रभावहीन रहती है ।

रत्न प्रयोग—

पथरी रोग के लिए सामान्यतया दाना-ए-फरहंग रत्न को चाँदी में मढ़ाकर दाहिनी अनामिका में धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थिति में किसी सुयोग्य रत्नविद् ज्योतिषी से परामर्श करना श्रेष्ठ होगा ।

सर्दी-जुकाम

सर्दी और जुकाम होने का मुख्य कारण नाक और साँसनलिका की श्लैष्मिक झिल्ली में शोथ अथवा सूजन का होना माना गया है । सर्दी और जुकाम किसी भी मौसम में हो सकता है किन्तु विशेषतया सर्दी के दिनों में शीत प्रकृति के लोगों को शीत का अधिक प्रकोप होने पर यह हो जाता है ।

सर्दी और जुकाम होने पर सम्पूर्ण शरीर में जकड़न, टूटन, बेचैनी, छींकें आना, सिर-दर्द व भारीपन, आँखों से पानी आना, गले में खरास होना, नाक बन्द होना या बहने लगना, मुँह का स्वाद बदलना या अरुचि होना आदि लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं ।

घरेलू चिकित्सा :

- सर्दी जुकाम होने पर एक अमरूद का गूदा बिना बीज के खाकर एक गिलास पानी पी लेना चाहिए । इससे जुकाम बहना शुरू हो जायेगा तथा एक दो दिन में जुकाम समूल नष्ट हो जायेगा ।
- अदरक का रस व शहद समभाग में लेकर दिन में दो-तीन बार रोगी को चटायें । कुछ ही दिनों में जुकाम ठीक हो जायेगा ।
- 10-12 पत्ती तुलसी, 2-3 काली मिर्च, एक चुटकी सोंठ का चूर्ण और एक चुटकी सेंधा नमक, इन चारों को दो कप पानी में डालकर इतना उबालें कि एक चौथाई रह जाए । अब इसे छानकर गुनगुना गर्म पानी पीकर चादर ओढ़कर सो जायें । तुलसी का यह काढ़ा सर्दी-जुकाम में रामबाण औषधि का कार्य करता है । इसको दो-तीन बार पियें ।
- पान के पत्ता पर शहद लगायें तथा लक्ष्मी विलास रस की कुछ मात्रा डालकर दिन में तीन-चार बार इस पान को मुँह में दबाकर रस चूसें, दो-तीन दिन नियमित रूप से इसका प्रयोग करने से सर्दी जुकाम में बहुत लाभ होता है ।
- षटबिन्दु तैल की 2-2 बूँद दिन में तीन बार नाक में टपकाकर साँस ऊपर की तरफ खींचें । इसके दो-तीन दिन प्रयोग से सर्दी समूल चली जाती है ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

एलियम सिपा 30-– बार-बार जोरदार छींक आएं, आँखों में पानी भर जाए, नाक से बराबर पानी नाक से बराबर पानी टपके, ओंठों में जलन हो, खुली हवा अच्छी लगे । उपरोक्त इन लक्षणों के होने पर दवा की चार-पाँच गोली रोगी को दिन में तीन-चार बार चूसने को दें । सर्दी जुकाम जड़ से ठीक हो जायेगा ।

नक्स वोमिका 30— नाक बन्द सी रहती है । रोगी चिड़चिड़ा, उत्तेजनाशील, जरा सी बात को बरदास्त न कर सकता हो, आग के पास भी ठण्ड लगती है, बदन काँपता है । पनीला जुकाम छींकों से शुरू होता है । ऐसे रोगी को यह दवा दिन में चार बार देनी चाहिए ।

एकोनाइट 30— रोग की शुरुआत में थोड़ी ठण्ड लगकर बुखार आए, बदन टूटे, बहुत सुस्ती महसूस हो, प्यास लगे, तब इस दवा को आधा-आधा घण्टा बाद, छः सात बार लें । फिर दो घण्टे के अन्तराल से दवा लेते रहें । सर्दी जुकाम ठीक हो जायेगा ।

कैल्केरिया कार्ब Q, 30 अथवा 200— नाक से सदैव ठोस पीला स्राव निकलता रहे, रोगी अधिक सर्दी महसूस करे। सिर पर अधिक पसीना आए, जुकाम जाने का नाम न ले। ऐसे रोगी को सप्ताह में एक बार इस दवा का मूल अर्क दें। सर्दी जुकाम समूल चला जायेगा।

पल्सेटिला 30— पकी हुई सर्दी, नाक से बदबूदार श्लेष्मा निकले, कान व कनपटी में तेज दर्द, सिर भारी, स्वाद व गंध का अनुभव न हो, खुली हवा अच्छी लगे, बार-बार जुकाम हो, छींकें बार-बार आयें। ऐसे रोगी को दवा की चार पाँच गोली दिन में चार-पाँच बार तीन-तीन घण्टे बाद देते रहें। जुकाम में आराम मिल जायेगा।

चुम्बकीय चिकित्सा :

- सर्दी जुकाम हो जाने पर नाक के दोनों ओर दिन में दो-तीन बार 20-30 मिनट तक चुम्बक लगायें। ध्यान रहे कि इस प्रयोग में दो चुम्बक लेने पड़ते हैं। जिनका उत्तरी ध्रुव दायीं ओर तथा दक्षिणी ध्रुव बाँयी ओर की नासिका का स्पर्श करता है।

विशेष— चुम्बकीय चिकित्सा की विशेष जानकारी हेतु 'होम्यो चुम्बक चिकित्सा' पुस्तक का अवलोकन करें। भाषा-भवन से मथुरा से प्रकाशित है।

मन्त्र प्रयोग—

सोमवार के दिन शिवजी की कथा अथवा शिव-चरित्र के सुनने अथवा पढ़ने से चन्द्र प्रभाव से उत्पन्न सर्दी जुकाम समाप्त हो जाते है। शिव मन्त्र का ग्यारह माला जप भी चमत्कारिक व लाभप्रद माना गया है– मन्त्र— **ॐ नमः शिवाय।**

यन्त्र प्रयोग—

अश्लेषा नक्षत्र गत किसी सोमवार के दिन चन्द्र यन्त्र की साधना व दर्शन करने मात्र से सभी प्रकार के सर्दी जुकाम से मुक्ति मिलती है।

तान्त्रिक प्रयोग—

चन्द्र की होरा में बहती हुई नदी अथवा जल-धारा में चाँदी का टुकड़ा प्रभाहित करने से भी सर्दी जुकाम में आराम मिलता है।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतया सर्दी-जुकाम में सफेद पुखराज चाँदी की अँगूठी में मढ़ाकर दाहिनी अनामिका में धारण करना चाहिए। उपरोक्त रत्न विधि-पूर्वक तथा शोधन के उपरान्त धारण करें। अन्यथा यह निष्प्रभावी रहता है।

चन्द्र रत्न— जन्मांक चक्र में चन्द्रमा के अशुभ भाव में विद्यमान होने पर, अथवा क्षीण चन्द्र होने की दशा में अथवा चन्द्रमा की पाप ग्रहों से युति होने के परिणाम स्वरूप अथवा नीच राशिस्थ होने की दशा में जातक पर चन्द्र ग्रह का प्रतिकूल तथा अशुभ फल होता है । उपरोक्त अवस्था होने पर चन्द्रमा के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए ज्योतिषीय परामर्श से मोती रत्न धारण करना सर्वोत्कृष्ट माना जाता है ।

मोती परिचय— मोती को अंग्रेजी में (pearl) नाम से जाना जाता है । मोती को संस्कृत में मुक्ता, मुक्ताफल अथवा मुक्तक के नाम से पुकारते हैं । इसका लैटिन नाम मार्गारिटा है तथा उर्दू और फारसी में इसे मरबारीद के नाम से जाना जाता है । मोती कई रंगों में दिखलाई पड़ता है किन्तु सफेद और सुन्दर आभायुक्त मोती सर्वश्रेष्ठ कोटि में आते हैं । मोती संसार के अनेक देशों में पाये जाते हैं किन्तु सबसे अच्छी किस्म का मोती बसरा का होता है । मोती उत्पन्न करने वाले संसार के अन्य देश हैं– आस्ट्रेलिया, जापान, जर्मनी, दक्षिण कालिफोर्नियां, भारत, लाल सागर, बगदाद, फारस की खाड़ी, अदन तथा बसरा, रूस, आयरलैंड़ तथा मिसी-सिपी आदि । अब तो मोतियों का उत्पादन बैज्ञानिक ढंग से भी होने लगा है जापान में तो मोती उत्पादन हेतु खेती भी वृहद पैमाने पर होने लगी है ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— मोती रत्न की वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने पर यह ज्ञात होता है । कि इस में कैल्शियम तथा काँचीओलिन का समिश्रण है । मोती का रासायनिक संगठन इस प्रकार है–कैल्शियम लगभग 82-86 प्रतिशत, काँची ओलिन 10-14 प्रतिशत । इसकी कठोरता 2.50 - 3.50 तथा विशिष्ट गुरुत्त्व 2.40 - 2.78 तक होता है।

अपने रासायनिक संगठन के कारण मोती अम्लों में घुलनशील है तथा यह एसेटिक एसिड में भी घुलनशील होता है । ऐसिड में मोती पूर्ण तथा नहीं घुलता, केवल उसका कैल्शियम कार्बोनेट अंश ही घुलता है ।

मोती रत्न— मोती एक खनिज पदार्थ न होकर प्राणिज अपार-दर्शक रत्न होता है । मोती की उत्पत्ति घोंघा नामक एक कीड़ा से होती है, जिसे मॉलस्का कहा जाता है । घोंघा कीड़ा अपने शरीर से प्राकृतिक रूप से निकलने वाले तरल पदार्थ से अपना घर तैयार करता है । इसका घर का अन्दरी भाग बहुत चिकना और चमकीला होता है जबकि बाहरी तौर पर यह खुरदरा और बेडौल होता है । घोंघे के घर को सीपी के नाम से जाना जाता है । प्रत्येक घोंघा मोती नहीं बनाते हैं, केवल वाइवाल्वज जाति का घोंघा मोती बनाने में सक्षम है । बाइवाल्वज जाति का ओएस्टर घोंघा सर्वाधिक मोती बनाता है ।

प्राकृतिक रूप में मोती बनाने की प्रक्रिया भी बड़ी दिलचस्प व रोचक है । जब कभी घोंघा वायु, जल व भोजन की आवश्यकता पूर्त्ति के लिए अपना मुँह सीप से बाहर निकालता है तो कुछ विजातीय पदार्थ व रेतकण सीप की झिल्ली में प्रवेश कर जाते हैं । इस पदार्थ के कारण घोंघा चुभन की अनुभूति करता है । इस चुभन से मुक्ति पाने के लिए वह अपनी त्वचा से निकलने वाले प्राकृतिक तरल पदार्थ उस विजातीय पदार्थ पर परतें चढ़ाने लगता है । यही पर्तों वाले खोल बाद में मोती कहलाते हैं । रत्न विज्ञान के अनुसार सीपी के अन्दर बनने वाले मोती सदा गोल नहीं बनते है । ये टेढ़े-मेढ़े चपटे तथा भौंड़े आदि कई रूप में प्राप्त होते हैं ।

प्राकृतिक तथा अप्राकृतिक मोती — जिन मोतियों की उत्पत्ति प्राकृतिक रूप में घोंघे द्वारा होती है । वे प्राकृतिक मोती कहलाते हैं । जबकि अप्राकृतिक मोती वैज्ञानिक पद्धति से घोंघे द्वारा तैयार किये जाते हैं । जब घोंघे के शरीर में संयोगवश कोई विजातीय पदार्थ चुभन करने लगता है तब घोंघे द्वारा शरीर से निकलने वाले तरल पदार्थ से चुभन की समाप्ति हेतु आवरण चढ़ाया जाता है । जो कि बाद में मोती की शक्ल ले लेता है । अप्राकृतिक ढंग से मोती बनाने की प्रक्रिया प्राकृतिक मोती के समान ही होती है । कोवल अन्तर इतना रहता है । कि इसमें विजातीय पदार्थ आकस्मिक तथा संयोगवश घोंघे के शरीर में प्रविष्ट न होकर मानव द्वारा वैज्ञानिक रीति से उसके शरीर में प्रविष्ट कराया जाता है । इसके बाद घोंघे द्वारा वही प्राकृतिक मोती की उत्पत्ति होती है ।

अप्राकृतिक ढंग से मोती की उत्पत्ति इसलिए हुई कि संयोगवश बहुत कम बार ही विजातीय पदार्थ सीप के अन्दर प्रविष्ट कर पाता है । जिसके फलस्वरूप मोती बहुत कम ही उत्पन्न हो पाता था । इसीलिए वैज्ञानिक तकनीक का सहारा लेकर आप्रंकृतिक रूप से मोती बनाया जाने लगा । इस प्रकार बने मोती की खेती जापान में सर्व-प्रथम हुई । सन् 1894 ई. में कोकीचीमिकीमोती नामक एक जापानी युवक ने वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर सफलता पूर्वक इस सरल पद्धति का आविष्कार किया ।

मिकीमोतो विधि में सर्व प्रथम किसी अच्छी सी सीप के एक छोटे टुकड़े को बहुत छोटे-छोटे कणों में तोड़ दिया जाता है । बाद में गोताखोरों द्वारा मोलग्रीना नामक सीपों में यह छोटे कण उनका मुँह बन्द कर दिया जाता है । इस प्रकार गर्भवती सीपों को किसी डोलची में भरकर समुद्र तल में किसी सुरक्षित स्थान में छोड़ दिया जाता है । कुछ वर्ष के उपरान्त इन सीपों में मोती बन जाते हैं । एक अच्छे किस्म के मोती के निर्माण होने में कई वर्षों का समय लग जाता है ।

कृत्रिम मोती — जब किसी वस्तु की माँग अधिक होती है और उसका उत्पादन कम होता है तो ऐसी अवस्था में अर्थशास्त्र का सिद्धान्त यह कहता हैं कि वस्तु की आपूर्ति हेतु कृत्रिम तथा नकली वस्तुऐं बाजार में आ जाती हैं । यही बात मोती पर भी लागू हुई । जब लोगों का आकर्षण मोती रत्न की ओर बढ़ने लगा तथा मोती का उत्पादन उस अनुपात में नहीं हो पाया– जितनी कि उसकी माँग थी, तो बाजार में कृत्रिम मोती आने लगे । नकली मोती बनने का आरम्भ कब हुआ इसके बारे में मतभेद है किन्तु कछ इतिहासकार 15 वीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में इसके निर्माण की बात बताते हैं । वैसे सन् 1921 में ये कलचर्ड मोती बाजार में आकर सबको आश्चर्य-चकित कर गए । कृत्रिम मोती मोम भरे काँच अथवा ठोस काँच के होते हैं । जिनको मछली के ऊपरी कठोर आवरण द्वारा तैयार किए एक विशेष प्रकार के द्रव में डुबोकर असली मोती की आभा दी जाती है । हेमेटाइट के चमकदार दाने भी मोती के रूप में बिकते हैं ।

पहचान — बाजार में कृत्रिम मोती रत्न आ ज़ाने के कारण यह संकट उत्पन्न हो गया कि इनकी वास्तविकता की पहचान किस भाँति हो । असली तथा उत्पन्न मोती बड़े मँहगे होते हैं । अतः ठग तथा चातुर्य प्रघान लोग कृत्रिम मोती को अच्छे दामों में बेच देते थे । इसलिए वैज्ञानिकों तथा रत्न विशेषज्ञों ने अनुसंधान तथा खोज करने के उपरान्त असली मोती को पहचानने की निम्न विधियाँ आविष्कृत कीं —

विधि 1 — चावल के छिलकों में मोती को रगड़ने से असली मोती की चमक बढ़ जाती है और नकली मोती की चमक कम हो जाती है ।

विधि 2— नकली मोती को पहचानने के लिए नमक मिले तेल युक्त गर्म पानी में मोतियों को रातभर भीगा पड़ा रहने दें तथा दूसरे दिन सूखे कपड़े में लपेटकर धानों से मलें । अगर मोती अपना रंग बदल दे तो यह समझा जाता है, कि मोती नकली है । असली मोती अपना रंग इस प्रक्रिया में नहीं बदलता ।

विधि 3—नकली मोती पर डाइड्रोक्लोरिक अम्ल का कोई प्रभाव नहीं पड़ता जबकि प्राकृतिक तथा सम्बन्धित मोतियों पर झाग उठने लगता है ।

विधि 4 — नीबू के रस में असली मोतयों को रखने पर वे नर्म पड़ जाते हैं । परन्तु काँच के बने अथवा नकली मोतियों में ऐसा नहीं होता । नकली मोतियों पर नीबू के रस का प्रभाव नहीं पड़ता जिससे उनमें कोई परिवर्त्तन नहीं होता है ।

विधि 5— नकली मोती यदि गौ-मूत्र में रात्रिभर रखा रहे तो वह खराब हो जाता है । असली मोती पर गौ-मूत्र का प्रभाव नहीं पड़ता और उनके रंग रूप और चमक-दमक में भी कोई परिवर्त्तन नहीं होता है ।

विधि 6— विशिष्ट गुरुत्त्व के आधार पर भी मोतियों की पहचान की जाती है ।

असली मोती शुद्ध ब्रोमोफार्म में अल्कोहल मिले द्रव में तैरते रहते हैं, जबकि बनावटी मोती डूब जाते हैं ।

उत्तम मोती के गुण— उत्तम मोती बहुत महँगा होता है । अच्छे तथा उत्कृष्ट कोटि के मोती स्वच्छ, चिकने, कांति-युक्त, मोटे, गोल, सुडौल, निर्मल और भारी होते हैं । उनमें कहीं टूट, बारीक लहर, धब्बा आदि नहीं होता है । लाल या काले रंग की मस्सा आकृति वाला, पेड़े की तरह चपटा, आभाहीन, बेढौल, ताँबे जैसी सुर्खी वाला मोती दूषित होता है ।

फारस की खाड़ी के मोती बहुत अच्छे होते हैं । यहाँ यह मोहर कहलाई जाने वाली सीप में प्राप्त होती है । संसार में सबसे अधिक मोती बहरीन में मिलते हैं ।

साधारणतः मोती का मूल्य इनके भार, रंग, आकार, गुलाबी मिश्रित सफेदी युक्त झांई तथा गोलाई के अनुपात में निर्धारित किया जाता है । काले रंग के मोती सफेद मोती की अपेक्षा मँहगे होते हैं ।

मोती रत्न तथा इससे जुड़े ऐतिहासिक तथ्य :

ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि सभी रत्नों में मोती ही ऐसा एक रत्न है जिसे मानव ने सर्वप्रथम जाना होगा । इस तथ्य की पुष्टि इस बात से भी की जाती है कि मानव का नदियों तथा सागरों से सम्बन्ध आदिकाल से रहा है । आदिकाल में मानव जंगलों में रहता था और उनका आहार जंगली जीव जन्तु तथा पशु होते थे । जंगली पशुओं का शिकार करना तथा उनके माँस से अपनी क्षुधा शान्त करना उनकी प्रकृति थी । इसी प्रकार आदि मानव अपने प्यास को नदियों तथा सागरों के जल पीकर शान्त करता था । इस प्रकार मानव को सर्वप्रथम मोती रत्न अनायास सागर अथवा नदियों से सीपों के द्वारा प्राप्त हुआ होगा ।

संसार का सबसे बड़ा मोती हैनरी फिलिप रोम के संग्राहलय में है । जो दो इंच लम्बा, 3 ¼ इंच चौड़ा है । इसका वजन 454 कैरिट है तथा व्यास 4 ¼ इंच है । इसके पौने भाग का रंग सफेद व शेष का कांसे जैसा है ।

शाहजहाँ के सरपेच में एक अमरूद के बराबर मोती जड़ा हुआ था (बादशाह नामा, जिल्द दो, पेज 392) । शाहजहाँ ने अपनी प्रिय बेगम मुमताज महल की कब्र के लिए मोतियों की एक अति मूल्यवान चादर तैयार कराई थी । औरंगजेब को शाह ईरान ने एक मोती जिसका वजन 37 कैरट का था, भेंट स्वरूप प्रदान किया था । मुगल बादशाहों ने शाही खजाने में सच्चे तथा कीमती मोतियों की सदैव अधिकता रही है । जहाँगीर, शाहजहाँ

और औरंगजेब के शासन काल में रोम और फ्रांस के व्यापारी मूल्यवान मोतियों को बेचने के लिए बराबर भारत आया करते थे ।

विश्व में उत्कृष्ट मोतियों का संग्रह महाराजा गायकवाड़ के पास था । वे सदैव राजकीय समारोहों में 280 मोतियों वाली एक सतलड़िया हार पहना करते थे । उनके पास पैरागन नाम का सवा तीन माशे का एक अन्य मोती था जिसका मूल्य उस समय डेढ़ लाख रुपये आँका गया था ।

सन् 1882 ई० में 75 कैरट का एक उत्कृष्ट मोती कैलिफोर्निया की मुलेजी खाड़ी में मिला था । महारानी क्लियोपेट्रा के पास 11 लाख का एक मोती था । सन् 1574 ई. में स्पेन के सम्राट फिलिप द्वितीय के पास एक बेशकीमती तथा उत्कृष्ट श्रेणी का 20 लाख रुपये का मोती था । सन् 1886 ई. में आस्ट्रेलिया में एक विचित्र मोती प्राप्त हुआ था, जिनमें नौ बड़े मोती आपस में स्वास्तिक के चिह्न में जुड़े हुए थे । सन् 1601 ई. में 178 ग्रेन का एक मोती फारस की खाड़ी से प्राप्त हुआ था । बाद में यह मोती आस्ट्रेलिया के किसी धनिक तथा रत्नप्रिय व्यक्ति ने खरीद लिया था । रूस के जोसिम म्यूजिम में 28 कैरट का एक सुन्दर तथा गोलाकार मोती रखा हुआ है ।

भारत में मोती मनार की खाड़ी में मिलता है किन्तु ये बहुत छोटे आकार के तथा निम्न श्रेणी के होते हैं । इन मोतियों का उपयोग आयुर्वेदिक चिकित्सा में औषधियों के रूप में किया जाता है ।

मोती रत्न और ज्योतिषीय परामर्श :

मोती रत्न चन्द्रमा के अनिष्टकारी प्रभाव को समाप्त करता है । कलाकार तथा संगीत के पेशे से जुड़े लोगों को मोती सदैव लाभप्रद रहता है । अतः इनके लिए आजीवन मोती धारण करना हितकर रहता है । मोती रत्न इनके जीवन तथा व्यवसाय में आशातीत चमत्कारी प्रभाव व सफलता दिलाता है । अपनी-अपनी राशियों तथा जन्म कुण्डलियों के अनुसार मोती खरीदने के बाद उनको धारण करने से पहले अपने-अपने धर्मों के अनुसार पूजापाठ द्वारा शुद्ध कर लेना चाहिए । मोती रत्न के विषय में निम्न ज्योतिषीय परामर्श का विशेष रूप से पालन करना चाहिए, अन्यथा रत्न लाभ की बजाय हानि करने लगेगा । मोती रत्न को चाँदी की अंगूठी में जड़वाकर धारण करना चाहिए । मोती कम से कम 4, 6 या 11 रत्ती का होना चाहिए ।

एक बार मोती खरीद कर तथा धार्मिक विधि से शुद्ध करने के पश्चात् चाँदी की अँगूठी में जड़वाकर धारण करने से उसका प्रभाव दो वर्ष से दो माह तक रहता है । मोती रत्न की अँगूठी सोमवार के दिन को ही धारण करना चाहिए ।

लग्न के आधार पर मोती धारण करने का ज्योतिषीय परामर्श

कोई भी रत्न सभी के लिए लाभकारी तथा मंगलकारी नहीं होता । मोती रत्न भी सभी के लिए लाभकारी नहीं है । अतः मोती रत्न धारण करने से पूर्व जातक सर्वप्रथम अपने जन्म लग्न से निम्न ज्योतिषीय परामर्श पर अवश्य विवेचन कर लें अन्यथा वह लाभ की बजाय नुकसान करने लगेगा—

मेष लग्न— मेष लग्न वालों के लिए मोती धारण करना बड़ा कल्याणकारी व मंगलमय रहेगा । मेष लग्न में चतुर्थ भाव का स्वामी चन्द्रमा होता है तथा चतुर्थेश चन्द्र लग्नेश मंगल का मित्र है । चतुर्थ भाव सुख का होता है । अतः यदि मेष लग्न वाले जातक मोती रत्न धारण करते हैं तो उन्हें मानसिक शान्ति, विद्या सुख, ग्रह सुख, मातृ सुख इत्यादि का लाभ होता है । मेष लग्न वाले जातकों का चन्द्रमा की महादशा, अन्तर्दशा विशेष शुभकारी होती है । यदि मेष लग्न के जातक लग्नेश मंगल का रत्न मूँगा भी मोती के साथ धारण करें तो ऐसी दशा में जातक को विशेष लाभ होता है ।

वृष लग्न— वृष लग्न वालों के लिए मोती रत्न धारण करना ज्योतिषीय परामर्श में वर्जित माना गया है । वृष लग्न में कर्क राशि तृतीय भाव का स्वामी रहता है । अतः इस लग्न के जातक यदि मोती रत्न धारण करें तो किसी रत्न-विशेषज्ञ ज्योतिषी की राय अवश्य ले लें, क्योंकि कुछ विशेष परिस्थितियों में मोती रत्न इस लग्न वाले जातक के लिए शुभ रहता है अन्यथा नुकसान ही पहुँचाता है ।

मिथुन लग्न— मिथुन लग्न वालों के लिए मोती रत्न धारण करना किन्हीं विशेष परिस्थितियों में लाभप्रद होता है । मिथुन लग्न में कर्क राशि द्वितीय भाव का स्वामी होता है । द्वितीय भाव धन का माना जाता है । अतः इस लग्न वाले जातक यदि चन्द्रमा की महादशा में मोती रत्न धारण करें तो उन्हें आर्थिक लाभ विशेष रूप से होता है । इस लग्न वाले जातक के जन्मांक चक्र में यदि चन्द्रमा नवम, दशम तथा एकादश भाव में स्थित हो तो मोती रत्न लाभदायक व धनदायक सिद्ध होता है । मिथुन लग्न जातक के लिए चन्द्रमा मारकेश भी है अतः मोती रत्न धारण करने से पूर्व किसी योग्य ज्योतिषी से परामर्श अवश्य ले लें ।

कर्क लग्न— कर्क लग्न वाले जातक के लिए मोती रत्न विशेष शुभदायी है । उस लग्न में कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा लग्नेश है । अतः मोती रत्न जातक के स्वास्थ्य तथा आर्थिक पहलू पर पूर्ण नियन्त्रण रखेगा । कर्क लग्न के जातक स्वभाव से संवेदनशील, भावुक तथा परोपकारी होते हैं अतः मोती रत्न इनके जीवन में पवित्रता, शुद्धता तथा विनम्रता बनाए रखेगा । आर्थिक दृष्टिकोण से भी मोती रत्न जातक को लाभ दिलाता रहेगा ।

सिंह लग्न— साधारणतया सिंह लग्न वाले जातक को मोती रत्न धारण करना ज्योतिषीय परामर्श में वर्जित बताया गया है । सिंह लग्न में कर्क राशि द्वादश भाव का स्वामी होता है अतः ऐसी अवस्था में सिंह लग्न वाले जातक यदि मोती रत्न धारण करते हैं तो उनके जीवन में प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । कुछ विशेष परिस्थितियों जैसे– यदि द्वादश भाव का स्वामी अपनी स्वराशि में स्थित हो तो उस दशा में मोती रत्न धारण करने पर चमत्कारिक तथा शुभ फलदायी परिणाम दिखलाई पड़ता है ।

कन्या लग्न— कन्या लग्न वाले जातक को मोती रत्न धारण करना लाभकारी तथा शुभ फलदायी रहता है । कन्या लग्न में कर्क राशि एकादश भाव में विद्यमान रहती है । कर्क राशि चन्द्रमा की स्वराशि होती है तथा एकादश भाव लाभ स्थान कहलाता है अतः कन्या लग्न वाले जातक यदि मोती रत्न चाँदी की अँगूठी में सोमवार के दिन रत्न का शोधन तथा पूजन करने के उपरान्त धारण करें तो उन्हें आर्थिक लाभ, यश तथा सन्तान-सुख प्राप्त होता है ।

तुला लग्न— तुला लग्न वालों के लिए भी मोती रत्न धारण करना लाभकारी रहता है । तुला लग्न में कर्क राशि दशम भाव की स्वामी के रूप में विद्यमान रहती है । तुला लग्न का लग्नेश शुक्र यद्यपि चन्द्रमा का मित्र नहीं है लेकिन इसके उपरान्त भी ज्योतिषीय परामर्श के अनुसार मोती रत्न धारण करना लाभकारी बताया गया है । तुला लग्न वाले जातक को मोती रत्न की अंगूठी चन्द्र की महादशा अथवा अन्तरदशा में धारण करना विशेष लाभकारी माना गया है । इस लग्न वाले जातक मोती रत्न धारण करके अनायास राज्य-कृपा, यश, पद, प्रतिष्ठा तथा समाज के नेतृत्व को प्राप्त कर लेते हैं ।

वृश्चिक लग्न— वृश्चिक लग्न वालों के लिए मोती रत्न भाग्योदयकारी माना गया है । इस लग्न के जातक मोती रत्न धारण करके जीवन में चमत्कारिक रूप से उन्नति तथा धार्मिक कृत्य करते हैं । वृश्चिक लग्न में कर्क राशि नवम भाव में विद्यमान रहती है । नवम भाव को भाग्य स्थान कहा जाता है । अतः ज्योतिषीय परामर्श के अनुसार इस लग्न वाले जातक मोती रत्न की अंगूठी पूर्ण आस्था व विश्वास के साथ शुभ घड़ी में विधि पूर्वक शोधन व पूजन करने के उपरान्त धारण करें तो उन्हें धर्म, कर्म और भाग्य में उन्नति मिलती है तथा पितृ-सुख प्राप्त होता है । चन्द्रमा की महादशा में इस लग्न वाले जातक मोती रत्न की अंगूठी धारण करें तो विशेष लाभ होता है ।

धनु लग्न— धनु लग्न वाले जातक को मोती धारण करना सदैव ज्योतिषीय परामर्श में वर्जित किया गया है । धनु लग्न में कर्क राशि अष्टम भाव का स्वामी होता है । अष्टम

भाव से मृत्यु का विचार किया जाता है । अतः धनु लग्न वाले जातक मोती रत्न कभी धारण न करें । मोती रत्न चन्द्रमा के बल व शक्ति को बढ़ाता है । अतः यदि मोती धारण किया जाता है तो चन्द्रमा की शक्ति बढ़ जायेगी जो कि जातक के स्वास्थ्य के लिए अमंगलकारी सिद्ध होगी ।

मकर लग्न— मकर लग्न के जातक को मोती रत्न सदैव नुकसान पहुँचायेगा । अतः मकर लग्न के जातक को मोती जीवन में कभी धारण नहीं करना चाहिए । मकर लग्न का स्वामी शनि होता है तथा मकर लग्न में कर्क राशि सप्तम भाव में विद्यमान रहता है । सप्तम भाव को भी ज्योतिष में मकर माना जाता है । कर्क राशि का स्वामी चन्द्रमा है । इस प्रकार सप्तम भाव तथा लग्नेश के स्वामी शनि और चन्द्र परस्पर आपस में शत्रु भाव रखते हैं । अतः मकर लग्न वालों के लिए मोती रत्न कभी धारण न करना चाहिए ।

कुम्भ लग्न— कुम्भ लग्न के जातक को मोती रत्न धारण करना हानिकारक होता है । मकर लग्न की भाँति कुम्भ के जातक को मोती धन, यश तथा सम्पत्ति के नाश का कारण बनता है । कुम्भ लग्न में कर्क राशि षष्ठ भाव का स्वामी होकर विद्यमान रहता है तथा शनि चन्द्र के परस्पर शत्रु भाव होने के कारण मोती रत्न धारण करने से अनायास शत्रुता की वृद्धि तथा धन नाश होगा । इसलिए ज्योतिषीय परामर्श के अनुसार इस लग्न वालों के लिए मोती रत्न धारण करना वर्जित बताया गया है ।

मीन लग्न— मीन लग्न के जातक के लिए मोती धारण करने के सम्बन्ध में ज्योतिषीय परामर्श यह है कि उन्हें मोती रत्न सदैव लाभकारी तथा यश प्रदान करने वाला सिद्ध होगा । मीन लग्न में कर्क राशि पंचम भाव का स्वामी होता है । पंचम भाव त्रिकोण कहा जाता है तथा पंचम भाव से विद्या, बुद्धि, पुत्र आदि का विचार किया जाता है । मीन लग्न का लग्नेश बृहस्पति होता है । गुरु चन्द्र आपस में मित्र भाव रखते हैं । पंचम भाव को भाग्य भाव कहते हैं क्योंकि यह स्थान नवम स्थान से नवम होता है । अतः यदि मीन लग्न के जातक मोती रत्न चाँदी की अँगूठी में जड़वाकर सोमवार के दिन किसी शुभ मुहूर्त्त तथा घड़ी में शोधन तथा पूजन करने के उपरान्त श्रद्धा तथा विश्वास से धारण करें तो यश-लाभ, बुद्धि-लाभ तथा भाग्योदय अवश्य होगा । मोती धारण करने से जातक को पुत्र-सुख अवश्य प्राप्त होगा । मीन लग्न के जातक यदि चन्द्रमा की महादशा अथवा अन्तरदशा में मोती रत्न जड़ित अंगूठी धारण करें तो उन्हें चमत्कारिक रूप से लाभ होगा ।

मोती रत्न और महत्त्वपूर्ण ज्योतिषीय परामर्श :

मोती रत्न धारण करने के पूर्व जातक को सर्वप्रथम उसके अनुकूल तथा प्रतिकूल

प्रभाव के विषय में जानकारी होनी चाहिए । बिना विचारे अथवा ज्योतिषीय परामर्श के रत्न धारण कर लेने से कभी-कभी भयंकर परिस्थितियों का सामना करना पड़ जाता है । मोती रत्न धारण करने के पूर्व जातक सर्वप्रथम यह देख ले कि निम्न स्थितियों के अन्तर्गत वह मोती रत्न धारण करने के योग्य है अथवा नहीं ।

(1) मोती रत्न धारण करना जातक के लिए अनुकूल तथा लाभप्रद होगा यदि उसकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा राहु, केतु अथवा शनि इन तीनों में से किसी एक पाप ग्रह के साथ युति करते हुए विद्यमान हो ।

(2) यदि जन्म कुण्डली में पंचमेश चन्द्र राज्य भाव में, नवमेश चन्द्र द्वितीय भाव में, धनेश चन्द्र द्वितीय भाव में, दशमेश चन्द्र तृतीय भाव में, चतुर्थेश चन्द्र नवम भाव में स्थित हो तो ऐसे जातक को मोती रत्न अविलम्ब चाँदी की अंगूठी में सोमवार के दिन धारण कर लेना चाहिए ।

(3) मूलांक 2 वाले व्यक्ति को मोती रत्न अवश्य धारण करना चाहिए ।

(4) यदि जन्म कुण्डली में चन्द्र निर्वल अथवा क्षीण हो तो जातक को मोती रत्न धारण करना चाहिए ।

(5) महिलाओं के लिए मोती रत्न धारण करना सौभाग्यवर्द्धक होता है । मोती रत्न धारण करने के उपरान्त महिलाओं के रूप-लावण्य का विकास होता है ।

(6) यदि किसी भी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा नीच, अस्तगत अथवा राहु के साथ योग करते हुए ग्रहण योग बना रहा हो तो जातक को मोती रत्न जड़ित अँगूठी धारण करना चाहिए । जातक को मोती पहनना भाग्योदय कारक सिद्ध होगा ।

(7) यदि किसी भी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा सूर्य के साथ युति करते हुए विद्यमान हो तो जातक को मोती रत्न धारण करना परम कल्याणकारी होता है ।

चन्द्र रत्न मोती तथा उसके उपरत्न :

चन्द्रमा के दुष्प्रभाव को समाप्त करने के लिए तो सर्वप्रथम मोती रत्न ही धारण करना चाहिए । मोती रत्न चन्द्रमा के अशुभ प्रभाव को नष्ट करने के लिए सर्वोत्कृष्ट रत्न के रूप में ज्योतिषीय जगत में विख्यात है । किन्तु सभी लोग मोती रत्न खरीदने में सक्षम नहीं होते । भारत जैसे प्रगतिशील तथा ग़रीब देश में सामान्य जन अपने उदर-पोषण की व्यवस्था ठीक से नहीं कर पाते, फिर रत्नों की खरीददारी उसके लिए रेत का महल बनाना साबित होगा । अतः विकल्प के रूप चन्द्रकान्त मणि, सफेद हकीक के रूप में धारण किया जाता है ।

चन्द्रकान्त मणि अथवा गोदन्ता :

चन्द्रकान्त मणि को चन्द्रमा के दुश्प्रभाव को समाप्त करने के लिए रत्न विशेषज्ञों ने उपयुक्त पाया है । इसे चाँद के प्रकाश में जब देखा जाता है तो ऐसा लगता है मानो इसके अन्दर जल भरा हुआ है । इसे गोदन्ता के नाम से भी जाना जाता है । गोदन्ता नामकरण इसलिए पड़ गया— क्योंकि यह देखने में गाय के दाँत की तरह पीले रंग का होता है । यह विश्व के कई देशों में पाया जाता है । भारत, उसके पड़ोसी देश— श्री लंका, एवं वर्मा में भी यह पाया जाता है । अमेरिका, ब्राजील, स्विटजरलैंड, अफ्रीका में भी यह मिलता है ।

सफेद हकीक— इसमें कई लहरदार धारियाँ होती हैं । ऐसा विश्वास है कि ये धारियाँ जितनी अधिक तथा महीन होती हैं यह उपरत्न उतना ही प्रभावशाली तथा चमत्कारिक असर दिखाता है । इसमें मोम जैसी चमक व चिकनाहट पायी जाती है । सफेद हकीक उच्च कोटि का वही माना जाता है जिसमें महीन धारियाँ असंख्य मात्रा में हों तथा वे धारियाँ कहीं खण्डित न हों । यह भारत, जर्मनी, रोम, अमेरिका, इंग्लैण्ड सहित विश्व के कई देशों में पाया जाता है ।

सफेद पुखराज— सफेद पुखराज मोती के उपरत्नों की कोटि में आता है । यह मोती का उपरत्न भले ही हो किन्तु कीमत में यह मोती से अधिक मूल्यवान होता है । सफेद पुखराज भी चन्द्र के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने में सक्षम होता है ।

मोती रत्न तथा चिकित्सा में उसका प्रयोग :

प्राचीन काल से आयुर्वेद तथा यूनानी चिकित्सा पद्यति में रत्नों का प्रयोग होता चला आ रहा है । अब तो होमियोपैथिक औषधियों में भी इनका प्रयोग होने लगा है । प्रसिद्ध रत्न चिकित्सा के विशेषज्ञ तथा ओरियन्टल इन्स्टीट्यूट आफ बड़ौदा के भूतपूर्व डाइरेक्टर डॉ० विनयतोष भट्टाचार्य ने अपनी पुस्तक ''जेम्स थेरापी'' में रत्न चिकित्सा सम्बन्धी अपने अनुभवों की सम्पूर्ण जानकारी दी है । चिकित्सा जगत में मोती रत्न तथा भस्म का प्रयोग विभिन्न रोगों के लिए किया जाता है—

(1) मोती भस्म तथा पिष्टि का प्रयोग चिकित्सक अब स्मरण-शक्ति बढ़ाने की औषधि के रूप में करते हैं । इसका नियमित सेवन तीव्र स्मरण-शक्ति का स्वामी बनाता है । जिनकी स्मरण-शक्ति क्षीण हो गयी हो अथवा मन्द बुद्धि वाले व्यक्ति मोती पिष्टी के सेवन से कुछ ही दिनों में चमत्कारिक रूप से लाभान्वित होते हैं । इसके नित्य सेवन से उन्माद, अपस्मार, कम्पगत जैसे वायु विकार से सम्बन्धित रोग दूर होते हैं ।

(2) मोती की भस्म अथवा पिष्टि को सादे शीतल जल के साथ नित्य सेवन करें तो पेशाब में जलन होते ही शिकायत दूर हो जाती है ।

(3) पाचन-शक्ति को बढ़ाने तथा खूनी बवासीर व संग्रहणी जैसे भयंकर रोगों से मुक्ति दिलाने में मोती-भस्म या मोती-पिष्टि का सेवन बहुत ही लाभकारी तथा चमत्कारिक सिद्ध होता है ।

(4) मोती भस्म को नित्य अन्जन रूप में लगाने से नेत्र रोग कभी नहीं होते तथा नेत्रों की ज्योति वृद्धावस्था तक बनी रहती है ।

मोती रत्न में कैल्शियम 90 प्रतिशत तक होता है अतः शरीर में कैल्शियम सम्बन्धी रोगों अथवा कैल्शियम की कमी होने पर मोती भस्म अथवा पिष्टि एक अचूक तथा लाभकारी औषधि के रूप में प्रयुक्त की जाती है ।

(5) हृदय को बलशाली बनाने, थकावट व अधिक परिश्रम से कमजोरी तथा शारीरिक निर्बलता को दूर करने के लिए मोती भस्म अथवा मोती द्वारा निर्मित आयुर्वेद की प्रसिद्ध दवायें जैसे मुक्ता पंचामृत, मुक्तादि चूर्ण, बसन्त कुसुमार आदि चमत्कारिक ढंग से बलवर्द्धक व लाभकारी सिद्ध हुई हैं ।

(6) दस्त, हाजमे की कमी, आमाशय की बढ़ी हुई अम्लता और दूसरे पेट के रोगों में सीपी की भस्म दो से चार रत्ती तक दिन में दोतीन बार गुनगुने पानी से लें तो बहुत लाभ होता है । पुरुषों के शुक्रमेह एवं स्त्रियों के प्रदर रोग में यह प्रयोग बहुत गुणकारी सिद्ध हुआ है ।

(7) सिर घूमना, आँखों के आगे अँधेरा छा जाना और सिर के खाली-खाली प्रतीत होने के लिए मोती भस्म बहुत फायदेमन्द औषधि है । क्षय रोग, सूखी खाँसी को दूर करने, यौन-शक्ति को बढ़ाने तथा दिमाग को शक्तिशाली बनाने में यह बहुत लाभकारी सिद्ध होती है । जिन्हें अत्यधिक मानसिक श्रम करना पड़ता है उनके लिए मोती भस्म अथवा पिष्टि एक टॉनिक के रूप में कार्य करती है ।

(8) मोती भस्म की आधी से एक रत्ती की एक खुराक मक्खन, दूध अथवा मलाई के साथ खिलाने से शीघ्र-पतन व धात जाने जैसे गुप्त रोगों से मुक्ति मिलती है ।

शौर्य एवं पराक्रम का स्वामी
मंगल ग्रह

परिचय— सूर्य चन्द्र की भाँति ही मंगल ग्रह भी सौर-मण्डल का एक सदस्य है । मंगल ग्रह देखने में लाल रंग का होता है । मंगल ग्रह को काल पुरुष का पराक्रम माना गया है । मंगल ग्रह पुराणों और ज्योतिष शास्त्र में कुत्र, भौम, कुमार आदि कई नामों से विख्यात है । अंग्रेजी में इसे मार्स के नाम से जाना जाता है । उर्दू फारसी तथा अरबी में यह मारीक, मिर्रीख, बेहराम आदि के नाम से विख्यात है । भारतीय देव भाषा संस्कृत में इसके कई नाम हैं यथा– रुधिर, भूतनय, महीसुत, अंगारक, आवनेय, अवनिज आदि । मंगल ग्रह की कुछ विद्वान तथा पाश्चात्य ज्योतिषी युद्ध का देवता भी कहते हैं । प्राचीन भारतीय पुराणकारों ने भारतीय क्षेत्र में अवन्ति देश की धरती पर मंगल ग्रह का सर्वाधिक प्रभाव क्षेत्र माना है । अवन्ति वर्तमान में उज्जैन नगरी के रूप में जाना जाता है ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— मंगल ग्रह पृथ्वी से **6** करोड़ **25** लाख मील दूर ब्रह्माण्ड में स्थित है । इसे सूर्य की परिक्रमा करने में पौने दो वर्ष लगते हैं । वैज्ञानिकों ने अनुसन्धान तथा खोज करने के उपरान्त यह निष्कर्ष निकाला है कि मंगल ग्रह का वातावरण जलहीन-वायुहीन है तथा इसके दो उपग्रह हैं । कुछ वैज्ञानिक मंगल ग्रह पर मानव जैसे विकसित तथा सभ्य प्राणियों का अस्तित्व स्वीकार करते हैं, परन्तु अभी तक ऐसा कोई ठोस प्रमाण नहीं मिला, जिससे यह पता लगे कि मंगल ग्रह पर प्राणी अथवा जीवन का अस्तित्त्व है । अमेरिका ने अपने अन्तरिक्ष यान 'वाइकिंग' के माध्यम से यह पता लगाने की पूरी कोशिश की कि मंगल पर जीवन है अथवा नहीं । अमेरिका ही विश्व का एकमात्र राष्ट्र है जिनका अन्तरिक्ष यान मंगल पर मानव सहित पहुँचा है । मंगल ग्रह अनेक बातों में पृथ्वी की तरह है । मंगल ग्रह के दो उपग्रह हैं जिनके नाम (1) डैमास तथा (2) फैवोस है । मंगल के उपग्रहों का नाम उनके खोजकर्त्ता के नाम पर रखा गया है ।

सौर मण्डल में मंगल का स्थान चौथा है । मंगल ग्रह की गुरुत्त्वाकर्षण शक्ति पृथ्वी के गुरुत्त्वाकर्षण शक्ति का दसवाँ भाग है । मंगल ग्रह पृथ्वी के निकट आने पर सरलता से पहचाना व देखा जा सकता है क्योंकि यह लाल आभा वाला ग्रह है ।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण— ज्योतिष के मत से मंगल ग्रह को पराक्रम, साहस, सहनशीलता, देश-प्रेम, क्रोध, घृणा तथा आक्रमण प्रवृत्ति का अधिपति माना गया है ।

घात, षड़यंत्र, भूचाल, दुर्घटना, विस्फोट, छल पद्म आदि का अध्ययन भी इस ग्रह से करते हैं। मंगल का अशुभ प्रभाव वैवाहिक जीवन में विशेष बाधक होता है। मांगलिक दोष होने पर जातक का दाम्पत्य-जीवन सुखमय नहीं रहता अथवा विवाह-विच्छेद हो जाता है।

मंगल ग्रह मकर राशि पर उच्चस्थ तथा कर्क राशि से नीचस्थ माना जाता है। मेष तथा वृश्चिक इसकी स्वराशियाँ होती हैं। मंगल ग्रह रात्रि बली तथा दक्षिण दिशा का स्वामी है। यह लाल रंग का प्रतिनिधि तमोगुणी पुरुष ग्रह है। मनुष्य शरीर में पेट से पीठ तक का भाग, सिर, नाक, कान, फेफड़ों मस्तिष्क तथा रक्तकोष पर इसका नियंत्रण रहता है।

मंगल ग्रह के अशुभ प्रभाव से जातक को चेचक, रक्त-स्राव, ज्वर, पित्त, कफ विकार, प्लेग, घाव, अण्डकोष-वृद्धि, फोड़े-फुन्सी तथा धातु की शिकायत रहती है। शुभ मंगल होने की दशा में जातक को भाई बहन का सुख प्राप्त होता है। यदि जन्मांक चक्र में मंगल शुभ स्थान में विद्यमान हो तो जातक राजनैतिक क्षेत्र में नेतृत्त्व प्राप्त करता है तथा किसी प्रशासनिक सेवा पुलिस तथा इन्जीनियरी में ख्याति प्राप्त करने वाला होता है। बली तथा शुभ मंगल जातक को अनुशासन-प्रिय, जमींदार, सर्जन, सुदृढ़ तथा आकर्षक व्यक्तित्त्व देता है।

मंगल ग्रह को ज्योतिष में पाप ग्रह की श्रेणी में रखा गया है। यह पूर्व दिशा में उदित तथा पश्चिम दिशा में अस्त होता है। इसका प्रभाव जातक के जीवन में **28** वर्ष से **32** वर्ष के अन्दर होता है। अंक शास्त्र में मंगल ग्रह **9** अंक का प्रतिनिधित्त्व करता है।

मंगल ग्रह : तथा उसके प्रभाव से उत्पन्न होने वाले रोग :

मंगल ग्रह तथा इसका प्रभाव तामसी, क्रोधी और आक्रामक विचारों वाला होता है। मंगल ग्रह प्रतिकूल होने की अवस्था में जातक कुकर्मी, अपयशी, धोखा देने में कुशल तथा आपराधिक वृत्ति के होते हैं। मंगल ग्रह का आधिपत्त्य मदिरा, तम्बाकू, साहसिक कार्य, डाकुओं, चोरों-ठगों, ख्याति प्राप्त खिलाड़ियों तथा मादक द्रव्यों पर होता है। पाश्चात्त्य जगत में मंगल ग्रह को सेनापति अथवा नेतृत्त्व करने वाला मानते हैं। यदि किसी जातक का मंगल ग्रह बली होकर जन्मांक चक्र में शुभ स्थान में बैठा हो तो ऐसा जातक पुलिस की नौकरी में विशेष उन्नति करता है। साहस-पूर्ण कार्यों तथा शक्तिशाली नेतृत्त्वपूर्ण कार्य करने वाले जातक मंगल के शुभ प्रभाव से वशीभूत होते हैं। यदि जन्मांक-चक्र में मंगल उच्च राशिस्थ अथवा पूर्ण बली हो तो जातक के शत्रु सदैव पराजित होते हैं।

मंगल ग्रह जन्मांक (कुण्डली) के जिस भाव में बैठा होता है वहाँ के सप्तम तथा अष्टम भाव को पूर्ण दृष्टि से पंचम तथा नवम भाव को द्विपाद की दृष्टि से, तृतीय तथा दशम भाव को एकपाद की दृष्टि से देखता है। सूर्य, चन्द्र तथा वृहस्पति के साथ मंगल ग्रह मैत्री भाव रखता है। शुक्र और शनि से मंगल ग्रह समभाव रखता है जबकि मंगल के सम्बन्ध बुध, राहु तथा केतु के साथ शत्रुता पूर्ण हैं।

मंगल ग्रह मुकदमा, झगड़ा आदि के सम्बन्ध में बड़ा प्रभावशाली स्थान रखता है। यदि जातक का मंगल बली है तो उसे कभी भी मुकदमे में पराजय नहीं मिलती है।

मंगल ग्रह का अशुभ प्रभाव होने पर जातक को चेचक, खसरा, रक्त विकार, ज्वर तथा पित्त विकार जैसे रोग घेरते हैं। जातक के जीवन में आकस्मिक दुर्घटनायें प्रायः हुआ करती हैं। मंगल से प्रभावित व्यक्ति प्रायः संक्रामक रोगों से पीड़ित रहते हैं। यदि जन्मांक चक्र में मंगल नीच राशिस्थ, शत्रुक्षेत्री अथवा अशुभ स्थान में विद्यमान हो तो जातक की पत्नी का स्वास्थ्य प्रायः खराब रहता है। जातक को गुप्त रोग सदैव पीड़ित करते रहते हैं। वह वात रोग, गुदा रोग, कण्ठ रोग तथा चर्म रोग से दुःखी रहता है। यदि जन्मांक चक्र में मंगल अष्टम भाव में हो तो जातक नेत्र रोगी, रक्त विकार रोगी, पित्त तथा कफ विकार वाला होता है।

द्वादश भावों में मंगल ग्रह से उत्पन्न रोग :

सूर्य और चन्द्र ग्रह की तरह मंगल ग्रह का अशुभ प्रभाव जातक पर जब पड़ता है तब उसे नाना प्रकार की बीमारियाँ आ घेरती हैं। मंगल ग्रह सभी पर समान प्रभाव नहीं डालता है। कुछ पर तो सामान्य रूप से आक्रोश व्यक्त करता है किन्तु कुछ को भयंकर बीमारी से सदैव ग्रसित रखता है। ऐसा इसलिए होता है कि मंगल ग्रह की स्थिति प्रत्येक जातक के जन्मांक चक्र में समान नहीं होती। द्वादश भावों में मंगल की स्थिति के अनुसार जातक निम्न प्रकार के रोगों से प्रभावित होता है।

प्रथम भाव— जन्मांक चक्र में प्रथम भाव में मंगल होने पर जातक बाल्यावस्था में पेट तथा दाँतों के रोग से पीड़ित रहता है। उसे सिर पर चोट लगती है तथा फोड़े फुन्सी तथा अन्य रक्त विकार-जन्य रोग होते हैं। प्रथम भाव में नीच राशिस्थ मंगल होने पर जातक नेत्र रोग से ग्रसित रहता है तथा उसे गुदा एवं वात रोग होते हैं।

द्वितीय भाव— जन्मांक चक्र में द्वितीय भाव में मंगल हो तो वह प्रभावहीन माना जाता है किन्तु जातक को कुछ न कुछ शारीरिक पीड़ा दे ही जाता है। जातक को नेत्र तथा कानों में पीड़ा होती है। अंग-घात, अनिद्रा रोग, सिर पर चोट तथा दाँत के रोग

उसे पीड़ित करते हैं । जातक रजित रोग से अस्वस्थता अनुभव करता है । यदि मंगल षष्ठेश से युक्त हो तो वह नेत्र रोग से अवश्य पीड़ित रहता है ।

तृतीय भाव— तृतीय भाव में मंगल होने पर जातक सामान्य रूप से निरोग तथा स्वस्थ शरीर का होता है । यदि तृतीय भाव में मंगल नीच राशिस्थ अथवा शत्रुक्षेत्री होकर विद्यमान हो तो जातक को चर्म-रोग, अग्निभय तथा चोट लगने के कारण हड्डी टूटने का भय बना रहता है । जातक को गुप्त रोग भी प्रभावित करते हैं । क्षीण तथा अशुभ मंगल जातक की मानसिक दशा सन्तुलित नहीं रखता तथा उसे पागलपन से ग्रसित कर देता है ।

चतुर्थ भाव— जन्मांक चक्र में चतुर्थ भाव में मंगल की उपस्थिति अन्य ग्रहों की अनुकूलता व्यर्थ सिद्ध कर देती है । चतुर्थ भाव में मंगल हो तो जातक को शारीरिक चोट तथा अग्नि का भय सर्वदा बना रहता है । जातक व्यसनी होता है जिससे उसके पेट में सदैव गड़बड़ी बनी रहती है । जातक मियादी बुखार, मलेरिया, फाइलेरिया जैसे भयानक रोगों से पीड़ित रहता है । उसे सदैव शारीरिक कमजोरी की अनुभूति होती रहती है ।

पंचम भाव— पंचम भाव में मंगल ग्रह के विद्यमान रहने से जातक को शारीरिक कष्ट तथा गुप्तांग रोग सदैव पीड़ित करते रहते हैं । अपच, आत्म-विस्मृति, पेट-वृद्धि, कफ विकार, वात-विकार तथा उदर रोग सदैव पीड़ित करते रहते हैं । जातक दुबले शरीर का होता है तथा उसे अग्नि-भय तथा शस्त्र-भय सदैव बना रहता है । अशुभ अथवा नीच राशिस्थ अथवा शत्रुक्षेत्री मंगल जातक को सदैव रोगी बनाता है ।

षष्ठम भाव— जन्मांक चक्र में मंगल षष्ठ भाव में होने पर जातक रक्त विकार का रोगी होता है । यदि मंगल षष्ठ भाव में मिथुन अथवा कन्या राशि में हो तथा किसी अन्य शुभ ग्रह से दृष्ट न हो तो जातक को कुष्ठ रोग होता है । जातक अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है । जिसके फलस्वरूप उसे गुप्त रोग तथा मूत्र सम्बन्धी रोग होते हैं । यदि षष्ठ भाव में मंगल, वृष, सिंह अथवा वृश्चिक राशि में विद्यमान हो तो जातक को हृदय सम्बन्धी रोग प्रायः पीड़ित करते रहते हैं । मंगल जन्मांक चक्र में पापराशि में हो अथवा पापग्रह से दृष्ट हो तो जातक वात-शूल रोग से परेशान रहता है ।

सप्तम भाव— सप्तम भाव में मंगल विद्यमान हो तो जातक गुप्त रोगों से पीड़ित रहता है यथा— बहुमूत्र रोग, मूत्र-वाहिनी में जलन, मूत्राशय सम्बन्धी रोग, गुर्दे की पीड़ा, अल्सर, हार्निया रोग तथा अन्य इन्द्रिय रोग । नेत्र अथवा कर्ण रोग उन्हें विशेष रहता है । सप्तम भाव में मंगल यदि पापग्रह से युक्त हो तो कमर में दर्द रहता है । जातक दुर्बल शरीर का, वात रोगी तथा आलसी होता है ।

अष्टम भाव— अष्टम भाव में मंगल यदि शुभ ग्रह युक्त हो तो जातक निरोग, कांतिमय, शोभन व्यक्तित्व तथा दीर्घायु होता है । अष्टम भाव में मंगल के विद्यमान होने पर जातक को मूत्राशय सम्बन्धी रोग, वात, कफ विकार, नेत्र रोग तथा शस्त्र एवं अग्नि से भय रहता है । अष्टम भाव में मंगल यदि स्वक्षेत्री उच्च राशिस्थ अथवा मित्रक्षेत्री होकर विद्यमान हो तो जातक को शारीरिक तथा मानसिक सुख आजीवन प्राप्त होते हैं । क्षीण नीच राशिस्थ मंगल जातक को बवासीर, गुप्त रोगी तथा क्षय रोग से ग्रसित करता है ।

नवम भाव— नवम भाव में मंगल जन्मांक चक्र में हो तो जातक गुप्त रोग से पीड़ित रहता है । उसके सम्बन्ध अनेक दुर्व्यसनों से होते हैं । युवावस्था में रोग ग्रसित होता है । यदि नवम भाव में वृष, कन्या, वृश्चिक, मकर अथवा मीन राशि में मंगल विद्यमान हो तो जातक नीरोग स्वस्थ तथा शोभन व्यक्तित्त्व का स्वामी होता है । नवम भाव में मंगल अशुभ अथवा दुर्बल ग्रह के साथ युति करते हुए विद्यमान हो तो जातक की आयु बहुत अधिक होती है ।

दशम भाव— दशम भाव में मंगल के विद्यमान रहने के जातक स्वस्थ तथा निरोग रहता है । दशम भाव में यदि मंगल दुर्बल अथवा क्षीण हो तो उसे मद्यपान का व्यसन रहता है तथा शरीर कमजोर होता है । यदि दशम भाव में कर्क राशि में मंगल विद्यमान हो तो जातक की पत्नी का गर्भपात होता है ! यदि मंगल ग्रह शुभ राशि में हो अथवा शुभ ग्रह से युक्त होकर दशम भाव में विद्यमान हो तो जातक के भाई दीर्घायु होते हैं तथा वह स्वयं भी दीर्घायु होता है ।

एकादश भाव— एकादश भाव में मंगल विद्यमान हो तो जातक को शारीरिक तथा मानसिक कष्ट नहीं होता है । यदि मंगल ग्रह एकादश भाव में शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक भाग्यशाली तथा दीर्घायु होता है । बाल्यावस्था में पेट दर्द, दस्त रोग तथा नेत्र पीड़ा होती है । जातक को चोरी तथा अग्नि का भय आजीवन बना रहता है ।

द्वादश भाव— द्वादश भाव में मंगल विद्यमान हो तो जातक नेत्र रोग, कफ वात रोग तथा शस्त्र भय से पीड़ित रहता है । जातक स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से बलिष्ठ होता है किन्तु परस्त्रीगामी होने के कारण गुप्त रोग से पीड़ित रहता है । यदि द्वादश भाव में मंगल शुक्र की युति हो तो जातक को अग्नि भय तथा दुर्व्यसन का रोग होता है । यदि जातक का जन्म ज्येष्ठा नक्षत्र में हुआ हो तथा द्वादश भाव में मंगल विद्यमान हो तो लिकोरिया, बवासीर, भुजाओं में दर्द तथा दाँतों के विकार जातक को पीड़ित करते हैं ।

जन्मांक चक्र में मंगल और उसका प्रभाव :

सूर्य चन्द्र की भाँति मंगल ग्रह भी जन्मांक चक्र में अपनी स्थिति के अनुरूप जातक पर मुख्य रूप से दो प्रकार से प्रभाव डालता है । (1) राशिगत प्रभाव तथा (2) भावगत प्रभाव । मंगल की उच्चस्थ राशि मकर होती है । तथा नीच राशि कर्क मानी जाती है । उच्च राशिस्थ मंगल शुभ प्रभाव डालता है । तथा नीच राशिस्थ अशुभ प्रभाव से जातक को पीड़ित रखता है । मेष तथा वृश्चिक राशियाँ मंगल की स्वराशियाँ मानी जाती हैं ।

मंगल ग्रह तथा राशिगत प्रभाव :

मंगल ग्रह द्वादश राशियों में से किन्हीं एक राशि में जन्मांक चक्र में विद्यमान रहता है । मंगल का शुभ अशुभ प्रभाव विभिन्न राशियों में अलग-अलग निम्न प्रकार से होता है—

मेष राशि— मेष राशि में मंगल विद्यमान हो तो जातक सत्यवक्ता, शूरवीर, नेता, साहसी, दानी, राजमान्य तथा धनवान होता है । यदि मंगल मेष राशि में हो तथा जातक पुलिस अथवा फौज में नौकरी करता हो तो उसे साहस व स्फूर्ति के करण यश तथा पदोन्नति प्राप्त होगी । ऐसे जातक सेनापति होते हैं तथा संसार में प्रसिद्धि पाते है । कभी-कभी क्रोध के असंयम से जातक अपना बना-बनाया काम भी बिगाड़ लेता है ।

वृष राशि— जन्मांक चक्र में वृश राशि में मंगल विद्यमान हो तो जातक पुत्र-द्वेषी, प्रवासी, लड़ाकू प्रकृति वाला तथा वंचक होता है । वह परस्त्री के प्रति आकर्षित रहता है तथा उसकी स्वयं ही पत्नी रुग्णा होती है । जातक को सन्तान का सुख नहीं मिलता तथा वैचारिक मतभेद बने रहते हैं । वह देव, ब्राह्मण-भक्त तथा धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला होता है । उसे क्रोध अधिक आता है ।

मिथुन राशि— यदि मंगल ग्रह जन्मांक चक्र में मिथुन राशि में विद्यमान हो तो जातक शिल्पकला में दक्ष होता है । मिथुन राशि में विद्यमान मंगल यदि शुभ ग्रह अथवा स्थान में हो तो जातक अनेक कलाओं का ज्ञाता होकर संसार में प्रसिद्धि तथा यश प्राप्त करता है । वह प्रवासी, सुखी तथा भ्रमण-प्रिय होता है, उसे पिता का सुख अल्प मात्रा में मिलता है । परिवार में सदस्यों से जातक के वैचारिक मतभेद रहते हैं ।

कर्क राशि— जन्मांक चक्र में कर्क राशि में मंगल ग्रह विद्यमान हो तो जातक रोगी, दीन, सेवक, सुखाभिलाषी तथा पत्नी के वियोग में दुखी रहता है । जातक के सन्तान कम होती है अथवा देर से होती है । शत्रु सदैव परेशान करते हैं । उसे जीवन में गृह सुख तथा आर्थिक सुख प्राप्त होता है ।

सिंह राशि— जन्मांक चक्र में मंगल सिंह राशि में विद्यमान हो तो जातक के पुत्र

तेजस्वी तथा परोपकारी होते हैं । जातक स्वभाव से स्नेहशील, सदाचारी, शूरवीर, देव-द्विज भक्त तथा धार्मिक वृत्ति का होता है । उसे मामले–मुकदमे में सदैव विजय–श्री प्राप्त होती है । उसका दाम्पत्त्य जीवन सुखी होता है, मित्रों का स्नेह व सहयोग भी उसे प्राप्त होता है ।

कन्या राशि— जन्मांक चक्र में मंगल कन्या राशिस्थ स्थिति हो तो जातक लोकमान्य, व्यवहार-कुशल, पाप-भीरु तथा शिल्पज्ञ होता है । उसके जीवन में अनेक मित्र होते है तथा उसे समाज व परिवार को नेतृत्व करने का सौभाग्य प्राप्त होता है । कभी-कभी धन प्राप्त करने में जातक को संघर्ष करना पड़ता है ।

तुला राशि— तुला राशि में मंगल के स्थिति होने पर जातक प्रवासी, सफल वक्ता, कामुक स्वभाव वाला तथा पराये धन को अपहरण करने की इच्छा रखने वाला होता है । उसका दाम्पत्त्य जीवन सुखी नहीं रहता है । वह अपने मित्रों के साथ कुटिलता तथा धूर्ततापूर्ण व्यवहार तथा सज्जन व्यक्तियों से वैचारिक मतभेद रखता है ।

वृश्चिक राशि— जन्मांक चक्र में मंगल वृश्चिक राशि में विद्यमान हो तो जातक को खेती तथा बागवानी से लाभ होता है । जातक भ्रमण-प्रिय, व्यवसाय से लाभ अर्जित करने वाला, शठ, दुराचारी तथा चोरों का नेता होता है । जातक को स्त्री-सुख तथा परिवार का सुख प्राप्त होता है ।

धनु राशि— जन्मांक चक्र में मंगल धनु राशि में विद्यमान हो तो जातक की पत्नी सुन्दरी, सुशीला, पतिव्रता तथा ग्रह-कार्य में दक्ष होती है । जातक को जीवन में कई बार मार्ग दुर्घटना अथवा आघात–व्रण आदि के कारण कष्ट उठाना पड़ता है । जातक स्वभाव से कठोर परिश्रमी, शठ, क्रूर तथा पराधीन तथा धार्मिक कृत्त्यों में रुचि रखने वाला होता होता है । वह स्त्री का सानिध्य पाने को सदैव लालायित रहता है ।

मकर राशि— मंगल ग्रह मकर राशि पर विद्यमान हो तो जाकत ख्याति प्राप्त, पराक्रमी, नेता, ऐश्वर्यशाली, सुखी तथा महत्त्वाकांक्षी होता है । जातक का जीवन सुख, वैभव तथा भोगविलास-मय बीतता है । उसे वाहन सुख, गृह सुख तथा दाम्पत्त्य सुख प्राप्त होता है । जातक राजा अथवा राजा के समान शूरवीर, सामाजिक कार्यकर्त्ता तथा सबका प्रिय होता है । वह कभी भी किसी मुकदमे अथवा शत्रु से पराजित नहीं होता । सर्वत्र उसे विजय-श्री प्राप्त होती है ।

कुम्भ राशि— मंगल ग्रह जन्मांक चक्र में कुम्भ राशि में विद्यमान हो तो जातक हीन, चोर-वृत्ति, व्यसनी, सट्टे से धन नाशक, लोभी तथा कुटुम्ब विरोधी होता है । वह स्वभाव से दुष्ट तथा नीच प्रकृति होता है । ईश्वर के प्रति उसकी आस्था नहीं रहती तथा उसे पुत्र सुख का अभाव तथा परिवार के सदस्यों में वैचारिक मतभेद भी रहता है ।

मीन राशि— मीन राशि वाले जन्मांक चक्र में मंगल ग्रह विद्यमान हो तो जातक रोगी, प्रवासी, मांत्रिक, बन्धु-द्वेषी, नास्तिक, हठी, धूर्त्त और वाचाल होता है । वह नेत्र रोग, दन्त रोग, कर्ण रोग तथा मानसिक संत्रास से पीड़ित रहता है तथा स्वभाव से दुष्ट प्रकृति का होता है । उसे जीवन में पुत्र-सुख का अभाव पीड़ित करता है ।

मंगल ग्रह का भावगत प्रभाव :

राशिगत प्रभाव की भाँति ग्रहों का भावगत प्रभाव भी जातक पर पड़ता है । भावगत प्रभाव का तात्पर्य यह होता है कि सम्बन्धित ग्रह जन्मांक चक्र के द्वादश भावों में से किस भाव में विद्यमान है । अतः मंगल ग्रह का भी जन्मांक चक्र के द्वादश भावों में अलग-अलग स्थितियों में निम्न प्रभाव जातक पर पड़ता है—

प्रथम भाव— जन्मांक चक्र के प्रथम भाव में मंगल ग्रह के विद्यमान रहने पर जातक क्रोधी स्वभाव का होता है । वह स्वभाव से साहसी, चपल, गुप्त रोगी, सिर में चोट के निशान वाला, विचार रहित, महत्त्वाकांक्षी, धातु रोग एवं व्रणजन्य कष्ट से युक्त एवं व्यवहार में हानि उठाने वाला होता है । यदि प्रथम भाव में मंगल शनि की युति हो तो जातक शूरवीर, क्रोधी, साहसी, तथा कठोर स्वभाव का होता है । प्रथम भाव में मंगल यदि अपने उच्च राशिस्थ अर्थात मकर राशि में हो तो जातक विद्वान तथा कलाकार होता है । यदि प्रथम भाव में तुला राशि हो तथा मंगल विद्यमान हो तो जातक का दाम्पत्त्य-जीवन सुखी रहता है ।

द्वितीय भाव— जन्मांक चक्र में मंगल द्वितीय भाव में विद्यमान हो तो जातक कटुभाषी, निर्बुद्धि, कुटुम्ब क्लेश वाला, नेत्र–कर्ण रोगी, नीच सेवी तथा धनहीन होता है । जातक स्वभाव से पराक्रमी, चिन्तातुर, गरम पदार्थों के खाने में रुचि रखने वाला होता है । जातक अपने भाइयों से कलह करने वाला होता है तथा उसके वैचारिक मतभेद सदैव बने रहते है । यदि द्वितीय भाव में वृश्चिक राशि में मंगल विद्यमान हो तो जातक को पैतृक धन प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है । द्वितीय भाव में मंगल यदि उच्च राशिस्थ होकर विद्यमान हो तो जातक को आकस्मिक रूप से लाटरी सट्टे आदि से धन लाभ होता है ।

तृतीय भाव— तृतीय भाव में मंगल से विद्यमान होने पर जातक प्रसिद्ध, शूरवीर, धैर्यवान, साहसी, बन्धुहीन, बलवान, भ्रातृ कष्टकारक एवं कटुभाषी होता है । जातक स्वभाव से उदार तथा परोपकारी होता है । तृतीय भाव में क्षीण मंगल, नीच राशिस्थ अथवा शत्रु-क्षेत्री रूप में विद्यमान हो तो जातक धनसुख से रहित, मानसिक रूप में संत्रास ग्रसित अथवा कभी-कभी पागलों अथवा विक्षिप्तों के समान आचरण करने वाला

होता है । तृतीय भाव में यदि उच्च राशिस्थ, मित्र ग्रही अथवा शुभ ग्रहों से दृष्ट मंगल हो तो जातक बड़ा प्रतापी और समृद्धिशाली होता है । उसका व्यक्तित्त्व बड़ा रौबीला और शोभन होता है ।

चतुर्थ भाव— चतुर्थ भाव में मंगल की उपस्थिति अशुभ प्रभावकारी होती है । चतुर्थ भाव में मंगल की उपस्थिति पिता तथा माता दोनों के लिए अशुभ फलदायी रहती है । जातक को दाम्पत्त्य सुख का अभाव सर्वदा पीड़ित करता रहता है । जातक को मित्रों का सहयोग कभी नहीं प्राप्त होता तथा मातृ–सुख की अल्प मात्रा में मिलता है । जातक लम्बे शरीर तथा कठोर हृदय वाला होता है । चतुर्थ भाव में मंगल तुला राशि में विद्यमान हो तो जातक को उत्तम सुख प्राप्त होता है । चतुर्थ भाव में मंगल यदि उच्च राशिस्थ, शुभ ग्रहों से दृष्ट अथवा स्वग्रही हो तो जातक को वाहन सुख की प्राप्ति होती है ।

पंचम भाव— पंचम भाव में मंगल विद्यमान होने पर जातक उग्रबुद्धि, कपटी, व्यसनी, गुदा-उदर रोगी, कृश-शरीर, गुप्तांग रोगी मंगल तथा अष्टमेश की युति हो तो जातक द्वारा दत्तक पुत्र लिया जाता है । पंचम भाव में मंगल के विद्यमान होने पर जातक को पुत्र-सुख प्राप्त नहीं होता तथा कभी-कभी कन्या सन्तति वाला होता है । किन्तु यदि पंचम भाव में मंगल उच्च राशिस्थ अथवा स्वक्षेत्री हो तथा किसी शुभ ग्रहों से दुष्ट हो तो जातक को एक सुन्दर तथा भाग्यशाली पुत्र की अवश्य प्राप्ति होती है ।

षष्ठ भाव— षष्ठ भाव में मंगल विद्यमान हो तो जातक को शुभ फल प्रदान करने वाला होता है । जातक पुलिस आफीसर, शत्रुहंता, धैर्यशाली, कुलबन्त, बलवान, ब्रण और रक्त विकार युक्त तथा खर्चीले स्वभाव का होता है । षष्ठ भाव में मंगल होने पर जातक को ननिहाल का सुख नहीं मिलता । जातक के अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध होते हैं तथा चचेरे भाइयों से उसके वैचारिक मतभेद बने रहते हैं । जातक को सभी मुकदमों में सदैव सफलता मिलती है । शत्रु कभी सामना नहीं करते ।

सप्तम भाव— जन्मांक चक्र में सप्तम भाव में मंगल के विद्यमान रहने पर जातक को स्त्री का सुख नहीं मिलता । जातक को भयंकर क्रोध आ जाता है । वह ईर्ष्यालु प्रवृत्ति का, वात रोगी, राजभीरु, धूर्त, मूर्ख, निर्धन तथा धन का अपव्यय करने वाला होता है । यदि सप्तम भाव में मंगल शत्रुग्रह अथवा पाप ग्रह से युक्त हो तो जातक के दो विवाह होते हैं । सप्तम भाव में स्वक्षेत्री मंगल हो तो जातक को आर्थिक लाभ होता है ।

अष्टम भाव— जन्मांक चक्र में अष्टम भाव स्थित मंगल अशुभ फलदायक होता है । जातक व्यसनी, मद्यपायी, कठोर-भाषी, व्याधिग्रस्त, रोगी, संकोची, रक्त विकार युक्त,

धन की चिन्ता युक्त तथा अल्प सन्ततिवान होता है । यदि अष्टम भाव में मंगल पापग्रह से युक्त होकर विद्यमान हो तो जातक को गुप्त रोग होता है । अष्टम भाव में नीच राशिस्थ मंगल ग्रह के विद्यमान रहने पर जातक को जल-भय रहता है ।

नवम भाव— नवम भाव में मंगल यदि जन्मांक चक्र में विद्यमान हो तो जातक भ्रातृ-विरोधी तथा अभिमानी प्रकृति का होता है । जातक स्वभाव से द्वेषी, क्रोधी, यशस्वी, अल्प लाभ करने वाला तथा ईर्ष्यालु प्रकृति का होता है । जातक जीवन में स्व-पराक्रम से प्रगति करने वाला तथा कुलदीपक होता है । 29वां वर्ष पिता के लिए अनिष्टकारक होता है । यदि मंगल ग्रह शुभ ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक सुशील बुद्धिमान तथा उच्च पदस्थ अधिकारी होता है । नीच अथवा क्षीण मंगल जातक को भाग्यहीन तथा मिथ्याभिमानी बनाता है ।

दशम भाव— जन्मांक चक्र में दशम भाव में मंगल की उपस्थिति अति उत्तम तथा शुभ फलदायी मानी जाती है । दशम भाव में मंगल के विद्यमान होने पर जातक धनवान, कुलदीपक, सुखी, यशस्वी, उत्तम वाहनों से युक्त तथा स्वाभिमानी प्रकृति का होता है । दशम भाव में मंगल यदि शुभ-ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होकर विद्यमान हो तो जातक को प्रत्येक कार्य में सफलता मिलती है । दशम भाव में मंगल गुरु की युति जातक को प्रबल भाग्यशाली बनाता तथा वाहन-सुख प्रदान कराता है । क्षीण तथा नीच राशिस्थ मंगल दशम भाव में जातक को व्यसनी, मनमौजी तथा प्रत्येक कार्य में विघ्नकारक होता है ।

एकादश भाव— एकादश भाव में मंगल जन्मांक चक्र में विद्यमान हो तो जातक साहसी, प्रवासी, न्यायवान, क्रोधी, कटुभाषी तथा धैर्यवान होता है । जातक को पशुओं के व्यवसाय से आर्थिक लाभ होता है तथा जातक रत्नों के संग्रह में रुचि रखने वाला होता है । जातक अपने परिश्रम से बहुत उन्नति करता है । यदि एकादश भाव में मंगल उच्च राशिस्थ अथवा दो शुभ ग्रहों से युक्त हो तो जातक प्रबल भाग्यशाली, तेजस्वी तथा धार्मिक कार्य करने वाला होता है । एकादश भाव में मंगल के विद्यमान होने पर जातक को पुत्र-सुख का अभाव रहता है ।

द्वादश भाव— द्वादश भाव में मंगल जन्मांक चक्र में विद्यमान हो तो जातक के लिए अशुभ फल प्रदान करता है । वह नेत्र-पीड़ा, स्त्री पीड़ा से पीड़ित तथा नीच प्रकृति का होता है । उस का दाम्पत्य-जीवन सुखमय नहीं रहता तथा आकस्मिक खर्चों से सदैव परेशान व पीड़ित रहता है । जातक में क्रोध की अधिकता रहती है तथा धन का संचय कर पाने में असमर्थ रहता है । जातक को जीवन में कारावास भी जाना पड़ सकता है । द्वादश भाव में यदि मंगल शुभ-ग्रह के साथ युति करते हुए विद्यमान हो तो उसे स्त्री-सुख प्राप्त होता है ।

मंगल ग्रह तथा उससे उत्पन्न होने वाले रोगों का उपचार :

सूर्य तथा चन्द्रमा की भाँति मंगल ग्रह का शुभ तथा अशुभ प्रभाव मानव पर पड़ता है । शुभ प्रभाव से जहाँ मानव प्रगति, साहस, उद्यम की ओर अग्रसर होता है, वहीं मंगल ग्रह के अशुभ प्रभाव के फलस्वरूप जातक को शारीरिक कष्ट, रोग तथा मानसिक संत्रास का सामना करना पड़ता है ।

प्राचीन काल से ज्योतिषीय परामर्श मंगल के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए प्रवाल रत्न अर्थात् मूंगा रत्न धारण करना बताता रहा है ।

मंगल :

जन्म कुण्डली में मंगल की अशुभ स्थिति होने पर निम्न रोग विशेष तौर पर उत्पन्न होते हैं—

- पाण्डु रोग
- मानसिक दुर्बलता
- यकृत व तिल्ली के रोग
- अजीर्ण
- लकवा
- अम्लता
- कफ-पित्त प्रकोप
- रक्त-पित्त
- क्षय
- श्वास एवं कास
- भय
- सुस्ती

यकृत व तिल्ली के रोग

यकृत मानव शरीर का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग है । इसके अस्वस्थ और विकार-ग्रस्त होने से जिन्दगी और मौत का सवाल बन जाता है । यह हमारे शरीर की पाचन प्रणाली में सहायक होकर शरीर को स्वस्थ और बलवान बनाता है । लीवर कमजोर और विकार–ग्रस्त हो जाने पर कब्ज रहने लगना, आँतों का ठीक से काम न करना, भूख कम होना, खाने के प्रति अरुचि होना, सुबह उठने पर आलस्य व थकावट का अनुभव होना, भोजन करने में बाद पेट में भारीपन होना, खट्टी डकारें आना, थोड़ा सा परिश्रम करने या सीढ़ियाँ चढ़ने पर थकावट होना या साँस फूल जाना, जीभ पर मैल जमना, चेहरे पर पीलापन होना आदि लक्षण प्रगट होने लगते हैं ।

लीवर अथवा यकृत के खराब होने अथवा विकार-ग्रस्त होने पर निम्न रोग मुख्यतया उत्पन्न हो जाते हैं—

- पीलिया
- मधुमेह

- बवासीर
- गैस-ट्रवल
- वात-प्रकोप
- जोड़ों में दर्द
- गठिया
- सन्धिवात
- गुर्दा खराब होना
- पथरी होना
- उच्च रक्त-चाप होना
- सिर-दर्द
- खून की कमी

घरेलू चिकित्सा :

- लीवर की कमजोरी और विकार दूर करने के लिए आयुर्वेद का कुमारी आसव 100 ग्राम मात्रा लेकर इसमें एक ग्राम लौहभस्म डाल कर मिला लें। अब इस दवा की एक चम्मच खुराक एक कप शीतल जल के सथ दिन में दो बार रोगी को पिलायें। यकृत सम्बन्धी सभी रोग दूर हो जायेंगे तथा यकृत की कमजोरी भी दूर हो जायेगी।
- एक अन्जीर व चार पाँच नग मुनक्का को रात्रि में एक कप पानी में डालकर रख दें। सुबह खाली पेट इसे खूब मसलकर निचोड़ लें तदुपरान्त छानकर पी लें। कुछ ही दिनों में यकृत ठीक होने लगेगा व यकृत से सम्बन्धित समस्त विकार दूर हो जायेंगे।
- अमलतास का गूदा पाव भर लेकर पच्चीस ग्राम एलुआ के साथ मिला लें। अब इस मिश्रण को दो कप पानी में डालकर उबाल लें तथा इसका गाढ़ा लेप तैयार करें। इस लेप को लीवर के भाग पर लगाकर अरण्डी के पत्तों पर तेल लगाकर जरा गरम करें और लेप के ऊपर रखकर बाँध दें। इस प्रयोग को कुछ दिन तक नियमित करते रहें। कुछ ही दिनों में यकृत की कमजोरी ठीक हो जायेगी तथा यकृत सम्बन्धी समस्त रोग समूल नष्ट हो जायेंगे। यह दवा बहुत लाभदायक व परीक्षित है।
- यकृत के रोगी को दिन में चार बार छाछ पीनी चाहिए तथा भोजनोपरान्त गुलकन्द तथा आँवले का मुरब्बा अवश्य खाना चाहिए।
- ताजे करेलों को कूटकर और उनका रस निकाल कर दिन में तीन चार बार रोगी को पिलायें। यकृत ठीक हो जाता है।

विशेष— यकृत व लीवर के रोगी को इलाज के पहले व इलाज के साथ-साथ पूरे परहेज और उचित आहार-विहार का पालन करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा कोई भी औषधि लाभ नहीं कर पायेगी।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

यकृत में विकार अथवा कमजोरी होने से यदि पीलिया हो गया हो तो पाठक पीछे व पृष्ठ में उसका अवलोकन कर लें । पीलिया से सम्बन्धित औषधियों का विवरण पीछे दिया जा चुका है ।

यकृत में सूजन

नक्सवोमिका 30— यदि यकृत में सूजन हो तथा रोग क्रोध, चिड़चिड़ाहट से हुआ हो रोगी गरिष्ठ भोजन खाता रहता है, खाता भी रहा है, चिन्तित रहता है या शराब पीता है, अधिकतर मानसिक कार्य करता है, तब ऐसे रोगी को इस दवा की चार-पाँच गोली छः-छः घण्टों के अन्तराल में चूसने के लिए देना चाहिए । कुछ ही दिनों में यकृत की सूजन समूल चली जायेगी ।

डायोस्कोरिया 3 : यदि यकृत अथवा लीवर में दर्द हो तथा पित्तकोष से दर्द उठकर छाती, पीठ और बाँहों में जाता है, जिगर से उठे तो छाती तक, रोगी पीछे की ओर मुड़ने पर दर्द में लाभ महसूस करें तब ऐसे रोगी को इस दवा का मूल अर्क तीन-तीन घण्टे बाद दो बूँद करके देना चाहिए । तुरन्त लाभ होगा ।

फास्फोरस 30— यकृत की कमजोरी में रोगी को इस दवा की दो बूँद आधे कप जल के साथ दिन में चार बार देनी चाहिए। इसके नियमित सेवन से यकृत व लीवर की कमजोरी जड़ से चली जाती है ।

चायना 30 अथवा कैल्केरिया आर्स 3x— जिगर के आस-पास दर्द हो या पेट में गैस भरी रहती है, यकृत व तिल्ली बढ़ जाती हो तब ऐसे रोगी को उपरोक्त दवा की चार पाँच गोली दिन में तीनचार बार चूसने को देना चाहिए । कुछ ही दिन में यकृत सामान्य हो जायेगा ।

चुम्बकीय चिकित्सा

- चुम्बकीय पेटी यकृत वाले भाग पर 40-40 मिनट दिन में दो बार बाँधें तथा चुम्बकीय जल का दिन में 5-7 बार सेवन करें ।
- उपरोक्त प्रयोग नियमित महीने भर करने से यकृत सम्बन्धी रोगों में सुधार मिलना प्रारम्भ हो जाता है ।

विशेष— चुम्बकीय चिकित्सा प्रणाली से रोगों के निदान में समय तो अवश्य लगता है । किन्तु कुछ दिनों के धैर्य एवं विश्वासपूर्वक प्रयोग से रोग समूल (जड़ से) चला जाता

है । अतः ध्यान रहे कि चुम्बकीय चिकित्सा शनैः-शनैः किन्तु स्थायित्त्वपूर्ण ढंग से लाभ करती है ।

मन्त्र प्रयोग—

घनिष्ठा नक्षत्रगत किसी मंगलवार से इस मंगल मन्त्र का जाप कम से कम ग्यारह बार आरम्भ करें ।— **मन्त्र**— ॐ अं अंगारकाय नमः ।

इस मंत्र का नित्य जप करने से यकृत सम्बन्धी सभी रोगों में आराम मिलता है ।

यन्त्र साधना— मंगल यन्त्र की रचना सामान्यतया किसी मंगलवार के दिन ही करनी चाहिए । यंत्र-लेखन भोजपत्र पर लाल चन्दन की स्याही तथा अनार की कलम से करते हैं । कुछ तान्त्रिक जन ताम्रपत्र पर मंगल यंत्र की रचना करने (उत्कीर्ण कराने) का परामर्श देते हैं ।

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

मंगल यन्त्र के नित्य पूजन व दर्शन मात्र से यकृत सम्बन्धी समस्त रोगों से मुक्ति मिलती है । मंगल यंत्र समस्त अशुभ मंगल से उत्पन्न रोगों में रामवाण औषधि का काम करता है ।

तान्त्रिक प्रयोग :

मंगलवार के दिन मंगल की होरा में गौ-दुग्ध में डुबोकर स्वर्ण मुद्रिका धारण करने से यकृत सम्बन्धी रोगों से मुक्ति मिलती है ।

मृगशिरा नक्षत्रगत किसी मंगलवार को आठमुखी रुद्राक्ष लाल डोरे की सहायता से दाहिनी भुजा में धारण करें । यह प्रयोग यकृत व लीवर सम्बन्धी रोगों से मुक्ति दिलाता है ।

रत्न प्रयोग—

सामान्य रूप से यकृत व लीवर सम्बन्धी समस्त रोगों से मुक्ति पाने के लिए मूँगा रत्न चाँदी अथवा ताँबे की अँगूठी में बनवाकर किसी मंगलवार के दिन धारण करना चाहिए । विशेष स्थिति में किसी रत्नविज्ञ ज्योतिषी से परामर्श लेना चाहिए ।

कफ पित्त प्रकोप— कफ पित्त जनित रोग मंगल ग्रह के अशुभ प्रभाव से उत्पन्न होते हैं । कफ के कुपित होने और बढ़ने से शरीर में भारीपन, शिथिलता, आलस्य, भूख में कमी, भोजन के प्रति अरुचि, शरीर में थकावट तथा कभी-कभी हल्का सा ज्वर भी हो जाता है । इसी प्रकार शरीर में पित्त की अधिकता हो जाने से खट्टी डकारें, उल्टी तथा जी मिचलाता रहता है ।

जब कफ और पित्त की अधिकता हो जाए तो ऐसी स्थिति में स्त्री से सहवास नहीं करना चाहिए तथा खट्टे और बासी पदार्थों से परहेज रखना चाहिए । खटाई, वनस्पति घी और बाजार की तली हुई वस्तुओं से दूर रहना चाहिए ।

घरेलू चिकित्सा :

- भटकटैया के बीजों को छाछ में डालकर उसमें थोड़ा सा सेंधा नमक भी डाल दें । अब इसे आग पर रखकर औटाऐं, तदुपरान्त बीजों को धूप में रखकर सुखा लें । यह प्रक्रिया नित्य 6-7 दिन तक ताजी छाछ में डालकर दोहरायें । तत्पश्चात् इन बीजों को शुद्ध गौ-घृत में तल लें । इस औषधि रूपी बीजों की दो तोला मात्रा नित्य सेवन करने से समस्त पित्त-विकार शान्त हो जाते हैं । ताजी और नरम मूली के टुकड़ो को पिसी मिश्री के साथ नित्य सेवन करने से समस्त प्रकार की अम्लपित्ती दूर हो जाती है ।
- नीबू काटकर उसके दो भाग कर लें । काला नमक, सोंठ, शक्कर, और जीरा समभाग में लेकर पीस लें । अब इसमें पीसे हुए उपरोक्त चूर्ण को भरकर आग में रखें । जब ये खदबदाने लगे तब उतार कर ठण्डा करके चूसें । इसके प्रयोग करने से पित्त प्रकोप शान्त होता है ।
- कफ प्रकोप बढ़ जाने पर गर्म पानी का सेवन करें तथा दिन में दो तीन बार गर्म पानी में पोटाशियम परमेग्नेट का एक दाना डालकर इस पानी के गरारे करें । यह प्रकोप 2-3 दिन नियमित करने से कफ प्रकोप शान्त हो जाता है ।
- दस ग्राम आँवला के चूर्ण को सायंकाल एक कफ पानी में भिगोकर रख दें । प्रातःकाल इसे मसलकर छान लें । अब इसमें थोड़ी मिश्री और जीरे का चूर्ण मिलाकर सेवन करें । इसके नियमित 15-20 दिन सेवन करने से समस्त पित्त रोग शान्त हो जाते हैं ।
- 10-12 पत्ती तुलसी,2-3 खड़ी काली मिर्च, एक चुटकी सोंठ तथा एक चुटकी सेंधा नमक सभी को एक पाव पानी में डालकर उबालें । आधा कप पानी बचे तो इसे उतार कर छान लें इसको दिन में दो बार 4-5 दिन लगातार पियें । सभी प्रकार के कफ विकार दूर हो जायेगें ।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

एण्टिमटार्ट 30— कफ प्रकोप बढ़ जाने पर जब खाँसते समय गले में कफ अड़ा हुआ लगे, खाँसने पर लगे कि निकल जायेगा पर निकले नहीं, रोगी खाँसते-खाँसते उल्टी

कर दे । सुस्त पड़ा रहे तब इस दबा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार रोगी चूसने के लिए देना चाहिए । तुरन्त आराम होगा ।

क्रियोजोट 3, 30 अथवा 200— पित्त प्रकोप बढ़ जाने पर जब अपच, भोजन की उल्टी, हाजमा की कमजोरी, गर्भावस्था की उल्टी हो, तब ऐसे रोगी को इस दवा की 4-4 गोली में तीन बार चूसने के लिए देनी चाहिए ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

चुम्बकीय बेल्ट को आधे-आधे घण्टे तक दिन में तन बार मेंगल की होरा में पेट पर बाँधें तथा चुम्बकीय जल का दिन में 5-7 बार सेवन करें ।

उपरोक्त दोनों प्रयोग मंगलवार के दिन से प्रारम्भ करने से समस्त प्रकार के कफ पित्त प्रकोप शान्त हो जाते हैं ।

मन्त्र प्रयोग—

निम्न मन्त्र का जप चित्रा नक्षत्रगत किसी मंगलबार के दिन से प्रारम्भ करने से कफ पित्त विकार समूल (जड़ से) समाप्त हो जाता है–

मन्त्र— **ॐ क्रां क्रीं क्रौंः सः भौमाय नमः ।**

उपरोक्त मन्त्र का जप नित्य कम से कम ग्यारह माला अवश्य करें ।

यन्त्र साधना—

कफ पित्त विकार से मुक्ति पाने के लिए मंगल यन्त्र साधना व दर्शन नियमित रूप से करें । मंगल यन्त्र के विषय में पीछे के पृष्ठों में उल्लेख है । अतः पाठक उसे देख लें ।

तांत्रिक साधना :

मंगलवार के दिन मंगल की होरा में अनन्त मूल की जड़ घर लाकर उसका विधिवत पूजन व शोधन करके लाल डोरे की सहायता से दाहिनी भुजा में धारण करने से समस्त कफ-पित्त विकार दूर हो जाते हैं ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतया कफ पित्त जनित रोगों से मुक्ति पाने के लिए लाल तामड़ा रत्न चाँदी अथवा तँबे की अंगूठी में बनवाकर दाहिनी अनामिक में धारण करें । विशेष परिस्थितियों में किसी रत्नविज्ञ ज्योतिषी से सम्पर्क कर लें ।

अजीर्ण

अजीर्ण हो जाने पर सदैव खट्टी डकारें आती रहती है । पेट में भारीपन रहता

है, टट्टी में भोजन निकलता, मुँह में बदबू, पेट में जलन, जीभ मैली मन उदास, सिर में दर्द बना रहता है । रोगी चिड़चिड़ा हो जाता है तथा पेट में हवा, कभी कब्ज कभी अपच, आदि लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं ।

घरेलू उपचार :

- कलमी शोरा, देशी नौसादर तथा सेंधा नमक सभी 25-25 ग्राम मात्रा में लेकर कूट पीसकर छान लें । अब इसमें 250 मिली. कागजी नीबू का रस डालें । भोजन के उपरान्त नियमित रूप से उपरोक्त मिश्रण की आधे कप जल के साथ लेने से अजीर्ण की शिकायत दूर हो जाती है ।
- नियमित रूप से मूली के ताजे हरे पत्तों तथा कच्ची मूली का सलाद बना, उसमें जरा-सा सेंधा नमक बुरक कर खाने से अजीर्ण की शिकायत दूर हो जाती है ।
- बड़ी इलाइची, काली मिर्च, लोंग, सोंठ, दालचीनी, जीरा, धनियां सूखा इन सभी को मिलाकर कूट पीस लें व कपड़छन कर लें । अब सूखा अथवा हरा पोदीना 4-5 ग्राम मात्रा में लेकर तथा उपरोक्त कपड़छन की 5-5 ग्राम मात्रा को एक कप पानी में डालकर उबालें । जब एक चौथाई पानी रह जाए तो उसे उतार कर ठण्डा कर लें । इसकी तीन खुराक बनाकर दिन में तीन बार लें । पुराना से पुराना अजीर्ण ठीक हो जायेगा ।
- नीबू के रस को पानी के साथ नियमित सेवन करने से अजीर्ण की शिकायत दूर हो जाती है ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

चायना 30— पेट में वायु भरी रहती हो अफारा रहता हो खाने में अरुचि रहती हो, डकार से आराम नहीं मिलता, जो कुछ खाया जाता है, सड़कर वायु बनती है, दूध पीने से पेट में गड़बड़ होती है, फल तक नहीं पचते ऐसे रोगी को दवा की तीन-चार गोली दिन में तीन बार चूसने के लिये देना चाहिए । तुरन्त आराम मिलेगा ।

सल्फर 30— स्टार्च युक्त भोजन न पचा सकने, दूध न पचने, दोपहर को पेट खाली-खाली महसूस करने, जिगर के आस-पास पेट तना-तना और थोड़ा सा ही भोजन करने पर पेट भर जाना, कभी दस्त, कभी कब्ज आदि लक्षणों से युक्त रोगी के लिए इस दवा की दो बूँद आधे कप जल के साथ दिन में तीन चार बार दें । इसके सेवन करने से अजीर्ण की शिकायत दूर हो जाती है ।

ऐनाकार्डियम 30 अथवा 200— पेट खाली सा रहता है । रोगी बहुत जल्दी घबड़ा जाता है । खाना जल्दी-जल्दी खाता है, खाने के लिए बेचैन हो जाता है । ऐसे लक्षणों से युक्त रोगी के लिए यह दवा बहुत लाभकारी है ।

लाइकोपोडियम 30— कब्ज बना रहता है । वायु प्रकोप, शाम को अधिक भूख तो लगती है– परन्तु जरा सा खाते ही महसूस हो कि पेट भर गया, पेट तना रहता है । टट्टी नहीं आती, गुदा में सिकुड़न, किसी-किसी को बुखार अथवा सिर-दर्द की शिकायत भी हो जाती है, ऐसे लक्षणों से युक्त रोगी को दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार देनी चाहिए । इसके कुछ दिनों तक नियमित सेवन से समस्त अजीर्ण सम्बन्धी शिकायतें समाप्त हो जाती हैं ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

अजीर्ण सम्बन्धी शिकायत में चुम्बकीय पेटी पेट पर आगे से पीछे बाँधे । ऐसा 40-40 मिनट, दिन में दो बार करें तथा चुम्बकीय जल का दिन में 8-10 बार सेवन करें ।

मन्त्र प्रयोग—

इस मन्त्र का जप मंगलवार के दिन मंगल की होरा में कम से कम पाँच माला करने से अजीर्ण सम्बन्धी रोगों से मुक्ति मिलती है— मन्त्र— **ॐ भौं भौमाय नमः ।**

यन्त्र साधना—

अज़ीर्ण सम्बन्धी रोग से मुक्ति पाने के लिए मंगल यन्त्र की साधना व दर्शन करें । मंगल यंत्र का उल्लेख पीछे के पृष्ठ में किया गया है ।

तान्त्रिक प्रयोग :

■ चित्रा नक्षत्रगत मंगलवार के दिन नदी अथवा प्रवाहित जल में गुड़ के टुकड़े अथवा गुड़ की बनी हुई मिठाई या अन्य खाद्य सामग्री प्रवाहित करें ।

■ किसी मंगलवार को गुलाब की जड़ खोदकर घर ले आवें । तदुपरान्त इसे पूजन और शोधित करके लाल डोरे की सहायता से भुजा में धारण कर लें ।

उपरोक्त दोनों में से कोई भी एक तांत्रिक प्रयोग करने से अजीर्ण, सम्बन्धी शिकायत दूर हो जाती है ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतया अजीर्ण सम्बन्धी शिकायत से मुक्ति पाने के लिए लाल जैस्पर रत्न ताँबे अथवा चाँदी की अंगूठी में मढ़ाकर दाहिनी अनामिका में धारण करना चाहिए ।

विशेष— ध्यान रहे कि उपरोक्त जल मंगलवार के दिन व पूजन शोधन के उपरान्त ही धारण करें, अन्यथा यह निष्प्रभावी रहता है ।

पक्षाघात (लकवा)

पक्षाघात होने पर पीड़ित अंग कार्य करना बन्द कर देता है । यह स्नायु संस्थान की बीमारी है । शरीर के जिस हिस्से में पक्षाघात होता है, उसकी संवेदन-क्षमता समाप्त हो जाती है । पक्षाघात में रोगी पीड़ित अंग को हिला नहीं सकता, लेटे हुए करवट नहीं बदल सकता । पक्षाघात पीड़ित अंग जानने-पहचानने या काम करने की शक्ति खो देता है । पक्षाघात शरीर के किसी भी अंग में हो सकता है । सामान्य रूप से पक्षाघात को दो भागों में बाँटा जाता है । (1) गतिरोधक पक्षाघात और (2) संवेदनात्मक पक्षाघात ।

गतिरोधक पक्षाघात में रोगी पीड़ित अंगों को हिला सकने में असमर्थ हो जाता है जबकि संवेदनात्मक पक्षाघात में पीड़ित अंग की संवेदनशीलता समाप्त हो जाती है जिसके फलस्वरूप प्रभावित अंग काम करने की क्षमता खो बैठता है ।

घरेलू औषधियाँ :

- आक के पत्तों को कड़ुवे तेल में पकाकर पक्षाघात से पीड़ित अंग में मालिश करने से पक्षाघात में लाभ होता है । यह उपचार पक्षाघात की प्रारम्भिक अवस्था में विशेष लाभ करता है ।
- पुराना गोघृत दिन में तीन अथवा चार बार एक-एक चम्मच करके पक्षाघात से पीड़ित रोगी को दें । अगर घृत ऐसे रुचिकर न लगे तो भोजन के साथ दें । इसके नियमित सेवन से पक्षाघात की निवृत्ति होती है । ध्यान रहे कि गोघृत जितना पुराना होगा उतना ही गुणकारी तथा अधिक लाभदायक रहेगा ।
- उड़द और सोंठ के मिश्रण से बना काढ़ा दिन में तीन चार बार पक्षाघात से पीड़ित रोगी को पिलायें । इसके नियमित सेवन से लकवा दूर हो जाता है ।
- 100 ग्राम मीठी बच, 40-40 ग्राम काला जीरा और सोंठ, तीनों को खरल में डालकर कूट पीसकर चूर्ण बना लें । इस चूर्ण की तीन ग्राम मात्रा शहद के साथ मिलाकर रोगी को सुबह-शाम चटायें । पक्षाघात के लिए यह औषधि रामबाण का कार्य करती है ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

लैकेसिस 30— यह औषधि अर्द्धांग मारे जाने पर भी दी जाती है । रोगी धीरे

बोलता है माँस-पेशियाँ अकड़ जाती हैं । सामान्यतया डिफ्थीरिया के उपरान्त आधे अंग का पक्षाघात होने पर इस औषधि की चार-पाँच गोलियाँ रोगी को दिन में तीन-चार बार चूसने को देना चाहिए ।

बैराइटा कार्ब 3 अथवा 30— जब घुटनों से अण्डकोष तक अंग सुन्न हो गये हों, परन्तु रोगी के बैठने पर सुन्नपन कम हो जाता हो, तलवे और अंगूठे दुखते हैं, चलने पर दर्द की अनुभूति होती है तथा पक्षाघात बढ़ते-बढ़ते पूरे बाँये अंगों पर छा जाता हो तो ऐसे रोगी को इस दवा की दो बूँद आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देनी चाहिए । यह औषधि बच्चों तथा बूढ़ों के लिए विशेष लाभकारी है ।

ग्रेफाइटिस 30— मुख-मण्डल में पक्षाघात होने पर यह औषधि दी जाती है । आधे चेहरे का पक्षाघात हो जाय और चेहरे की माँस-पेशियाँ तुड़-मुड़ कर ऐसी हो जायें कि रोगी बोलने में असमर्थ हो जाए । ऐसे रोगी को इस दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देनी चाहिए ।

जेल्सीमियम 30— थकावट, कंपन, शरीर भारी, सारे शरीर में कमजोरी, रोगी को प्यास न लगे, सुन्नपन, ऐसे रोगी को इस औषधि की चार-पाँच गोली चूसने के लिए देना चाहिए । कुछ दिनों के नियमित सेवन से पक्षाघात में लाभ होना प्रारम्भ हो जायेगा ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

- पक्षाघात से पीड़ित स्थान पर चुम्बकीय बेल्ट 40-50 मिनट करके दिन में तीन-चार बार बाँधें तथा चुम्बकीय तेल से मालिश करें ।
- पक्षाघात से पीड़ित रोगी को दिन में अधिक से अधिक चुम्बकीय जल का सेवन करायें ।

विशेष— उपरोक्त दोनों प्रयोग साथ-साथ नियमित रूप से कम से कम एक माह तक करें, कुछ ही दिनों में पक्षाघात समूल नष्ट हो जायेगा । विस्तृत जानकारी के लिए ''होम्यो चुम्बक चिकित्सा'' (डा० आर० एस० अग्रवाल) का अध्ययन करें ।

मँगाने का पता— भाषा भवन, हालन गंज, मथुरा

मंत्र प्रयोग—

निम्न श्लोक का नित्य ग्यारह माला पाठ करें तथा मंगल ग्रह की साधना व पूजन करें—

धरणीं गर्भ सम्भूतं, विद्युत कान्ति समप्रभम् ।
कुमार शक्ति हस्तं च, मंगलं प्रणमाम्यहम् ।।

उपरोक्त मन्त्र की साधना धनिष्ठा नक्षत्रगत किसी मंगलवार को प्रारम्भ करें । शास्त्रों एवं पुराणों में उल्लिखित है कि उपरोक्त मंत्र साधना पक्षाघात की व्याधि को समाप्त करने में सक्षम है ।

यन्त्र साधना—

मृगशिरा नक्षत्र गत किसी मंगलवार को मंगल यंत्र की साधना व पूजन प्रारम्भ करें । इसके नियमित पूजन व दर्शन से पक्षाघात के रोग से मुक्ति मिलती है । मंगल यंत्र की साधना व पूजन विधि का उल्लेख पीछे के पृष्ठों में किया जा चुका है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

जंगली कबूतर के खून से मंगलवार के दिन मंगल की होरा में पक्षाघात से पीड़ित अंग की मालिश करें । इसके नियमित प्रयोग से पक्षाघात में काफी लाभ होता है ।

किसी मंगलवार को अथवा घनिष्ठा नक्षत्र में प्रवाहित जल में (नदी अथवा सरिता) ताँबे का टुकड़ा, पक्षाघात से पीड़ित अंग का स्पर्श करने के उपरान्त, प्रवाहित करें । यह प्रयोग कम से कम ग्यारह मंगलवार अवश्य करें ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतः पक्षाघात से मुक्ति पाने के लिए मंगल की होरा में विद्रुम रत्न चाँदी अथवा ताँबे में मढ़ाकर दाहिनी अनामिका में धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी सुयोग्य रत्नविद् ज्योतिषी से परामर्श लें ।

विशेष— रत्न धारण शोधन तथा पूजन के उपरान्त ही करना चाहिए तथा रत्न दोष रहित व कम से कम पाँच रत्ती भार का अवश्य होना चाहिए । दोष पूर्ण तथा अल्पभार वाले रत्न लाभ की बजाय हानि करते हैं । अतः इस संदर्भ में विशेष सावधानी बरतें ।

अम्लता : अम्ल पित्त : हाइपरएसेडिटी

आजकल अम्लपित्त होने की शिकायत आम तौर से पाई जाती है । इस व्याधि के होने पर सीने में जलन, पेट में जलन, मुँह में कड़वा पानी आना, उल्टी होना, हलक खट्टा, चिरपरा पानी डकार के साथ आना आदि लक्षण प्रकट होते हैं ।

अम्ल-पित्त होने का मुख्य कारण कफ का होना है । गलत आहार विहार, मानसिक तनाव, तेज और मिर्च मसाले युक्त पदार्थों का अति सेवन, तामसी प्रवृत्ति, गरम दवाइयों

का अति सेवन तथा स्वाद के वश में हानिकारक आहार लेना ही इस रोग की उत्पत्ति का मुख्य कारण होता है ।

अम्ल-पित्त से मुक्ति पाने के लिए निम्न उपचार के साथ-साथ आहार-विहार तथा परहेज नितान्त आवश्यक है । हल्का और सुपाच्य खाद्य लेने से पाचन-क्रिया ठीक से कार्य करती है तथा कब्ज नहीं हो पाता है ।

घरेलू औषधियाँ :

- नियमित रूप से पानी में नीबू निचोड़ कर पीने से अम्ल-पित्त की शिकायत दूर होती है ।
- बच और नमक को पानी में उबालकर छान लें । इस पानी को नियमित पीने से अम्लता की शिकायत सदैव के लिए समाप्त हो जाती है ।
- अम्ल पित्त को दूर करने के लिए सदैव ताजी व नरम मूली के टुकड़े पिसी मिश्री के साथ सेवन करना चाहिए । इसके नियमित सेवन करने से 'हाइपर-ऐसेडिटी' का रोग नहीं होता ।
- तीन सौ ग्राम त्रिफला, 25 ग्राम मीठा सोडा, 25 ग्राम काला नमक 12 ग्राम नीबू का सत, सबको मिलाकर शीशी में भर लें । इस चूर्ण को 10 ग्राम मात्रा एक कप पानी में डालकर रातभर पड़ा रहने दें तथा सुबह छानकर इसे पियें । इसके नियमित सेवन से कभी भी अम्ल पित्त का रोग नहीं रहता तथा पेट साफ रहता है ।
- त्रिफला (हरड़, बहेड़ा, आँवला), त्रिकुटा (सोंठ, काली मिर्च, पीपल) नागर मोथा, छोटी इलायची के दाने, वायविडंग, तेजपात सब 10-10 ग्राम, त्रिफला और त्रिकुटा 30-30 ग्राम, लौंग 100 ग्राम, निसोत 400 ग्राम और 600 ग्राम मिश्री, सभी को खरल में डालकर कूट-पीस कर चूर्ण कर मिलालें । इस चूर्ण को 3-4 ग्राम मात्रा नित्य भोजन के पूर्व जल के साथ लेने से कभी भी अम्लता की शिकायत नहीं होती ।

विशेष— दवा के सेवन करने के आधे घण्टे तक कुछ खाएं नहीं । अम्लता के रोगी को खटाई, तले पदार्थ, लाल मिर्च और मसालेदार पदार्थों का सेवन बिल्कुल नहीं करना चाहिए ।

- एक ग्राम शंख भस्म तथा आधा ग्राम सोंठ का चूर्ण दोनों को शहद में मिलाकर नित्य चाटने से अम्लपित्त का रोग चला जाता है ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

सिम्फोरिकारपस रेसिमोसा 200— किसी प्रकार के भोजन या उसकी गन्ध से अरुचि, मुँह का स्वाद कड़वा होना, मुँह में पानी भर-भर आए, लगातार उल्टी आए, ऐसे लक्षण दिखलाई पड़ने पर दवा की दो बूँद मात्रा दिन में दो बार आधे कप पानी के साथ देना चाहिए । अम्लता के लिए यह दवा बहुत उपयोगी है ।

क्रियोसोट 3 अथवा 30 अथवा 200— अम्लता होने पर अपक्व भोजन की उल्टी, जी मिचलाता रहे, ऐसे रोगी को इस दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देना चाहिए ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

अम्लता के रोग से मुक्ति पाने के लिए रोगी के पेट में चुम्बक-पेटी आगे से पीछे बाँधें । ऐसा 40-40 मिनट तक दिन में दो-तीन बार तथा चुम्बक-जल का दिन में 5-7 बार सेवन करें । इसके नियमित प्रयोग करने से अम्लता का रोग सदैव के लिए चला जाता है ।

मन्त्र प्रयोग—

अम्लता के रोग से मुक्ति पाने के लिए नित्य मंगल मन्त्र का जप पाँच माला करना चाहिए । मन्त्र-जप किसी मंगलवार के दिन से प्रारम्भ करें ।

यन्त्र-साधना—

मंगल यन्त्र-साधना व पूजन-दर्शन नियमित करने से अम्तलता का रोग नहीं होता । मंगल यन्त्र का उल्लेख पीछे के पृष्ठों में किया जा चुका है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

■ मूल नक्षत्र में ताड़ की जड़ लाकर मंगलवार के दिन धारण करने से अम्लता के रोग से मुक्ति मिलती है ।

■ किसी शुभ मंगलवार के दिन जसौंदी की जड़ खोदकर घर लावें । इस जड़ को शोधन करने के पश्चात् लाल डोरा की सहायता से दाहिनी भुजा में धारण करने से अम्लता का रोग सदैव के लिए चला जाता है ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतया अम्लता के रोग से मुक्ति पाने के लिए मूँगा रत्न ताँबा मिश्रित चाँदी

की अंगूठी में मढ़ाकर दाहिनी अनामिका में धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी सुयोग्य रत्नविद् ज्योतिषी से परामर्श करें ।

मंगल रत्न— जन्मांक चक्र में मंगल के अशुभ भाव में विद्यमान होने पर अथवा क्षीण मंगल होने की दशा में अथवा पाप ग्रहों से युक्त अथवा पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट होने की अवस्था में नीच राशिस्थ होने की दशा में जातक पर मंगल ग्रह का प्रतिकूल तथा अशुभ प्रभाव पड़ता है । उपरोक्त किसी भी दशा में मंगल के अशुभ प्रभाव पड़ने की अवस्था में तथा अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए ज्योतिषीय परामर्श से प्रवाल रत्न अथवा मूँगा रत्न धारण करना सर्वोत्कृष्ट बताया गया है ।

प्रवाल अथवा मूँगा परिचय— मूँगा अथवा प्रवाल रत्न मंगल ग्रह के अशुभ प्रभाव को समाप्त करने की क्षमता रखता है । यद्यपि मूँगा रत्न नीलम तथा माणिक्य की तरह कोई पत्थर नहीं है किन्तु फिर भी इसकी गणना मूल्यवान नौ रत्नों में की जाती है । जिस प्रकार मोती रत्न की उत्पत्ति घोंघे नामक कीड़े के सीप से होती है । उसी प्रकार मूँगा रत्न भी समुद्र की तलहटी में पाये जाने वाला पोलिपाई किस्म के आइसिस नोवाइल्स नाम के लसदार समुद्री जन्तुओं की उपज है ।

मूँगा को अंग्रेजी में कोरल (Coral) कहते हैं । उसका संस्कृत नाम प्रवाल, अंगारक, मणि तथा विद्रुम है । हिन्दी में मूँगा, फारसी में मरजान मराठी में पोले, तेलुगु में प्रवालक के नाम से यह रत्न जाना जाता है । इसका रंग सिन्दूरी लाल, सफेद, काला, गुलावी और मटमैला होता है । इसका मूल्य 20 से 100 रुपये प्रति कैरट होता है ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— मूँगे में कैल्शियम कार्बोनेट नामक रासायनिक तत्त्व की अधिकता रहती है । मूँगा का विशिष्ट गुरुत्व 2.6 से 2.71 कठोरता 33.4 तथा वर्तनांक 1.456-1.658 होता है । यह नरम होता है तथा इसे चाकू से सरलतापूर्वक काटा जा सकता है । प्रख्यात शोधकर्ता व वैज्ञानिक टिंक्चर ने मूँगा को कैल्शियम कार्बोनेट, मैग्नीशियम कार्बोनेट, कैल्शियम सल्फेट, फैरिक आक्साइड, कार्बनिक पदार्थ, पानी, फास्फेट, सिलिका, कैल्साइट तथा अन्य विजातीय पदार्थ का रासायनिक संगठन बताया है ।

काले मूँगे के अतिरिक्त और किसी रंग के मूँगे पर हाइड्रोक्लोरिक एसिड डालने पर झाग उठते हैं, लेकिन काले मूँगे पर इसका प्रभाव नहीं होता । काले मूँगे को यदि गर्म तार से छुआ दिया जाय तो बाल जलने जैसी दुर्गन्ध आती है ।

मूँगा रत्न भौतिक गुण— मूँगा रत्न लाल, भूरे, सफेद, काले व पीले रंगों में पाया जाता है । काला मूँगा अन्य रंग के मूँगों से इस मामले में भिन्न होता है कि यह अधिकतर कैल्शियम कार्बोनेट का बना हुआ नहीं होता बल्कि सींग जैसे एक पदार्थ से बना

होता है । मूँगे पर पालिस का असर अधिक दिनों तक नहीं रहता । असली मूँगे को घिसने पर काँच के समान आवाज नहीं होती तथा असली मूँगे नकली मूँगे से हल्के होते हैं । मूँगे पर नक्काशी बहुत अच्छी तरह से की जा सकती है । प्राचीन काल में मूँगों पर नक्काशी करने का बड़ा प्रचलन था किन्तु अब इसका प्रचलन नहीं है । बहुत से मूँगे अर्द्ध पार-दर्शक भी होते हैं लेकिन प्रायः कम पारदर्शक अथवा सर्वाधिक अपारदर्शक मिलते हैं ।

मूँगा रत्न तथा उसकी उत्पत्ति— मूँगा रत्न मोती की तरह समुद्र ही की देन है किन्तु उसकी तरह पत्थर न होकर एक जैविक पदार्थ है । यह एक समुद्री जीव कोरेलियम रुब्रम द्वारा निर्मित होता है– जो कि जीव विज्ञान के अनुसार एन्थोजोआवर्ग से सम्बन्ध रखता है । इटली को मूंगे का घर कहा जाता है तथा वहाँ इसका कार्य बहुत ऊँचे पैमाने पर होता है । चालीस से अधिक कम्पनी इस कार्य में लगी हुई है तथा हजारों कारीगर इससे अपनी जीविका चला रहे हैं— जिनमें महिलायें अधिक हैं ।

मूँगा प्राप्ति के स्थान समुद्री किनारे से दो से दस मील की दूरी तथा 30 से लेकर 130 कदम तक होते हैं । मूँगा आमतौर पर सभी समुद्रों में पाया जाता है । परन्तु अच्छे किस्म के मूँगे भूमध्य-सागर के तटवर्ती क्षेत्र अल्जीरिया, ईरान की खाड़ी, हिन्द महासागर आदि से निकलते हैं । समुद्र से मूँगा प्रत्येक वर्ष मार्च से अक्टूबर तक निकाला जाता है ।

जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है कि मूँगा का निर्माण एक ऐसे समुद्री जीव द्वारा होता है जो कि लसीले चिपचिपे पदार्थ के समान होता है । ये समुद्रतल में रहने वाले लाखों छिद्रयुक्त लसलसे जीव एक दूसरे से चिपके हुए रहते हैं । जब वह इसी दशा में मर जाते हैं तो उनकी मीलों लम्बी चट्टानें बन जाती हैं जो कि कोरल रीफ (Corl Reef) कहलाती हैं । यह जीव समुद्री जल पर अपना जीवनयापन करते हैं । समुद्री जल में से चूना इन जीवों के शरीर में शोषित होता रहता है और जब चूने की मात्रा इनके शरीर में अधिक हो जाती है तो ये मर जाते हैं तथा नये जीव इनका स्थान ले लेते हैं । यह क्रिया चलती रहती है । इन मरे हुए जीवों का अस्थि–कंकाल ही मूँगा कहलाता है ।

मूँगा अकेला नहीं पाया जाता बल्कि इसकी शाखादार बस्तियाँ होती हैं । इसको पकड़ने के लिए नाविक किश्तियों में बैठकर लम्बे रस्सों में एक सिरे पर लोहे के क्रास आकृति के नुकीले काँटे बाँधकर सागर में डालते हैं । काँटे जब मूँगे की चट्टानों में फँस जाते हैं तो उनको ऊपर खींचा जाता है जिससे मूँगे के टुकड़े टूटकर ऊपर आ जाते हैं ।

मूँगा समुद्र में जिस चट्टान पर लगा होता है उसकी सतह पर यह सदैव लम्बे रूप खड़ा होता है । संसार का सबसे बड़ा–मूँगा पर्वत आस्ट्रेलिया में है तथा यह ग्रेट वैरियर रीफ के नाम से प्रसिद्ध है । सर्वाधिक मात्रा में मूँगा अल्जीरिया और ट्यूनिसिया में प्राप्त

होता है । जहाँ इनका वार्षिक उत्पादन 10,000 कि. ग्राम है । सिसली तथा उसके निकट के द्वीप लिनोसा व पेण्टेलिरिया में अभी हाल में काफी बड़ी मात्रा में मूँगों की चट्टाने प्राप्त हुई हैं ।

बहुत से वैज्ञानिकों व रत्न-विशेषज्ञों का विचार है कि मूँगा तीस वर्ष में पूर्णरूप से पककर तैयार होता है परन्तु अन्य विशेषज्ञों का मत इससे भिन्न है । उनका कहना है कि अच्छी प्रकार का मूँगा तीस वर्ष के पूर्व भी प्राप्त हो सकता है । यह बात मूँगा निकालने वालों की अच्छी तरह ज्ञात रहती है । किस स्थान का मूँगा अब पककर तैयार हो चुका होगा । इसीलिए वे निश्चित समय पर ही मूँगा निकालते हैं । इससे कच्चा मूँगा नहीं निकलता ।

मूँगा मिलने पर गहराइयाँ विभिन्न होती हैं । सबसे कम विकसित मूँगों की गहराई तीन मीटर और अधिकतम तीन सौ मीटर होती है ।

मूँगा रत्न तथा उसकी पहचान— सामान्य काँच के पत्थर की तुलना में रत्न कीमती तथा बहुमूल्य होते हैं । अतः बाजार में नकली रत्नों की भरमार रहती है जिसका लाभ तथाकथित रत्न-व्यापारी अथवा छल प्रवंचना करने वाले तथा-कथित ज्योतिषी उठाते हैं । जन साधारण निम्न कसौटी में मूँगा रत्न की वास्तविकता की पहचान कर सकता है ।

(1) नकली बने हुए मूँगे असली से भारी होते हैं । इनको आई ग्लास (Eye Glass) से देखने पर बारीक रवे स्पष्ट दिखाई देते हैं जो कि ढले हुए काँच की तरह होते हैं ।

(2) असली मूँगा नरम होता है, चाकू से इसे सरलतापूर्वक काटा जा सकता है ।

(3) दूध में मूँगा डालने से दूध में से लाल रंग की काई सी दिखाई देती है ।

(4) रक्त में मूँगा रख दिया जाय तो मूँगे के आसपास का रक्त जमने लगता है ।

(5) मूँगे को रुई में रखकर धूप में रख दिया जाए तो रुई जलने लगती है ।

श्रेष्ठ कोटि का मूँगा रत्न तथा उसके गुण— समुद्र तट से मूँगा की चट्टान निकालने के उपरान्त इसे काटा जाता है और विभिन्न साइजों के दाने बना लिये जाते हैं । सभी मूँगे श्रेष्ठ श्रेणी के नहीं होते । श्रेष्ठ श्रेणी के मूँगे में निम्न विशेषताऐं पायी जाती हैं—

(1) यह चमकदार होता है ।

(2) यह चिकना और उँगलियों में लेने पर फिसलने वाला होता है ।

(3) कोणदार होता है ।

(4) औसत से अधिक वजनदार प्रतीत होता है ।

(5) पके हुए बिम्बफल की तरह होता है ।

(6) गोलाकार, चपटा तथा लम्बा होता है ।

(7) टूटा फूटा, दुरंगा, गड्ढेदार, स्याह धब्बे वाला, श्वेत छींटों वाला, छेद युक्त, टेढ़ा-मेढ़ा, पतला, रुक्ष मूँगा उत्तम श्रेणी का नहीं माना जाता है ।

दोषयुक्त मूँगा रत्न तथा उसका प्रभाव— उत्तम एवं श्रेष्ठ श्रेणी का मूँगा रत्न जहाँ मंगल ग्रह के दुष्प्रभाव तथा अनिष्ट को समाप्त करता है वहीं निम्न श्रेणी तथा दोषयुक्त मूँगा मंगल के अशुभ प्रभाव को बढ़ा देता है । जातक ऐसा त्रुटियुक्त मूँगा धारण करने के पश्चात् अनेक प्रकार के रोगों तथा परेशानियों में उलझ जाता है । दोषयुक्त मूँगा रत्न धारण करने पर निम्न अशुभ प्रभाव दिखाता है ।

(1) गड्ढेदार मूँगा— जिस मूँगे में गड्ढा हो उसे धारण करने से जीवन-साथी की मृत्यु हो जाती है । यदि पुरुष धारण करता है तो पत्नी के लिए प्राणघातक होता है और यदि स्त्री धारण करे तो पति के लिए मृत्युकर समझना चाहिए ।

(2) श्वेत धब्बेदार मूँगा रत्न— जिस मूँगे में सफेद, धब्बे हों तो उसे श्वेत धब्बेदार सफेद मूँगा कहते हैं । सफेद धब्बेदार मूँगा रत्न धारण करने पर धन सम्पत्ति का नाश होता है । अतः ऐसा मूँगा कभी भूलकर धारण नहीं करना चाहिए ।

(3) अंग-भंग— यदि मूँगा रत्न कटा-छटा हो या कहीं से टूट गया हो तो ऐसा मूँगा अंग-भंग दोष-युक्त होता है । उपरोक्त श्रेणी का दूषित मूँगा सन्तान के लिए अमंगलकारी होता है । यदि जातक उपरोक्त मूँगा धारण करता है तो उसके सन्तान को भयानक कष्ट होता है तथा सन्तान नष्ट हो जाती है ।

(4) स्याह मूँगा— जिस मूँगे में काला धब्बा हो उसे स्याह मूँगा कहा जाता है । इस श्रेणी का दूषित मूँगा यदि जातक धारण करता है तो उसका स्वास्थ्य क्षीण हो जाता है तथा उसके जीवन में आकस्मिक दुर्घटना होने की सम्भावना बढ़ जाती है । ऐसा मूँगा जातक को कभी भी भूलकर धारण नहीं करना चाहिए ।

(5) छेदित मूँगा— जिस मूँगे में छेद हो उसे छेदित मूँगा कहते हैं । छेदित मूँगा का अशुभ प्रभाव स्याह मूँगे की भाँति होता है । अतः इस प्रकार का मूँगा रत्न कभी भी धारण न करें ।

(6) दुरंगा मूँगा— जिस मूँगे में दो रंग मिले हुए हों उसे दुरंगा मूँगा कहते हैं । दुरंगा मूँगा धारण करने से सुख सम्पत्ति नष्ट हो जाती है । अनजाने में अथवा भूलवश अनेक जन दुरंगा मूँगा धारण कर लेते हैं तथा अपना बनाबनाया काम बिगाड़ लेते हैं । पूर्व संचित धन-धान्य तथा सम्पत्ति से हाथ धो बैठते हैं । अतः बड़ी सावधानी से मूँगा रत्न धारण करना चाहिए ।

(7) लाखी मूँगा लाख के रंग के समान यह मूँगा होता है । इसके धारण करने से शस्त्रभय तथा चोरभय नहीं रहता है ।

मूँगा रत्न तथा उससे जुड़े हुए ऐतिहासिक तथ्य— मूँगा रत्न आज से नहीं, बल्कि हजारों वर्ष पूर्व से ही मानव के लिए आकर्षण का केन्द्र रहा है । आभूषणों, सजावटी कामों और औषधियों के रूप में मूँगा रत्न का प्रयोग प्राचीन काल से होता चला आ रहा है । आदि ग्रन्थ वेद और पुराणों में भी मूँगा रत्न तथा उनसे बनी औषधियों का उल्लेख कई जगह मिलता है । भारतीय मुनि, ऋषि, महर्षि प्रवाल-भस्म तथा प्रवाल पिष्टि का प्रयोग करते रहे हैं तथा च्यवन, चरक आदि महर्षियों ने इसे औषधि बनाने में प्रयुक्त किया है ।

आज से 2400 वर्ष पूर्व यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक और हकीम प्लेटो ने इसकी गुणवत्ता तथा विशेषताओं की विस्तृत विवेचना अपनी पुस्तक में की है । प्लेटो ने मूँगे की माला से कई रोगियों को स्वस्थ कर दिया था । प्लेटों ने अपनी पुस्तक में इसका जिक्र भी किया है तथा यह बताया है कि उत्तम मूँगे की माला रोगी के गले में डाल दी जाए तो धीरे-धीरे मूँगे का रंग फीका होने लगेगा तथा जब रोगी पूर्णतः स्वस्थ हो जायेगा तो मूँगा पुनः लाल हो जायेगा ।

अफ्रीका के पश्चिमी तट से दूर एक बार नीले रंग का मूँगा प्राप्त हुआ था लेकिन उसके बाद कभी ऐसा मूँगा दिखाई नहीं दिया । बिल्कुल सफेद अथवा पीले रंग का मूँगा भी दुर्लभ माना जाता है । सन् 1880 ई0 में बर्लिन में एक प्रदर्शनी में एक मूँगे का हार रखा गया था जिसका मूल्य 600 पौण्ड घोषित किया गया था । इटली के शाही परिवार के पास एक मूठ है जिसमें नक्काशी किए हुए मूँगे रत्न जड़े हुए हैं । इस मूठ की कीमत 360 पौण्ड बतायी जाती है ।

इटली तथा रोम जैसे यूरोपीय संस्कृति के जनक राष्ट्रों में भी मूँगा रत्न दाँत निकालने के कष्ट को दूर करने, बच्चे को बुरी नजर से बचाने तथा बुरी आत्माओं से रक्षा कवच के रूप में सदियों से व्यवहार किया जा रहा है तथा आगे भी किया जाता रहेगा ।

मंगल रत्न प्रवाल और उसका उपरत्न— सभी व्यक्तियों के लिए मूँगा अथवा प्रवाल रत्न धारण करना संभव नहीं, क्योंकि ये रत्न बड़े वेश-कीमती अर्थात बहुमूल्य होते हैं । अतः रत्न-विशेषज्ञों तथा वैज्ञानिकों ने शोध व अनुसंधान करके इसके प्रतिरूप को खोज निकाला है । ये उपरत्न मुख्य रत्न की तुलना में बड़े सस्ते होते हैं । मूँगा के उपरत्न अथवा बदल (स्थानापन्न) के रूप में निम्न रत्न धारण किए जाते हैं ।

(1) विद्रुम अथवा संगे मूँगी— यह लाल, मूँगिया या सफेद रंग का हल्का चिकना व छिद्रयुक्त रत्न होता है । किसी-किसी पर गंदगी, छींट भी नजर आते हैं । ज्योतिषीय

परामर्श में मूँगा रत्न के बदले में इस उपरत्न को धारण करने की सलाह अनेक ज्योतिर्विद देते हैं ।

(2) लाल तामड़ा— यह रत्न पत्थर गहरा लाल, भूरा, सुनहरी, पीला, सफेद, हल्का हरा व काला आदि रंगों में मिलता है । इसके प्राप्ति स्थान उत्तरी भारत, ब्राजील, स्विटजरलैंड, श्री लंका, रूस, दक्षिणी अमेरिका तथा अलास्का हैं । भारत में इस रत्न को प्राचीनकाल से ही मूँगे के उपरत्न के रूप में धारण किया जाता है ।

(3) लाल जैस्पर— इस रत्न को भी मूँगे के उपरत्न के रूप में धारण किया जाता है ।

(4) अम्बर (कहरुबा)— इसे तृणाकर्ष, तृणकान्त आदि के नाम से भी जाना जाता है । यह भी मूँगे की तरह कोई पत्थर नहीं है बल्कि यह एक प्रकार की राल होती है जो नरम पारदर्शक तथा अपारदर्शक दोनों ही प्रकार की होती है । इसमें कस्तूरी जैसी सुगन्ध होती है । यह एक प्रसिद्ध और मूल्यवान् सुगन्धित पदार्थ है जो हिन्द महासागर, निकोबार और अफ्रीका के समुद्र तटों पर पाया जाता है ।

मूँगा रत्न और ज्योतिषीय परामर्श—

मूँगा रत्न मंगल ग्रह के दुष्प्रभाव को समाप्त करता हैं । जो लोग पुलिस अथवा फौज में भर्ती हैं । साहसिक कार्यों को करने वाले है । उनके लिए मूँगा बड़ा ही लाभकारी होता है । ज्योतिष विज्ञान के अनुसार यदि जन्मांक चक्र में नीलम अशुभ भाव में बैठा है तथा क्रूर है तो मूंगा रत्न धारण करना लाभकारी होता है । जिन जातकों का जन्म समय 15 अप्रैल से 14 मई तक और 15 नवम्बर से 14 दिसम्बर से मध्य पड़ता हो उनके लिए मूँगा रत्न चमत्कारिक रूप से लाभ करता है ।

मूँगा अर्थात प्रबाल रत्न कम से कम 6 रत्ती वजन का अवश्य होना चाहिए । आठ रत्ती से कम भार वाला मूँगा कम प्रभावकारी तथा मामूली फलदायी होता है । मूँगा रत्न को सोने की अंगूठी में जड़वाना चाहिए । एक बार अंगूठी जड़वाने की तिथि से तीन साल तीन दिन तक मूँगा प्रभाव–युक्त रहता है । तत्पश्चात वह निस्तेज हो जाता है । अतः इस समय के उपरान्त मंगल प्रधान व्यक्तियों को दुसरा मूँगा धारण करना चाहिए ।

फौजदारी-वकील, प्रोफेसर, लोहे पटसन तथा कोयले के व्यवसायी, राजकीय अधिकारी जैसे व्यक्तियों को अपने जीवन में सर्बोच्च्य सफलता प्राप्त करने हेतु प्रवाल रत्न किसी ज्योतिषी की सलाह पर अवश्य धारण करना चाहिए ।

लग्न के आधार पर मूँगा रत्न धारण करने का ज्योतिषीय परामर्श—

सभी लग्न वालों को मूँगा रत्न लाभकारी नहीं होता तथा मूँगा रत्न का शुभ प्रभाव

भी सभी लग्नों में समान रूप से नहीं होता । अतः मूँगा रत्न धारण करने से पूर्व सर्वप्रथम इस तथ्य से आश्वस्त हो लेना चाहिए कि जातक की लग्न कौन सी है तथा उसका प्रभाव जातक पर क्या पड़ रहा है ।

मेष लग्न— मेष लग्न वाले जातक के लिए मूगाँ रत्न सदैव शुभ प्रभावकारी होता है । मेष लग्न में लग्नेश मंगल ग्रह होता है । अतः मेष लग्न के जातक को मूँगा आजीवन धारण करना चाहिए । क्योंकि यह लग्न के स्वामी मंगल का रत्न होता है । मेष लग्न वाले मूँगा धारण करें तो यह रत्न उनकी आयु में वृद्धि, स्वास्थ्य में उन्नति तथा यश प्रदान करायेगा । जातक को जीवन में सभी भोग विलास तथा ऐश्वर्य प्राप्त होंगे ।

वृष लग्न— वृष लग्न वालों के लिए मूँगा रत्न की अंगूठी धारण करना सदैव अमंगलकारी व अशुभ फल देने वाला होगा । वृष लग्न में मंगल सप्तम और द्वादश भाव का स्वामी होता है । अतः मूँग रत्न धारण करने से अनिष्ट ही होगा ।

मिथुन लग्न— मिथुन लग्न वाले जातक को भी मूँगा रत्न धारण करना अशुभ बताया गया है । मिथुन लग्न में मंगल षष्ठ और एकादश बाव का स्वामी होता है । अतः मूँगा रत्न शुभ फल नहीं देगा ।

कर्क लग्न— कर्क लग्न वालों के लिए मूँगा रत्न बहुत शुभ फलदायी है । कर्क लग्न में मंगल पंचम और दशम भाव का स्वामी होता है । इस प्रकार मंगल ग्रह कर्क लग्न वालों के लिए कारक ग्रह बन जाता है । कर्क लग्न का लग्नेश चन्द्रमा होता है । अतः कर्क लग्न के जातक मोती और मूँगा रत्न की अंगूठी साथ-साथ धारण करें तो सन्तान–सुख, यश, मान, प्रतिष्ठा सभी कुछ उसे प्राप्त होता है । मंगल की महादशा में मूँगा तथा मोती रत्न की अंगूठी को अगर स्त्री वर्ग द्वारा धारण किया जाए तो परम शुभ फलदायक होती है ।

सिंह लग्न— सिंह लग्न वाले जातक के लिए मूँगा रत्न की अंगूठी धारण करना शुभ फलदायी है । यदि इस लग्न के जातक मूँगा रत्न धारण करें तो मानसिक शान्ति, भवन तथा भूमि-लाभ, धन-लाभ, यश लाभ तथा भाग्योन्नति होती है । सिंह लग्न में मंगल चतुर्थ और नवम भाव का स्वामी होता है तथा योग कारक ग्रह के रूप में माना जाता है । सिंह लग्न का लग्नेश सूर्य होता है । अतः जातक यदि मूँगा रत्न माणिक्य रत्न के साथ धारण करें तो उसे चमत्कारिक लाभ होता है क्योंकि सिंह लग्न के स्वामी सूर्य और मंगल में अधिमित्रता है । अतः ज्योतिषीय मत में सिंह लग्न वालों के लिए मंगल की महादशा अथवा अन्तरदशा में प्रवाल रत्न धारण करना बताया गया है ।

कन्या लग्न— कन्या लग्न वालों के लिए मूँगा रत्न धारण करना ज्योतिषीय परामर्श

में वर्जित बताया गया है । कन्या लग्न में मंगल तृतीय और अष्टम भाव का स्वामी होता है । दोनों ही भाव अशुभ माने जाते हैं अतः कन्या लग्न वाले जातक को भूलकर भी मूँगा रत्न धारण नहीं करना चाहिए, अन्यथा यह जातक को भयंकर रूप से प्रताड़ित करेगा ।

तुला लग्न— तुला लग्न वाले जातक को मूँगा रत्न धारण करना अशुभ तथा अनिष्टकारक बताया गया है । तुला लग्न में मंगल द्वितीय तथा सप्तम भावों का स्वामी होता है । दोनों ही भाव ज्योतिष सिद्धान्तानुसार मारक माने जाते हैं । तुला लग्न का लग्नेश शुक्र है तथा शुक्र और मंगल में अत्यधिक शत्रुता है । अतः तुला लग्न वालों को भूलकर भी मूँगा रत्न धारण नहीं करना चाहिए । धारण करने पर यह आकस्मिक दुर्घटना तथा मृत्युकारक साबित होगा ।

वृश्चिक लग्न— वृश्चिक लग्न वालों के लिए प्रवाल रत्न धारण करना सुख, समृद्धि कारक तथा कल्याणकारी रहता है । वृश्चिक लग्न में मंगल लग्नेश होता है । अतः इस लग्न वालों को मूँगा आजीवन धारण करना चाहिए । मूँगा धारण करने से आयु में वृद्धि, स्वास्थ्य में उन्नति, यश तथा भाग्योन्नति होगी तथा जातक समस्त लौकिक सुखों का भोग करेगा ।

धनु लग्न— यदि धनु लग्न वाले जातक प्रवाल रत्न धारण करें तो उन्हें सन्तान-सुख, यश, सुख, समृद्धि, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा भाग्योन्नति प्राप्त होती है । धनु लग्न में मंगल पंचम तथा द्वादश भाव का स्वामी होता है । पंचम भाव ज्योतिष सिद्धान्तानुसार त्रिकोण कहलाते हैं । अतः धनु लग्न में मंगल शुभ ग्रह माना जाता है । इसलिए मंगल की महादशा में अथवा अन्तरदशा में धनु लग्न वालों के लिए मूँगा रत्न चमत्कारिक प्रभाव प्रदर्शित करता है ।

कुम्भ लग्न— कुम्भ लग्न में मंगल तृतीय तथा दशम भाव का स्वामी होता है । ज्योतिषीय परामर्श में इस लग्न वालों के लिए मूँगा रत्न धारण करना अशुभ माना गया है, क्योंकि मंगल ग्रह तृतीय भाव का स्वामी है । किन्तु कुछ ज्योतिर्विद यह मानते हैं कि यदि मंगल दशम भाव में स्थित हो तो शुभ फलदायी होता है । निष्कर्ष रूप में यह ज्योतिषीय परामर्श दिया जाता है कि इस लग्न के जातक मूँगा रत्न धारण करने से पूर्व किसी विद्वान ज्योतिषी से परामर्श अवश्य ले लें ।

मकर लग्न— मकर लग्न में मंगल चतुर्थ और एकादश भाव का स्वामी होता है । अतः इस लग्न के जातक किसी शुभ मुहूर्त्त में उत्तम श्रेणी का प्रवाल रत्न धारण करें तो मातृ-सुख, भूमि, ग्रह, वाहन सुख प्राप्त होता है । मंगल की महादशा अथवा अन्तरदशा में मूँगा रत्न विशेष रूप से चमत्कारी प्रभाव देता है ।

मीन लग्न— मीन लग्न में मंगल द्वितीय भाव और नवम भाव का **स्वामी होता है ।** मीन लग्न वाले जातक को मूँगा रत्न धारण करना विशेष शुभ फलदायी होगा, **क्योंकि** मीन लग्न में मंगल नवम त्रिकोण का स्वामी होने से शुभ ग्रह माना जाता है । मीन लग्न का लग्नेश वृहस्पति है, जिसका रत्न पुखराज है । अतः मंगल की महादशा अथवा अन्तरदशा में इस लग्न के जातक मूँगा पुखराज साथ-साथ धारण करें तो चमत्कारिक रूप से लाभ प्राप्त होगा ।

मूँगा रत्न धारण करने सम्बन्धी कुछ विशेष ज्योतिषीय परामर्श— किसी भी रत्न को धारण करने से पूर्व जातक को भली-भाँति आश्वस्त हो लेना चाहिए कि अमुक रत्न धारण करने से वास्तव में लाभ होगा अथवा विपरीत तथा प्रतिकूल प्रभाव पड़ने लगेगा । बिना सोच-विचार किए रत्न धारण करने से जहाँ ग्रहों के प्रतिकूल प्रभाव से जातक को पीड़ित होना पड़ता है, वहीं दूसरी तरफ आर्थिक नुकसान भी होता है, क्योंकि सभी रत्न बेशकीमती अर्थात् बहुमूल्य होते हैं । इस प्रकार जातक गलत रत्नों का चयन कर दोहरी मार से पीड़ित होता है । रत्नों को धारण करते समय जातक के जन्म लग्न का विचार करना पड़ता है । कुछ ज्योतिषी-जन जन्मांग चक्र में ग्रहों की स्थिति के अनुसार रत्न धारण करने की सलाह देते हैं । पाठक जन दोनों में से श्रेष्ठ स्थिति का अवलोकन कर रत्न धारण करें जिससे चमत्कारिक लाभ प्राप्त हो सके ।

जन्मांक चक्र में मंगल के द्वादश भावों में स्थिति के अनुसार निम्न ज्योतिषीय परामर्श रत्न धारण करने के सम्बन्ध में दिया जा रहा है—

(1) यदि जन्मांक चक्र में मंगल प्रथम भाव अर्थात् लग्न में स्थित हो तो मूँगा धारण करना शुभ फलदायी होता है ।

(2) यदि जन्मांक चक्र में मंगल तीसरे भाव में स्थित हो तो मूँगा रत्न धारण करना चाहिए । तीसरा भाव मातृ-भाव कहलाता है । तीसरे भाव में मंगल विद्यमान रहने से भाई बहनों में आपसी प्रेम व सद्भावना नहीं रहती । अतः इसे दूर करने के लिए ऐसे जातकों को प्रवाल रत्न धारण करना चाहिए ।

(3) यदि जन्म-कुण्डली में मंगल शुभ भावों का स्वामी होकर शत्रु ग्रहों के साथ स्थित हो तो ऐसी दशा में मंगल को शक्तिशाली बनाने के लिए प्रवाल रत्न धारण करने का ज्योतिषीय परामर्श दिया जाता है ।

(4) यदि किसी जातक के जन्मांक चक्र में मंगल षष्ठ, अष्टम अथवा द्वादश भावों में से किसी भाव में विद्यमान हो तो मूँगा रत्न धारण करना शुभ फलदायक होता है ।

(5) यदि जन्म-कुण्डली में धनेश मंगल नवम भाव में, चतुर्थेश मंगल एकादश भाव में अथवा पंचमेश मंगल द्वादश भाव में स्थित हो तो ऐसे जातक को मूँगा रत्न धारण करने से सभी प्रकार का सुख, ऐश्वर्य व समृद्धि प्राप्त होती है तथा मंगल ग्रह का अशुभ प्रभाव नष्ट हो जाता है ।

(6) यदि जन्मांक चक्र में मंगल चतुर्थ अथवा सप्तम भाव में विद्यमान हो तो जातक की पत्नी के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है तथा जीवन-साथी को कष्ट होता है । अतः ऐसे जातक मूँगा रत्न अवश्य धारण करें । इससे उनके दाम्पत्य जीवन में प्रफुल्लता तथा स्वास्थ्य में अनुकूलता बनी रहेगी ।

(7) यदि जन्म कुण्डली मे मंगल के ऊपर सूर्य की दृष्टि पड़ रही हो अथवा चंद्र मंगल की युति हो अथवा मंगल षष्ठ या अष्टमेश के साथ हो तो ऐसे जातक को प्रवाल रत्न अवश्य धारण करना चाहिए । इसके धारण से जातक के सुख, ऐश्वर्य तथा समृद्धि में वृद्धि होगी तथा स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा ।

(8) यदि जन्म-कुण्डली में मंगल, शनि अथवा राहु के साथ कहीं भी स्थित हो तो जातक को मूँगा रत्न धारण करने का ज्योतिषीय परामर्श बताया गया है । मूँगा रत्न जातक को लाभ पहुँचाता रहेगा ।

(9) यदि जन्म कुण्डली में मंगल वक्री, अस्त या वेध-युक्त हो तो जातक को मूँगा रत्न अवश्य धारण करना चाहिए । उपरोक्त स्थिति पर मंगल ग्रह का रत्न मूँगा जातक को अत्यधिक लाभकारी सिद्ध होता है ।

मूँगा रत्न तथा चिकित्सा में उसका प्रयोग—

मूँगा रत्न का प्रयोग ज्योतिषीय परामर्श में मंगल ग्रह के दुष्प्रभाव को नष्ट करने के लिए किया जाता है । मूँगा रत्न आयुर्वेदिक औषधियों में भी भस्म के रूप में इस्तेमाल किया जाता है । आयुर्वेदिक रीति से चिकित्सा में आदिकाल से भातीय ऋषि-महर्षि मूँगा-भस्म तथा प्रवाल-पिष्टी का प्रयोग मंगल ग्रह के अशुभ प्रभाव से उत्पन्न रोगों के निदान के रूप में करते रहे हैं ।

आयुर्वेद में मूँगा को प्रवाल के नाम से जाना जाता है । आयुर्वेद के अनुसार प्रवाल गुण में शक्तिप्रद एवं रूक्ष, रस की दृष्टि से मधुर तथा कुछ अम्ल, इसका विपाक मधुर और इसका वीर्य शीत है । प्रवाल वात, पित्त तथा कफ तीनों दोनों को समाप्त करता है । हृदय की दुर्बलता, रक्त-विकार और रक्त पित्त में भी इसका प्रयोग किया जाता है ।

मूँगे की भस्म को वीर्य गाढ़ा करने तथा दिमाग को ताकत देने के लिए गाय के

ताजे दूध अथवा मक्खन से रोगी व्यक्ति को दिया जाता है । प्रवाल भस्म के प्रयोग से जातक की भूख बढ़ती है । दिल की धड़कन, आमाशय एवं मस्तिष्क की कमजोरी की शिकायत को दूर करती है । प्रवाल भस्म को यदि गधी अथवा भेड़ के दूध के साथ रोगी को दिया जाए तो हड्डियों को मजबूत बनाती है । प्रवाल भस्म की एक से दो रत्ती की खुराक दिन में तीन बार नित्य ली जाए तो धात जाने, वीर्य की कमी तथा महिलाओं को भी प्रदर रोग में चमत्कारी लाभ होता है । कचनार की छाल के क्वाथ के साथ शहद मिलाकर प्रवाल भस्म का सेवन करने से गले की गिल्टियाँ समाप्त हो जाती हैं । दिल के रोग में प्रवाल-भस्म का सेवन आँवले या सेव के मुरब्बे के साथ किया जाता है ।

ब्लडप्रेशर के रोग में प्रवाल भस्म का शहद के साथ सेवन करने से शीघ्र आराम मिलता है । नजला-जुकाम में प्रवाल-पिष्टि की एक दो रत्ती खुराक दिन में दो बार लेने से रोग से मुक्ति मिलती है ।

■ ■ ■

बुद्धि, विवेक और वाणिज्य का नियामक :
बुध ग्रह

परिचय— चन्द्रमा, सूर्य तथा मंगल की भाँति बुध ग्रह भी सौर-मण्डल का एक सदस्य है । ज्योतिष शास्त्र में जिन नवग्रहों का उल्लेख किया गया है उनमें बुध ग्रह भी एक है । बुध ग्रह को 'कालपुरुष की वाणी' माना गया है । यह मुख्य रूप से व्यवसाय का प्रतिनिधि ग्रह है । जाति से शुभ तथा पाप ग्रह से युक्त होने पर इसे अशुभ की संज्ञा दी गई है । इसका प्रतिनिधि पशु हाथी होता है । इसका स्वरूप प्रसन्न-चित्त होता है तथा यह स्पष्टवक्ता, गोल आकृति, वात पित्त एवं कफ प्रकृति युक्त, हरा वर्ण, उत्तर दिशा का स्वामी, शरद् ऋतु, कटाक्ष दृष्टि तथा नपुन्सक लिंग का होता है ।

बुध के अन्य नाम भी हैं— संस्कृत में बुध को इन्द्रसुत, प्रज्ञ, हेम्न, चन्द्रपुत्र, सौम्य, शान्त, तारातन्य, शशिज, रौहिणेय आदि के नाम से वर्णित हैं । अंग्रेजी में मर्करी (Mercury) के नाम से यह प्रसिद्ध है । उर्दू, फारसी और अरबी में उतारद्, तीर आदि के नाम से यह जाना जाता है ।

पौराणिक परिचय— पुराणों में बुध को चन्द्रमा का पुत्र माना गया है । इसीलिए इसका नाम शशिपुत्र भी है । पुराणों के मत से बुध को चंद्रमा की पत्नी रोहिणी का पुत्र माना जाता है । बुध का पुत्र पुरुरवा धार्मिक प्रवृत्ति का था तथा उसने सौ से अधिक अश्वमेघ यज्ञ किए थे । बुध की पत्नी "इला" ब्रह्मदेव वैवस्वत मनु की पुत्री थी । कहीं-कहीं बुध को बृहस्पति का दूत भी बताया जाता है । बुध ग्रह जिस समय सूर्य की गति का उल्लंघन करते हुए राशि संचरण करता है तो आँधी, तूफान, वर्षा अथवा सूखे के भय की सूचना देता है । पुराणों में भी इस तथ्य का उल्लेख मिलता है कि बुध ग्रह शुक्र से दो लाख योजन ऊपर स्थित है तथा इसकी गति शुक्र की गति के समान होती है ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— बुध ग्रह सौरमण्डल का सबसे लघु तथा सूर्य के सबसे निकट का चमकदार ग्रह है । वैज्ञानिक शोध व अनुसंधान के पश्चात् जो नवीनतम जानकारी उपलब्ध है उसके अनुसार बुध पर कोई वायुमण्डल तथा प्राणी नहीं है । सूर्य के अति निकट होने के कारण इसका तापमान 350 सेण्टीग्रेड तक रहता है । बुध सूर्य की परिक्रमा केवल 88 दिन में पूरी कर लेता है । इसकी औसत चाल 30 मील प्रति सैकण्ड मानी गयी है।

यह अपनी धुरी का एक चक्कर 24 घण्टा, 6 मिनट में पूर्ण कर लेता है । बुध ग्रह एक राशि में 25 दिन संचरण करता है । इसका व्यास 5140 किलोमीटर है । बुध ग्रह को सूर्योदय के कुछ समय पूर्व तथा सूर्यास्त के कुछ समय बाद तक देखा जा सकता है ।

बुध ग्रह पृथ्वी से 5 करोड़ 92 लाख किलोमीटर दूर स्थित है । यह सूर्य से 3,68,85000 मील दूर स्थित है । बुध ग्रह का पृथ्वी के पर्यावरण पर गहरा प्रभाव पड़ता है । जब यह सूर्य की गति उल्लंघन करता है तो उस समय पृथ्वी के पर्यावरण में अनेक उथल-पुथल तथा बदलाव आते हैं । आंधी, तूफान, अति-वृष्टि बुध के पर्यावरणीय प्रभाव हैं तथा ये सूर्य-गति उल्लंघन करने से उत्पन्न होते हैं । बुध की गुरुत्त्वाकर्षण शक्ति पृथ्वी के गुरुत्त्वाकर्षण शक्ति की एक चौथाई है ।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण— ज्योतिषीय मत से बुध ग्रह मिथुन और कन्या राशि का स्वामी होता है । सूर्य, शुक्र, राहु और केतु बुध के नैसर्गिक मित्र हैं तथा चन्द्रमा से यह शत्रु–भाव रखता है । यह मंगल, गुरु तथा शनि से समभाव रखता है । यह कन्या राशि के 15 अंश तक परम उच्चस्थ तथा मीन राशि में 15 अंश तक परम नीचस्थ माना जाता है । बुध ग्रह सूर्य चन्द्र की भाँति सदैव मार्गी नहीं रहता, अपितु समय-समय पर मार्गी, वक्री तथा अस्त होता रहता है ।

अंकशास्त्रीय ज्योतिष के मत से बुध अंक 5 का प्रतिनिधित्त्व करता है । अतः अंक 5 का योग प्राप्त करने वाली सभी वृहत संख्याओं पर बुध का प्रभाव रहता है । यह मुख्य रूप से व्यवसाय का प्रतिनिधि ग्रह है । शुभ बुध के प्रभाव से व्यक्ति में अनेक गुण और कलायें उत्पन्न हो जाती हैं । वाणिज्य, वाक्-चातुर्य, शिल्प-कला, विद्या, बुद्धि, कूटनीति, मामा, चाचा, भतीजे, चित्रकारी, नृत्य-गायन, वाद्य, हास्य, गणित सुगन्धित तेल, चाँदी, मूँगा, पन्ना, कानून तथा चिकित्सा आदि सम्बन्ध में बुध ग्रह के द्वारा विचार किया जाता है । शुक्र के साथ इसका राजसी तथा चन्द्रमा के साथ शत्रुवत् व्यवहार माना जाता है ।

बुध ग्रह अश्लेषा, ज्येष्ठा, रोहिणी तथा श्रवण नक्षत्रों पर शुभ फल देता है । बुध यदि शुभ ग्रहों से युक्त हो तो शुभ तथा पापग्रह से युक्त हो तो अशुभ फल देता है । बुध ग्रह के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए मरकत मणि अथवा पन्ना रत्न धारण किया जाता है ।

बुध ग्रह को ज्योतिष में नपुन्सक ग्रह की श्रेणी में रखा गया है । यह जातक के जीवन पर प्रायः 32 से 35 वर्ष की अवस्था में अपना प्रभाव दिखाता है । इसका प्रभाव-क्षेत्र विंध्याचल से गंगा नदी तक माना गया है । बुध जातक की जन्म कुण्डली में जिस भाव में वैठा हो वहाँ से तृतीय तथा दशम भाव को एकपाद दृष्टि से, पंचम और नवम

भाव में द्विपाद दृष्टि से तथा सप्तम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है । मनुष्य के शरीर में कंधे से लेकर ग्रीवा तक इसका नियंत्रण रहता है ।

बुध के प्रभाव-क्षेत्र में व्यापार, व्यवसाय, प्रकाशन, संपादन, लेखन, सार्वजनिक सभा, अध्यापन, खिलाड़ी, अभिनेता, एकाउटेंट, तार विभाग तथा ज्योतिष आता है । बुध के अशुभ प्रभाव से स्नायु, श्वांस, वाक्‌दोष, सिरदर्द, दमा तपैदिक, मतिभ्रम, श्वेत कुष्ठ, उदर-रोग, गुप्त रोग, संग्रहणी तथा नेत्र-रोग उत्पन्न होते हैं ।

बुध ग्रह : प्रभाव तथा उत्पन्न होने वाले रोग—

बुध ग्रह तथा इसका प्रभाव शान्त, मिश्रित स्वभाव वाला तथा व्यवसाय में रुचि रखना होता है । बुध ग्रह प्रतिकूल होने की अवस्था में छल-छद्‌म, प्रवंचना द्वारा धनोपार्जन की ओर अग्रसर होता है । जातक आलस्य, उदर रोग, नेत्र रोग मतिभ्रम जैसे रोगों का शिकार हो जाता है । व्यवसाय में हानि तथा विचार अस्थिर रहते हैं । अशुभ बुध के प्रभाव से जातक अविश्वासी तथा शंकालु और स्वार्थी प्रकृति का हो जाता है जिसके फलस्वरूप समाज में उसकी प्रतिष्ठा गिरती है !

शुभ तथा बली बुध जातक को ज्योतिष विद्या की ओर अग्रसर करते हैं । यदि जन्म कुण्डली में गुरु और बुध शुभ भावों में स्थित हों तो जातक ज्योतिष शास्त्र में रुचि रखने वाला होता है । बुध प्रधान व्यक्ति स्पष्ट-वक्ता, हास्य व्यंग्य में रुचि रखने वाला, सुन्दर, प्रसन्न चित्त वाला, विद्वानों-बुद्धिमानों का प्रिय, रजोगुणी, कफ प्रकृति का होता है ।

यदि जन्मांक चक्र में बुध बली होकर शुभ भाव में विद्यमान हो तो जातक अधिवक्ता, उच्च स्तरीय लेखक, तार्किक, ज्योतिषी, चिकित्सक अथवा प्रसिद्ध वैज्ञानिक बनता है । जातक के बुद्धि-विवेक तथा वाक्-चातुर्य की सर्वत्र प्रशंसा होती है । बुध के शुभ प्रभाव से जातक गणित जैसे विषयों में रुचि रखने वाला होता है । एकाउण्टेण्ट तथा गणितज्ञ बुध प्रधान जातक होते हैं ।

बुध ग्रह आर्द्रा, स्वाति, पुष्य, अनुराधा, चित्रा, मघा एवं मूल नक्षत्रों पर अशुभ फलकारक होता है । यह गुरु तथा पूर्ण चन्द्रमा के साथ युति करके शुभ फल प्रदान करता है जबकि शुक्र के साथ युति करके मिश्रित फल देता है । चतुर्थ भाव में बुध ग्रह को प्रभावहीन माना गया है । चतुर्थ भाव स्थित बुध के कारण जातक को पैतृक सम्पत्ति प्राप्त करने में अनेक बाधायें आती हैं । यदि जातक की जन्म कुण्डली में बुध निर्बल हो तो जातक रोग पीड़ित, अल्पायु अथवा कामवशीभूत होता है ।

द्वादश भावों में बुध ग्रह से उत्पन्न होने वाले रोग—

सूर्य, चन्द्र, मंगल ग्रह की तरह बुध ग्रह का अशुभ प्रभाव जातक पर जब पड़ता

है तो अनेक प्रकार के रोग उसे पीड़ित करते हैं । प्रत्येक व्यक्ति पर ग्रहों का प्रभाव समान रूप में नहीं पड़ता । द्वादश भावों में बुध ग्रह की स्थिति के अनुसार इसका प्रभाव निम्न प्रकार से पड़ता है—

प्रथम भाव— प्रथम भाव में बुध ग्रह होने पर जातक दीर्घायु होता है । जन्मांक चक्र के प्रथम भाव में बुध-शनि युति हो तो रक्त सम्बन्धी रोग, फोड़ा, फुन्सी आदि अधिक होते हैं । लग्न में निर्बल अथवा क्षीण बुध होने पर जातक अंगहीन होता है ।

द्वितीय भाव— जन्मांक चक्र के द्वितीय भाव में विद्यमान होने पर जातक वात रोग से पीड़ित रहता है । वृद्धावस्था में गठिया, कमर में दर्द, उदर रोग कष्टकारी सिद्ध होते हैं । किन्तु यदि द्वितीय भाव में उच्च राशिस्थ अथवा स्वक्षेत्री बुध ग्रह विद्यमान हो तो जातक गौरवर्ण, कोमल शरीर वाला तथा धार्मिक विचारों का होता है ।

तृतीय भाव— जन्मांक चक्र के तृतीय भाव में बुध ग्रह विद्यमान हो तो जातक की बाल्यावस्था रोगमय बीतती है । उसे बचपन में अनेक रोगों का सामना करना पड़ता है । उदर रोग, कफ विकार तथा वायु विकार जातक को पीड़ित करते रहते हैं ।

चतुर्थ भाव— जन्मांक चक्र के चतुर्थ भाव में बुध ग्रह के विद्यमान होने पर जातक बचपन में एक न एक रोग से ग्रसित रहता है । यदि चतुर्थ भाव में बुध कन्या राशि में स्थित हो तो जातक को गुप्त रोग होता है तथा उसके अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध होते हैं।

पंचम भाव — जन्मांक चक्र के पंचम भाव में बुध ग्रह विद्यमान हो तो जातक मानसिक रोग से पीड़ित होता है । यदि बुध ग्रह पाप ग्रह से युति करते हुए पंचम भाव में विद्यमान हो तो जातक की सन्तान कमजोर बुद्धि वाली तथा कभी-कभी- पागल होती है ।

षष्ठ भाव— जन्मांक चक्र में बुध पंचम भाव में कर्क राशि में विद्यमान हो तो जातक को उदर रोग तथा लीवर की शिकायत रहती है । षष्ठ भाव में बुध हो तो जातक हाथ पैर के रोग से पीड़ित रहता है । फोड़ा फुन्सी तथा अन्य रक्तजन्य रोग जातक को प्रभावित करते हैं । पंचम भाव में शनि, राहु अथवा केतु के साथ बुध की युति वात–शूलादि रोग उत्पन्न करती है । जातक आलसी स्वभाव का होता है तथा स्त्रियों के पीछे आत्महत्त्या तक कर लेता है ।

सप्तम भाव— सप्तम भाव में बुध ग्रह जन्मांक चक्र में अवस्थित हो तो जातक को धातु सम्बन्धी रोग होते हैं । जातक का सम्बन्ध अनेक स्त्रियों से रहता है । जिसके फलस्वरूप गुप्त रोग से ग्रसित हो जाता है । जातक सहवास के समय दुर्वल वीर्य तथा चंचल बुद्धि वाला होता है । यदि सप्तम भाव में क्षीण-निर्वल तथा शत्रुक्षेत्री बुध ग्रह हो तो जातक को पत्नी का वियोग सहना पड़ता है ।

अष्टम भाव— अष्टम भाव में बुध ग्रह की जन्मांक चक्र में स्थिति जातक को मानसिक रोगी बना देती है। अष्टम भाव में बुध ग्रह होने पर जातक उदर तथा जंघाओं के रोग से पीड़ित रहता है। अष्टम भाव में बुध यदि निर्बल पाप ग्रहों से युक्त होकर अथवा अस्त होकर विद्यमान हो तो जातक कामुक अधिक होता है तथा सदैव रोग से पीड़ित बना रहता है।

नवम भाव— जन्मांक चक्र में बुध नवम भाव में विद्यामान हो तो जातक स्वस्थ, प्रफुल्लित चित्त तथा शोभन व्यक्तित्त्व का होता है। स्वयं जातक तथा उसके माता पिता दीर्घ आयु होते हैं। यदि नवम भाव में बुध शुभ ग्रह से युक्त तथा उच्च राशिस्थ हो तो वह आजीवन निरोग, स्त्री पुत्र के सुख से सम्पन्न तथा धार्मिक प्रकृति का होता है।

दशम भाव— जन्मांक चक्र के दशम भाव में बुध हो तो जातक सुन्दर तथा धार्मिक प्रवृति का होता है। दशम भाव में बुध के स्थित होने पर जातक नेत्र रोग से पीड़ित रहता है। बाल्यावस्था में उदर रोग तथा वृद्धावस्था में वात रोग से पीड़ित रहता है।

एकादश भाव — जन्मांक चक्र के एकादश भाव में बुध ग्रह विद्यमान रहने पर जातक वाल्यावस्था में उदर रोग से पीड़ित रहता है। वह सरल तथा कोमल हृदय वाला होता है तथा मंदाग्नि रोग से पीड़ित रहता है। जिसके फलस्वरूप उसका स्वास्थ्य बचपन में कमजोर रहता है। युवावस्था में जातक निरोग तथा स्वस्थ रहता है।

द्वादश भाव — जन्मांक चक्र के द्वादश भाव में बुध ग्रह विद्यमान हो तो जातक मानसिक रूप से सदैव चिंतित रहता है। फुफ्फुस-विकार, सिर दर्द, गुप्त रोग तथा वायु विकार तथा बुढ़ापे में कँपकँपी तथा स्नायु दुर्बलता से पीड़ित रहता है।

जन्मांक चक्र में बुध और उसका प्रभाव— सूर्य, चन्द्र, मंगल की भाँति बुध ग्रह का भी जन्मांक चक्र में अपनी स्थिति के अनुसार मुख्य रूप से दो प्रकार प्रभाव डालता है।

(1) राशिगत प्रभाव और (2) भावगत प्रभाव। बुध ग्रह की उच्चस्थ राशि कन्या होती है तथा नीचस्थ राशि मीन मानी जाती है। उच्च राशिस्थ बुध ग्रह शुभ प्रभाव डालता है तथा नीच राशिस्थ, शत्रुक्षेत्री, अस्त अथवा निर्बल बुध जातक पर प्रभाव डालता है।

बुध ग्रह तथा राशिगत प्रभाव—

बुध ग्रह जन्मांक चक्र के द्वादश राशियों में स्थित रहकर भिन्न भिन्न तथा निम्न प्रभाव से जातक को प्रभावित करता है।

मेष राशि — यदि जातक के जन्मांक चक्र में मेप राशि में बुध ग्रह, विद्यमान हो

तो जातक दुष्ट-बुद्धि, चंचल मन, बहुभोजी, झगड़ालू, निर्दयी, ऋणी तथा चतुर होता है। जातक नास्तिक विचारों का होता है तथा स्त्री जाति के प्रति विशेष आकर्षित रहता है।

वृष राशि— जन्मांक चक्र में बुध वृष राशि में विद्यमान हो तो जातक दानी, धनवान, गुणी, अनेक कलाओं का जानकार, गम्भीर, मधुरभाषी तथा रतिशास्त्र में रुचि रखने वाला होता है। वह स्वभाव से खर्चीला होता है, जिसके कारण सदैव आर्थिक अभाव से पीड़ित रहता है। जातक को पुत्र तथा भ्रातृ सुख जीवन में प्राप्त होता है।

मिथुन राशि— यदि जन्मांक चक्र की मिथुन राशि में बुध ग्रह विद्यमान हो तो जातक प्रिय-बक्ता, लेखक तथा अल्प सन्ततिवान होता है। जातक को सन्तान का सुख प्राप्त होता है तथा उसकी दी माताएं होती हैं।

कर्क राशि— यदि जन्मांक चक्र में कर्क राशि में बुध ग्रह विद्यमान हो तो जातक का बाल्याकाल सुख पूर्वक नहीं बीतता। जातक प्रबासी, अनेक स्त्रियों का संगी, वाचाल, गवैया तथा कामुक होता है। जातक को लेखन अथवा काव्य-कला द्वारा आर्थिक लाभ होता है।

सिंह राशि— जन्मांक चक्र में सिंह राशि में बुध विद्यमान हो तो जातक को भाइयों का सुख नहीं मिलता। जातक स्त्री जाति के प्रति समर्पित होता है तथा पत्नी से अत्यधिक प्रेम करने वाला होता है। इसे इसका दुर्भाग्य ही कहा जायेगा कि इतना समर्पित होते हुए भी वह पत्नी के सुख से वंचित रहता है। वह शत्रुओं से पीड़ित तथा मिथ्याभाषी भी होता है।

कन्या राशि— जन्मांक चक्र की कन्या राशि में बुध ग्रह स्थित हो तो जातक साहित्य के प्रति रुचि रखने वाला तथा लेखक होता है। उसे जीवन में सुन्दर स्त्रियों का सुख प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त होता है तथा वह सम्पादक, सुखी, साधारण, धनिक तथा सफल वक्ता होता है।

तुला राशि— जन्मांक चक्र में तुला राशि में बुध ग्रह विद्यमान हो तो जातक व्यसनी, बकवादी तथा खर्चीले स्वभाव का होता है। जातक को जीवन में अनेकों बार रोग से ग्रसित होना पड़ता है तथा दाम्पत्य जीवन सुखी नहीं रहता।

वृश्चिक राशि— यदि जन्मांक चक्र में वृश्चिक राशि में बुध ग्रह विद्यमान हो तो जातक व्यसनी, दुराचारी, मूर्ख, ऋणी, भिक्षुक तथा आलस्य से हानि उठाने वाला होता है। जातक रतिक्रिया में रुचि होने पर भी अल्प वीर्यवान होने के कारण उसके सुख एवं आनन्द से वंचित रहता है। जातक की पत्नी कंजूस होती है, वह शारीरिक कष्ट पाने वाला होता है।

धनु राशि— यदि जन्मांक चक्र की धनु राशि में बुध ग्रह विद्यमान हो तो जातक

दानी, धनी, कलाप्रेमी, कुल दीपक तथा स्वयं उपार्जित लक्ष्मी वाला होता है । वह उदार प्रकृति, राजमान्य, विद्वान लेखक तथा उच्चकोटि का सम्पादक होता है । जातक की पत्नी सुन्दरी, सुशीला तथा शोभन व्यक्तित्त्व की स्वामिनी होती है । जातक की आर्थिक स्थिति सामान्य रहती है ।

मकर राशि— यदि जन्मांक चक्र की मकर राशि में बुध ग्रह अवस्थित हो तो जातक व्यसनी, नपुन्सक, शत्रु से भयभीत तथा दुष्ट बुद्धि का होता है । जातक की मित्रता दुष्ट तथा नीच लोगों से होती है तथा जातक दूसरे की सेवा करने वाला होता है । जातक का धन बुरे कार्यों में खर्च होता है ।

कुम्भ राशि— यदि जन्मांक चक्र की कुम्भ राशि में बुध ग्रह विद्यमान हो तो जातक घर में कलह करने वाला, अल्प धनी तथा घमण्डी स्वभाव का होता है । जातक पराक्रमहीन तथा शत्रुओं से सदैव पीड़ित रहता है ।

मीन राशि— यदि जन्मांक चक्र में मीन राशि में बुध ग्रह विद्यमान हो तो जातक सामान्य धनी, धन-संचयी, सहिष्णु तथा प्रवास में रहने वाला होता है । जातक धन रक्षक, देव ब्राह्मण पूजक, कार्य दक्ष, स्वाभिमानी, मधुर-भाषी, भाग्यवान, सदाचारी तथा सुन्दर स्त्री वाला होता है ।

बुध ग्रह तथा भावगत प्रभाव—

राशिगत प्रभाव की भाँति ग्रहों का भावगत प्रभाव भी जातक पर पड़ता है । भावगत प्रभाव का तात्पर्य यह होता है कि सम्बन्धित ग्रह जन्मांक चक्र के द्वादश भावों में से किस भाव में विद्धमान है । अतः बुध ग्रह का भी जन्मांक चक्र के द्वादश भावों में अलग-अलग स्थितियों में निम्न प्रभाव जातक पर पड़ता है ।

प्रथम प्रभाव— प्रथम प्रभाव अर्थात लग्न में बुध हो तो जातक सुन्दर रूपवान, सत्यवक्ता, विलास-प्रिय, परदेश में रहने वाला, दीर्घायु, आस्तिक, गणितज्ञ, स्त्री-प्रिय तथा मितव्ययी होता है । लग्नस्थ बुध अन्य ग्रहों के दुष्प्भाव को समाप्त करने में सक्षम है । यदि प्रथम भाव में बुध उच्च राशिस्थ अथवा स्वक्षेत्री हो तो जातक को भाई का सुख मिलता है । लग्नस्थ बुध जातक को ज्योतिष शास्त्र का ज्ञाता तथा लेखन वृत्ति से निर्वाह करने वाला बनाता है । यदि प्रथम भाव में वृश्चिक राशि हो और बुध लग्नस्थ हो तो जातक रसायन शास्त्र में रुचि रखने वाला तथा सफल चिकित्सक व सर्जन होता है ।

द्वितीय भाव— यदि द्वितीय भाव में बुध विद्यमान हो तो जातक अत्यन्त सुन्दर तथा कोमल शरीर का होता है । द्वितीय भाव में बुध अवस्थित होने पर जातक पिता का भक्त, पाप से डरने वाला, सत्यवादी, भ्रमणशील, मिष्ठान्न प्रेमी, वकील का पेशा करने

वाला, सर्वगुण सम्पन्न, लेखन तथा प्रकाशन कार्य से लाभ प्राप्त करने वाला, मितव्ययी तथा परदेशवासी होता है । यदि द्वितीय भाव में गुरु बुध की युति हो तो जातक गणितज्ञ होता है । वह जीवन भर सुख, प्रफुल्लता तथा ऐश्वर्य को भोगले वाला होता है ।

तृतीय भाव— यदि जन्मांक चक्र के तृतीय भाव में बुध ग्रह विद्यमान हो तो जातक साहसी, परिवार से युक्त, कुशलतापूर्वक अपने अभीष्ट कार्य को पूर्ण करने वाला, व्यवसायी, सामुद्रिक शास्त्र का ज्ञाता, मित्र-प्रेमी एवं सद्‌गुणी होता है । यदि बुध बली, शुभ-ग्रह युक्त हो तो जातक गम्भीर तथा दीर्घायु होता है । वह प्रवास में रहकर धन अर्जित करता है तथा वृद्धावस्था में सन्यासी वृत्ति अपना लेता है । वह धार्मिक प्रवृत्ति का होता है तथा उसका बचपन अनेक रोगों से ग्रसित रहता है ।

चतुर्थ भाव— चतुर्थ भाव में बुध ग्रह विद्यमान हो तो जातक पण्डित, भाग्यवान, स्थूल देह, बन्धु प्रेमी, नीतिज्ञ तथा वाहन सुख का भोग करने वाला होता है । उसकी स्मरण-शक्ति बहुत तीव्र रहती है वह अनेक स्त्रियों का भोग करने वाला होता है । चतुर्थ भाव में पापी बुध हो तो बहुत धनों से युक्त तथा बड़ी आँखों वाला होता है । यदि बुध उच्च राशिस्थ अथवा स्वग्रही हो तो जातक चंचल बुद्धि वाला, निर्लज्ज, कृश जाँघ वाला तथा बाल्यावस्था में रोगी रहता है । चतुर्थ भाव में बुध प्रभावहीन होने के कारण जातक को मातृ-कष्ट, वाहन-कष्ट तथा प्रवास आदि दुष्प्रभावों से पीड़ित रहना पड़ता है ।

पंचम भाव— पंचम भाव में बुध हो तो जातक स्त्री-पुत्रों से युक्त, सुखभोगी, कमल सदृश सुन्दर मुख वाला, देव-द्विज भक्त तथा पवित्र हृदय वाला होता है । जातक अपने बुद्धि-कौशल से अनेक बार लोगों को चमत्कृत कर देता है तथा समाज व परिवार में उसकी प्रतिष्ठा व यशोगान होता है । जातक तीव्र बुद्धि का होता है तथा यान्त्रिक विषयों में गहन रुचि रखता है । यदि बुध पाप ग्रह से दृष्ट अथवा शत्रु-क्षेत्री होकर पंचम भाव में विद्यमान हो तो जातक झगड़ालू स्वभाव का होता है । पंचम भाव में बुध राहु की युति जातक को जुआरी, सट्टा–लाटरी में रुचि रखने वाला बनाती है ।

षष्ठ भाव— यदि जन्मांक चक्र के षष्ठ भाव में बुध ग्रह विद्यमान हो तो जातक विवेकी, कलह प्रिय, आलसी, रोगी, अभिमानी, दुर्बल शरीर युक्त, कामी तथा स्त्री-प्रिय होता है । अष्टम भाव में बुध हो तथा वक्री हो तो जातक को शत्रुओं से भय होता है किन्तु यदि शुभ ग्रह की राशि में शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो शत्रुओं को तो जीतने वाला और सुखी, लेखन अथवा मुद्रण कार्य से धन कमाने वाला होता है । षष्ठ भाव में बली बुध की उपस्थिति जातक को नेतृत्व प्रदान करती है ।

सप्तम भाव— जन्मांक चक्र में बुध सप्तम भाव में विद्यमान हो तो जातक सुन्दर,

विद्वान, व्यवसाय-कुशल, धार्मिक, दीर्घायु, उदार तथा सुखी रहता है । यदि सप्तम भाव में बुध शुभ राशि अथवा उच्च राशिस्थ होकर विद्यमान हो तो जातक उत्तम कुलोत्पन्न स्त्री का पति होता है । यदि बुध बली हो तो जातक अनेक स्त्रियों से सम्पर्क रखने वाला होता है किन्तु यदि बुध निर्बल तथा पाप राशि से युक्त होकर विद्यमान है तो जातक की पत्नी उससे पूर्व ही मर जाती है तथा जातक को विधुर जीवन व्यतीत करना पड़ता है । जातक स्वभाव से चंचल प्रकृति, राज्य-पूजक, सहवास के समय क्षीण वीर्य, मध्यम दृष्टि वाला तथा परस्त्रीगामी होता है ।

अष्टम भाव— यदि जन्मांक चक्र में बुध ग्रह अष्टम भांव में विद्यमान हो तथा शुभ ग्रह की राशि में हो तो जातक सत्यवक्ता, अतिथि का सत्कार करने वाला तथा दीर्घायु होता है । यदि शत्रु ग्रह अथवा पापग्रह से युक्त हो तो कामुक स्वभाव का अभिमानी, मानसिक दुःखी, न्यायप्रिय, धनवान तथा धार्मिक प्रकृति का होता है । जातक व्यवसाय से धन-लाभ करने वाला होता है ।

नवम भाव— नवम भाव में बुध विद्यमान हो तो जातक विशेष भाग्यवान होता है। नवम भाव में यदि शुभ राशि का बुध हो तो जातक स्त्री और पुत्रों से युक्त होता है । यदि पाप ग्रह से युक्त हो तो जातक कुमार्गगामी तथा वेद-शास्त्रों का निन्दक होता है । जातक सदाचारी, ज्योतिष-प्रेमी, व्यवसायरत, गवैया, सम्पादक तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है। नवम भाव में बुध विद्यमान हो तो जातक स्त्री–पुत्र के सुख से सम्पन्न तथा सत्पुरुषों की सेवा से लाभ अर्जित करने वाला होता है । जातक की प्रतिष्ठा समाज तथा बन्धुवर्ग के मध्य होती है तथा उसका पिता दीर्घायु होता है ।

दशम भाव— यदि जन्मांक चक्र में बुध ग्रह दशम भाव में हो तो जातक माता-पिता तथा गुरुजनों की सेवा करने वाला, बहुत धनी और स्वअर्जित धन से वाहन-सुख को भोगने वाला, सत्यवादी, विद्वान, लोकमान्य, मनस्वी, व्यवहार-कुशल, कवि, न्यायी एवं जमींदार होता है । वह अनेक प्रकार के व्यवसाय से धन कमाने वाला होता है । यदि बुध उच्च राशिस्थ, स्वक्षेत्री अथवा गुरु से युक्त होकर दशम भाव में विद्यमान हो तो जातक अनेक शुभ कार्य करने वाला, गुरुजनों का आदर करने वाला होता है । नीच राशिस्थ अथवा शत्रुक्षेत्री अथवा क्षीण बुध होने पर जातक मूर्ख तथा नीच सेवक होता है ।

एकादश भाव— यदि जन्मांक चक्र में बुध ग्रह एकादश भाव में विद्यमान हो तो जातक शास्त्र-चिन्तक, अपने कुल का पोषक, सुन्दर नेत्र वाला तथा बहुत धन और स्त्रियों के युक्त होता है । एकादश भाव में बुध स्थित होने पर जातक दीर्घायु, गायन-प्रिय, पुत्रवान,

शत्रुनाशक तथा यशस्वी होता है । जातक को कन्या सन्तान अधिक होती है तथा वह सामुद्रिक तथा ज्योतिष शास्त्र का गूढ़ ज्ञाता होता है । यदि एकादश भाव में बुध ग्रह उच्च राशिस्थ अथवा स्वक्षेत्री हो तो जातक शुभ कर्मों से धन-लाभ करता है । वह लेखन-कला द्वारा भी लाभ प्राप्त करने वाला होता है ।

द्वादश भाव— यदि जन्मांक चक्र में बुध ग्रह द्वादश भाव में विद्यमान हो तो जातक धनहीन, दूसरे के धन और स्त्री में लोभ करने वाला, व्यवसन से रहित और उपकारी होता है । बुध ग्रह यदि स्वग्रही अथवा शुभ ग्रह से युक्त होकर द्वादश भाव में विद्यमान हो तो जातक गूढ़ शास्त्रों का अध्ययन करने वाला तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है । जातक जीवन में दूसरों की बातों (बहकाने) में आकर अपना नुकसान करने वाला तथा धोखा खाने वाला होता है । जातक मानसिक रूप से चिन्तित तथा अपयशी होता है ।

बुध ग्रह के प्रभाव से उत्पन्न होने वाले रोग

बुध ग्रह के अशुभ प्रभाव से निम्नलिखित रोग उत्पन्न होते हैं--

- रक्त चाप (B. P.)
- दमा
- खाँसी
- सिर-दर्द
- वाक् दोष
- तपैदिक (T. B.)
- श्वास
- वात-प्रकोप
- हृदय रोग
- शूल
- अम्ल-पित्त
- चक्कर आना

रक्त-चाप (B. P.)

मानव शरीर में प्रवाहित होने वाले रक्त का एक निश्चित दबाव होता है । रक्त प्रवाह में अनियमितता के परिणाम स्वरूप के रोग से पीड़ित होना पड़ता है । रक्तचाप दो प्रकार का होता है— (1) उच्च रक्त चाप और (2) निम्न रक्त चाप । उपरोक्त दोनों ही अवस्था में हृदय की गति असन्तुलित हो जाती है, जिसके फलस्वरूप हृदय को अधिक कार्य करना पड़ता है ।

रक्त-चाप की बीमारी जान-लेवा होती है । उच्च रक्त-चाप में सिर भारी-भारी, कमजोरी, चिड़चिड़ापन, अनिद्रा, चक्कर की तरह हृदय के आस-पास दर्द हो सकता है, दिल बैठता महसूस होता है । इसी प्रकार निम्न रक्त चाप में कमजोरी, खाने के बाद तबियत खराब, कनपटियों में दर्द, सिर भारी आदि लक्षण प्रकट होते हैं ।

रक्त-चाप बढ़ने का मुख्य कारण मोटापा है । दुर्बल शरीरी व्यक्तियों को कभी रक्त-चाप नहीं होता, अपवाद की बात दूसरी है । रक्तचाप से पीड़ित व्यक्ति को औषधियों के सेवन के साथ ही चिन्ता, मांसाहारी भोजन, शराब आदि से परहेज करना अत्यन्त आवश्यक है । रक्त-चाप से मुक्ति पाने अथवा रक्त-चाप से बचने के लिए, चिन्ता, अधिक परिश्रम तथा नशीली चीजों से सख्त परहेज आवश्यक है ।

घरेलू औषधियाँ :

- शिलाजीत तथा सर्पगन्धा का घनसत्व दोनों को समभाग में लेकर घोट लें तथा मटर के दाने के बराबर गोलियाँ बना लें । इस गोली को एक पाव दूध अथवा जल के साथ रोगी को दिन में तीन बार दें । इसके नियमित सेवन से पुराने से पुराना रक्त-चाप समूल नष्ट हो जायेगा ।
- तुलसी पत्र के स्वरस तथा शहद दोनों एक चम्मच मात्रा में लेकर मिला लें । इस मिश्रण को नियमित दिन में दो बार लें । कुछ ही दिनों में बढ़ा हुआ रक्त-चाप सन्तुलित हो ज़ायेगा ।
- सर्पगन्धा व श्वेत पर्पटी दोनों को समभाग में लेकर कूट-पीस कर छान लें । अब इस चूर्ण की 4-5 ग्राम मात्रा को जल अथवा गोदुग्ध के साथ दिन में दो बार रोगी को दें । इसके कुछ दिन नियमित सेवन से रक्त-चाप सन्तुलित हो जाता है ।
- एक चम्मच गोघृत के साथ 4-5 दाने सफेद गोलमिर्च को प्रातः दैनिक क्रियाओं से निवृत्त होने के पश्चात सर्वप्रथम चबाकर खायें तथा उसके उपरान्त एक पाव गुनगुने गोदुग्ध का पान करें । इसके नियमित प्रयोग से निम्न रक्त-चाप सन्तुलित हो जाता है ।
- सर्पगन्धा के चूर्ण की दो ग्राम मात्रा को गुनगुने गोदुग्ध के साथ नियमित लेने से बढ़ा हुआ रक्त-चाप कुछ दिनों में सन्तुलित हो जाता है ।
- कम से कम 50 ग्राम छुहारे को गोदुग्ध में इतना पकायें कि वह फूलकर सुपारी जैसा गोल चिकना हो जाये । अब इसमें केसर डालकर नित्य पियें । इसके नियमित सेवन से गिरा हुआ रक्त-चाप कुछ ही दिनों में सन्तुलित हो जायेगा ।
- पपीता के नियमित सेवन से रक्तचाप सन्तुलित हो जाता है ।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

बेलाडोना 30— रोगी का चेहरा, तमतमाने लगे, मुँह-गला खुश्क हो पर रोगी पानी नहीं चाहता, चेहरा लाल हो जाए, आँखें उभर आयें, गले की नसें तपकने लगे, मन उत्तेजित

होने लगे । ऐसे लक्षणों के प्रकट होने पर इस दवा की चार पाँच गोली रोगी को दिन में तीन चार बार छः छः घण्टे के अन्तराल से चूसने को दें ।

वैरायटा म्यूर 6x— जब रात्रि को सोते समय भयंकर दर्द उठे तो इस दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप शीतल जल के साथ रोगी को दी जाती है । यह दवा वृद्धों के लिए विशेष लाभकारी है ।

एसिड फॉस 1x, 30, 200— यदि स्नायुतन्त्र की कमजोरी के कारण रक्तचाप उत्पन्न हो जाये तो इस औषधि की तीन चार बूँद हर चार घण्टे पर रोगी को देते रहें । लाभ होगा ।

कैक्टस ग्लैण्डी फ्लोरल, मूलअर्क या 3— निम्न रक्तचाप के पीड़ित रोगियों के लिए यह दवा रामबाण का काम करती है । इस दवा की दो बूँद आधे कप शीतल जल के साथ दिन में दो बार रोगी को दें । कुछ ही दिनों में घटा हुआ रक्तचाप सन्तुलित हो जायेगा ।

कोनियम 200— यह निम्न रक्तचाप के रोग में विशेषकर वृद्धों के लिए चमत्कारिक लाभ करने वाली औषधि है ।

कैल्मिया— वात रोग से पीड़ित, उतरने चढ़ने में साँस फूलने लगे, आतशक के शिकार आदि व्याधियों के लक्षणों के होने पर इस औषधि की चार-पाँच गोली चार-चार घण्टों के अन्तराल पर रोगी को देना चाहिए । तुरन्त लाभ होगा ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

उच्च रक्त-चाप के रोग में चुम्बक-पेटी प्रातःकाल स्नान आदि से निवृत्त होने के पश्चात् 40-45 मिनट तक कमर में बाँधें । तदुपरान्त चुम्बक-घड़ी दाहिने हाथ में नाड़ी के स्थान पर बाँधें । कुछ ही देर में रक्त-चाप संतुलित हो जायेगा ।

निम्न रक्त-चाप के रोग में चुम्बक-पेटी प्रातःकाल स्नान आदि से निवृत्त होने के पश्चात् 40-45 मिनट तक कमर में बाँधें तथा बारी-बारी से चुम्बक को हाथों और पैरों में लगायें । कुछ ही देर में घटा हुआ रक्त-चाप सन्तुलित हो जायेगा ।

जब भी प्यास लगे चुम्बकीय जल का सेवन करें ।

विशेष— चुम्बकीय पेटी तथा चुम्बक जोड़ा प्रयोग करते समय ठण्डी चीजों का सेवन न करें तथा इसके प्रयोग करने के आधे घंटे के बाद ही कोई ठण्डी चीज ले सकते हैं । हाँ, गरम पेय अथवा चाय ले सकते हैं । चुम्बकीय चिकित्सा में सदैव इस बात का ध्यान रखें कि प्रयोग की अवधि में शरीर का कोई भी अंग भूमि से स्पर्श

न करता हो । अतः चुम्बकीय उपचार पद्धति में चुम्बक का प्रयोग करते समय या तो रबर की चप्पलें पहन लें अथवा लकड़ी के तख्त पर बैठकर उपरोक्त प्रयोग विधि का पालन करें ।

मन्त्र प्रयोग—

किसी भी बुधवार को बुध की होरा में इस बुध मन्त्र का जप ग्यारह माला करने से रक्तचाप से मुक्ति मिलती है— **ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः ।**

विशेष— ध्यान रहे कि बुध मंत्र की साधना व पूजन विधि विधान से बुधवार के दिन ही प्रारम्भ करना चाहिए अन्यथा मन्त्र-जप का प्रभाव निष्फल हो जाता है ।

यन्त्र साधना—

बुध यन्त्र के प्रयोग से रक्तचाप से मुक्ति मिलती है । बुध यन्त्र उच्च तथा निम्न दोनों प्रकार के रक्त-चापों में प्रभावशाली ढंग से काम करता है । इस बुध यन्त्र की रचना बुधवार के दिन बुध की होरा में अथवा अश्लेषा नक्षत्रगत किसी बुधवार को करना चाहिए । इस यन्त्र की रचना भोजपत्र पर अष्टगन्ध अथवा सफेद चन्दन की स्याही तथा अनार की लेखनी से की जाती है । तांत्रिक जन काँस्य-पत्र अथवा ताम्र-पत्र पर बुध यन्त्र को उत्कीर्ण कराने का परामर्श देते हैं ।

९	४	११
१०	८	६
५	१२	७

यन्त्र लेखन से उपरान्त गंगाजल और गौमूत्र से इसे स्नान करना चाहिए । तदुपरान्त यन्त्र को किसी नवीन हरित वस्त्र का आसन देकर प्रतिष्ठित किया जाना चाहिए । फिर चन्दन, पुष्प, अक्षत, धूप-दीप आदि से पूजन करके किसी मिष्ठान्न से नैवेद्य अर्पित करना चाहिए । पूजनोपरान्त बुध देवता के मन्त्र का जप तथा स्तुति की जाती है । संकल्पानुसार अभीष्ट संख्या में मन्त्र जप करने के उपरान्त उसी मन्त्र की आहुतियों से हवन किया जाता है । हवन के उपरान्त ब्राह्मण बालकों को भोजन कराकर, दक्षिणा दे विदा करना चाहिए ।

उपरोक्त पूजनोपरान्त यंत्र को किसी ऐसे स्थान पर स्थापित कर दें, जहाँ नित्य सुविधानुसार उसका दर्शन पूजन हो सके । इस यन्त्र के नित्य पूजन-दर्शन से न केवल रक्तचाप से मुक्ति मिलती है अपितु जातक को बुध ग्रह के अशुभ प्रभाव से उत्पन्न अन्य रोगों से भी मुक्ति मिलती है ।

तान्त्रिक प्रयोग—

विधारा की जड़ ज्येष्ठा नक्षत्र में घर में लाकर विधि-विधान से, पूजन व शोधन

करने के उपरान्त हरी डोरी की सहायता से दाहिनी भुजा में धारण करें ।

रुद्राक्ष की माला (108 रुद्राक्ष फल वाली) किसी भी बुधवार को बुध की होरा में धारण करें ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतया समस्त प्रकार के रक्तचाप में पन्ना रत्न दाहिनी कनिष्ठा में धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी सुयोग्य रत्नविद ज्योतिषी से परामर्श करें ।

दमा

जब फेफड़ों में आने वाली नलियों में ''श्लेष्मा'' जमा हो जाता है, निकाले नहीं निकलता, कठिनाई से निकलता है, तब इसे 'दमा होना' कहते हैं । इस रोग के उत्पन्न होने के मुख्य कारण अति शीत पदार्थों का सेवन करना, धूल-धुआँ ग्रहण करना, वंशानुगत प्रभाव होना, देर से पचने वाला या भारीपन पैदा करने वाला आहार लेना आदि है ।

दमा होने पर खाँस-खाँस कर बलगम निकालना पड़ता है । रोगी हवा के लिए तरसता है, साँस मुश्किल से आती है, फेफड़ों से साँय-साँय की आवाज आती रहती है । आयुर्वेद के अनुसार दमा रोग पाँच प्रकार के होते हैं— (1) क्षुद्र दमा (2) छिन्न दमा (3) तमक दमा (4) महा दमा (5) ऊर्ध्व दमा ।

दमा होने पर साँस लेने में असुविधा होना, मुँह का स्वाद खराब होना, कनपटियाँ चटकने लगना, छाती में भारीपन होना, छाती में पीड़ा होना, अफरा तथा पेट खराब होना आदि लक्षण प्रकट होते हैं । दमा के रोगी को निम्न उपचार के साथ-साथ पथ्य-अपथ्य और उचित आहार विहार का पालन करना चाहिए अन्यथा रोग घटने की बजाय बढ़ने लगेगा ।

घरेलू औषधियाँ :

- प्रथम सप्ताह नियमित आठ दिन तक धतूरे का एक-एक बीज जल के साथ प्रातःकाल लें । दूसरे सप्ताह इसी प्रकार दो-दो बीज को शीतल जल के साथ निगल लें । यह क्रिया पाँचवें सप्ताह तक लगातार प्रति सप्ताह एक-एक बढ़ाते करते रहें । पुराने से पुराना दमा छूमन्तर हो जायेगा ।
- एक तोला, गुड़ व एक तोला कड़ुवा तेल समभाग में मिलाकर दिन में एक बार 20-22 दिन तक सेवन करें । इसके नियमित सेवन से कुछ ही दिनों में दमा समूल चला जायेगा ।

- मुलहठी का काढ़ा नियमित पन्द्रह दिन तक सेवन करने से दमा के रोगी को बहुत आराम मिलता है ।
- एक ग्राम करील की लकड़ी की भस्म पान के साथ नियमित सेवन करने से दमा के रोग में आराम मिलता है ।
- हल्दी, मुनक्का, कचूर, गुड़, काली मिर्च, रास्ना, पिप्पली सबको समभाग में मिलाकर कूट-पीस कर चूर्ण बना लें । अब इस चूर्ण की आधा तोला मात्रा में उतनी ही मात्रा में पुराना गुड़ और सरसों का तेल मिलाकर चटनी बना लें । इस चटनी को नियमित प्रातःकाल सेवन करें । कुछ ही दिनों में दमा का कहीं पता न चलेगा ।
- भटकटैया के फलों का काढ़ा बनाकर उसमें दो ग्राम सिकी हुई हींग और इतनी ही मात्रा में सेंधा-नमक डालकर दमा के रोगी को दिन में दो बार पिलायें । भयंकर दमा भी इस काढ़े को नियमित पीने से ठीक हो जाता है ।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

कार्बोवेज 30— वृद्ध व्यक्तियों के दमे में यह अधिक उपयोगी है । ऐसे लोग जिनका शरीर कमजोर हो, पाचन-शक्ति कमजोर हो, कब्ज रहता हो, डकार आने पर आराम मिलता हो, दमे का आक्रमण होने पर ऐसा लगे मानो प्राण निकल जायेगा । ये लक्षण होने पर इस दवा की चार-पाँच गोलियाँ चार चार घंटे के अन्तराल से रोगी को दें, आराम हो जायेगा ।

आर्सेनिक 3— इस औषधि को तब दिया जाता है, जब दमे का आक्रमण रात्रि एक से दो बजे अथवा उसके बाद हो । लेटने से रोग बढ़ता हो तथा रोगी बैठा रहना चाहता हो, ऐसे लक्षण प्रकट होने पर दवा की दो बूँद आधे कप जल के साथ रोगी को पिलायें, तुरन्त लाभ होगा ।

इपिकाक 3— छाती में जकड़न, सिकुड़न, खाँसते समय खड़खड़ाहट, छाती से खूब कफ निकलता है, साँस लेने में कष्ट होना, रोगी गर्म और नमी युक्त मौसम को बरदास्त न कर सकता हो, ऐसे लक्षण उत्पन्न होने पर दवा की चार-पाँच गोली चार-चार घण्टे के अन्तराल से रोगी को चूसने के लिए देनी चाहिए ।

नेट्रम सल्फ 6x अथवा 12x— यह दवा विशेषकर बच्चों के लिए बहुत लाभकारी है । इसके प्रकोप समय प्रातःकाल भोर के समय होता है । यह औषधि ऐसे दमे में उपयोगी है जो नमी वाले मौसम जैसे वर्षाकाल की हवा, बादल होना, समुद्र के पास नमी वाली हवा आदि के कारण होता है ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

किसी भी बुधवार की होरा में अथवा रेवती नक्षत्र में चुम्बक-पेटी को पीठ पर बाँधें तथा चुम्बक-जोड़े को हाथ में लगायें । ऐसा दिन में दो-तीन बार 40-40 मिनट तक करें तथा साथ में चुम्बक-जल का सेवन करें ।

विशेष— ध्यान रहे कि उपरोक्त प्रयोग बुधवार को ही प्रारम्भ करें तथा जब तक रोग पूर्णतया ठीक न हो जाय इसे करते रहें । कुछ ही दिनों में रोग समूल नष्ट हो जायेगा ।

मन्त्र प्रयोग—

दमा के रोग से मुक्ति पाने के लिए बुध मन्त्र का नित्य कम से कम पाँच माला अवश्य जप करें— **ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः ।**

विशेष— ध्यान रहे कि बुध मन्त्र का जप किसी बुधवार से ही प्रारम्भ करें । अश्लेषा नक्षत्रगत बुधवार से प्रारम्भ किया गया बुध मन्त्र का जप विशेष फलदायी होता है ।

यन्त्र साधना—

दमा के रोग में बुध मन्त्र का प्रयोग सर्वश्रेष्ठ फल प्रदान करता है । बुध यन्त्र का पीछे के पृष्ठों में उल्लेख आ चुका है । अतः पाठक उनका अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

सफेद कटेर की जड़ ज्येष्ठा नक्षत्र-गत किसी बुधवार को लाकर विधि-विधान से शोधन व पूजन करने के उपरान्त हरे डोरे की सहायता से दाहिनी भुजा में धारण करें ।

छः मुखी रुद्राक्ष के एक फल को हरे डोरे की सहायता से बुध की होरा में गले में लटकायें । ऐसा करने से कुछ ही दिनों में दमा के रोगी को आराम मिलेगा ।

रत्न प्रयोग— सामान्य रूप से दमा रोग से पीड़ित व्यक्तियों को एक्वामेरिन रत्न चाँदी की अंगूठी में मढ़ाकर दाहिनी कनिष्ठा में धारण करना चाहिए ।

विशेष— ध्यान रहे कि रत्न धारण करते समय अतिरिक्त सावधानी रखनी पड़ती है क्योंकि दूषित तथा अल्प भार के रत्न तो लाभ की बजाय हानि करने लगते हैं । रत्न धारण के पूर्व रत्न को विधि विधान में शोधित व पूजित अवश्य कर लेना चाहिए ।

सिरदर्द : आधासीसी : (माइग्रेन)

उपरोक्त सभी रोग मस्तिष्क से सम्बन्ध रखते हैं । सिर-दर्द कई कारणों से हो सकता है । आधासीसी के रोग में मस्तिष्क का एक हिस्सा दर्द से पीड़ित रहता है ।

सिर में पीड़ा होने पर रोगी को कुछ भी अच्छा नहीं लगता तथा वह काफी परेशान हो जाता है ।

घरेलू औषधियाँ :

- तुलसी की पत्ती व काली मिर्च पीसकर चूर्ण बना लें । इस चूर्ण की नस्य लेने पर आधासीसी का दर्द ठीक हो जाता है ।
- सर्दी के कारण सिरदर्द हो रहा हो तो सोंठ और बच को पानी में घिसकर कपाल और कनपटी पर लेप करें । कुछ ही देर में सिरदर्द गायब हो जायेगा ।
- महुआ के बीज को आग में जला लें तथा खरल में कूट पीसकर कपड़छन कर लें । अब इस चूर्ण की नस्य लें । भयंकर सिरदर्द भी कुछ देर में ही चला जायेगा ।
- छोटी पीपल डेढ़ ग्राम मात्रा में बारीक पीसकर शहद के साथ रोगी को चटायें । सिरदर्द पाँच मिनट में ठीक हो जायेगा ।
- कफ और वात के कारण सिरदर्द हो रहा हो तो अनार की जड को पानी में पीसकर मस्तक पर लेप करें । सिरदर्द कुछ देर में गायब हो जायेगा ।
- जायफल, सोंठ और सांभर का सींग तीनों को पानी में चन्दन की तरह घिसकर इसमें थोड़ा सा गोघृत मिलाकर जरा गुनगुना कर लें । अब इस दवा को कपाल व कनपटी पर लेप कर लें । हवा से पूरा बचाव करें । सिरदर्द में काफी आराम हो जायेगा ।
- नौसादर और बिना बुझा चूना दोनों को समभाग में लेकर शीशी में भर लें । जब सिर में दर्द बढ़ने लगे तो सीसी को हिलाकर रोगी को सुँघा दें । सिरदर्द तुरन्त गायब हो जायेगा । यह नजले से उत्पन्न सिरदर्द के लिए रामबाण है ।
- भटकटैया के फलों का रस मस्तक पर लगाने से सिरदर्द में आराम मिलता है ।
- षडबिन्दु तेल की नस्य लेने से समस्त प्रकार के सिरदर्द में आराम मिलता है ।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

कैली बाइक्रोम 3 अथवा 30— सिर के एक ओर दर्द, जुकाम दब जाने से सिरदर्द, आँखों के ऊपर माथे में दर्द, सिरदर्द से पूर्व आँखों में चुन्धियाहट आदि लक्षण उत्पन्न होने पर दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार रोगी को चूसने दें । आधासीसी का दर्द चला जायेगा ।

सेंगुनेरिया 6— जब सिरदर्द सूर्योदय से प्रारम्भ होकर दोपहर को अति तीव्र हो जाता हो तथा सूर्यास्त के साथ समाप्त हो जाता हो, तो ऐसे लक्षणों पर दवा की दो बूँद आधे कप जल के साथ रोगी को पिलायें, तुरन्त आराम होगा ।

स्टेनम 30— यह दवा तब दी जाती है जब आधासीसी का दर्द सूर्योदय तथा सूर्योदय के अनुसार घटता बढ़ता रहता है ।

नैट्रम म्यूर— इसमें सिरदर्द के रोगी को ऐसा अनुभव होता है कि हथौड़े चल रहे हैं । सिरदर्द लगभग 10 बजे प्रारम्भ होकर 2-3 बजे अधिक हो जाता है और सूर्यास्त के पश्चात दर्द एकदम समाप्त हो जाता है । ऐसे रोगी को इस दवा की चार पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने को देनी चाहिएं । तुरन्त आराम होगा ।

चियोनेथस मूल अर्क— जब सिर-दर्द के रोगी को ऐसा अनुभव होता है कि आँखों में दर्द हो रहा है, नाक की जड़ में भारीपन है, जरा से बोलने अथवा सुनने में दर्द बढ़ता है, झुकने अथवा किसी भी अंग को हिलाने से सिर-दर्द बढ़ जाता है, तो ऐसे रोगी को इस दवा की दो बूँद आधे कप जल के साथ आधे-आधे घण्टे में देते रहें । जब आराम होने लगे तो दवा को तीन-तीन घण्टे में रोगी को दें ।

यह दवा ऋतु सम्बन्धी सिरदर्द तथा पित्त सम्बन्धी सिरदर्द में भी लाभ करती है ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

साधारण सिर–दर्द में चुम्बक के उत्तरी ध्रुव को 20 से 40 मिनट तक (आवश्यकतानुसार) माथे पर लगायें, कुछ ही देर में सिरदर्द में आराम हो जायेगा ।

सिर में चुम्बकीय तेल लगायें और चुम्बक-जल का सेवन करें ।

मन्त्र प्रयोग— निम्न मन्त्र का ग्यारह माला जप करने से सभी प्रकार के सिर दर्द में आराम मिलता है :—

प्रियंगु कलिका श्यामं, रूपेणाप्रतिमं बुधम् ।
सौम्यं सौम्यं गुणोपेतं, तं बुधं प्रणमाम्यहम् ।।

विशेष— उपरोक्त बुध मन्त्र का जप बुधवार में दिन से ही प्रारम्भ करें तथा श्रद्धा एवं विश्वास के साथ बुधवार का व्रत भी रखें ।

यन्त्र साधना—

आधासीसी के दर्द अथवा सिर-दर्द में यह यन्त्र बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है । इस यन्त्र को बुधवार के दिन बुध की होरा में भोजपत्र पर लिखकर सिर-दर्द से पीड़ित रोगी के मस्तक पर बाँध देने से दर्द दूर हो जाता है ।

३९	४६	२	७
६	३	४३	४२
४५	४०	८	१
४	५	४१	४४

तान्त्रिक प्रयोग—

''अधकपारी'' का बीज हरे धागे की सहायता से बुधवार को बुध की होरा में कान पर बाँधने से आधासीसी का दर्द गायब हो जाता है ।

किसी बुधवार को बुध ग्रह की होरा में अथवा अश्लेषा नक्षत्र में आधासीसी का रोगी गुड़ की एक डली लेकर चुपचाप किसी चौराहे पर जाये और दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके गुड़ की डली को दाँतों में काटकर दो टुकड़े पर कहीं फेंककर घर लौट आए। कुछ ही देर में दर्द समाप्त हो जायेगा ।

रत्न प्रयोग—

साधारणतया सिरदर्द अथवा आधा-शीशी अथवा माइग्रेन से मुक्ति पाने के लिए सगपन्ना रत्न चाँदी की अँगूठी में मढ़ाकर ज्येष्ठा नक्षत्रगत बुधवार के दिन अथवा बुध की होरा में दाहिनी कनिष्ठा में धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी रत्नविद् ज्योतिषी से परामर्श लें ।

वात प्रकोप

जाड़े के दिनों में कुछ कारणों से स्त्री-पुरुष वात-प्रकोप से पीड़ित हो जाते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उन्हें निम्न व्याधियों की पीड़ा से कष्ट भोगना पड़ता है—

- जोड़ों का दर्द
- जोड़ों में सूजन
- बिच्छू-दंश जैसी पीड़ा
- सायटिका
- गठिया
- कमर-दर्द
- अन्य वातजनित रोग

उपरोक्त सभी व्याधियों का मुख्य कारण वात है । वात की बीमारियों में सबसे भयंकर गठिया (आमवात) होता है । यह रोग हड्डियों के जोड़ों में पीड़ा, अकड़न और सूजन पैदा कर देता है । वात पाँच प्रकार से पूरे शरीर में व्याप्त रहकर कार्य करता है । अतः जिस अंग या स्थान का वात कुपित होता है, वहीं व्याधि उत्पन्न कर देता है ।

वात के प्रारम्भ होने पर ये लक्षण प्रकट होने लगते हैं— प्यास, अरुचि, कमर, सिर, पीठ, पिंडली आदि की हड्डियों व उसके कोड़ों में दर्द, जकड़न व टूटन का अनुभव, ज्वर, आलस्य, अपच और भारीपन आदि ।

घरेलू औषधियाँ—

- 50 ग्राम मिट्टी के तेल में 10 ग्राम पिसा हुआ कपूर मिलाकर शीशी को बन्द कर आधा घंटा धूप में रख दें । अब जहाँ वात का प्रकोप हो उस स्थान पर इस वात-नाशक तेल से धीरे-धीरे मालिश करें तत्पश्चात् सिकाई कर दें । कुछ ही

दिनों में रोगी को आराम मिल जायेगा । स्मरण रहे कि मालिश करने से पूर्ण तेल को खूब अच्छी तरह हिला लें, जिससे कपूर मिट्टी के तेल में पूर्णतया घुल जाए ।

- शुद्ध कुचला और काली मिर्च समभाग में लेकर पान के रस में हफ्तेभर खरल में खूब घोटें । इसके उपरान्त एक-एक रत्ती वजन की गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लें । उसकी एक गोली सुबह तथा एक गोली शाम को पान के कोरे पत्ते के साथ रोगी को चबाने तथा रस चूसकर खाने के लिए दें । यह औषधि आमवात (गठिया) के लिए रामबाण काम करती है ।

विशेष— स्मरण रहे कि पित्त रोगी को यह दवा कभी नहीं सेवन करनी चाहिए । इस औषधि के सेवन करने वाले को नित्य अथवा जब तक दवा का सेवन करें गौघृत का अवश्य सेवन करना चाहिए तथा खटाई का सेवन भूलकर भी नहीं करना चाहिए।

■ सोंठ असगन्ध, सुरन्जान और मैथीदाना सभी 50-50 ग्राम लें तथा काला नमक 100 ग्राम मात्रा में लेकर खरल में कूट-पीस कर चूर्ण बना लें । इस चूर्ण की आधा चम्मच मात्रा सुबह-शाम शीतल जल के साथ नियमित लेने से वात-प्रकोप शान्त हो जाता है ।

■ 15 ग्राम बढ़िया केसर, 50 ग्राम सुरंजान मीठी, 25 ग्राम शक्कर तीनों को खरल में डालकर खूब महीन पीस लें और इसकी करीब अस्सी पुड़ियाँ बना लें । इसकी एक-एक पुड़िया सुबह-शाम गोदुग्ध के साथ लेने से समस्त प्रकार के वात-प्रकोप तथा गठिया रोग दूर हो जाते हैं ।

■ 50 ग्राम विजयसार को खरल में कूट-पीस कर महीन कर लें और आधा लीटर पानी में इस चूर्ण को डालकर खौलायें । जब पानी चौथाई रह जाए तो उतार कर छान लें । अब 5-6 ग्राम पिसी हल्दी फाँककर ऊपर से गुनगुना काढ़ा पी लेने से 5-6 दिन में सभी प्रकार के जोड़ों का दर्द दूर हो जाता है । यह अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग है ।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

रसटाक्स 200— जब रोगी को चलने-फिरने में दर्द महसूस हो किन्तु लगातार चलने से आराम हो, तो ऐसे रोगी को इस दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए दें । तुरन्त लाभ होगा ।

ऐनाकार्डियम 6, 30 अथवा 200— घुटनों के जोड़ों या शरीर में जकड़न, घुटनों में ऐसा दर्द जैसे जख्म में, रीढ़ की हड्डी कमजोर हो गई हो, ऐसे लक्षण उत्पन्न होने पर दवा की दो बूँद आधे कप जल के साथ रोगी को दिन में चार बार दें । कुछ ही दिनों में घुटनों के जोड़ों के दर्द में आराम होगा ।

कास्टिकम 30 अथवा 200— सभी प्रकार के वात व्याधि में तीव्र पीड़ा उत्पन्न होने पर यह दवा दी जाती है । इस दवा की चार पाँच गोली दिन में चार बार गोली को चूसने को देना चाहिए ।

आर्टिका यूरेन्स मूल अर्क— गठिया के रोग में यह दवा रामबाण का काम करती है । इस दवा की चार पाँच बूँद आधे कप जल के साथ रोगी को दिन में दो तीन बार देनी चाहिएं । कुछ ही दिनों में आराम हो जायेगा ।

कोलचिकम 3— यदि रोगी का मिजाज चिड़चिड़ा, दुर्बल शरीर, मांसपेशियों और जोड़ों में दर्द, उल्टी, पाँव के अँगूठों में दर्द तथा सूजन, उत्साहीनता बनी रहे तो ऐसे लक्षण उत्पन्न होने पर दवा की चार पाँच बूँद आधे कप जल के साथ रोगी को दिन में तीन चार बार दें । कुछ ही घण्टों में आराम हो जायेगा ।

मेग्नेशिया फॉस 1m— साइटिका के रोगी के लिए यह दवा रामबाण का कार्य करती है । यदि वात रोग में गरम पानी की थैली से सेकने में आराम मिलता हो तो इस दवा की चार पाँच गोली रोगी को प्रति सप्ताह चूसने के लिए देना चाहिए ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

सभी प्रकार के वात-रोग तथा गठिया जैसे भयंकर आमवात में चुम्बकीय पेटी रामबाण का कार्य करती है । जोड़ों के दर्द, गठिया, अंगों में सूजन आदि के स्थान पर चुम्बकीय पेटी 40-50 मिनट तक बाँधें तथा चुम्बकीय तेल से धीरे-धीरे मालिश करें । जब भी पानी पीने को मन चाहे चुम्बकीय जल का ही सेवन करें ।

उपरोक्त प्रयोग नियमित 15 दिन तक करें । वात रोग के दर्द में आराम मिलने लगेगा ।

मन्त्र प्रयोग—

इस बुध मन्त्र का नित्य पाँच माला जप करने से वात प्रकोप से मुक्ति मिलती है—

ॐ बुं बुधाय नमः ।

विशेष— मंत्र का जप ज्येष्ठा नक्षत्र का अथवा रेवती नक्षत्र गत बुधवार से प्रारम्भ करें । साधक की सम्पूर्ण साधना काल में ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना तथा क्रोधादि से दूर रहना चाहिए ।

यन्त्र साधना—

सभी प्रकार के वात प्रकोप से मुक्ति पाने के लिए बुध यन्त्र की साधना व दर्शन

करना चाहिए । बुध यन्त्र का पीछे के पृष्ठों में उल्लेख है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

बुधवार को बुध की होरा में गाजर के रस में जीरा, मिश्री और सेंधा नमक मिलाकर पीने से वात-विकार में आराम मिलता है ।

अश्लेषा नक्षत्र गत बुधवार से नीबू के लगातार सेवन से आमवात, संधिवात और अन्य वात जन्य रोग दूर होते हैं ।

रत्न प्रयोग—

वात से मुक्ति पाने के लिए पीतपनी रत्न बुधवार को चाँदी की अँगूठी में मढ़ाकर दाहिनी कनिष्ठा में धारण करें ।

चक्कर आना : जी मिचलाना : उल्टी आना

चक्कर आने के कई कारण होते हैं । स्नायविक दुर्बलता, अति सम्भोग, वीर्य-क्षय, चढ़ाई चढ़ने या ऊपर देखने, बस, जहाज, ट्रेन, नाव, किसी गाड़ी अथवा सवारी आदि में बैठने से चक्कर आने लगता है । सभी को चक्कर आने का एक ही कारण नहीं होता है । किसी को गाड़ी अथवा मोटर में बैठने से चक्कर आने लगता है तो किसी को कुछ नहीं होता ।

अगर चक्कर किसी बीमारी का रूप न हो तो कोई विशेष चिन्ता का कारण नहीं माना जाता । किन्तु खून की कमी से अथवा स्नायविक दुर्बलता के कारण चक्कर आ रहा हो तो अविलम्ब उसका उपचार करना चाहिए ।

घरेलू औषधियाँ—

- मिट्टी के दीपक को आग में इतना तपायें कि वह लाल हो जाए । अब इसे पानी में बुझाकर उसका पानी जी मचलने वाले रोगी को पिलायें । कुछ ही देर में आराम हो जायेगा ।
- 25 ग्राम गेरू के टुकड़े को आग पर गरम करके पाव भर पानी में बुझाएँ । यह क्रिया तीन-चार बार करके जी मिचलाने वाले रोगी को यह पानी पिलायें । कुछ ही देर में उल्टी आना एकदम बन्द हो जायेगा ।
- एक गिलास स्वच्छ पानी में 50 ग्राम चावल को भिगोकर रखदें तथा एक घंटे पश्चात इस पानी को जी मिचलाने वाले रोगी को पिलायें । कुछ ही देर में जी मिचलाना बन्द हो जायेगा ।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

कोक्युलस 3 अथवा 30— बस, जहाज, ट्रेन, नाब में चक्कर, पर्वतों पर चढ़ने में चक्कर अथवा खाना खाकर किसी गाड़ी में सवारी से चक्कर व उल्टी आने पर इस दवा की चार-पाँच गोली रोगी को चूसने के लिए देने से चक्कर नहीं जायेगा। यदि उपरोक्त कारणों से चक्कर आ रहा है। तो दवा खाने के 15 मिनट बाद चक्कर बन्द हो जायेगा।

जेल्सीमियम 6 अथवा 30— अति गम्भीर अथवा वीर्य-क्षय, कमजोरी, स्नायविक दुर्बलता ऐसे लक्षणों पर इस दवा की चार पाँच गोली दिन में तीन बार रोगी को चूसने के लिए देना चाहिए। इससे कुछ ही दिनों के सेवन से चक्कर आना बन्द हो जायेगा।

फेरम मेट 30— बैठे लेटे से एकदम उठ खड़े होने पर चक्कर, अथवा खून की कमी से चक्कर आ रहा हो तो इस औषधि की चार-पाँच गोली रोगी को चूसने के लिए दें। चक्कर आना बन्द हो जायेगा।

कैल्केरिया कार्ब 30— यह दवा उन स्त्री पुरुष को देनी चाहिए चढ़ाई चढ़ने अथवा ऊपर देखने से चक्कर आता हो तो इस दवा की दो बूँद आधे कप जल के साथ लेना चाहिए।

चुम्बकीय चिकित्सा :

- किसी भी कारण से चक्कर आने जी मिचलाने अथवा उबकाई उल्टी आने पर चुम्बक के उत्तरी ध्रुव को 30-40 मिनट तक माथे पर लगायें तथा चुम्बक-जल का सेवन रोगी को करायें।
- चुम्बकीय तेल से रोगी के सिर में मालिश करें तथा चुम्बकीय हेडवेल्ट रोगी के सिर में बाँध दें। कुछ ही देर में चक्कर आना बन्द हो जायेगा।

विशेष— चुम्बकीय हेड–बेल्ट को बुध की होरा में अथवा अश्लेषा नक्षत्र में बाँधने से चक्कर आने की शिकायत कम हो जाती है।

मन्त्र प्रयोग—

इस बुध मंत्र का जप किसी ज्येष्ठा नक्षत्रगत बुधवार से प्रारम्भ करके नित्य ग्यारह माला जप करने से चक्कर आने, जी मिचलाने अथवा उल्टी या मिचली आने की शिकायत कम हो जाती है— **मन्त्र— ॐ ऐं श्रीं श्रीं बुधाय नमः।**

यंत्र साधना—

चक्कर आना, उल्टी अथवा जी मिचलाना, सम्बन्धी रोग से मुक्ति पाने के लिए बुध

यन्त्र की साधना पूजन व दर्शन करना चाहिए । बुध यन्त्र का उल्लेख पीछे के पृष्ठों में आ चुका है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

चौदहमुखी रुद्राक्ष फल को पानी में डुबोकर दस मिनट पड़ा रहने दें । अब इस पानी को रोगी को पिलायें, कुछ ही देर में जी मिचलाना व चक्कर आना बन्द हो जायेगा ।

रत्न प्रयोग—

साधारणतया चक्कर आने, उल्टी अथवा जी मिचलाने सम्बन्धी रोगों से मुक्ति पाने के लिए सगपन्ना रत्न चाँदी की अंगूठी में मढ़ाकर दाहिनी कनिष्ठा में धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी रत्नविद् ज्योतिषी से परामर्श करें ।

बुध ग्रह तथा उससे उत्पन्न होने वाले रोगों का उपचार— सूर्य, चन्द्र तथा मंगल की भाँति बुध ग्रह का भी शुभ तथा अशुभ प्रभाव मानव पर पड़ता है । शुभ प्रभाव से जहाँ मानव विद्याभ्यासी, व्यवसायी तथा बौद्धिक चातुर्य से समाज तथा राष्ट्र में यश लाभ तथा धन अर्जित करता है, वहीं अशुभ प्रभाव से उसे आलस्य, आर्थिक अभाव तथा अपयश का सामना करना पड़ता है । प्राचीन काल से ही ग्रहों के दुष्प्रभावों को नष्ट करने के लिए ज्योतिषीय परामर्श शास्त्रों पुराणों में उल्लिखित परामर्श पर दिया जाता रहा है । बुध ग्रह के अशुभ प्रभाव तथा अरिष्ट को समाप्त करने के लिए पन्ना रत्न धारण करना सर्वश्रेष्ठ बताया गया है ।

बुध ग्रह का रत्न— बुध ग्रह के प्रतिकूल प्रभाव को समाप्त करने के लिए ज्योतिषी परामर्श के रूप में पन्ना रत्न घारण करना बताया गया है । जन्मांक चक्र में बुध नीच राशिस्थ, अथवा क्षीण अथवा शत्रु क्षेत्री हो तो जातक पर अशुभ प्रभाव डालता है । उपरोक्त किसी भी दशा में बुध ग्रह के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए ज्योतिषीय परामर्श में पन्ना रत्न धारण करना सर्वोत्कृष्ट बताया गया है ।

पन्ना रत्न परिचय— पन्ना रत्न हरे रंग का होता है तथा बेरिल नामक वर्ग के अन्तर्गत आता है । बेरिल एक प्राचीन ग्रीक शब्द है— जो कि प्राचीन काल में समस्त हरे रंग के पत्थरों के लिए प्रयोग किया जाता था । आधुनिक युग में वैज्ञानिकों तथा रत्न-विशेषज्ञों ने इस नाम का एक वर्ग ही बना दिया है जिसमें पन्ने के अलावा वे अन्य रत्न भी माने जाते हैं जो कि हरे रंग के होते हैं ।

पन्ना को अंग्रेजी में (Emrald) कहते हैं । संस्कृत में मरकत, पाचि, गरूत्मत, हरित्मणि, गरुडांकित, गरुड़ोर्गर्ण, सोपर्णि तथा अशयगर्भ कहते हैं । हिन्दी-पंजाबी में यह पन्ना नाम से प्रसिद्ध है । उर्दू फारसी में जमरूद के नाम से जाना जाता है ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— वैज्ञानिक दृष्टिकोंण से देखने पर पन्ना निम्नलिखित रासायनिक संगठन का यौगिक है। इसमें क्रोमियम आक्साइड 0.30 प्रति सिलिका 68.5 प्रतिशत आयरन आक्साइड 10 प्रतिशत ग्लूसिना 12.5 प्र. श., चूना 0.25 प्र. श., और एल्युमिना 15.75 प्र. श. रहता है। इसके अतिरिक्त सोडियम, रूबीडियम, पोटेशियम, लीथियम व कैल्सियम जैसे कुछ क्षारीय पदार्थ भी पन्ना में मिले रहते है। प्रख्यात शोधकर्ता व वैज्ञानिक वोहलर (wohler) ने अपने अनुसंधान व खोज के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला था कि पन्ने का हरा रंग इसमें मिले क्रोमियम आक्साइड के कारण होता है।

खानों में इसके रवे (crystal) षटभुजीय आकृति में पाये जाते हैं। रासयनिक तौर पर यह अल्यूनियम तथा बेरियम का सिलिकेट है तथा इसमें 1-2 प्रतिशत जल भी होता है। पन्ने का रासायनिक सूत्र Be_3Al_2 $(SiO_2)13$ होता है। पन्ने में निम्न भौतिक गुण होते है। कठोरता 7.75 आपेक्षिक घनत्व -2.69 से 2.80, वर्तनांक-1.57-1.58, नियमित षटभुजीय आकृति अपकिरणन -0.014 (यह अधिक नहीं होता)। द्विवर्णित-हरा और नीला सा हरा। सुन्दर रंग के पन्नों में इसकी द्विवर्णिता साफ दिखाई देती है। यह पारदर्शक या पारभाषिक होता है।

वोहलर, ग्रेवाइल जैसे वैज्ञानिकों ने अपने नवीनतम शोध व अनुसंधान के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला है कि यदि पन्ने को गरम किया जाय तो उसका पानी तो उड़ जाता है। परन्तु हरे रंग पर तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ता। केवल वे ही पन्ने जो कि सुन्दर तथा गहरे तथा हरे या दूब जैसे हरे रंग के होते हैं— व्यवसायिक दृष्टिकोंण से बेश-कीमती होते हैं तथा ऊँचा मूल्य प्राप्त करते हैं।

पन्ना रत्न तथा उसकी उत्पत्ति— रत्न विशेषज्ञों के अनुसार पन्ना बुध ग्रह का रत्न माना गया है। रत्नों में उत्तम श्रेणी के पन्नों का अपना एक विशिष्ट स्थान है। अत्यन्त उत्कृष्टि कोटि का पन्ना रत्न हीरा तथा माणिक्य से भी अधिक मूल्यवान होता है। पन्ना कई रंगों का होता है। यथा— दूब के समान हरे, सुरमई, हरी आभा तथा पीलापन लिए हुए हरा, किन्तु सबसे सुन्दर एवं उत्तम कोटि का पन्ना दूब जैसे हरे रंग बाला माना जाता है। पन्ने के रंगों में रंगों में समरूपता कभी नहीं पायी जाती। पन्नों में स्वच्छ पारदर्शकता बहुत कम पायी जाती है। दूसरे रत्नों की तुलना में पन्ना रत्न बहुत कम संख्या में अच्छे किस्म का पाया जाता है। इसमें अधिकता ऐसे मणियों की होती है जो वादली अथवा गुम दोषों से युक्त होते हैं। पन्नों की सबसे बड़ी कमी उनमें पाये जाने वाली किसी भी तरह दूर न हो सकने वाले चीरों का होना है।

संसार के प्रमुख पन्ना उत्पादक देशों में कोलम्बिया, सोवियत संघ, मिस्र, आस्ट्रेलिया,

दक्षिणी अफ्रीका, ब्राजील, रेडोसिया तथा आस्ट्रीया का नाम उल्लेखनीय है । भारत में पन्ने म. प्र., राजस्थान में मिलते हैं । इस समय भारत में केवल नौ खाने हैं— जहाँ पन्नों का खनन किया जाता है । भारतीय पन्नों में राजगढ़ के पन्ने उत्तम श्रेणी के माने जाते हैं । संसार में उत्तम प्रकार के पन्ने कोलम्बिया तथा साइबेरिया में पाए जाते हैं । वहाँ ये उत्कृष्ट कोटि के पन्ने अभ्रक शिष्टों में पाये जाते हैं । कोलम्बिया का गहरे हरे रंग का पन्ना बहुत प्रसिद्ध एवं ऊँचे मूल्य में बिकता है ।

पन्ना रत्न की उत्पत्ति ग्रेनाइटिक चट्टानों अथवा पेग्मेटिक डायट तथा माइका शिष्ट में टिन औरर्स के रूप में होती है । आजकल सर्वश्रेष्ठ पन्ने कोलम्बिया की खानों से पाये जाते है । एक आश्चर्यजनक बात यह है कि कोलम्बिया की खानों से निकले पन्ने खान से निकलते समय स्वच्छ और पारदर्शक होते हैं, परन्तु हवा लगते ही दोषयुक्त हो जाते हैं तथा उनमें दरारें पड़ जाती है या फिर वे चटक जाते हैं । खनिज अवस्था में बाहर निकलते समय पन्ना काफी नरम होता है, किन्तु जैसे-जैसे इसमें हवा लगती जाती है, उसमें कठोरता आ जाती है । रत्न श्रेणी का उत्तम पन्ना बोगाडा के उत्तर पश्चिम में 65 मील दूर म्यूजो नामक स्थान में मिलता है ।

पन्ना रत्न तथा उसकी पहचान— रत्नों में पन्ना रत्न का अपना एक विशिष्ट स्थान है । इसका मूल्य हीरा, माणिक्य तथा नीलम से भी अधिक हो जाता है यदि यह उत्तम श्रेणी का तथा त्रुटिहीन हो । पन्ने के इसी विशिष्टता तथा बहुमूल्यवान होने के कारण बाजार में नकली काँच के पन्ने बिकने लगे हैं । पन्ने में जो हरा रंग पाया जाता है, उसके सम्बन्ध में वैज्ञानिकों का यह निष्कर्ष है कि पन्ने में 0.186 प्रतिशत क्रोमिक आक्साइड विद्यमान होने के कारण इसका रंग हरा दिखाई पड़ता है । अतः काँच में क्रोमियम आक्साइड की इतनी ही मात्रा मिलाकर नकली पन्ने का निर्माण किया जाने लगा । इस तरह छल, प्रवंचना तथा ठगी के द्वारा मनमाने तरीके से पन्ने के खरीददारों को लूटा जाने लगा । अतः बाद में कई वैज्ञानिक शोध व अनुसंधान के उपरान्त निम्न कसौटी के द्वारा असली पन्ने रत्न की पहचान की जाने लगी ।

(1) पन्ना परीक्षक— टार्च द्वारा यदि पन्नों की परीक्षा की जाए तो पन्ने पर टार्च का फोकस डालते ही पन्ना लाल रंग का दिखने लगता है । यदि पन्ना नकली हुआ तो पन्ने का रंग परिवर्तन नहीं होता अर्थात हरा ही बना रहता है ।

(2) यदि पन्ने को चेचस फिल्टर (एक प्रकार का आई-ग्लास) से देखा जाये तो असली पन्ना होने की अवस्था में पन्ना गुलाबी रंग का नजर आने लगता है । जबकि कृत्रिम पन्ने का रंग अपरिवर्तित रहता है । अर्थात वह हरे रंग का ही दिखाई देता है ।

(3) कृत्रिम पन्ने को यदि लकड़ी पर रगड़ा जाता है तो उसकी चमक बढ़ जाती है । जबकि असली पन्ने में ऐसा नहीं होता ।

(4) इसी प्रकार यदि पन्ने को हल्दी के साथ पत्थर पर रगड़ा जाय तो असली पन्ना होने की अवस्था में हल्दी के रंग में कोई परिवर्त्तन नहीं होता है । जबकि कृत्रिम पन्ना होने पर हल्दी का रंग लाल हो जाता है ।

(5) असली पन्ने की सतह पर पानी की बूँद फैलती नहीं, जबकि कृत्रिम पन्ने पर पानी की बूँद फैल जाती है । कृत्रिम पन्ने की टूट पर वमकीली धारियाँ होती हैं तथा सरलतापूर्वक खरोंचे आ जाती हैं । जबकि असली पन्ने में ऐसा नहीं होता ।

(6) नकली अथवा संशिष्ट पन्नों में लघुतरंग अल्ट्रावायलेट किरणें पारदर्शक होती है जबकि असली प्राकृतिक पन्ना में अपारदर्शक होती है ।

(7) सफेद वस्त्र पर पन्ना थोड़ी ऊँचाई पर रखें तो असली पन्ना होने की अवस्था में वस्त्र हरे रंग का दिखाई देने लगता है, जबकि कृत्रिम अथव नकली पन्ने में ऐसा नहीं होता ।

(8) असली पन्ना को पानी के गिलास में डालनें पर पानी में से हरी किरणें निकलती हुई दिखलाई पड़ती हैं, जबकि नकली पन्ना में ऐसी हरी किरणें निकलती हुई नहीं दिखलाई पड़ती ।

(9) असली तथा प्राकृतिक पन्ना औसत वजन से हल्का प्रतीत होता है, नकली पन्ने में ऐसा नहीं महसूस होता ।

श्रेष्ठ कोटि का पन्ना रत्न तथा उसके गुण— सभी पन्ना रत्न श्रेष्ठ कोटि के नहीं होते । एक त्रुटिहीन पन्ना बहुत मूल्यवान होता है । एक श्रेष्ठ पन्ने में निम्न विशेषतायें पायी जाती हैं ।

(1) यह दूब जैसे हरे रंग का हेता है तथा यह देखने में साफ व स्वच्छ दिखाई पड़ता है ।

(2) इसमें धब्बे, बादल, रेखायें व धुआँ बहुत कम मात्रा में होता है । बल्कि यह पारदर्शक, उज्जवल किरणों वाला होता है ।

(3) यह हाथ में लेने पर वजनी प्रतीत होता है ।

(4) यह मखमली द्युति वाला, दड़कदार तथा लोचनदार होता है ।

(5) यह जाल, धुन्ध, रक्त-बिन्दु,गड्ढ़ा, वक्र, आभाहीन तथा ऊबड़-खाबड़ आकृति का नहीं होता ।

(6) इसके कोण उत्तम होते हैं तथा अन्य पत्थरों की अपेक्षा कोमल होता है।

दोषपूर्ण पन्ना रत्न तथा उसका प्रभाव— उत्तम एवं श्रेष्ठ श्रेणी का पन्ना रत्न जहाँ

बुध ग्रह के दुष्प्रभाव तथा अनिष्ट को समाप्त करता है, वहीं निम्न श्रेणी तथा दोषयुक्त पन्ना रत्न बुध ग्रह के अशुभ प्रभाव को बढ़ा देता है। जिसके फलस्वरूप जातक को अनेक प्रकार के रोग तथा मानसिक संत्रास मे पीड़ित होना पड़ता है। पन्ना रत्न में मुख्य रूप में निम्न बारह प्रकार के दोष पाये जाते है। अतः जातक पन्ना रत्न धारण करते समय स्वयं उन दोषों को परख लें अथवा किसी रत्न-विशेषज्ञ की राय जान लें।

(1) जाल— पन्ना रत्न में यह दोष विशेष रूप से दिखलाई पड़ता है। यदि जातक जाल सा गुँथे हूआ पन्ना रत्न की अंगूठी धारण करता है तो उसके स्वास्थ्य में गिरावट आती है। जाल युक्त पन्ना रत्न स्वास्थ्य के लिए अशुभ माना गया है। अतः ऐसा रत्न कभी भूल से भी धारण न करें।

(2) धब्बा— जिस पन्ने में काला सा धब्बा या छोटे-छोटे धब्बे दिखाई दें उसे भूलकर भी धारण नहीं करना चाहिए। इस दोषयुक्त पन्ना अशुभ माना गया है। उपरोक्त दोष युक्त पन्ना धारण करने पर जीवन साथी की हानि होती है।

(3) मधुक— जिस पन्ने का रंग मधु के समान हो तो उस मधुक दोषयुक्त पन्ना कहा जाता है। इस प्रकार के दोषयुक्त पन्ना धारण करने पर जातक के माता-पिता को कष्ट होता है।

(4) गंजा— जिस पन्ने में की चमक न हो अथवा उलटने पर सुन्दर न दिखाई दे तो ऐसा पन्ना गंजा दोष से युक्त माना जाता है। इस प्रकार का दोषयुक्त पन्ना रत्न धारण करने पर धन की हानि होती है। अतः ऐसे अशुभ पन्ना रत्नों को भूलकर भी धारण न करें चाहे वह अल्पमोली क्यों न हो।

(5) गड्ढा— जिस पन्ने में गड्ढा दिखाई पड़े, वह अशुभ माना जाता है। इस प्रकार के दोषयुक्त पन्ना रत्न धारण करने पर जातक को सदैव शस्त्र-भय बना रहता है।

(6) रक्त बिन्दु— जिस पन्ने में लाल बिन्दु दिखलाई पड़े, वह रक्त बिन्दु दोष से युक्त माना जाता है। इस प्रकार के पन्ने को धारण करना ज्योतिषीय परामर्श में वर्जित माना गया है।

(7) धुन्ध— जिस पन्ने में डोरे के समान छोटी-छोटी टूटी हुई धारियाँ दिखाई दें वह धुन्ध दोषयुक्त माना जाता है। ऐसा दोष युक्त पन्ना अशुभ होता है तथा इसके धारण करने पर वंश का नाश होता है।

(8) स्वर्णमुखी— जिस पन्ने का रंग सोने के समान हो तो ऐसा पन्ना स्वर्णमुखी दोषयुक्त तथा अशुभ माना जाता है। इस प्रकार के दोषयुक्त पन्ने के धारण करने पर जातक के सभी प्रकार के कष्ट बढ़ते हैं।

(9) चीरित— जिस पन्ने में एक सीधी रेखा अथवा कई पतली-पतली रेखायें दिखाई दें तो वह पन्ना चीरित दोषयुक्त माना जाता है । इस प्रकार के दोषयुक्त पन्ने को धारण करना अशुभ माना जाता है । अगर जातक ऐसा दोषयुक्त पन्ना रत्न धारण करता है तो लक्ष्मी का नाश होता है ।

(10) रूक्ष— रूक्ष दोषयुक्त पन्ना रत्न धारण करने पर पशु धन की हानि होती है । रूक्ष पन्ना देखने में खुरदरा तथा ऊपर उठा हुआ और फटा-फटा सा नजर आता है । ऐसा पन्ना अशुभ माना जाता है ।

(11) सन्नी— सन्नी दोषयुक्त पन्ने में अनेक पीली धारियाँ दिखाई पड़ती हैं । इस प्रकार के दोषयुक्त पन्ने को धारण करने पर जातक की सन्तान को कष्ट होता है ।

(12) दुरंगा पन्ना— दुरंगा पन्ना वह होता है जिसमें दो रंग दिखलाई पड़ते हों । ऐसा पन्ना रत्न धारण करना ज्योतिषीय परामर्श तथा रत्न विशेषज्ञों ने अशुभ माना है । इस प्रकार के दोष युक्त पन्ना रत्न धारण करने पर जातक के बल, बुद्धि एवं वीर्य का नाश होता है ।

पन्ना रत्न तथा उससे जुड़े हुए कुछ ऐतिहासिक तथ्य— ड्यूक आफ डिवोनशायर के पास एक उत्कृष्ट कोटि का पन्ना था जो कि आकार में 1350 कैरट का है । इस पन्ने को कोलम्बिया की म्यूजो खान से निकाला गया था । यह उत्तम रंग का पारदर्शक तथा काफी हद तक त्रुटिहीन पन्ना है । विएना के खजाने में भी 2205 कैरट का पन्ना था ।

ब्रिटिश संग्रहालय के खनिज विभाग में एक निर्दोष पन्ना सोने के कंगन में जड़ा हुआ रखा है । संसार का सबसे बड़ा पन्ना, यू. एस. एस. आर. की चौंगकोकोये खान से निकाला था । इसे प्राप्त करने वाले मजदूर का नाम कर्ससिव शखोव था । यह पन्ना 157.15 इंच व्यास का है ।

पहली शताब्दी के प्रसिद्ध रोमन लेखक प्लीनी ने एक पुस्तक लिखी थी जिसमें एक विस्तृत अध्याय रत्नों के ऊपर भी था । लेखक ने अपनी पुस्तक में रत्नों के विषय में विस्तृत रूप से विवेचन किया था । पन्ना रत्न के संदर्भ में उसने एक स्थान पर लिखा था कि साइप्रेस द्वीप में एक राजा की मूर्ति के दोनों तरफ दो संगमरमर के विशाल शेर स्थापित किए गए थे । उन शेरों की आँखों में पन्ना रत्न लगा दिए गए थे । लेखक ने आगे लिखा कि उन शेरों की आँखें गर्मियों में इतनी तीव्रता से चमकती थी कि समुद्र के किनारे मछलियाँ नहीं आती थी जिससे मछुआरों को बड़ी परेशानी होती थी । अन्त में मजबूरी में आकर मछेरों नें शेरों की आँखें बाहर निकाल ली थीं ।

प्राचीन किम्वदन्ती तथा ऐसा विश्वास है कि मानटा घाटी में एक बार शुतुरमुर्ग के

अण्डे के बराबर पन्ना रत्न प्राप्त हुआ था । बाद में वहाँ के निवासियों ने इस एक मन्दिर में रख दिया तथा पन्ने की माँ समझकर इसकी पूजा करने लगे । बाद में कुछ ऐसी प्रथा बन गयी कि दर्शनार्थी इसके दर्शन करते समय अपने साथ छोटे-छोटे पन्ने ले जाते तथा भेंट चढ़ाते । धीरे-धीरे वहां पन्नों का विशाल भण्डार इकट्ठा हो गया इसी प्रकार दक्षिण अमेरिका के कई राज्यों में भी पन्नों को मन्दिरों में भेंट-स्वरूप अर्पित करने की प्रथा थी ।

लेनिनग्राद के संग्रहालय में एक सुन्दर तथा त्रुटिहीन पन्ना रखा हुआ है जो कि छः पौण्ड वजन का है । कहा जाता है कि एक उत्कृष्ट कोटि का पन्ना नेपोलियन की अँगूठी में जड़ा हुआ था । अब यह पन्ना लूब्र (फ्रांस) के संग्रहालय की शोभा बढ़ा रहा है ।

भारत में प्यालों के पन्ने तथा जगत सेठ के पन्ने इन दो नामों से प्रसिद्ध पन्ने मिलते हैं । इनके सम्बन्ध में निम्न बातें सुनाई पड़ती है ।

प्यालों के पन्ने— यह पन्ना रत्न प्याला की आकृति का बना हुआ था । किसी जमाने में भारत के किसी महाराजा के पास पन्ने का एक गिलास था जिसकी कीमत उस समय उसके राज्य से भी अधिक आँकी गई थी । बाद में बुरे समय पर महाराजा ने इसे टुकड़ों में करके बेच दिया था क्योंकि कोई भी ऐसा खरीददार नहीं आया जो कि इसका मूल्य दे पाता । एक अन्य किम्बदन्ती है कि मुगल बादशाह हुमायुँ के पास पन्ने के कुछ प्याले थे । एक बार किस तरह वह प्याला गिरकर टूट गया जिसके टुकड़े आज बाजार में उपलब्ध हैं ।

जगत सेठ का पन्ना— मुर्शिदावाद के सेठ जगत को एक बार किसी विदेशी नाविक ने काफी मात्रा में पन्ने की खरड़ लाकर दी थी । वह मालू बाद में सेठ ने बाजार में अच्छे मूल्यों पर बेच दी । उन मालू पन्नों से बनाए हुए पन्ने आज तक बाजार में उपलब्ध हो जाते है । उपरोक्त दोनों प्रकार के पन्ने उत्कृष्ट कोटी के पन्ने माने जाते हैं ।

रूस के जार के पास एक उत्तम कोटि का पन्ना था, जो कि लगभग 25 सेन्टीमीटर लम्बा तथा बारह सेन्टीमीटर व्यास का था । इसी प्रकार कहा जाता है । कि रोमन राज्य का प्रसिद्ध निष्ठुर सम्राट नीरो अच्छी नींद प्राप्त करने के लिए अपने बिस्तर में विभिन्न रत्न, उपरत्न व पत्थर जड़वाया करता था ।

अकबर के पास एक पन्ना था जिसका वजन 17.75 टाँक और तीन सुर्ख था । औरंगजेब के खजाने से भी एक बेशकीमती 30 रत्ती का पन्ना रत्न था ।

बुध रत्न पन्ना और उसका उपरत्न— रत्न-विशेषज्ञों तथा वैज्ञानिकों ने अथक शोध व अनुसंधान के पश्चात् पन्ना रत्न के बदल को खोज निकाला है । ये उपरत्न रत्नों की तुलना में बड़े सस्ते होते हैं तथा लाभ की दृष्टिकोण से रत्नों से कम महत्त्वपूर्ण व प्रभावशाली

नहीं होते । सभी व्यक्तियों के लिए पन्ना रत्न धारण करना संभव नहीं, क्योंकि ये सभी बेशकीमती, (बहुमूल्य) तथा दुर्लभ होते हैं । पन्ना के उपरत्न के रूप में निम्न बदल को धारण किया जाता है ।

(1) एक्वामेरिन— इसे बेरूज के नाम से भी जाना जाता है । यह देखने में पारदर्शक समुद्री नीला या सफेद और समुद्री हरा होता है । एक्वामेरीन का प्रभाव तथा महत्त्व पन्ना से कम नहीं होता । यह अल्पमोली होने के कारण सर्वप्रिय है । यह दुनिया के कई देशों में पाया जाता है । भारत, श्री लंका, ब्राजील, साइबेरिया, कैलिफोर्निया, यूराल पर्वत तथा अन्य कई देशों में भी यह पाया जाता है ।

(2) मरगज— इसे फारसी में संगेसम तथा चीनी भाषा में यू कहते हैं । चीन में इसे अति मूल्यवान तथा पवित्र रत्न माना जाता है । ऐसा विश्वास तथा किंवदन्ती है कि इस रत्न को धारण कर लेने पर स्तन से दूध का प्रवाह बढ़ जाता है । अतः पुत्रवान मातायें इस रत्न को बहुत श्रद्धा एवं विश्वास के साथ धारण करती हैं । यह चिकना होने के साथ-साथ प्रायः पूरा का पूरा सफेद होता है । यह कई रंगों में भी मिलता है । मरगज सर्वाधिक बर्मा में पाया जाता है ।

(3) सगपन्ना— यह मोटा होता है । इसके किनारे गहरे रंग के होते हैं । यह कोमल, हरे रंग का, रूखा तथा वजन में हल्का होता है ।

(4) पीतपनी— यह चिकना हल्का हरा होता है । इस पर पीले या लाल रंग के छींटे लगे हुए होते हैं । यह अल्पमोती रत्न होता है ।

पन्ना रत्न और ज्योतिषीय परामर्श— पन्ना रत्न बुध ग्रह के अनिष्ट प्रभाव को नष्ट करता है । बैंक-वाणिज्य सम्बन्धी कार्य, सेल्स व इन्कमटैक्स के अधिकारी, बैंकिंग सम्बन्धी कार्य, गणित से आजीविका कमाने वाले, वकील, प्रोफेसर, ज्योतिषी, लेखन सम्बन्धी व्यवसाय से जुड़े व्यक्तियों के लिए पन्ना रत्न बड़ा चमत्कारी तथा लाभप्रद होता है । जिन जातकों का जन्म समय 21 अप्रैल से 20 मई के मध्य पड़ता है, उनके लिए पन्ना रत्न विशेष लाभकारी सिद्ध होता है । ज्योतिषीय परामर्श में पन्ना रत्न के विषय में कहा गया है कि विद्यार्थी वर्ग पन्ना रत्न धारण करें तो उनकी बुद्धि तीक्ष्ण होती एवं सरस्वती की कृपा बनी रहती है । ऐसा कहा जाता है कि जिस घर में यह रत्न रहता है वहाँ अन्न-धन की वृद्धि, भूत प्रेत बाधा शान्त, सर्प-भय का नाश तथा वंश-वृद्धि होती है । पन्ना रत्न धारण किए हुए व्यक्ति पर जादू टोने का कोई असर नहीं होता ।

पन्ना रत्न कम से कम तीन रत्ती का अवश्य होना चाहिए । इससे कम वजन का पन्ना रत्न लाभ नहीं पहुँचाता है । पन्ना रत्न को सोना अथवा काँसे की अँगूठी में जड़वाना

चाहिए । एक बार अँगूठी में जड़वाने की तिथि से तीन वर्ष तक पन्ना प्रभाव-युक्त रहता है, तत्पश्चात् वह निस्तेज हो जाता है । अतः इसके उपरान्त बुध प्रधान व्यक्तियों को दूसरा पन्ना रत्न अँगूठी में जड़वाकर धारण करना चाहिए ।

मुस्लिम मत से बुध ग्रह के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए अतारू धारण करना चाहिए । अँगूठी धारण करने से पूर्व अपने-अपने धर्मों के अनुसार पूजा पाठ द्वारा इसकी शुद्धि कर लेनी चाहिए ।

लग्न के आधार पर पन्ना रत्न धारण करने का ज्योतिषीय परामर्श—

सभी लग्न वालों को पन्ना रत्न शुभ फलदायी नहीं रहता तथा रत्न के शुभ प्रभाव भी सभी लग्नों में समान रूप से नहीं होते । अतः पन्ना रत्न धारण करने से पूर्व सर्वप्रथम इस तथ्य से आश्वस्त हो लेना चाहिए कि जातक की लग्न कौन सी है तथा उसका प्रभाव जातक पर क्या पड़ रहा है ।

मेष लग्न— मेष लग्न वाले जातक को पन्ना रत्न भूलकर भी धारण नहीं करना चाहिए । मेष लग्न में बुध ग्रह तृतीय तथा षष्ठ भाव का स्वामी होता है । ये दोनों ही भाव ज्योतिषीय दृष्टिकोण से अनिष्टकारक समझे जाते हैं । अतः अगर इस लग्न वाले जातक पन्ना रत्न धारण कर लेंगे तो वह बुध ग्रह के अनिष्टकारी प्रभाव को बढ़ा देगा । इसलिए पन्ना मेष लग्न वालों को रत्न धारण करना अशुभ माना गया है ।

वृष लग्न— वृष लग्न वाले जातक को पन्ना रत्न बहुत शुभ तथा कल्याणकारी माना गया है । यदि इस लग्न वाले जातक बुध की महादशा अथवा अन्तरदशा में पन्ना रत्न धारण करें तो जातक को धन, ऐश्वर्य सुख, प्रतिष्ठा तथा सन्तान-सुख की प्राप्ति होगी । वृष लग्न में बुध द्वितीय एवं पंचम त्रिकोण का स्वामी होकर एक योगकारक ग्रह बन जाता है । द्वितीय भाव परिवार कुटुम्ब, धन का माना जाता है तथा पंचम भाव विद्या एवं पुत्र-सुख का द्योतक है । अतः इस लग्न वाले जातक को पन्ना सदैव लाभकारी एवं भाग्योन्नति दायक सिद्ध होगा ।

मिथुन लग्न— मिथुन लग्न वालों के लिए भी पन्ना रत्न धारण करना ज्योतिषीय परामर्श में शुभ माना गया है । बुध की महादशा अथवा अन्तरदशा में तो पन्ना रत्न की अँगूठी बनवाकर विधि-विधान से शोधन व पूजन करके धारण करने से विशेष लाभ होता है । मिथुन लग्न में बुध लग्न और चतुर्थ भाव का स्वामी माना गया है । लग्न अर्थात् प्रथम भाव से शारीरिक सुख के बारे में विचार किया जाता है । इसी प्रकार चतुर्थ भाव मातृसुख, मानसिक शांति तथा वाहन-सुख का द्योतक होता है । अतः यदि मिथुन लग्न वाले जातक पन्ना रत्न धारण करते हैं तो उन्हें सभी प्रकार के उपरोक्त सुख प्राप्त होते हैं ।

कर्क लग्न— ज्योतिषीय परामर्श में कर्क लग्न वाले जातक को पन्ना रत्न धारण करना अशुभ तथा अमंगलकारी माना गया है । कर्क लग्न में बुध तृतीय एवं द्वादश भाव का स्वामी होता है । उपरोक्त दोनों ही भाव अरिष्ट माने गए हैं । अतः कर्क लग्न वाले जातक को पन्ना भूलकर भी धारण नहीं करना चाहिए, क्योंकि इसके धारण करने से जातक को अशुभ फल ही प्राप्त होगा ।

सिंह लग्न— सिंह लग्न वाले जातक को पन्ना रत्न धारण करना ज्योतिषीय परामर्श में शुभ तथा कल्याणकारी माना गया है । सिंह लग्न में बुध द्वितीय एवं एकादश भाव का स्वामी होता है । अतः यदि बुध की महादशा अथवा अन्तरदशा में जातक पन्ना रत्न की अँगूठी तीन रत्ती से अधिक वजन की धारण करें तो उन्हें विशेष लाभकारी सिद्ध होगा । जातक को जीवन में आर्थिक लाभ, व्यवसाय में सफलता, सन्तान-सुख तथा प्रतिष्ठा प्राप्त होगी ।

कन्या लग्न— कन्या लग्न वाले जातक को पन्ना रत्न धारण करना ज्योतिषीय परामर्श तथा रत्न-विशेषज्ञों ने लाभकारी तथा भाग्योन्नतिकारी माना है । कन्या लग्न में बुध लग्न तथा दशम भाव का स्वामी होता है । लग्न से आयु, शारीरिक सुख तथा दशम भाव से कर्म, व्यवसाय राज्य कृपा, प्रतिष्ठा, पिता-सुख आदि का विचार किया जाता है । अतः बुध ग्रह योगकारक ग्रह बन जाता है । इसलिए पन्ना रत्न धारण करना इस लग्न वाले जातकों के लिए सदैव चमत्कारी रूप से लाभकारी सिद्ध होगा ।

तुला लग्न— तुला लग्न वाले जातकों के लिए पन्ना रत्न धारण करना शुभ माना जाता है । तुला लग्न में बुध द्वादश भाव तथा नवम त्रिकोण का स्वामी होता है । नवम त्रिकोण का स्वामी होने के कारण बुध ग्रह शुभ प्रभाव देता है । नवम भाव को भाग्य भाव भी कहते हैं । अतः यदि इस लग्न वाले जातक बुध की महादशा अथवा अन्तरदशा में पन्ना रत्न धारण करें तो उन्हें विशेष फल प्राप्त होता है । कुछ ज्योतिषियों की ऐसी मान्यता है कि तुला लग्न वाले जातक को पन्ना रत्न हीरा के साथ धारण करना चाहिए । क्योंकि बुध शुक्र में परम मित्रता है तथा तुला लग्न में शुक्र लग्नेश होकर शुभ प्रभावकारी बन जाता है ।

वृश्चिक लग्न— वृश्चिक लग्न वाले जातक को पन्ना रत्न धारण करना ज्योतिषीय परामर्श में सदैव लाभकारी नहीं माना जाता है । केवल कुछ विशेष परिस्थितियों में ही पन्ना रत्न लाभकारी माना गया है । वृश्चिक लग्न में लग्नेश मंगल तथा बुध ग्रह परस्पर शत्रुभाव रखते हैं । बुध अष्टम भाव का स्वामी होने के कारण अनिष्टकारी माना जाता है परन्तु एकादश भाव भी स्वामी होने पर शुभ फल देने लगता है । अतः वृश्चिक लग्न वाले जातक

किसी योग्य ज्योतिर्विद की सलाह से ही पन्ना रत्न धारण करें अन्यथा रत्न-धारण नुकसान कर सकता है ।

धनु लग्न— धनु लग्न वाले जातक को पन्ना रत्न धारण करते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए । धनु लग्न में बुध सप्तम तथा दशम भाव का स्वामी होता है जिसके फलस्वरूप केन्द्राधिपति दोष से दूषित होता है । अतः यदि इस लग्न के जातक पन्ना रत्न धारण करना चाहे तो सर्वप्रथम किसी ज्योतिर्विद की सलाह ले लें । सामान्य नियम यही है कि यदि बुध किसी निकृष्ट भाव में स्थित है तो पन्ना रत्न धारण नहीं करना चाहिए ।

मकर लग्न— मकर लग्न वाले जातक को पन्ना रत्न धारण करना ज्योतिषीय परामर्श तथा रत्न-विशेषज्ञों ने शुभ माना है । मकर लग्न में बुध षष्ठ और नवम त्रिकोण का स्वामी होता है । कुछ ज्योर्तिविद मकर लग्न के जातक को नीलम के साथ पन्ना रत्न धारण करना लाभकारी मानते हैं । मकर लग्न के लग्नेश शनि एवं बुध ग्रह में परस्पर मैत्री है । अतः बुध की महादशा अथवा अन्तरदशा में पन्ना रत्न धारण करना भाग्योदय-कारक, समृद्धि कारक बनकर यश प्रदान करता है ।

कुम्भ लग्न— कुम्भ लग्न वालों के लिए भी मकर लग्न वालों की भाँति नीलम के साथ धारण करना ज्योतिषीय परामर्श में शुभ फलदायी माना गया है । कुम्भ लग्न में बुध पंचम त्रिकोण तथा अष्टम भाव का स्वामी माना गया है । कुम्भ लग्न वाले जातक यदि बुध की महादशा अथवा अन्तरदशा में पन्ना रत्न नीलम के साथ धारण करें तो उन्हें शारीरिक सुख, आर्थिक लाभ तथा संतान सुख की प्राप्ति होगी । कुम्भ लग्न वालों के लिए कुछ ज्योर्तिविद हीरा के साथ पन्ना रत्न धारण करना शुभ तथा कल्याणकारी मानते हैं ।

मीन लग्न— मीन लग्न वाले जातक के लिए पन्ना रत्न धारण करना ज्योतिषीय परामर्श में लाभकारी माना गया है । मीन लग्न में बुध चतुर्थ और सप्तम भाव का स्वामी होता है । सप्तम तथा चतुर्थ भाव ज्योतिषीय दृष्टिकोण से केन्द्र भाव माने जाते हैं । इस प्रकार बुध दो केन्द्र भावों का स्वामी होकर केन्द्राधिपति दोष से दूषित हो गया है । अतः मीन लग्न के जातक को पन्ना रत्न धारण करते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए । विना किसी योग्य ज्योतिर्विद की सलाह से पन्ना रत्न धारण करना अनिष्टकारी भी हो सकता है । निष्कर्ष रूप में मीन लग्न वालों के लिए पन्ना रत्न आर्थिक दृष्टि से लाभकारी सिद्ध होता है ।

पन्ना रत्न तथा चिकित्सा में उसका प्रयोग— आयुर्वेद के अनुसार पन्ना रत्न शीतल, अम्ल तथा पित्त को दूर करने वाला, विष नाशक, रुचि कारक ओजवर्द्धक तथा प्रबल बल-

बुद्धिवर्द्धक माना गया है । हृदय की कमजोरी, उदर-शूल, पेट के रोग, अजीर्ण, बवासीर, स्नायु-दुर्बलता, कमजोर दृष्टि और हाई ब्लड प्रेशर में पन्ना-पिष्टि बहुत लाभकारी सिद्ध होती है ।

ज्वर, आधाशीशी, गुर्दा एवं रक्त सम्बन्धी बीमारी में पन्ने की भस्म को शहद के साथ चाटने पर जातक को शीघ्र आराम मिलता है । पन्ना धारण किए व्यक्ति को मिरगी के दौरे नहीं पड़ते तथा गर्भवती महिलाओं को पन्ने की अँगूठी कमर से धारण करने से प्रसव–पीड़ा नहीं होती ।

आयुर्वेद के अनुसार पन्ना रत्न को पाण्डु रोग, दमा, मिचली, अजीर्ण तथा किसी भी प्रकार के घाव में औषधि के रूप में प्रयुक्त किया जाता है । संग्रहणी जैसे खतरनाक रोगों में पन्ना की पिष्टि रामबाण औषधि का कार्य करती है ।
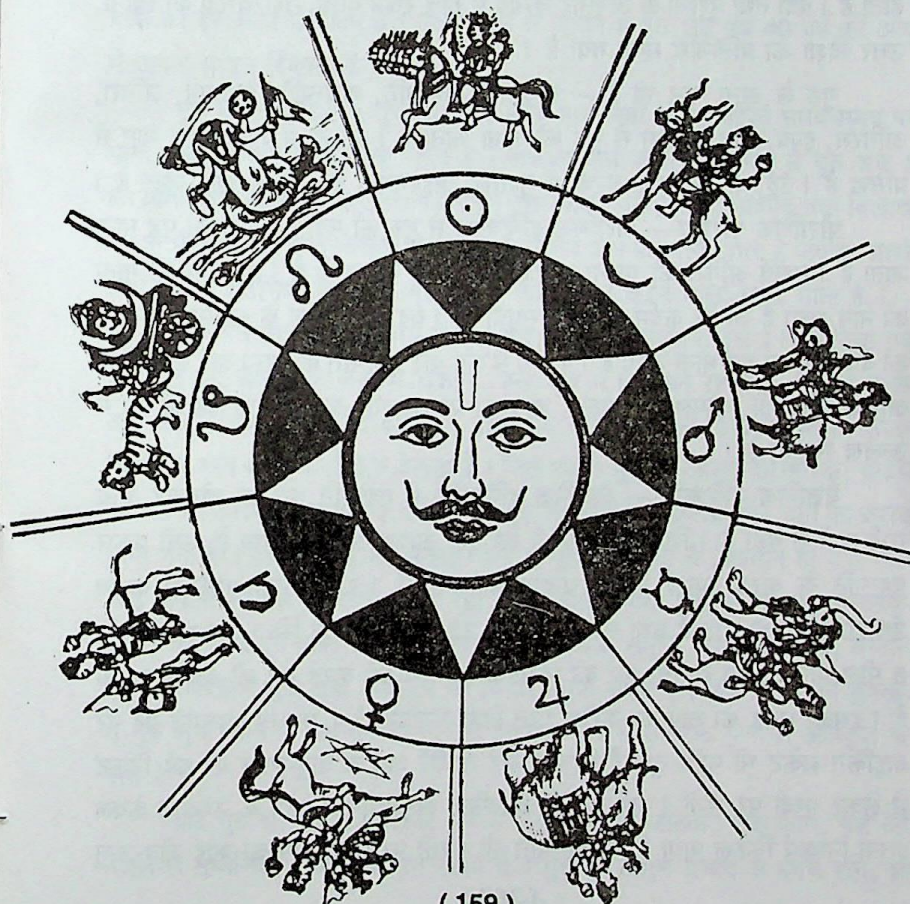
धर्म, न्याय पारलौकिक सुख तथा नीति-नियामक

गुरु ग्रह

परिचय— सूर्य, चन्द्रमा की भाँति वृहस्पति ग्रह भी सौरमण्डल का एक सदस्य है। समस्त ग्रह पिण्डों में सबसे अधिक वजनी और भीमकाय यह पृथ्वी की कक्षा में मंगल के बाद स्थित है। गुरु को कालपुरुष का ज्ञाता माना गया है। गुरु ग्रह को ब्राह्मण जाति, पीत वर्ण, हेमन्त ऋतु का स्वामी, भूरे रंग के नेत्र वाला, गोल आकृति तथा स्थूल स्वरूप वाला माना गया है। गुरु ग्रह को ग्रहमण्डल में मंत्री का पद प्राप्त है। इसका वाहन हाथी होता है। वेदों तथा पुराणों के अनुसार ऋग्वेद में रुचि रखने वाला, मृदु स्वभाव का स्वामी, उत्तर दिशा का प्रतिनिधि माना गया है।

गुरु के अन्य नाम भी हैं— संस्कृत में वृहस्पति, वाचस्पति, देवाचार्य, अंगिरा, अंगिरस, इज्य, जीव के नाम से गुरु को जाना जाता है। अंग्रेजी में ज्युपीटर के नाम से प्रसिद्ध है। उर्दू, फारसी तथा अरबी में मुश्तरी, अइरममन्द के नाम से जाना जाता है।

पौराणिक परिचय— पौराणिक दृष्टिकोण से गुरु को महर्षि अंगिरा का पुत्र माना जाता है। महर्षि अंगिरा की गणना सप्तऋषियों से भी की जाती है। वृहस्पति की माता का नाम श्रद्धा है जो कि कर्दम ऋषि की सुपुत्री थी। वेद और पुराण के अनुसार वृहस्पति को देवताओं का गुरु माना जाता है। पुराणों में कई बार वृहस्पति को अन्य ग्रहों की अपेक्षा अधिक बलशाली, कोमल वृत्ति वाला, ज्ञान का प्रदाता तथा अत्यन्त शुभ ग्रह के रूप में उल्लेख मिलता है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वृहस्पति सूर्य को छोड़कर अन्य सभी ग्रहों से बड़ा है। जिस प्रकार पृथ्वी का एक उपग्रह अर्थात् चन्द्रमा है, उसी प्रकार वृहस्पति के बारह उपग्रह अर्थात् चन्द्रमा माने गये हैं। इसकी दूरी पृथ्वी से करीब 36,70,00,000 मील है तथा सूर्य से यह 48,32,000 मील दूर स्थित है। इसकी गति 8 मील प्रति सैकेण्ड है तथा सूर्य की परिक्रमा करने में इसे बारह वर्ष की अवधि लगती है। इसकी सतह का तापमान करीब 138 डिग्री सेन्टीग्रेड है। अब तो वृहस्पति ग्रह पर वाइकिंग राकेट भी पहुँच चुके हैं जिन्होंने कई तस्वीरें वहाँ के वायुमण्डल की बड़े निकट से लेकर पृथ्वी पर भेजीं। अब तक के वैज्ञानिक अनुसंधान व शोध के उपरान्त केवल इतना निष्कर्ष निकल पाया है कि वृहस्पति की धरती पर प्राणी नाम का कोई जीव-जन्तु

अथवा चिह्न नहीं है । वाइकिंग ने वृहस्पति ग्रह के जो चित्र भेजे हैं उनसे वहाँ पर जलवायु का कोई चिह्न नहीं पाया गया । वैज्ञानिकों के अनुसार वृहस्पति ग्रह पर निरन्तर घनी वायु के बादल छाए रहते हैं तथा अन्य ग्रहों की भाँति यह भी गैस का बुदबुदाता गोला है जिसके आधार पर लावा फूटता रहता है ।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण— ज्योतिषीय मत से गुरु ग्रह को धनु और मीन राशि का स्वामी माना गया है । सूर्य, चन्द्र और मंगल ग्रह गुरु के नैसर्गिक मित्र हैं तथा बुध और शुक्र ग्रह शत्रु हैं । शनि, राहु और केतु के साथ गुरु समभाव रखता है । इसे पंचम भाव का कारक माना गया है । गुरु ग्रह को कर्क राशि के 5 अंश तक उच्चस्थ तथा मकर राशि में 5 अंश तक परम नीचस्थ माना जाता है । इसकी गणना शुभ ग्रहों में की जाती है । ज्योतिष में इस तथ्य के प्रामाणिक उदाहरण मिलते हैं कि अकेला लग्नस्थ गुरु एक लाख दोषों को दूर करने में सक्षम है । गुरु जातक के जीवन में 15, 22 एवं 40 वर्ष की आयु में अपना प्रभाव दिखाता है ।

गुरु ग्रह भी चन्द्र एवं सूर्य की भाँति सदैव मार्गी नहीं होता, अपितु समय-समय पर मार्गी, वक्री अथवा अस्त होता रहता है । अंकशास्त्रीय ज्योतिष के मत से गुरु अंक 3 का प्रतिनिधित्त्व करता है । उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढा, पुर्नवसु, पूर्वाभाद्रपद तथा विशाखा नक्षत्रों में जन्म लेने वाले जातकों के लिए गुरु विशेष शुभ फलदायी होता है जबकि आर्द्रा, स्वाति और शतभिषा नक्षत्रों में यह अशुभ फल प्रदान करने वाला माना जाता है ।

वृहस्पति ग्रह को अंकशास्त्र में सूर्य और चन्द्रमा के उपरान्त दूसरा स्थान दिया गया है । गुरु यह जातक के जन्मांक चक्र में जिस भाव में विद्यमान रहता है, वहाँ से तृतीय तथा दशम भाव को एकपाद दृष्टि से, पंचम एवं नवम भाव को द्विपाद दृष्टि से, सप्तम एवं नवम भाव को पूर्ण दृष्टि से देखता है । जिस प्रकार सूर्य को आत्मा का कारक, चन्द्रमा को मन का कारक माना गया है उसी प्रकार गुरु को शारीरिक पुष्टता और ज्ञान का कारक माना गया है । यदि जातक की जन्मकुण्डली में गुरु शुभ भाव में विद्यमान हो तथा अन्य कोई पापग्रह की उस पर दृष्टि न पड़ रही हो तो जातक विद्या बुद्धि से सम्पन्न, सम्मानपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला होता है । गुरु से धन, ऐश्वर्य, समृद्धि, सम्पत्ति, न्याय, सन्तान, पुत्र, पारलौकिक सुख तथा अध्यात्म का विचार किया जाता है । यदि किसी की कुण्डली में गुरु शुभ स्थान में विद्यमान हो तो उसे निश्चित रूप से उपरोक्त गुणों से अलंकृत कर देता है ।

यदि गुरु की स्थिति प्रतिकूल अथवा दोषपूर्ण है तो जातक, नाक,कान, गले और नजले से सम्बन्धित रोगों से ग्रसित रहता है । गुरु के अशुभ प्रभाव से हृदय रोग, क्षय

रोग, मूर्च्छा, शोथ, कफ विकार तथा चर्बीजनित रोग जातक को प्रभावित करते हैं। मनुष्य के शरीर में कमर से जंघा तक इसका प्रभाव क्षेत्र माना गया है। गुरु सूर्य के सथ सात्त्विक, चन्द्र के साथ राजसी, मंगल के साथ तामसी व्यवहार करता है।

अनेक प्रख्यात ज्योतिर्विदों का मत है कि गुरु काँस्य धातु, दाल, चना, गेहूँ, जौ, घी, पीतवस्त्र तथा मीठे रसीले पदार्थों का अधिपतित्त्व करता है। गुरु ग्रह को स्त्रियों का सौभाग्यवर्द्धक तथा सन्तान सुख का कारक ग्रह भी माना गया है। इसके अतिरिक्त हल्दी, धनिया, प्याज, ऊन तथा मोम आदि का प्रतिनिधि भी गुरु को माना जाता है। यह बुद्धि, विवेक, यश, सम्मान, धन, संतान तथा बड़े भाई का भी प्रतिनिधित्त्व करता है।

बृहस्पति ग्रह : प्रभाव तथा उत्पन्न होने वाले रोग— बृहस्पति ग्रह तथा इसका प्रभाव मृदुल स्वभाव वाला, आध्यात्मिक तथा पारलौकिक सुख में रुचि रखने वाला होता है। गुरु के प्रति होने पर कफ एवं चर्बी-जनित रोगों की वृद्धि होती है। जातक मन्द बुद्धि का, चिन्ता में रहने वाला, गृहस्थ जीवन में तनाव से पीड़ित, पुत्र अभाव के संत्रास से पीड़ित और रोगी रहता है। गुरु के अशुभ प्रभाव के कारण जातक के प्रत्येक कार्य में व्यवधान तथा असफलता ही हाथ लगती है। समाज परिवार तथा बन्धुओं के मध्य उसका आदर नहीं होता। विद्या प्राप्ति करने में अनेक बाधायें आ जाती हैं। प्रायः शिक्षा अधूरी छूट जाती है।

शुभ तथा बली गुरु जातक को परमार्थी, चतुर, कोमल मति विज्ञान का विशेषज्ञ, न्याय, धर्म, नीति, का जानकार, सात्त्विक वृत्ति से युक्त तथा सम्पत्तिदायक बनता है। ज्ञान, यश, सम्मान, विद्या, तथा धर्म सम्बन्धी कार्यों में जातक बढ़-चढ़कर भाग लेता है। तथा समाज में उसकी प्रतिष्ठा एवं कीर्त्ति बढ़ती है। गुरु प्रधान व्यक्ति को पुत्रों का सुख प्राप्त होता है। गुरु प्रधान महिलायें श्रेष्ठ दाम्पत्त्य-सुख प्राप्त करती है तथा उनका सौभाग्य अखंडित रहता है।

यदि जन्मांक चक्र में गुरु नीच राशि का पड़ा हो अथवा वक्री, अस्त व अशुभ स्थान में विद्यमान हो तो जातक को नाक, कान, गले और नजले से सम्बन्धित रोग तथा सूजन, चर्बीजनित विकार एवं मोटापे की शिकायत रहती है। यदि जातक की जन्म कुण्डली में गुरु ग्रह निर्बल हो तो जातक टी. बी., मूर्च्छा तथा शोथ रोगों से ग्रसित हो जाता है।

द्वादश भावों में बृहस्पति ग्रह से उत्पन्न होने वाले रोग—

यदि किसी की जन्म कुण्डली में गुरु की अशुभ स्थिति है तो वह अनेक प्रकार

के रोग-वात, उदर विकार, रक्तचाप, यक्ष्मा, गुप्त रोग, श्रम विकार और हृदय रोग उत्पन्न करती है ।

सूर्य तथा चन्द्रमा की तरह गुरु ग्रह का अशुभ प्रभाव जब जातक पर पड़ता है तो अनेक प्रकार की बीमारियाँ उसे आ घेरती हैं । वैज्ञानिक तथा ज्योतिर्विज्ञ जन अनेक शोधों व अनुसन्धानों के पश्चात इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि ग्रहों का अशुभ प्रभाव भी सभी व्यक्तियों को समान रूप से नहीं प्रभावित करता । जन्म कुण्डली के द्वादश भावों में ग्रहों की स्थिति के अनुसार जातक पर इसका भिन्न-भिन्न प्रभाव पड़ता है । गुरु ग्रह का द्वादश भावों में स्थिति के अनुसार निम्न प्रभाव पड़ता है ।

प्रथम प्रभाव— यदि जातक की जन्म कुण्डली में गुरु द्वितीय भाव में हो तो जातक वात–कफ रोगी होता है । यदि गुरु किसी पाप ग्रह के साथ युति करता हुए प्रथम भाव में विद्यमान हो तो शारीरिक कष्ट होता है ।

द्वितीय भाव— यदि जातक की जन्म कुण्डली में गुरु द्वितीय भाव में हो तो जातक दीर्घायु, प्रसन्नचित्त तथा शत्रुनाशक होता है । उसे बाल्यावस्था में शारीरिक कष्ट होता है ।

तृतीय प्रभाव— यदि जातक के जन्मांक चक्र में गुरु तृतीय भाव विद्यमान हो तो वह मन्दाग्नि-रोगी होता है । उसके पेट में सदैव शिकायत बनी रहती है । अपच, गैस तथा उत्साहहीनता का बोध सदैव होता है ।

चतुर्थ भाव— यदि जातक की जन्म कुण्डली में गुरु चतुर्थ भाव में विद्यमान हो तो जातक मानसिक रोगों से ग्रसित रहता है । यदि गुरु पाप ग्रह से युति करते हुए चतुर्थ भाव में विद्यमान हो तो जातक को शारीरिक कष्ट तथा पेट की बीमारी पीड़ित करती है ।

पंचम भाव— यदि जातक के जन्मांक चक्र में गुरु पंचम भाव में विद्यमान हो तो जातक को सन्तान-सुख का अभाव पीड़ित रखता है । जातक को सन्तान–शोक तथा अन्य मानसिक संकट घेरते हैं । गुरु पंचम भाव में पाप ग्रह युक्त हो तो जातक को ब्लड-प्रेशर या अपच की शिकायत रहती है ।

षष्ठ भाव— यदि जातक की जन्म कुण्डली में गुरु षष्ठ भाव में विद्यमान हो तो जातक सदैव किसी न किसी रोग से पीड़ित रहता है, यदि पाप ग्रह से युति करता हुए गुरु षष्ठ भाव में विद्यमान हो तो जातक को टी. बी., वात–कफ जनित रोग अथवा अन्य भयंकर रोगों की पीड़ा होती है । षष्ठ भाव में गुरु के विद्यमान होने पर जातक अजीर्ण, अपच, पेट-दर्द तथा अन्य व्रण–चिह्न वाला होता है । उसे फोड़ा फुन्सी तथा आकस्मिक चौटें लगती हैं ।

सप्तम भाव— यदि जातक के जन्मांक चक्र में गुरु सप्तम भाव में विद्यमान हो तो जातक परस्त्री में आसक्त, सुन्दर शरीर वाला तथा बालायावस्था में शारीरिक कष्ट से पीड़ित रहता है ।

अष्टम भाव— यदि जातक की जन्म कुण्डली में गुरु अष्टम भाव में विद्यमान हो तो वह किसी गुप्त रोग से पीड़ित रहता है । वह स्वस्थ शरीर वाला किन्तु वायु-शूल रोग से ग्रसित रहता है । उसकी मृत्यु किसी तीर्थ स्थान अथवा शुभ स्थान में होती है ।

नवम भाव— यदि जातक के जन्मांक चक्र में गुरु नवम भाव में विद्यमान हो तो जातक दीर्घायु, सुन्दर मुख वाला तथा स्वस्थ रहता है ।

दशम भाव— यदि जातक के जन्मांक चक्र में गुरु दशम भाव में विद्यमान हो तो जातक सुखी, कुल-दीपक तथा दीर्घायु होता है ।

एकादश भाव— यदि जातक की जन्म कुण्डली में गुरु एकादश भाव में विद्यमान हो जातक निरोगी तथा सुन्दर होता है ।

द्वादश भाव— यदि जातक के जन्मांक चक्र में गुरु द्वादश भाव में विद्यमान हो तो जातक बाल्यावस्था में हृदय रोगी होता है । जातक को कोई गुप्त रोग भी पीड़ित रखता है । उसे गिल्टी, फोड़ा फुन्सी जैसे ब्रण भी पीड़ित करते हैं ।

जन्मांक चक्र में गुरु ग्रह और उसका प्रभाव—

सूर्य तथा चन्द्र की भाँति गुरु ग्रह का भी जन्मांक चक्र में अपनी स्थिति के अनुसार मुख्य रूप से निम्न दो प्रकार का प्रभाव पड़ता है । (1) राशिगत तथा (2) भावगत ।

गुरु ग्रह तथा राशिगत प्रभाव— गुरु ग्रह जन्मांक चक्र के द्वादश राशियों में निम्न प्रकार से प्रभाव डालता है ।

मेष राशि— यदि जन्म कुण्डली में गुरु मेष राशि में विद्यमान हैं तो जातक यशस्वी, ऐश्वर्यशाली, शत्रुहन्ता तथा पेशे से वकील होता है । जातक स्वभाव के उदार, उत्तम कार्य करने वाला, धन सम्पत्ति से युक्त, बुद्धिमान तथा शत्रुमुक्त होता है ।

वृष राशि— यदि जन्म कुण्डली में गुरु वृष राशि में विद्यमान हो तो जातक पुष्ट शरीर, धनवान, विद्वान, चिकित्सक तथा धार्मिक विचार का होता है । जातक को जीवन में वाहन-सुख तथा सन्तान-सुख प्राप्त होता है । उसके शत्रु अनेक होते हैं लेकिन उसे शत्रुओं से नुकसान कभी नहीं होता ।

मिथुन राशि— यदि जन्म कुण्डली में गुरु मिथुन राशि में स्थित हो तो जातक को रत्नों के व्यवसाय से आर्थिक लाभ होता है । वह सफल लेखक, ज्योतिषी तथा समाज में प्रतिष्ठा पाने वाला, कवि, प्रियवक्ता, निर्बल स्वभाव वाला तथा निपुण मैत्री वाला होता है ।

कर्क राशि— यदि जन्मांक चक्र में गुरु कर्क राशि में स्थिति हो तो जातक अनेक विद्याओं का ज्ञाता, सुख वाहन-सुख-युक्त प्रियवक्ता सदाचारी तथा कामुक होता है ।

सिंह राशि— यदि जन्मांक चक्र में गुरु सिंह राशि में विद्यमान हो तो जातक सभा-चतुर, शत्रुजित, धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला, गठीले शरीर वाला तथा वन और पर्वतों से धन अर्जित करने वाला होता है ।

कन्या राशि— यदि जन्म कुण्डली में गुरु कन्या राशि में विद्यमान हो तो जातक चित्रकला में रुचि रखने वाला, सुखी, चंचल स्वभाव से युक्त तथा विलासी होता है । शत्रु सदैव पराजित होते हैं तथा जातक को उद्योग धन्धे में लाभ व यश प्राप्त होता है ।

तुला राशि— यदि जन्म कुण्डली में गुरु तुला राशि में विद्यमान हो तो जातक बुद्धिमान, व्यवसाय–कुशल, लेखन कार्य में रुचि रखने वाला तथा अनेक पुत्रों का पिता होता है । स्वभाव से बहुत घबड़ाने वाला, शत्रु भय से पीड़ित, देव द्विज भक्त एवं धार्मिक कार्य में रुचि रखने वाला होता है ।

वृश्चिक राशि— यदि जन्म कुण्डली में गुरु वृश्चिक राशि में विद्यमान हो तो जातक प्रवासी, दम्भी, कृश शरीर वाला तथा कार्य–कुशल होता है । जातक जीवन में अपनी ही गल्तियों से धन को नष्ट करने वाला भी होता है ।

धनु राशि— यदि जन्म कुणडली में गुरु धनु राशि में विद्यमान हो तो जातक धूर्त्त स्वभाव का होता है । जातक अपने परिश्रम एवं चातुर्य से जीवन में धन, सम्पति तथा यश अर्जित करता है । उसे वाहन-सुख तथा सन्तान सुख प्राप्त होता है । परोपकार दानशीलता तथा धार्मिक कार्यों में उसकी रुचि रहती है ।

मकर राशि— यदि जन्मांक चक्र में गुरु मकर राशि में विद्यमान हो तो जातक क्रोधी स्वभाव का होता है तथा उसका दाम्पत्त्य–जीवन सुखमय नहीं रहता । वह कृपण, हृदय-रोगी, दुखी, नपुन्सक तथा नीच का सेवक होता है ।

कुम्भ राशि— यदि जन्मांक चक्र में गुरु कुम्भ राशि में विद्यमान हो तो जातक रोगी, दरिद्र, कृश शरीर तथा दाँत और उदर रोग वाला होता है । वह डरपोक स्वभाव वाला तथा प्रवास में रहने वाला होता है । अपने ही कार्यों द्वारा जातक पूर्व संचित धन को व्यर्थ ही नष्ट कर डालता है ।

मीन राशि— यदि जन्म कुण्डली में गुरु मीन राशि में विद्यमान हो तो जातक ग्रह-कार्य में दक्ष, दानी, राज्य कृपा से धन को अर्जित करने वाला तथा सदैव प्रसन्नचित्त रहता है । जातक स्वभाव से साहित्य के प्रति रुचि रखने वाला, शान्त, दयालु, व्यवहार-कुशल तथा लेखक होता है । मीन राशि में गुरु के विद्यमान होने पर जातक रत्न-पारखी तथा रत्नों में रुचि रखने वाला होता है ।

बृहस्पति ग्रह तथा भावगत प्रभाव—

राशिगत प्रभाव की भाँति ग्रहों का भावगत प्रभाव भी जातक पर पड़ता है। भावगत प्रभाव का तात्पर्य यह होता है कि सम्बन्धित ग्रह जन्मांक चक्र के द्वादश भावों में से किस भाव में विद्यमान है। जन्मांक चक्र के द्वादश भावों में गुरु ग्रह की स्थिति के अनुसार निम्न प्रभाव ज्योतिषीय दृष्टिकोण से जातक पर पड़ता है।

प्रथम भाव— यदि जन्मांक-चक्र में गुरु प्रथम भाव अर्थात् लग्न में स्थित हो तो जातक दीर्घायु, विद्वान्, सुन्दर व्यक्तित्त्व का धनी, देव-द्विज भक्त तथा सफल भविष्यवक्ता होता है। लग्नस्थ गुरु जातक को स्पष्ट-वक्ता, स्वाभिमानी, कार्य-परायण, पुत्रवान तथा राज्य द्वारा सम्मानित करता है। यदि गुरु शत्रुक्षेत्री अथवा नीचस्थ अथवा पाप ग्रहों से दृष्टं है तो जातक को नीच का सेवन तथा मानसिक रूप से चिंतित बनाता है। इसी प्रकार यदि लग्नस्थ गुरु उच्च राशिस्थ अथवा बली होकर शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो जातक को राजयोग प्राप्त होता है।

द्वितीय भाव— यदि जन्मांक चक्र में गुरु द्वितीय भाव में विद्यमान हो तो जातक प्रसन्न-चित्त, उत्तम स्त्री का पति तथा रत्नों के व्यवसाय से लाभार्जित करने वाला होता है। द्वितीय भावस्थ गुरु जातक को शोभन व्यक्तित्त्व का स्वामी, मधुरभाषी, सम्पत्ति एवं सन्ततिवान, सदाचारी, भाग्यशाली, व्यवसायी तथा धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला बनाता है। यदि द्वितीयस्थ गुरु उच्चस्थ अथवा स्वक्षेत्री हो तो जातक जीवन में प्रचुर मात्रा में धन संचय तथा अर्जित करता है। इसी प्रकार नीच राशिस्थ अथवा शत्रुक्षेत्री गुरु जातक को मिथ्यावादी, ठग तथा परस्त्री–गामी बना देता है।

तृतीय भाव— यदि जन्मांक चक्र में गुरु तृतीय भाव में विद्यमान हो तो जातक परोपकारी, प्रवासी, आस्तिक, स्त्रीप्रिय, व्यवसायी, वाहनयुक्त तथा कामुक होता है। वह धन को कभी अनुचित कार्यों में खर्च नहीं करता है तथा भ्रमण-प्रिय स्वभाव का होता है। यदि तृतीय भाव में गुरु अन्य पाप ग्रहों से दृष्ट न हो तो उसके कई भाई दीर्घायु होते हैं। किन्तु यदि तृतीय भाव में गुरु किसी पाप ग्रह से युति करते हुए विद्यमान हो तो उसके भाइयों की मृत्यु हो जाती है तथा भ्रातृ-सुख का अभाव रहता है।

चतुर्थ भाव— यदि जन्मांक चक्र में गुरु चतुर्थ भाव में विद्यमान हो तो जातक धन, वाहन आदि से सम्पन्न, प्रसन्न चित्तवाला, उद्योगी, ज्योतिष विद्या में रुचि रखने वाला, राज्यमान, माता-पिता की आज्ञा का पालन करने वाला तथा कुलदीपक होता है। यदि चतुर्थ भाव में बली गुरु विद्यमान हो तो जातक का जन्म सम्पन्न परिवार में होता है। चतुर्थ

भावस्थ गुरु पाप ग्रहों से दृष्ट होने पर अशुभ फल प्रदान करता है । चतुर्थ भाव में गुरु चन्द्र एवं शुक्र की युति जातक को वाहन सुख तथा गृह–सुख प्रदान करता है ।

पंचम भाव— यदि जन्मांक चक्र में गुरु पंचम भाव में विद्यमान हो तो जातक सहृदय, मित्रों से पूजित, अनेक शास्त्रों का ज्ञाता, सुखी, सुन्दर और सबका प्रिय होता है । पंचम भावस्थ गुरु जातक को आस्तिक, ज्योतिषी, लोकप्रिय तथा सन्ततिवान बनाता है । कुछ ज्योतिर्विद गुरु को पंचम भाव में निष्फल मानते हैं । यदि गुरु पंचम भाव में पाप ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो, वक्री अथया अस्त हो तो ऐसी अवस्था में जातक संतान–शोक से पीड़ित होता है ।

षष्ठ भाव— यदि जन्मांक चक्र में गुरु षष्ठ भाव में विद्यमान है तो जातक शत्रुओं को जीतने वाला, मधुर–भाषी, ज्योतिष शास्त्र में रुचि रखने वाला, दुर्बल शरीर, उदार, विवेकी तथा प्रतापी होता है । यदि गुरु शत्रुक्षेत्री अथवा वक्री होकर षष्ठ भाव में विद्यमान हो तो जातक को सदैव शत्रुभय बना रहता है ।

सप्तम भाव— यदि जन्मांक चक्र में गुरु सप्तम भाव में विद्यमान हो तो जातक सुन्दर, स्त्रीप्रेमी, परस्त्रीरत, धैर्यवान, भाग्यशाली तथा ज्योतिष विद्या में रुचि रखने वाला होता है । उसकी पत्नी पतिव्रता तथा धार्मिक प्रवृत्ति की होती है ।

अष्टम भाव— यदि जन्म कुण्डली में गुरु अष्टम भाव में विद्यमान हो तो जातक चंचल स्वभाव वाला, कृश देह वाला, धन और स्त्री सुख से रहित होता है । अष्टम भावस्थ गुरु जातक को दीर्घायु बनाता है । जातक गुप्त रोग से पीड़ित, ज्योतिष विद्या का जानकार, मधुर भाषी तथा असन्तोषजनक आर्थिक स्थिति वाला होता है । यदि अष्टम भावस्थ गुरु पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक अल्पायु, भ्रष्ट तथा विधवा स्त्री के संग अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है ।

नवम भाव— यदि जन्म कुण्डली में गुरु नवम भाव में स्थित हो तो जातक राजा के समान धनी, कृपण, सुखी, पवित्र हृदय वाला तथा स्त्रियों का प्रिय होता है । नवम भावस्थ गुरु जातक को भाग्यशाली पराक्रमी, यशस्वी, पुत्रवान, धार्मिक कार्यों में रुचि रखने वाला, विश्वसनीय तथा कानून का ज्ञाता बनाता है । यदि गुरु बली अथवा उच्च राशिस्थ होकर नवम भाव में विद्यमान हो तो जातक को सभी प्रकार के सुख, ऐश्वर्य, सम्पत्ति तथा वाहन का सुख प्राप्त होता है । पाप ग्रहों से युक्त अथवा दृष्ट, नीच राशिस्थ गुरु जातक के परिश्रम को निष्फल कर देता है ।

दशम भाव— यदि जन्मांक चक्र में गुरु दशम भाव में विद्यमान हो तो जातक को सत्कर्मी, शत्रुहन्ता, मातृ-पितृ भक्त, सत्यवादी, सफल भविष्यवक्ता, राज्यमान तथा धनवान

बनाता है । जातक स्वतंत्र विचारों का होता है तथा किसी की अधीनता स्वीकार नहीं करता है । वह सदैव प्रसन्न-चित्त तथा कुल का दीपक होता है । पाप ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट गुरु उसे दुष्कर्मी तथा आलसी बना देता है । उसे पुत्र-सुख का अभाव भी बना रहता है ।

एकादश भाव— यदि जन्मकुण्डली में गुरु एकादश भाव में स्थित हो तो जातक शोभन व्यक्तित्त्व वाला, व्यवसायी, अल्प सन्ततिवान, पराक्रमी तथा अनेकों स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है । एकादश भावस्थ गुरु जातक को राजा के समान, अपने कुल तथा वंश का उपकार करने वाला, धार्मिक विचारों में रुचि रखने वाला तथा प्रचुर मात्रा में धन संचय करने वाला बनाता है । जातक पशुओं के क्रय-विक्रय से आर्थिक लाभ-अर्जित करता है तथा जातक के पाँच पुत्र होते हैं । एकादश भाव में गुरु चन्द्र की युति जातक को प्रबल भाग्यशाली तथा आकस्मिक रूप से लाभ करने वाला बना देती है ।

द्वादश भाव— यदि जन्म कुण्डली में गुरु द्वादश भाव में विद्यमान हो तो जातक बाल्यावस्था में हृदय–रोगी, आलसी, मितव्ययी, उदार सम्पादक, लोभी तथा दुष्ट चित्त वाला होता है । द्वादश भावस्थ गुरु जातक को कुकर्मी, दूसरों को ठगने वाला तथा धार्मिक रुचि रखने वाला बनाता है । यदि द्वादश राशिस्थ गुरु उच्च राशिस्थ, स्वक्षेत्री तथा बली है तो जातक की मृत्यु के उपरान्त मोक्ष की प्राप्ति होती है ।

वृहस्पति ग्रह तथा उससे उत्पन्न होने वाले रोगों का उपचार

सूर्य, चन्द्र तथा मंगल की भाँति गुरु ग्रह का शुभ-अशुभ प्रभाव मानव पर पड़ता है । आदिकाल से ही ग्रहों के दुष्प्रभाव को समाप्त करने के लिए ऋषि-महर्षि तथा ज्योतिर्विज्ञों ने शास्त्रों एवं पुराणों में उल्लिखित रत्न-परामर्श देते आ रहे हैं । आयुर्वेद में तो ग्रहों के दुष्प्रभाव से उत्पन्न रोगों का निदान रत्न भस्म अथवा पिष्टि के रूप में कई जगह उल्लिखित है । भारतीय ऋषि तथा महर्षियों ने जंगल में रहकर प्राकृतिक वनस्पति तथा रत्नों के द्वारा अनेक असाध्य रोगों का इलाज सफलतापूर्वक किया है । गुरु ग्रह के अशुभ प्रभाव से उत्पन्न रोगों के निदान के लिए पुखराज रत्न धारण करना चाहिए ।

जन्मकुण्डली में गुरु की अशुभ स्थिति से निम्न रोग उत्पन्न होते हैं ।

- कण्ठ विकार
- मोतीझरा (टाइफाइड)
- अनिद्रा
- यकृत विकार
- अतिसार
- बवासीर
- नेत्राभिष्यन्द
- गलगण्ड (गोएटर)
- मानस क्षोभ
- चर्बीजनित विकार

बवासीर

डाक्टरों के अनुसार बवासीर होने का मुख्य कारण कब्ज का होना बताया गया है। बवासीर में गुदाद्वार पर ज्वार से लेकर अंगूर के आकार के बराबर एक या दो अथवा कई मस्से फूल जाते हैं। इस रोग में रोगी भयंकर पीड़ा, जलन और खुजली से पीड़ित रहता है, बवासीर मुख्यत: दो प्रकार की होती है (1) खूनी बवासीर (2) बादी बवासीर। खूनी बवासीर में इन मस्सों से खून भी गिरता है। इससे कमजोरी बढ़ती जाती है।

जो व्यक्ति शारीरिक परिश्रम नहीं करते, बैठक का काम करते हैं वे ज्यादातर बवासीर के रोगी हो जाते हैं। बवासीर के रोग से मुक्ति पाने के लिए दवा के साथ-साथ कब्ज न हो पाये इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

घरेलू औषधियाँ :

- मूली का रस और गोघृत दोनों दो-दो चम्मच मात्रा में लेकर मिलाकर सुबह चाटने से बवासीर के रोग में आराम मिलता है। जहाँ तक सम्भव हो मूली को सलाद के रूप में खायें और मूली के पत्तों को कच्चा व शाक बनाकर खायें।
- शुद्ध घी की बनी हुई 100 ग्राम जलेबी को 125 ग्राम मूली के रस में एक घण्टे भीगने दें, तत्पश्चात् जलेबी खाकर पानी को पी जायें। इसके एक सप्ताह नियमित सेवन करने से बवासीर समूल नष्ट हो जाती है।
- सफेद सुर्मा और नागकेसर दोनों को समभाग में लेकर खरल में कूटपीसकर कपड़छन कर लें। अब इस चूर्ण की आधा ग्राम मात्रा एक चम्मच शहद के साथ मिलाकर रोगी को चटायें। यह औषधि खूनी और बादी दोनों प्रकार की बवासीर में लाभकारी है।
- तीन ग्राम काली मिर्च तथा दस ग्राम छिले हुए हारसिंगार के बीज, दोनों को पीसकर गुदा पर लेप करने से बादी बवासीर में लाभ मिलता है।
- कड़वी तोरई के बीजों को पानी में पीसकर गुदा पर लेप करने से सभी प्रकार की बवासीर जड़ से समाप्त हो जाती है।
- नीम और पीपल के पत्ते बराबर-बराबर लें। उन्हें घोट पीसकर लेप करने से बवासीर के मस्से सूख जाते हैं।
- कुचला के बीज को मिट्टी के तेल में घिसकर मस्सों पर लेप करने से मस्से सुखकर झड़ जाते हैं।

- अपामार्ग के पत्ते 6 ग्राम तथा 5-6 नग काली मिर्च दोनों को घोट पीसकर ठण्डाई के समान बनाकर पीने से बवासीर नष्ट होती है ।
- तीस ग्राम राल लेकर बारीक पीसकर कपड़छन कर लें । इस चर्ण की 6 ग्राम मात्रा नित्य प्रातःकाल ताजे 100 ग्राम दही के साथ शक्कर मिलाकर खाने से खूनी बवासीर में रक्त गिरना बन्द हो जाता है ।
- 200 ग्राम काली हरड़ को 20 ग्राम गौघृत में भून लें । फिर इसमें आँवलासार शुद्ध गन्धक 10 ग्राम मिलाकर खरल लें । इस चूर्ण की छः ग्राम मात्रा रात को सोते समय गरम गुनगुने दूध के साथ लें तथा मस्सों पर नीम का तेल लगायें । दो तीन दिन में आराम आ जायेगा ।
- 50 ग्राम छिले हुए इमली के बीजों को तवे पर भून लें फिर खरल में कूट पीसकर चूर्ण बना लें । इस दवा की 6 ग्राम मात्रा नित्य प्रातःकाल आध पाव दही के साथ शक्कर मिलाकर खाने से बावासीर समूल नष्ट हो जाती है ।
- 6-7 नग कसोंदी के पत्ते तथा पाँच नग काली मिर्च को ठण्डाई की भाँति पीसकर पीने से खूनी बवासीर चली जाती है । यह दवा सैकड़ों बार परीक्षित है ।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

नक्स वोमिका 30, सल्फर 1 एम.— खूनी तथा बादी दोनों प्रकार की बवासीर की चिकित्सा में महीने में एक बार सल्फर देकर नक्स वोमिका 30 प्रतिदिन तीन खुराक दें । ऐसा नियमित रूप से नब्वे दिन करने से बवासीर का रोग समूल नष्ट हो जाता है ।

डोलिकोस मूल अर्क— इस दवा के मूल अर्क की 5 बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार सेवन करने से खूनी बवासीर में खून आना एकदम बन्द हो जायेगा ।

फिकस रिलिजिओसा मूल अर्क— यदि खूनी बवासीर में डोलिकोस मूल अर्क देने से फायदा न हो रहा हो तो इस दवा को दिन में तीन बार देने से खून आना निश्चित रूप से बन्द हो जायेगा । मूल अर्क की एक बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ खूनी बवासीर के रोगी को देना चाहिए ।

एस्क्युलस 3— बादी बवासीर के लिए यह औषधि श्रेष्ठ मानी गयी है । गुदा में तिनके-से चुभते हुए एसा महसूस हों, कभी-कभी खून दिखलाई पड़ता हो, जलन के साथ दर्द हो, मस्सों के फूल जाने से कष्ट हो तो ऐसे रोगी को इस दवा की चार पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए दें । आराम हो जायेगा ।

रस टाक्स 30— टट्टी जाने पर मस्से बाहर निकल आते हों, कमर में दर्द होता

हो, गुदा पर वोझ सा लगे तव यह दवा गुणकारी है । दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार रोगी को चूसने के लिए दें ।

नक्सवोमिका 30— हमेशा कब्ज वना रहे तथा वादी ववासीर हो जाए तो इस दवा की चार पाँच गोली दिन में तन बार सेवन करें ।

विशेष— ववासीर के रोगी को चिकित्सा के साथ मिर्च मसाले वाले व तले हुए पदार्थों के सेवन, रात्रि–जागरण तथा कब्ज से बचना चाहिए ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

- खूनी तथा बादी ववासीर में चुम्बक-सीट का नियमित प्रयोग करने से कुछ ही दिनों में रोग से मुक्ति मिल जाती है । बवासीर से पीड़ित रोगी को चुम्बक- जल का सेवन अधिक से अधिक मात्रा में करना चाहिए ।
- चुम्बक सीट का प्रयोग कम से कम 40-50 मिनट के लिए दिन में तीन वार करें ।

विशेष— चुम्बक सीट का प्रयोग भोजन करने के तत्काल बाद न करें । यथा–सम्भव सुबह नित्य-क्रिया करने के उपरान्त चुम्बक सीट को प्रयोग करें । विस्तृत जानकारी के लिए डा. आर. एस. अग्रवाल द्वारा लिखित 'होम्यो चुम्बक चिकित्सा' नामक पुस्तक को पढ़ें । चुम्बक चिकित्सा किसी गुरुवार के दिन से ही प्रारम्भ करनी चाहिए ।

मन्त्र प्रयोग—

इस गुरु मन्त्र का नित्य ग्यारह माला जप करने से बवासीर के रोग से मुक्ति मिलती है— **मन्त्र— ॐ ऐं क्लीं बृहस्पतये नमः ।**

विशेष—मन्त्र का जप किसी विशाखा नक्षत्रगत गुरुवार से अथवा गुरु की होरा से प्रारम्भ करें ।

यन्त्र साधना—

सामान्यतया बवासीर से मुक्ति पाने के लिए निम्न यन्त्र की साधना व पूजन करना चाहिए । बवासीर नाशक यन्त्र लेखन यथा–संभव किसी महात्मा, त्यागी अथवा धार्मिक पुरुष से ही कराना चाहिए तथा उसे यथा संभव दान–दक्षिणा देकर भली प्रकार से संतुष्ट करना चाहिए । भोजपत्र पर असगन्ध की स्याही से गुरु की होरा में अथवा पुर्नवसु नक्षत्रगत गुरुवार को अनार की कलम से यन्त्र का लेखन करना चाहिए ।

१२	३५	३८	५
३७	६	११	३६
७	४०	३३	१०
३४	९	८	३९

यन्त्र लेखन के उपरान्त विधि विधान से श्रद्धा पूर्वक उसे स्नान आदि कराना चाहिए तत्पश्चात फल, पुष्प व नैवेद्य अर्पित करके यन्त्र का पूजन करना चाहिए । इस प्रकार यन्त्र को शोधित कर रोगी की नाभि पर बाँध दें । इसके कुछ दिन नियमित प्रयोग से बवासीर का रोग समूल नष्ट हो जायेगा ।

तान्त्रिक प्रयोग—

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रगत किसी गुरुवार को गेंड़ा की खाल की अँगूठी दाहिने तर्जनी में धारण करने से बवासीर का रोग मिट जाता है ।

किसी विशाखा नक्षत्रगत गुरुवार को अथवा कुरु की होरा में प्रातःकाल काले धतूरे की जड़ खोदकर घर ले आवें । तत्पश्चात पूजन व शोधन करके जड़ को बवासीर के रोगी की कमर में बाँध देवें । कुछ ही दिनों में बवासीर का रोग समूल चला जायेगा ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतया बवासीर से मुक्ति पाने के लिए पीले रंग का अकीक रत्न चाँदी में मढ़ाकर दाहिनी तर्जनी में धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों से रत्नविद् ज्योतिषी से परामर्श करना चाहिए ।

विशेष— रत्न को धारण करने से पूर्व उसे विधिपूर्वक शोधित कर लेना चाहिए । रत्न शोधन व धारण पुर्नवसु नक्षत्रगत किसी गुरुवार को अथवा गुरु की होरा में ही करना चाहिए, अन्यथा रत्न कोई विशेष प्रभाव नहीं डालता ।

कण्ठमाला

यह यह गले में होने वाला एक प्रकार का क्षय रोग है । यह रोग किसी को भी हो सकता है किन्तु छोटे बच्चे विशेषकर इस रोग से प्रभावित होते है । इस रोग में अक्सर गले के आस-पास की ग्रन्थियाँ क्षय रोग से ग्रसित हो जाती है । गिल्टियाँ गले के आस पास होने के कारण ही इस रोग का नाम कण्ठमाला पड़ा है ।

घरेलू औषधियाँ :

- किसी भी गुरुवार को अथवा पुनर्वसु नक्षत्रगत गुरु की होरा से मूली के बीजों को बकरी के दूध में पीसकर लेप करने से यह रोग ठीक हो जाता है । मूली के बीजों का लेप कम से कम एक सप्ताह नियमित करना चाहिए ।
- सोंठ 4 ग्राम तथा कुलथी के बीज 10 ग्राम को गौमूत्र में पकाकर ठण्डा करके लेप

करने से कण्ठमाला का रोग चला जाता है । इस दवा का सुबह शाम लेप करना चाहिए ।

- विशाखा नक्षत्रगत गुरुवार को चिरचिटा (अपामार्ग) की जड़ के 10-20 टुकड़े लेकर उसकी माला बनाकर रोगी को पहना दें, हफ्ते भर में कण्ठमाला ठीक हो जाती है ।
- पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रगत गुरुवार से नियमित लिसोड़े की नर्म-नर्म पत्ती आग पर गरम कर कण्ठ में बाँधने से कण्ठमाला का रोग ठीक हो जाता है ।
- चार-पाँच दाने काली मिर्च तथा कसोंदी की पत्ती दोनों को पीसकर लुगदी बना लें । इसे कण्ठमाला के रोगी के गले में लेप कर दें । इसके कुछ दिन नियमित प्रयोग से कण्ठमाला का रोग चला जाता है ।
- छः ग्राम काली मिर्च तथा 15-20 ग्राम गूगल दोनों को सिरके में पीसकर लगाने कण्ठमाला का रोग दूर हो जाता है ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

कैल्केरिया कार्ब 30— यह औषधि ग्रन्थियों का सूजन और छिपे हुए क्षय रोग में बहुत उपयोगी है । सिर तथा शरीर पर खूब पसीना आए, थायराईड ग्रन्थि शिथिल हो, तो ऐसे रोगी को इस दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देना चाहिए । इसके हफ्तेभर नियमित सेवन से कंठमाला का रोग दूर हो जाता है ।

मर्कसोल 30— अधिक पसीना आने पर तथा रात्रि में रोग बढ़ने के लक्षण उत्पन्न होने पर इस दवा की दो बूँद आधे कप जल के साथ रोगी को दिन में तीन बार देना चाहिए ।

सिस्टस 30— सदैव ठण्डक लगे, गले की ग्रन्थियों में रोग गम्भीर हो गया हो, तब ऐसे रोगी को इस दवा की चार पाँच गोली चूसने के लिए देना चाहिए ।

इथिओप्स एन्टीमौनेलिस 3x— जब कण्ठमाला के रोग के साथ साथ रोगी के कान से मवाद बहता हो तथा कण्ठमाला समबन्धी नेत्र–विकार उत्पन्न हों, तो ऐसे रोगी को दवा की चार पाँच बूँदें आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देनी चाहिएं ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रगत गुरुवार से नियमित 40-50 मिनट गले में चुम्बक–पेटी बाँधें तथा साथ में यथासम्भव चुम्बक–जल का प्रयोग करें । इसके महीने भर नियमित प्रयोग से कण्ठमाला का रोग सदैव के लिए चला जाता है ।

मंत्र प्रयोग—

सामान्यतः कण्ठमाला के रोग से मुक्ति पाने के लिए इस गुरु मन्त्र का जप लाभकारी माना गया है । विशेष परिस्थितियों में किसी तन्त्र मन्त्र यन्त्र विशेषज्ञ ज्योतिषी परामर्श लें । बृहस्पति ग्रह का मन्त्र यह है— **मन्त्र— ॐ बृं बृहस्पतये नमः ।**

विशेष— उपरोक्त गुरु मन्त्र का जप नियमित ग्यारह माला अवश्य करें । मन्त्र का जप किसी विशाखा नक्षत्रगत गुरुवार अथवा गुरु की होरा से प्रारम्भ करें ।

यन्त्र मन्त्र तन्त्र के संदर्भ में विशेष जानकारी के लिए आचार्य शत्रुघ्न लाल शुक्ल की पुस्तक 'रहस्यमयी गुप्त विद्यायें' (यन्त्र मन्त्र तन्त्र) पढ़ें । मँगाने का पता, **हिन्दी सेवा सदन, हालनगंज, मथुरा**

यन्त्र साधना—

गुरु यन्त्र साधना व पूजन दर्शन से सभी प्रकार के बृहस्पति-जन्य रोग ठीक हो जाते है । कण्ठमाला के रोग से मुक्ति पाने के लिए गुरु यन्त्र की साधना व पूजन दर्शन रामवाण औषधि का कार्य करती है ।

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

इस यन्त्र को गुरुवार के दिन की होरा में अनार की कलम द्वारा अष्टगन्ध की स्याही से भोजपत्र पर लिखना चाहिए । गुरु–पुष्य योग के दिन यन्त्र लेखन व पूजन-दर्शन विशेष प्रभावशाली माना गया है ।

यन्त्र लेखन के उपरान्त गंगाजल और गोदुग्ध से उसे स्नान कराना चाहिए । तदुपरान्त यन्त्र को किसी लकड़ी के तख्ते पर पीले वस्त्र का आसन देकर प्रतिष्ठित कर पूजन करना चाहिए । पूजन में धूप, दीप तथा नैवेद्य अर्पित किया जाता है । पूजनोपरान्त गुरु देवता का कोई मन्त्र जप कर स्तुति की जाती है । इस प्रकार मन्त्रजप हवन तथा ब्राह्मण भोजन कराकर यन्त्र को सिद्ध कर लिया जाता है । यन्त्र सिद्ध हो जाने पर इसे किसी ऊँचे स्थान में रखना चाहिए तथा नित्य दर्शन करना चाहिए ।

कण्ठमाला के रोगी को गुरु यन्त्र सिद्ध करके ताँवे की तावीज में भरकर गले में धारण कराने से उसका रोग कुछ ही दिनों में समूल नष्ट हो जाता है ।

तान्त्रिक प्रयोग—

गुरु पुण्य योग के दिन सहदेवी की जड़ को ताबीज में रखकर गले में पहनाने से कण्ठमाला का रोग दूर हो जाता है । यह तान्त्रिक प्रयोग बच्चों के लिए विशेष लाभकारी पाया गया है ।

■ विशाखा नक्षत्रगत गुरुवार को हल्दी की गाँठ घर लाकर विधि-विधान से शोधन व पूजनोपरान्त कण्ठमाला के रोगी के गले में पीले धागे की सहायता से धारण करायें । कुछ ही दिनों में रोग का पता न चलेगा ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतः कण्ठमाला के रोग से मुक्ति पाने के लिए पीला मोती धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी रत्नविद् ज्योतिषी से परामर्श लें ।

विशेष— स्मरण रहे कि रत्न धारण करने में अतिरिक्त सावधानी की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि जरा सी असावधानी व दूषित रत्न धारण कर लेने पर जातक को भयंकर प्रतिकूल परिणाम देखने पड़ते हैं । पीला मोती गुरुवार के दिन धारण करना चाहिए तथा रत्न का वजन कम से कम सवा तीन रत्ती अवश्य होना चाहिए अन्यथा रत्न अपना स्वाभाविक प्रभाव नहीं दिखलाते ।

अनिद्रा

अनिद्रा का शाब्दिक अर्थ नींद न आना होता है । आज के आधुनिक व आर्थिक युग में तनावग्रस्त और दौड़-धूप भरे जीवन में नाना प्रकार की चिन्ताओं में उलझे हुए होने से अधिकांश स्त्री-पुरुष इस के शिकार हो जाते हैं । चिकित्सा जगत में यह रोग इनसोमिया के नाम से विख्यात है । यह एक भयंकर रोग है तथा इस रोग से अमेरिका जैसा धनाढ्य व प्रगतिशील राष्ट्र भी अछूता नहीं है । आज का प्रत्येक प्रगतिशील तथा आधुनिक राष्ट्र इस रोग के भयंकर दुष्परिणामों को भोग रहा है ।

अनिद्रा रोग से ग्रसित रोगी मजबूरन नींद की गोलियाँ खा-खाकर सो पाते हैं । नींद न आने से अन्य कई रोग भी उत्पन्न हो जाते हैं तथा व्यक्ति मानसिक रूप से विक्षिप्त हो जाता है ।

घरेलू चिकित्सा :

- 8-10 ग्राम पीपलामूल का चूर्ण गुड़ में मिलाकर हफ्तेभर नित्य सेवन करने से अनिद्रा का रोग दूर भाग जाता है । रोगी को स्वाभाविक नींद आने लगती है ।
- नियमित रूप से 8-10 ग्राम जटामाँसी का चूर्ण रात्रि में सोने के एक घण्टा पूर्व शीतल जल के साथ लेने से कुछ दिनों में अनिद्रा के रोगी को अच्छी तथा गहरी नींद आने लगती है । यह प्रयोग परीक्षित है ।

- गोघृत में जायफल को घिसकर सोने से पूर्व पलकों में लगाने से नींद अच्छी तरह आने लगती है ।
- भाँग, अश्वगंधा और सर्पगंधा तीनों को समभाग में लेकर कूट पीसकर चूर्ण बना लें । इस चूर्ण की एक छोटी चम्मच मात्रा को शीतल जल के साथ नियमित लेने से कुछ ही दिनों में अनिद्रा के रोगी को अच्छी व गहरी नींद आने लगेगी ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

नक्सवोमिका 30 तथा पल्सेटिला 30— लेखक, कवि, विचारक तथा अधिक पढ़ने–लिखने के आदी व्यक्ति जब इस रोग का शिकार, जागते रहने से हो जाये तो ऐसे रोगी को दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देना चाहिए ।

सल्फर 30— अनिद्रा के रोग से ग्रसित व्यक्ति की जब जरा सी आवाज से नींद उचट जाती हो, शरीर में विशेषतः पैरों में जलन होती हो तो ऐसे रोगी को दवा की दो बूँद आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देनी चाहिए । इसके कुछ दिन नियमित सेवन से अनिद्रा रोग समूल चला जाता है ।

कैम्फर मूल अर्क— जब अनिद्रा का रोग स्नायु-मण्डल की उत्तेजना से उत्पन्न हुआ हो तो ऐसे रोगी को दवा की दो बूँद (मूल अर्क) आधे कप जल के साथ देनी चाहिए । कुछ ही दिनों में रोगी को स्वाभाविक तथा गहरी नींद आने लगेगी ।

कॉफिया 200— मानसिक चिन्ता, उलझन, प्रसन्नता तथा स्वप्न आदि के कारण ज़ब अनिद्रा का रोग हो जाए तो ऐसे रोगी को दवा की चार-पाँच गोलियाँ दिन में तीन बार चूसने के लिए देनी चाहिए ।

एकोनाइट 30— यह दवा वृद्ध व्यक्तियों के लिए विशेष चमत्कारी है । वृद्धावस्था के कारण, स्वप्न में घबराहट होने पर यदि रोगी को अनिद्रा की शिकायत हो जाए, तो दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन-चार बार चूसने से यह रोग समूल नष्ट हो जाता है तथा रोगी स्वस्थ, प्रफुल्ल तथा रहकर नींद लेने लगता है ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

- नियमित रूप से 20 से 40 मिनट तक चुम्बक के उत्तरी ध्रुव को माथे में लगाने से कुछ ही दिनों में अनिद्रा का रोग दूर भाग जाता है ।
- सिर में नियमित चुम्बकीय तेल लगाने से तथा चुम्बक जल का सेवन करने से 20 दिन में अनिद्रा का रोग सदैव के लिए गायब हो जाता है ।

विशेष— उपरोक्त चुम्बकीय चिकित्सा पुर्नवसु नक्षत्रगत गुरुवार को अथवा किसी

भी दिन गुरु की होरा में प्रारम्भ करनी चाहिए तथा चुम्बक लगाने के आधे घण्टे पूर्व अथवा पश्चात् कोई ठण्डी वस्तु का सेवन न करें ।

मन्त्र प्रयोग—

सामान्यतः अनिद्रा के रोग से मुक्ति पाने के लिए गुरु मंत्र का नियमित ग्यारह माला जप करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी मंत्र विशेषज्ञ ज्योतिषी से परामर्श कर लें— **मन्त्र— ॐ बृंहस्पतये नमः ।**

विशेष— स्मरण रहे कि उपरोक्त मन्त्र का जाप किसी गुरुवार के दिन से प्रारम्भ करना चाहिए ।

तान्त्रिक प्रयोग—

■ अनिद्रा रोग से मुक्ति पाने के लिए सफेद घुँघुची की जड़ सिराहने रखना चाहिए ।

■ गुरुवार के दिन केवांच की जड़ पीसकर माथे पर लेप करने से गहरी नींद आती है तथा इसके कुछ दिन नियमित प्रयोग से अनिद्रा का रोग समाप्त हो जाता है ।

विशेष— उपरोक्त तांत्रिक प्रयोग वृहस्पति के दिन से प्रारम्भ करें ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतः अनिद्रा रोग से मुक्ति पाने के लिए रत्न को सोने की अँगूठी में मढ़ाकर दाहिनी तर्जनी में धारण करना चाहिए ।

विशेष— उपरोक्त रत्न गुरु की हीरा में अथवा पूर्वाभाद्रपद नक्षत्रगत किसी बृहस्पतिवार को शोधन व पूजन करने के उपरान्त ही धारण करना चाहिए । दूषित अथवा शोधन रहित रत्न अपना पूर्ण प्रभाव नहीं दिखा पाते हैं ।

यन्त्र प्रयोग—

अनिद्रा के रोग से मुक्ति पाने के लिए नियमित गुरु मन्त्र का पूजन व दर्शन करना चाहिए । गुरु यन्त्र का उल्लेख पीछे के पृष्ठों में किया जा चुका है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

अतिसार (डाइरिया) (कोलाइटिस)

यह बहुत भयंकर बीमारी है । इससे रोगी को पतले, गरम दस्त बार-बार होने लगते हैं । जिसके फलस्वरूप रोगी एकदम शिथिल पड़ जाता है । कभी-कभी तो रोगी की मृत्यु तक हो जाती है ।

अतिसार होने का मुख्य कारण मिर्च-मसाले वाले एवं गरिष्ठ पदार्थों का अतिशय सेवन करना होता है । अतिसार होने पर पतले दस्तों को एकदम रोकने की चिकित्सा न करके पाचन सुधारने की चिकित्सा करनी चाहिए । पाचन ठीक होते ही मल बँधकर आने लगेगा और पतले दस्त बन्द हो जायेंगे ।

अतिसार के रोगी की दवा करने के साथ-साथ तुअर की दाल, बेसन के बने पदार्थ, तेल, मिर्च-मसाले वाले पदार्थ और गरिष्ठ पदार्थों से बच कर रहना चाहिए तथा सदैव हल्का सुपाच्य भोजन लेना चाहिए ।

घरेलू औषधियाँ :

- अमरूद की कोमल पत्तियों का काढ़ा बनाकर नियमित रूप से पीने से पुराने से पुराना अतिसार का रोग ठीक हो जाता है ।
- 10 ग्राम सूखा आँवला तथा पाँच ग्राम छोटी हरड़, दोनों को खरल में डालकर बारीक कूट-पीस कर रख लें । अब इस चूर्ण की एक ग्राम मात्रा सुबह–शाम शीतल जल के साथ लें । इसके नियमित सेवन से अतिसार का रोग समूल नष्ट हो जाता है ।
- कुटकी, लौंग और मजीठ तीनों को समान मात्रा में लेकर खरल में कूट-पीस कर बारीक चूर्ण बना लें । फिर इसकी 4 रत्ती मात्रा सुबह-शाम भोजन करने के उपरान्त अतिसार के रोगी को शीतल जल के साथ दें । कुछ ही दिनों में पतले दस्त आने बन्द हो जायेंगे तथा पाचन-क्रिया सुधर जायेगी ।
- एक कप गर्म उबले पानी में एक चम्मच अदरख का रस डालकर जितना गर्म पी सकें उतना गर्म पी लें । यह प्रयोग दिन में दो तीन बार करें । एक-दो दिन में पतले दस्त आने एकदम बन्द हो जायेंगे ।
- तीन ग्राम पठानी लोध, तीन ग्राम सोंठ का सत्त्च, 60 ग्राम लवण भास्कर चूर्ण, पाँच ग्राम शंख भस्म तथा पाँच ग्राम भुना हुआ पिसा जीरा—– सबको कूट-पीसकर चूर्ण बना लें । फिर इसकी सोलह पुड़िया बना लें । नित्य इस चूर्ण की एक पुड़िया मात्रा को दही की लस्सी में मिला लें तथा भोजन करते समय एक-एक बूँद इस लस्सी को पीते रहें । यह प्रयोग नियमित महीने भर करने से अतिसार का रोग सदैव के लिए चला जाता है । यह दवा परीक्षित है ।
- जायफल को पानी में घिसकर दिन में दो-तीन बार पिलाने से अतिसार का रोग ठीक हो जाता है ।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

कैमोमिला 30— यह दवा बच्चों के लिए विशेष लाभकारी होती है । पानी की तरह पतले, हरे पीले, झागदार, दुर्गन्धयुक्त दस्त हों, पेट में दर्द व मरोड़ होने से बच्चा रोये-चिल्लायें, चेहरा या एक गाल लाल हो तथा गोदी में आने से चुप हो जाए, तो ऐसे लक्षण प्रकट होने पर दवा की तीन-चार गोली दिन में तीन-बार बच्चे को चूसने के लिए दें । कुछ ही देर में अतिसार का रोग कम हो जायेगा तथा मल बँध जायेगा ।

इक्वीसेटम 30— बच्चा उल्टी में दही जैसा जमा हुआ दूध उल्टे, बार-बार दूध पीये और पीते ही उल्टी कर दे, हरे रंग का दस्त होता हो, बच्चा अत्यन्त कमजोर हो गया हो, तो ऐसे लक्षण दिखलाई पड़ने पर दवा को तीन-चार गोली दिन में तीन बार बच्चे को चूसने के लिए देनी चाहिए ।

चाइना 30— गैस के साथ पनीले दस्त, दस्तों में अपच निकलता हो, पेट में वायु बनती हो तथा डकार लेने से रोगी को आराम मिलता हो, अत्यधिक दस्त के कारण रोगी अत्यन्त कमजोर हो गया हो, कभी-कभी दर्द होता है, ऐसे लक्षण दिखाई पड़ने पर दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देनी चाहिए ।

आर्सेनिक ऐल्बम 30 अथवा 200— बर्फ खाने अथवा गर्म हुए शरीर में ठण्डा पानी पीने से लगे दस्त में लगातार उल्टियाँ व दस्त आयें और जीभ काली पड़ जाय, जुवान बार-बार सूखे, गुदा में जलन महसूस हो तथा दस्त पीले नीले खून मिलें और बदबूदार हों, तो ऐसे रोगी को दवा की 2 बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देनी चाहिए ।

ऐलूमिना 6 अथवा 30— रोगी को पेट सदैव भरा सा प्रतीत हो, पेट में आवाज तथा गड़गड़ाहट, मल अपने-आप निकल जाए, खाने के तुरन्त बाद दस्त, अत्यधिक बीयर पी लेने से उत्पन्न दस्त, ऐसे लक्षण प्रकट होने पर रोगी को दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देनी चाहिए ।

मैग्नेशिया कार्ब 30— यह दवा बच्चों के लिए विशेष उपयोगी है । बच्चा हरी काई जैसा दस्त करता हो, बच्चे के शरीर से खट्टी गन्ध आये, उल्टी करने के बाद पुनः दूध पीने की इच्छा करना, माथे पर पसीना आना, बिना पचे दूध का दस्त में निकलना ऐसे लक्षण सामने आने पर दवा की चार-पाँच गोली बच्चे को दिन में तीन बार चूसने के लिए देनी चाहिए । तुरन्त लाभ होगा ।

पल्सेटिला 30— गरिष्ठ, तले भोजन से लगे दस्त, क्रोध अथवा भय से दस्त आने लगें तब यह दवा विशेष लाभ करती है । दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देनी चाहिए ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

अतिसार से मुक्ति पाने के लिए दिन में 5-6 बार चुम्बक–जल का सेवन करें तथा पेट में आगे-पीछे चुम्बक–पेटी दिन में दो बार 30-40 मिनट तक बाँधनी चाहिए ।

मन्त्र प्रयोग—

सामान्यतया अतिसार के रोग से मुक्ति पाने के लिए शनि मन्त्र का जप किसी शुभ शनिवार के दिन से कम से कम पाँच माला नित्य करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी मन्त्र विशेषज्ञ ज्योतिषी से परामर्श करना चाहिए । मन्त्र निम्न है—**ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।**

यन्त्र साधना—

अतिसार के रोग से मुक्ति पाने के लिए शनिवार के दिन शनि यंत्र की साधना–पूजन व दर्शन करना चाहिए । शनि यंत्र का उल्लेख पीछे के पृष्ठों में किया जा चुका है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

शनि की होरा में सहदेवी पौधे की जड़ लाल धागे की सहायता से कमर में बाँधने से अतिसार रोग शान्त हो जाता है । यह प्रयोग परीक्षित है ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतया अतिसार रोग से मुक्ति पाने के लिए काला हकीक चाँदी की अंगूठी में मढ़ाकर, दाहिनी मध्यमा में धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितयों में किसी रत्नविद् ज्योतिषी से परामर्श करना चाहिए ।

विशेष— उपरोक्त रत्न धारण शनिवार के दिन शनि की होरा में करना चाहिए अन्यथा रत्न अपना पूर्ण प्रभाव नहीं दिखायेगा ।

गुरु रत्न—भारतीय ज्योतिर्विज्ञों ने अनेक शोधों व अनुसन्धानों के उपरान्त गुरु ग्रह के दुष्प्रभाव से उत्पन्न रोगों से मुक्ति के लिए पुखराज रत्न धारण करने का परामर्श दिया है । जन्म कुण्डली में गुरु नीच राशिस्थ क्षीण अथवा शत्रुक्षेत्री होने पर अशुभ प्रभाव डालता है । जिसके फलस्वरूप अनेक प्रकार के रोग जातक को पीड़ित करने लगते हैं । उन रोगों से मुक्ति पाने के लिए पुखराज रत्न धारण करना सर्वश्रेष्ठ उपाय माना गया है ।

पुखराज–रत्न का परिचय— प्राचीन काल से ही पुखराज रत्न की गणना अत्यन्त मूल्यवान रत्नों में की जाती है । पुखराज रवेदार रत्न होता है तथा यह चतुर्भुज खण्डों

(Rhombic) के रूप में मिलता है । यह एक पारदर्शक और कठोर खनिज है । सामान्य पुखराज को पीले रंग का पत्थर समझते हैं जबकि वास्तविकता यह है कि यह कई रंगों में पाया जाता है । विशुद्ध असली पुखराज तो रंगहीन होता है । पुखराज के विभिन्न रंगो के शेड्स इस प्रकार हैं—

1. गुलाबी 2. हल्का नीला 3. हल्का हरा 4. शराबी पीला 5. रंगहीन पुखराज ।

पुखराज को अँग्रेजी में टोपाज; संस्कृत में पुष्य-राग, हिन्दी में पुष्पराग, फारसी में जर्द याकूत तथा लेटिन में टोपेजियो कहते हैं । संसार में ब्राजील का पुखराज सबसे अच्छा माना जाता है ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने पर पता चलता है कि पुखराज निम्न रासायनिक कंगठन का यौगिक है । सिलिका– 33.3%, एल्यूमिना - 56.5%, फ्लोरिन - 10.1%

वैज्ञानिक विश्लेषण से यह स्पष्ट हो चुका है । कि पुखराज में फ्लोरिन के साथ एल्यूमिनियम सिलिकेट होते हैं । इस प्रकार पुखराज की उन थोड़े से रत्न खनिजों की श्रेणी में आ गया है जिसमें फ्लोरिन तत्त्व पाया जाता है ।

वैज्ञानिक शोध व अनुसंधान के पश्चात निष्कर्ष रूप में यह बात कही गयी है । कि पुखराज में अल्प मात्रा में जल भी होता है । ब्रस्टर नाम के एक वैज्ञानिक ने इस तथ्य का पता लगाया था कि पुखराज के तरलावस्था से धनावस्था में आते समय कुछ जलांश अंदर रह जाता है, परन्तु ऐसा सदैव नहीं होता । पुखराज का रसायनिक सूत्र $Al_2F(OH)_2 SiO_4$ होता है । इनकी कठोरता 9 है और आपेक्षित घनत्व 4 है । इसकी द्युति काँचमयी होती है । पुखराज का दुहरावर्तन 0.008 तथा अपकिरणन 0.014 होता है ।

पुखराज रत्न तथा उसकी उत्पति— वेद तथा पुराणों में पुखराज पीली कान्ति वाला, मुलायम, चिकना, हाथ में लेने पर बजनी लगने वाला, पीले कनेर अथवा चम्पा के रंग वाला, पारदर्शी किरण का पत्थर माना गया है । प्रथम शताब्दी के महान लेखन प्लीनी ने अपनी पुस्तक में एक अध्याय में रत्नों का विवेचन विस्तारवूर्वक किया है । प्लीनी ने अपनी पुस्तक में पुखराज शब्द का प्रयोग किया है । उसका तात्पर्य पीले पत्थर से हो रहा है । आजकल पीला स्फटिक भी पुखराज कहकर बेचा जाता है । पीले रत्नों के लिए पुखराज शब्द का प्रयोग करने में यह भूल प्राचीन इतिहास के कारण ही प्रचलित है क्योंकि तब प्रत्येक पीला पत्थर पुखराज ही कहलाता था ।

पुखराज शब्द संस्कृत शब्द तापस से बना है, जिसका अर्थ अग्नि होता है । कुछ लोग पुखराज को ग्रीक शब्द टोपाजोम से बना हुआ मानने हैं । उत्तम जाति का पुखराज उसे कहते हैं, जिसे कसौटी पर घिसने से उसकी चमक में और निखार आ जाता है ।

आमतौर पर पुखराज ग्रेनाइट पाइप तथा मैग्नेटाइट शिलाओं में उत्पन्न जल-बाष्प तथा प्रलोरिन गैस की क्रिया से बनते हैं । पुखराज के साथ टर्मेलीन स्फटिक, टंगस्टन जैसे दूसरे खनिज भी प्राप्त होते हैं । साधारण पुखराज पाइरोफोइसेलाइट नामक मणिभ के रूप में मिलता है । पुखराज के अन्य मणिक पिकनाइट बोहिमया तथा सैक्सोनी के नाम से प्रसिद्ध है । सैक्सोनी मणिक में यह टमैलीन विल्लौरी शिलाओं में अस्तर के रूप में जमा हुआ मिलता है । सर्वश्रेष्ठ कोटि का पुखराज ब्राजील की खानों से प्राप्त होता है । श्री लंका, जापान, मैस्किको भारत आदि देशों के भी पुखराज पाये जाते हैं ।

भारत में पुखराज विहार प्रान्त के सिंहभूमि जिले में कन्यालुका के समीप पाया जाता है । इसी प्रकार बाकरा और धागीडीह में भी पुखराज मिलता है । भारत में पाये जाने वाला पुखराज अच्छी कोटि का नहीं होता, इसलिए ये मूल्यवान न होकर अल्पमोली होते हैं । भारत में पुखराज का व्यवहार आदि काल से होता आ रहा है । प्राचीन काल में राजा, महाराजा व सेनापति आदि अपने वक्षकवच पर इसे अत्य रत्नों के साथ जड़वाते थे ।

वर्मा, यूराल पर्वत, तुर्किस्तान, आयरलैंण्ड, इराल, स्काटलैण्ड में भी उच्च कोटि का पुखराज मिलता है । वर्मा की भाषा में यह आउटफिया कहलाता है । लंका में प्राप्त होने वाले पुखराज पीले, हल्के हरे अथवा रंगहीन होते है । चीन में लोग पुखराज के तावीज बनाकर धारण करते हैं । इसी प्रकार मिश्र में भी ईसा से 500 वर्ष पूर्व लोग पुखराज रत्न को धारण करते थे ।

गुलाबी पुखराज केवल ब्राजील में ही मिलता है । आभूषणों में प्रयोग होने वाले पुखराज ब्राजील से आते हैं । असली प्राकृतिक पुखराज के रवे त्रिकोणाकार तथा मीनारी सिरे तथा मीनारी सिरे वाले होते हैं ।

पुखराज रत्न तथा उसकी पहचान— पुखराज की विशिष्टता, प्रसिद्धि और अत्यधिक कीमत के कारण वाजार में नकली किस्म के पुखराज रत्न धड़ल्ले से बिकने लगे । अतः पुखराज खरीदते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए । सामान्य रूप में निम्न तरीकों से असली पुखराज रत्न परीक्षा की जाती है ।

(1) पुखराज को दूध में घण्टे भर के लिए रख दें । असली पुखराज होने की अवस्था में उसकी चमक में कोई कमी नहीं आयेगी, अन्यथा चमक क्षीण हो जायेगी ।

(2) टूर्मेलीन और काँच के नकली पुखराज देखने में असली जैसे ही लगते हैं। टूर्मेलीन पत्थर पुखराज की खानों में पाया जाता है। टूर्मेलीन अल्पमोली पत्थर है किन्तु इसके रंग से असली पुखराज का भ्रम पैदा हो जाता है। सामान्य तौर पर जौहरी असली पुखराज के दाम लेकर ग्राहकों को टूर्मेलीन दे देते हैं। टूर्मेलीन और असली पुखराज विशिष्ट गुरुत्त्व के अन्तर के द्वारा पहचाने जा सकते हैं। टूर्मेलीन का विशिष्ट गुरुत्त्व पुखराज से बहुत कम होता है।

(3) असली पुखराज जहरीले जानवरों के विष प्रभाव को तुरन्त समाप्त कर देता है जबकि नकली पुखराज में ऐसा नहीं होता। जहरीला जानवर जिस स्थान पर काटे, वहाँ पुखराज घिसकर लगाना चाहिए। यदि विष-प्रभाव तुरन्त समाप्त हो जाए तो पुखराज को असली समझना चाहिए।

(4) वर्त्तनांक मापक यन्त्र द्वारा मापें तो असली पुखराज का वर्तनांक 1.63 के लगभग होता है। अगर परीक्षा योग्य पत्थर का वर्तनांक 1.63 के लगभग आवे तो उसे असली पुखराज समझना चाहिए, अन्यथा नकली समझें।

(5) सफेद कपड़े पर पुखराज को रखकर सूर्य की धूप में देखने पर कपड़े पर पीली झाँई दिखाई देगी।

(6) असली में वायु के बुलबुले अनियमित होते हैं जबकि नकली में यह गोल होते है। इसके अलावा काँच का पुखराज जल्दी घिस जाता है तथा उस पर खरोंचे आ जाती हैं, जबकि असली में ऐसा नहीं होता।

श्रेष्ठ कोटि का पुखराज रत्न तथा उसके गुण— सभी पुखराज रत्न उत्कृष्ट कोटि के नहीं होते। एक त्रुटिहीन तथा असली पुखराज बहुत मूल्यवान होता है। जबकि त्रुटिपूर्ण असली पुखराज बहुत कम मूल्य में बिकते हैं। एक श्रेष्ठ पुखराज में निम्न विशेषतायें पायी जाती हैं।

(1) श्रेष्ठ कोटि का पुखराज शेरी यलो (**sherry - yellow**) (शेरी स्पेन की एक शराव का नाम है) आभा वाले रंग का होता है।

(2) इसका पानी चमकदार होता है तथा देखने में चिकना, पारदर्शी तथा व्यवस्थित किनारे वाला होता है।

(3) इसमें लाल और काले-छींटे, बिन्दु, गड्ढे तथा खुरदरा-पन नहीं होता।

(4) इसको रगड़ने पर इसमें विद्युत तरंगें उत्पन्न होती हैं जिससे यह हल्की पस्तुओं जैसे कागज के छोटे टुकड़ों, को अपनी ओर खींचने लगता है।

(5) उत्तम श्रेणी के पुखराज में बहुत अच्छी पालिस आती है।

दोषपूर्ण पुखराज रत्न तथा उसका प्रभाव— उत्तम श्रेणी के पुखराज रत्न को धारण करने से जहाँ गुरु के दुष्प्रभाव व अनिष्ट समाप्त होते हैं, वहीं त्रुटिपूर्ण पुखराज को धारण करने पर अनेक प्रकार के रोग व परेशानियाँ उत्पन्न होती हैं । अतः पुखराज रत्न धारण करते समय किसी सुयोग्य ज्योतिर्विज्ञ से परामर्श अवश्य कर लेना चाहिए । पुखराज रत्न में निम्न दोष तथा प्रभाव होते हैं ।

जाल— यदि पुखराज रत्न में मकड़ी का जाल ऐसा बुना हुआ हो तो ऐसा पुखराज भूलकर भी धारण नहीं करना चाहिए । जालयुक्त पुखराज रत्न की अंगूठी धारण करने पर स्वास्थय में गिरावट आती है ।

दुरंगा— किसी-किसी पुखराज में दो रंग आपस में मिले रहते हैं । ऐसे दुरंगे पुखराज रत्न को धारण करना ज्योतिषीय परामर्श में रोगों को आमन्त्रित करना बताया गया है । अतः दुरंगा पुखराज रत्न की अंगूठी धारण नहीं करना चाहिए ।

सुन्न— जिस पुखराज में कोई चमक अथवा आभा नहीं दिखलाई देती उसे भूलकर भी धारण न करना चाहिए । सुन्न पुखराज रोग वृद्धि का सूचक माना गया है ।

श्वेत अथवा श्याम बिन्दु युक्त पुखराज रत्न— जिस पुखराज में छोटे-छोटे सफेद अथवा काला बिन्दु दिखलाई पड़ें, उसे कभी भी धारण नहीं करना चाहिए । ज्योतिषीय परामर्श के अनुसार श्वेत बिन्दु युक्त पुखराज रत्न मृत्युकारक, काले विन्दु युक्त पुखराज रत्न मृत्युकारक पशुधन में हानिकारक बताया गया है । अतः उपरोक्त दोषपूर्ण पुखराज रत्न धारण करना वर्जित माना गया है ।

दूधक पुखराज— जिस पुखराज रत्न का रंग दूध के समान हो, उसे धारण करने से स्वास्थ्य–हानि होती है ।

खड्डा अथवा रक्तिम आभा-युक्त पुखराज— जिस पुखराज में खड्ड पड़ा हो अथवा जिसमें लाल-लाल रक्त जैसे छींटे पड़े हों, ऐसे पुखराज को ज्योतिषीय दृष्टिकोण से दोषपूर्ण माना गया है । उपरोक्त दोषयुक्त पुखराज रत्न धारण करने से धन का नाश होता है तथा लक्ष्मी भी कुपित हो जाती है ।

चीरी पुखराज— जिस पुखराज में खड़ी धारियाँ हो उसके धारण करने से सम्बन्धियों से वैचारिक मतभेद बढ़ते हैं ।

पुखराज रत्न तथा उससे जुड़े कुछ ऐतिहासिक तथ्य— संसार का सबसे बड़ा पुखराज रत्न 7725 केरेट का है । आजकल यह पुखराज अमेरिका के नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम में रखा हुआ है । यह ब्राजील की लोपिकोजारियस खान से निकला था ।

पुखराज के मणिभ सुई की नोंक के बराबर से लेकर अत्यधिक बड़े-बड़े आकारों

में मिलते हैं । ब्रेगैन्जा स्टोन के नाम से पुर्तगाल का 1680 कैरट का पुखराज काफी दिनों तक हीरा के रूप में जाना जाता रहा है । ब्रिटिश म्यूजियम ऑफ हिस्ट्री के संग्रहालय में 614 कैरट का एक हल्के पीले रंग का पुखराज आज भी शोभा बढ़ा रहा है । यह पुखराज ब्राजील की एक खान से निकला था । इसी प्रकार सन् 1901 में नार्वे के सेण्टर्सडालेन नामक स्थान से दो फुट लम्बा तथा 136 पौंड वजन का एक बहुमूल्य तथा उत्तम कोटि का पुखराज रत्न प्राप्त किया गया था ।

गुरु रत्न पुखराज और उसके उपरत्न— रत्न-विशेषज्ञों एवं वैज्ञानिकों ने अनेक शोध व अनुसन्धान के पश्चात् पुखराज रत्न के बदल को खोज निकाला है । ये उपरत्न रत्नों की तुलना में अल्पमोली होते हैं किन्तु लाभ व प्रभाव के दृष्टिकोण से मूल रत्न से कम महत्त्वपूर्ण नहीं होते । पुखराज के पूरक-रूप में निम्न उपरत्नों को धारण किया जाता है ।

पीला मोती— यह मोती ही होता है । केवल अन्तर इतना होता है कि इनका रंग पीला होता है । यह अल्पमोली तो नहीं होता, किन्तु पुखराज की तुलना में इसका मूल्य बहुत कम होता है ।

सुनहला— यह सोने के रंग की तरह का चमकदार हल्का पीला रत्न होता है । यह विश्व के लगभग सभी देशों में पाया जाता है । यह अल्पमोली रत्न देखने में पारदर्शक होता है । इसे गोल्डन क्वार्टज के नाम से भी जाना जाता है । आजकल यह उपरत्न पुखराज के बदल के रूप में बाजार में बहुत अधिक प्रचलित है ।

कैरू— पुखराज के उपरत्न के रूप में प्रयोग किए जाने वाला यह उपरत्न देखने में पीतल के समान आभा बिखेरने वाला तथा टूटने पर कपूर की सुगन्ध फैलाने वाला होता है ।

पीला जिरकान— पीला जिरकान पुखराज के बदल के रूप में प्रयोग किया जाता है । यह अल्पमोली होता है तथा सामान्य आर्थिक स्थिति वाले भी इसे खरीद सकते हैं ।

लग्न के आधार पर पुखराज रत्न धारण करने का ज्योतिषीय परामर्श—

सभी लग्न वालों को पुखराज रत्न शुभ फलदायी नहीं रहता तथा इसका शुभ प्रभाव भी सभी लग्नों में समान रूप से नहीं होता । अतः पुखराज रतन धारण करने से पूर्व जातक अपने लग्न की स्थिति का अवलोकन अवश्य कर लें । जातक पुखराज धारण करने से पूर्व निम्न तथ्यों से सर्वप्रथम आश्वस्त हो लें :—

मेष लग्न— मेष लग्न वाले जातक को पुखराज रत्न धारण करना ज्योतिषीय परामर्श में शुभ तथा लाभकारी पाया गया है । मेष लग्न में गुरु नवम तथा द्वादश भाव का स्वामी होता है । नवम त्रिकोण का स्वामी होने से गुरु बल, बुद्धि, उन्नति व ज्ञान के

लिए विशेष लाभकारी होता है । अतः गुरु की महादशा अथवा अन्तरदशा में पुखराज रत्न धारण करना विशेष कल्याणकारी होता है । कुछ ज्योतिर्विद पुखराज के साथ लग्नेश मंगल का रत्न मूँगा भी धारण करना बताते हैं ।

वृष लग्न— वृष लग्न वालों के लिए पुखराज रत्न धारण करना ज्योतिर्विज्ञों तथा रत्न विशेषज्ञों ने वर्जित माना है । वृष लग्न में गुरु अष्टम और एकादश भाव का स्वामी होता है । अष्टम भाव मारकेश माना जाता है । अतः वृष लग्न वाले पुखराज रत्न केवल कुछ विशेष परिस्थितियों में सुयोग्य रत्न-विशेषज्ञ ज्योतिषियों के परामर्श पर धारण करें ।

मिथुन लग्न— मिथुन लग्न वालों के लिए पुखराज रत्न केवल ज्योतिर्विज्ञों के परामर्श पर धारण करना चाहिए । मिथुन लग्न में गुरु सप्तम एवं दशम भाव का स्वामी होता है । मिथुन लग्न में गुरु केन्द्राधिपति दोष से ग्रसित होता है, क्योंकि यह सप्तम एवं दशम दो-दो केन्द्र भावों का स्वामी होता है । कुछ ज्योतिर्विज्ञों की राय में पुखराज रत्न धारण करने से आर्थिक लाभ तो होता है, किन्तु प्रबल मारकेश होने के कारण अशुभ माना जाता है ।

कर्क लग्न— कर्क लग्न वालों के लिए पुखराज रत्न धारण करना शुभ तथा कल्याणकारी माना गया है । कर्क लग्न वाले यदि पुखराज रत्न धारण करें तो उन्हें सन्तान सुख, पितृ-सुख, आर्थिक लाभ प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है तथा ज्ञान-वृद्धि भी होती है । कुछ ज्योतिर्विज्ञ पुखराज के साथ कर्क लग्न के लग्नेश चन्द्र का रत्न मोती भी धारण करना शुभ मानते हैं । अतः कर्क लग्न के जातक पुखराज और मोती रत्न की अँगूठी बनवाकर धारण करें तो उन्हें विशेष लाभ होता है ।

सिंह लग्न— सिंह लग्न वाले जातक को पुखराज रत्न धारण करना ज्योतिषीय परामर्श में लाभकारी व कल्याणवर्द्धक माना गया है । सिंह लग्न में गुरु पंचम त्रिकोण और अष्टम भाव का स्वामी होता है । पंचम त्रिकोण का स्वामी होने के कारण गुरु सिंह लग्न वालों के लिए योगकारक ग्रह बन गया है । अतः इस लग्न वाले जातक गुरु की महादशा अथवा अन्तरदशा में पुखराज रत्न धारण करें तो उन्हें विशेष लाभकारी सिद्ध होगा । कुछ ज्योतिर्विद सिंह लग्न वाले जातक को पुखराज के साथ माणिक्य धारण करना सर्वश्रेष्ठ मानते हैं ।

कन्या लग्न— कन्या लग्न वालों को पुखराज रत्न धारण करते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए । क्योंकि कन्या लग्न में गुरु चतुर्थ और सप्तम भाव का स्वामी होता है । चूँकि गुरु दो केन्द्र भावों का स्वामी होता है इसलिए केन्द्राधिपति दोष से ग्रसित होता है । अतः कन्या लग्न वाले किसी योग्य ज्योतिर्विज्ञ की सलाह पर ही पुखराज रत्न धारण करें । कुछ ज्योतिर्विज्ञों के अनुसार पुखराज रत्न धारण करने पर आर्थिक लाभ

प्रदान करते हुए भी यह मारकेश बन सकता है । अतः पुखराज रत्न धारण करते समय पूरी सावधानी रखनी चाहिए ।

तुला लग्न— तुला लग्न वाले जातक के लिए पुखराज धारण करना अत्यन्त अशुभ माना गया है । तुला लग्न में गुरु तृतीय और षष्ठ भाव का स्वामी होता है । अतः इस लग्न के लिए गुरु अत्यन्त अशुभ ग्रह माना गया है । साथ ही तुला लग्न का स्वामी शुक्र है । शुक्र और गुरु में अत्यधिक शत्रुता है । इसलिए सभी ज्योतिर्विज्ञों का मत है कि तुला लग्न वाले कभी भी भूलकर पुखराज रत्न धारण न करें ।

वृश्चिक लग्न— ज्योतिषीय दृष्टिकोण से वृश्चिक लग्न वाले जातक के लिए पुखराज रत्न धारण करना अत्यन्त शुभ व सुख-समृद्धि बढ़ाने वाला माना गया है । वृश्चिक लग्न के मंगल तथा गुरु आपस में मित्र–भाव रखते हैं । इसलिए कुछ ज्योतिर्विज्ञों का मत है कि इस लग्न के जातक गुरु की महादशा अथवा अन्तरदशा में पुखराज के साथ मूँगा रत्न धारण करें तो उन्हें विशेष लाभ करेगा । सामान्य रूप से भी इस लग्न में जातक को आजीवन पुखराज रत्न धारण करना लाभकारी माना गया है ।

धनु लग्न— धनु लग्न वाले जातक के लिए पुखराज रत्न सब रत्नों में श्रेष्ठ माना गया है । धनु लग्न का स्वामी गुरु होता है । साथ ही धनु लग्न में गुरु चतुर्थ भाव का स्वामी होता है, जिसके फलस्वरूप गुरु योगकारक ग्रह माना गया है । ज्योतिषीय परामर्श है कि इस लग्न वाले जातक वृश्चिक लग्न वाले जातक की भाँति आजीवन पुखराज रत्न धारण करें । पुखराज रत्न धारण करने से जातक को वाहन–सुख, शारीरिक सुख, मातृ-सुख तथा सभी प्रकार के आर्थिक लाभ होंगे । इस लग्न वालों के लिए तो वृहस्पति की महादशा में पुखराज धारण करना परम लाभकारी रहेगा ।

मकर लग्न— ज्योतिषीय दृष्टिकोण से मकर लग्न वाले जातक को पुखराज धारण करना अशुभ माना गया है । मकर लग्न में गुरु तृतीय और द्वादश भाव का स्वामी होता है । अतः मकर लग्न वाले जातक यदि कभी भूल से भी पुखराज रत्न की अँगूठी धारण कर लेते हैं तो यह उन्हें लाभ की जगह हानि होती है ।

कुम्भ लग्न— कुम्भ लग्न वाले जातक को पुखराज रत्न धारण करते समय विशेष सावधानी बरतनी चाहिए । कुछ ज्योतिर्विज्ञ तथा रत्न-विशेषज्ञ कुम्भ लग्न जातक को पुखराज रत्न धारण की सलाह देते हैं तो कुछ गुरु के मारकेश होने के कारण पुखराज रत्न धारण करना वर्जित मानते हैं । कुम्भ लग्न में गुरु द्वितीय तथा एकादश भाव का स्वामी माना गया है । कुछ ज्योतिष-विशेषज्ञों के अनुसार इस लग्न वालों को पुखराज धारण

करने से आर्थिक लाभ तो होगा लेकिन मारकेश होने के कारण मारण प्रभाव भी हो सकता है ।

मीन लग्न— ज्योतिषीय दृष्टिकोण से मीन लग्न के जातक को पुखराज रत्न धारण करना शुभ तथा कल्याणकारी माना गया है । मीन लग्न में गुरु लग्न तथा दशम भाव का स्वामी होता है । अतः मीन लग्न के जातक गुरु की महादशा अथवा अन्तरदशा में पुखराज रत्न धारण करें तो उनकी सभी मनोकामनायें पूर्ण होंगी । कुछ ज्योतिर्विज्ञ तथा रत्न विशेपज्ञों के अनुसार इस लग्न के जातक मूँगा रत्न के साथ पुखराज धारण करें तो उसको विशेप लाभ होगा ।

पुखराज रत्न तथा चिकित्सा में उसका प्रयोग—

जिस प्रकार ज्योतिषीय परामर्श के रूप में गुरु ग्रह के अशुभ प्रभाव को दूर करने के लिए पुखराज रत्न धारण करना बताया गया है, उसी प्रकार आयुर्वेदिक चिकित्सा प्रणाली में औषधियों के निर्माण में पुखराज भस्म तथा पिष्टि का प्रयोग किया जाता है । भारतीय ऋषि तथा मनीषियों ने प्राचीनकाल से ही गुरु के अशुभ प्रभाव से उत्पन्न रोगों के लिए पुखराज भस्म तथा पिष्टि का प्रयोग करते रहे हैं ।

आयुर्वेद प्रकाश के अनुसार पुखराज विष के प्रभाव को दूर करने वाला, अनुलोमन, शीत वर्गीय रसायन है । यह पाचन, दीपन और हल्का होता है । पुखराज की भस्म अथवा पिष्टि से कफ, वात, मन्दाग्नि, बवासीर, कुष्ठरोग, पीलिया, जलन तथा नक्सीर जैसे असाध्य रोग दूर हो जाते हैं ।

तिल्ली, गुर्दा आदि रोगों में पुखराज को घड़े के जल में घोट कर रोगी को दिन में तीन पर पिलावें तो तुरन्त आराम होता है । पीलिया, एकान्तिक ज्वर आदि में पुखराज की भस्म को चौथाई रत्ती से आधी रत्ती वजन में शहद के साथ देवें तो रोगी को लाभ होता है ।

पुखराज रत्न को मुँह में रखने से दाँत मजबूत होते हैं तथा मुख से सुगन्ध आती है । पुखराज की पिष्टि दिल की कमजोरी, वात पित्त के कारण उत्पन्न रोग, जलन तथा खाँसी को दूर करता है । यकृत के रोग, दस्त, गले के रोग, मिरगी, श्वास-कष्ट, प्रदर कष्ट तथा वीर्य को पैदा व गाढ़ा करने में बहुत लाभदायक सिद्ध होती है । रोगी को पुखराज-पिष्टि तथा भस्म मलाई शहद के साथ देनी चाहिए ।

अतः निष्कर्ष के रूप में पुखराज भस्म अथवा पिष्टि गुरु ग्रह के प्रभाव को समाप्त करने में एक-एक गुणकारी औषधि है ।

■ ■ ■

विषय वासना, कला, सौन्दर्य तथा सांसारिक सुखों का प्रतिनिधि
शुक्र ग्रह

परिचय— सूर्य, चन्द्र की भाँति शुक्र ग्रह भी सौरमण्डल का सदस्य ग्रह है । सौरमण्डल में इसकी स्थिति पृथ्वी और सूर्य के मध्य की कला में वुध के पश्चात् मानी जाती है । यह आकाश में सवसे अधिक रमणीय दिखाई देने वाला ग्रह है । सामान्य रूप में यह सायंकाल तथा प्रातःकाल में दिखाई पड़ता है । सूर्य और चन्द्रमा को छोड़कर यह सौरमण्डल का सवसे चमकीला ग्रह है ।

शुक्र ग्रह अनेक नामों से जाना जाता है । संस्कृत में भार्गव, उशना, भृगु, दानवेज्य, आयुस्फुजित, दैत्यगुरु आदि के नामों से शुक्र ग्रह प्रसिद्ध है । अंग्रेजी में वीनस (Venus) तथा फारसी, उर्दू में जुहारी, जुहरी के नाम से जाना जाता है ।

शुक्र ग्रह भोरका तारा व सन्ध्या-तारा के नाम से भी प्रसिद्ध है ।

पौराणिक परिचय— भारतीय संस्कृति तथा वेद पुराण के अनुसार शुक्र को महर्षि भृगु के पुत्र के रूप में जाना जाता है । जिस प्रकार देवताओं के गुरु वृहस्पति हैं, उसी प्रकार दैत्यों के गुरु शुक्र हैं । इनके केवल एक नेत्र है । इनके एक नेत्र विहीन होने के सम्वन्ध में यह कथा प्रसिद्ध है कि जव वामनवेषधारी विष्णु दैत्यराज वलि को छलने आए थे तव शुक्र जल भरे गंगासागर की टोंटी में कीड़े के रूप में घुस गये थे । ऐसा उन्होंने इसलिए किया कि राजा बलि दान का संकल्प न कर पावें । किन्तु वामन वेषधारी विष्णु ने उन्हें पहचान लिया और उन्होंने टोंटी के छिद्र में कुश डाल दिया जिससे उनकी एक आँख नष्ट हो गयी । सभी दानव शुक्रजी को अपने आचार्य के रूप में सम्मान देते हैं ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— वैज्ञानिक दृष्टिकोण से शुक्र ग्रह का तापमान बहुत अधिक है । जिसके कारण वहाँ पर जीवन तथा किसी प्रकार की वनस्पति नहीं है । यह पृथ्वी से 3,43,00,000 मील दूर है तथा सूर्य से इसकी दूरी 6,70,00,000 मील है । यह अपनी धुरी पर 23½ घण्टे में एक वार परिक्रमा लगा देता है । इसका व्यास बहुत कम है तथा सूर्य की एक परिक्रमा करने में इसे केवल आठ माह लगते हैं । शुक्र ग्रह सामान्य रूप से

एक राशि का एक माह तक संचरण करता है । शुक्र ग्रह वर्ष में एक बार पृथ्वी के बहुत निकट आ जाता है तब इसकी दूरी मात्र 20,00,000 मील ही रह जाती है । उस समय यह अत्यधिक प्रकाशमान तथा तेजोमय दिखलाई पड़ता है । अमेरिका तथा रूस चन्द्रमा व मंगल की भाँति शुक्र ग्रह पर भी पहुँचने के प्रयास कर रहे हैं तथा इनका अन्तरिक्ष-अभियान जारी है ।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण— ज्योतिषीय दृष्टिकोण से शुक्र को काम (Sex) का प्रतीक माना गया है । ग्रहमण्डल में शुक्र को भी गुरु की भाँति मन्त्रि पद दिया गया है । शुक्र के द्वारा पत्नी-सुख, सौन्दर्य, कामेच्छा, वाहन-सुख, संगीत, काव्य आदि का विचार किया जाता है । शुक्र के नैसर्गिक मित्र बुध, शनि राहु तथा केतु हैं । मंगल तथा गुरु से यह समभाव रखता है तथा सूर्य और चन्द्रमा इसके शत्रु हैं । शुक्र स्वाति, कृतिका, आश्लेषा, आद्रा, ज्येष्ठा तथा रेवती नक्षत्र पर शुभ फल देता है, जबकि चित्रा, भरणी, मृगशिरा, धनिष्ठा, पूर्वा फाल्गुनी और पूर्वाषाढ़ा नक्षत्रों पर अशुभ फल देता है । शुक्र ग्रह को शुभ ग्रह माना गया है । इसकी स्वराशियाँ वृष और तुला हैं । यह मीन राशि के 27 अंश तक परम उच्चस्थ तथा मेष राशि के 27 अंश तक परम नीचस्थ माना जाता है । तुला राशि पर यह विशेष बली होता है ।

शुक्र ग्रह जातक के जीवन में प्रायः 25 से 28 वर्ष की अवस्था में अपना शुभ अथवा अशुभ प्रभाव प्रकंट करता है । यह अंक 6 का प्रतिनिधित्त्व करता है तथा इसका अपना वार शुक्रवार है ।

शुक्र-आधिपत्य तथा उत्पन्न होने वाले रोग— शुभ ग्रह को ''काल-पुरुष का काम'' माना गया है । यह ग्रह वीर्य, हावभाव, त्वचा का रंग, मैथुनिक रोग, (स्त्री संसर्गजन्य रोग) तथा मनुष्य शरीर के गुप्तांग का प्रतिनिधित्त्व करता है । प्रभावशाली शुक्र होने पर जातक गोल चेहरा, घुँघराले बालों वाला, विपरीत योनि के प्रति आकर्षित रहने वाला तथा गौरवर्ण का होता है ।

सांसारिक सुख प्राप्त करने के लिए शुक्र का प्रबल होना अनिवार्य है । पृथ्वी पर गढ़े हुए धन के सम्बन्ध में तथा भोग-विलास, उच्च स्तर का रहन-सहन, मदिरा-पान, होटल-व्यवसाय, लाटरी तथा श्रृंगारिक विषयों के प्रति रुचि इसके प्रभाव क्षेत्र में आते हैं ।

यदि जन्म-कुण्डली में शुक्र बली होकर शुभ स्थान में विद्यमान हो तो जातक अभिनेता, उपन्यासकार, कवि, व्यापारी, नर्त्तक, हलवाई होटल व्यवसायी, ज्योतिषी, तान्त्रिक तथा सुगन्धित प्रसाधनों का व्यवसायी होता है ।

यदि जन्म कुण्डली में शुक्र निर्वल, अस्त अथवा वक्री हो तो जातक को अनेक रोगों का सामना करना पड़ता है । अशुभ प्रभाव से जातक प्रमेह रोगी, चर्म रोगी, मूत्राशय सम्बन्धी रोगी, मैथुन रोगी तथा माँस सम्बन्धी रोग दोष से पीड़ित होता है । गुरदा, कफ, वीर्य तथा स्त्री-संसर्ग से उत्पन्न गुप्त रोग से उसे कष्ट उठाना पड़ता है । शुक्र ग्रह को भोग-विलास मनोरंजन तथा सांसारिक सुखों का प्रतिनिधि माना गया है अतः जातक उपरोक्त रोगों से शुक्र के अशुभ प्रभाव पड़ने पर ग्रसित होते हैं ।

द्वादश भाव में शुक्र से उत्पन्न रोग—

जन्मांक चक्र में शुक्र के विभिन्न भावों की स्थिति के अनुसार भिन्न-भिन्न रोग जातक को पीड़ित करते हैं । सामान्य रूप से शुक्र ग्रह के अशुभ प्रभाव से स्त्री-संसर्ग जन्य रोग, गुरदा, कफ, प्रमेह तथा मैथुन सम्बन्धी रोग उत्पन्न होते हैं ।

प्रथम भाव— यदि जन्मांक चक्र के प्रथम भाव में निर्बल शुक्र राहु के साथ युति करते हुए विद्यमान हो तो जातक को हाइड्रोसील का रोग होता है । इसी प्रकार अस्त शुक्र जातक को वातश्लेष्मा से पीड़ित रखता है । यदि जन्म-कुण्डली में शुक्र कर्क अथवा वृश्चिक राशि में विद्यमान होकर मंगल ग्रह से दृष्ट हो तो जातक वेश्यागामी होकर रतिजन्य रोगों से पीड़ित रहता है ।

द्वितीय भाव— यदि जन्म-कुण्डली में शुक्र द्वितीय भाव में विद्यमान हो तो जातक धनवान, मिष्ठान्न भोजी, दीर्घजीवी, साहसी एवं भाग्यशाली होता है । यदि जन्म कुण्डली में शुक्र द्वितीय स्थान में हो तथा तृतीयेश निर्वल हो तो जातक को नेत्र रोग होता है । शुक्र ग्रह सूर्य अथवा चन्द्र के साथ द्वितीय भाव में युति करें तो जातक रतौंधी से अवश्य पीड़ित होता है ।

तृतीय भाव— यदि जन्म कुण्डली में शुक्र तृतीय भाव में विद्यमान हो तो जातक आलसी, चित्रकार, भ्रमणशील, सुखी एवं धनी होता है । जातक को क्रोध अधिक आता है तथा नेत्र-रोग से पीड़ित होना पड़ता है ।

चतुर्थ भाव— चतुर्थ भाव में शुक्र पाप ग्रहों के साथ युति करता हुआ विद्यमान हो तो जातक परस्त्री-गामी होता है । उसे सुजाक, सिफलिस जैसे गुप्त रोग होते हैं ।

पंचम भाव— यदि जन्म-कुण्डली में शुक्र पंचम भाव में विद्यमान हो तो जातक न्यायशील, उदार, पुत्रवान, व्यवसायी, शत्रुनाशक तथा सुखी होता है । उपरोक्त योग तभी होता है जब शुक्र ग्रह वली हो तथा किसी पाप ग्रह से दृष्ट न हो । यदि शुक्र पाप ग्रह से दृष्ट अथवा अस्त हो तो जातक विलासिनी स्त्रियों का प्रिय होता है तथा उसे स्त्री-संसर्ग जनित रोग होते हैं ।

षष्ठ भाव— यदि जन्म-कुण्डली में शुक्र षष्ठ भाव में विद्यमान हो तो जातक मूत्र रोगी, गुप्त रोगी अथवा स्त्री से हीन होता है । षष्ठ भाव में शुक्र का प्रभाव निष्फल रहता है । जातक को वीर्य सम्बन्धी रोग रहते हैं तथा अन्य शारीरिक रोग भी हुआ करते हैं ।

सप्तम भाव— यदि जन्म-कुण्डली में शुक्र सप्तम भाव में विद्यमान हो तो जातक गुप्तांग का चुम्बन करने वाला होता है । जातक परस्त्रीगामी, रतिपंडित तथा वेश्याओं से प्रेम रखने वाला होता है । यदि शुक्र शनि की युति सप्तम भाव में हो तो जातक की पत्नी व्याभिचारिणी होती है । उसे गुप्त रोग आजीवन पीड़ित करते रहते हैं ।

अष्टम भाव— यदि जन्म-कुण्डली में शुक्र अष्टम भाव में विद्यमान हो तो जातक की माता को गण्डमाला रोग अथवा अन्य कष्ट होता है । यदि अष्टम भाव में वृष, तुला अथवा मीन राशिस्थ शुक्र विद्यमान हो तो जातक को मूत्राशय सम्बन्धी रोग अवश्य होते हैं । जातक परस्त्रीगामी होता है जिससे वह गुप्त रोग ग्रसित रहता है ।

नवम भाव— यदि जन्म-कुण्डली में शुक्र नवम भाव में विद्यमान हो तो जातक को सामान्यतया कोई शुक्र जनित रोग नहीं होता । नवम भावस्थ शुक्र जातक को तपस्वी, पवित्र हृदय वाला, देव-द्विज भक्त, विद्वान, लेखक राजयोग कारक बनाता है ।

दशम भाव— यदि जन्मांक-चक्र में शुक्र ग्रह दशम भाव में विद्यमान हो तो जातक दीर्घायु, ज्योतिषी, माता पिता तथा गुरुजनों का सेवक, मुकदमा से सम्मान पाने वाला, रत्नादि धातुओं का पारखी तथा अधूरी शिक्षा वाला होता है । सामान्य रूप से जातक शुक्र के अशुभ प्रभाव तथा शुक्र जनित रोगों से बचा रहता है ।

एकादश भाव— यदि जन्मांक-चक्र में शुक्र एकादश भाव में विद्यमान हो तो जातक सामान्य तौर से शुक्र-जनित रोगों तथा अशुभ प्रभाव से बचा रहता है । जन्म-कुण्डली में एकादश भाव में शुक्र के स्थित रहने पर जातक भ्रमणशील, प्रेमी, स्त्री जाति में रुचि रखने वाला, राजनीतिज्ञ तथा सम्पन्न आर्थिक स्थिति वाला होता है । किन्तु यदि शुक्र नीचस्थ अथवा अष्टमेश से युक्त हो तो उपरोक्त सुख नहीं मिलता ।

द्वादश भाव— यदि जन्म-कुण्डली में शुक्र द्वादश भाव में विद्यमान हो तो जातक न्यायशील, मितव्ययी, स्थूल काया वाला, वाल्यावस्था में रोगी, परस्त्रीगामी, आलसी तथा नीच कर्म करने वाला होता है । द्वादश भाव में शुक्र मंगल की युति जातक को धातु-विकारी, चिन्ताग्रस्त तथा नेत्र-रोगी बनाती है ।

शुक्र ग्रह तथा उसका राशिगत प्रभाव—

शुक्र ग्रह का द्वादश राशियों का निम्न राशिगत प्रभाव पड़ता है :—

मेष राशि— यदि जन्म-कुण्डली में मेष राशि में शुक्र स्थित हो तो जातक प्रवासी, शत्रुहन्ता, परस्त्री-रत, झगड़ालू तथा काव्यप्रेमी होता है। जातक जीवन में अनेक प्रकार के सुख तथा स्थावर संपत्ति का उपभोग करने वाला होता है।

वृष राशि— यदि जन्म-कुण्डली में शुक्र ग्रह वृष राशि में हो तो जातक सुगन्धित वस्तुओं में रुचि रखने वाला, शत्रु रहित, खेती करने वाला, ऐश्वर्यवान, अनेक विद्याओं का जानकार तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है।

मिथुन राशि— यदि जन्म-कुण्डली में शुक्र ग्रह मिथुन राशि में विद्यमान हो तो जातक साहित्यिक, सज्जन, मधुर-भाषी, संगीत-प्रेमी, मिष्ठान्न भोजन में रुचि रखने वाला तथा समाज में सम्मान पाने वाला होता है।

कर्क राशि— यदि जन्म कुण्डली में शुक्र ग्रह कर्क राशि में विद्यमान हो तो जातक शुभ गुणों से सम्पन्न, धार्मिक रुचि रखने वाला, परोपकारी, चिन्ताशील तथा श्रेष्ठ कार्यों में रुचि लगाकर कार्य करने वाला होता है।

सिंह राशि— यदि जन्म-कुण्डली में शुक्र ग्रह सिंह राशि में विद्यमान हो तो जातक चिंतातुर, अल्पसुखी, शिल्पज्ञ, स्त्री के धन से धनी, बन्धु से दुखी तथा शत्रु से लाभ अर्जित करने वाला होता है।

कन्या राशि— यदि जन्मांक चक्र में शुक्र कन्या राशि में स्थित हो तो जातक धनवान, तीर्थाटन करने वाला, मितभाषी, सभा-पण्डित, रोगी तथा स्त्री के विषय में चिन्ता-शील रहता है। जातक वीर्यहीन, गुप्तरोगी तथा उद्योग में अपयश पाने वाला होता है।

तुला राशि— यदि जन्मांक चक्र में शुक्र तुला राशि में विद्यमान हो तो जातक अनेक प्रकार के वस्त्र, धन से सम्पन्न, भ्रमणशील, कवि, विलासी, कलानिपुण, व्यवसाय से लाभ प्राप्त करने वाला तथा स्त्री पुत्रादि से सुखी होता है।

वृश्चिक राशि— यदि जन्म-कुण्डली में शुक्र वृश्चिक राशि में विद्यमान हो तो जातक झगड़ालू, कुव्यसन से गुप्तेन्द्रिय में रोग, समाज में अपयशी, अल्पधनी, नास्तिक स्त्री-द्वेषी तथा वाद-विवाद में निपुण होता है।

धनु राशि— यदि जन्म कुण्डली में शुक्र धनु राशि में स्थित हो तो जातक विद्वान, राजमान्य, धन, पुत्र तथा स्त्री से सुखी, कवियों से प्रेम करने वाला तथा उत्तम शील-स्वभाव का होता है।

मकर राशि— यदि जन्म कुण्डली में शुक्र मकर राशि में स्थित हो तो जातक वृद्धा स्त्री से रति करने वाला, दुर्बल शरीर वाला, कृपण, दुःखी, कवि-प्रिय तथा वाहन द्वारा त्रास पाने वाला होता है। जातक कफ तथा वात रोग से पीड़ित रहता है।

कुम्भ राशि— यदि जन्म कुण्डली में शुक्र कुम्भ राशि में स्थित हो तो जातक चिंताशील, परस्त्रीरत, धर्महीन, उद्योग-धन्धे में उन्नति करने वाला, कुआरी कन्या से प्रेम करने वाला तथा सबका प्रिय होता है ।

मीन राशि— यदि जन्म कुण्डली में शुक्र मीन राशि में स्थित हो तो जातक दीन मनुष्यों को धन देने वाला, राजा से धन प्राप्त करने वाला, कृषि कर्म का मर्मज्ञ, कार्यदक्ष, धनवान, भाग्यशाली, रत्नों का पारखी तथा शत्रु से भी धन प्राप्त करने वाला होता है ।

शुक्र और स्वास्थ्य

जन्म कुण्डली में शुक्र ग्रह की अशुभ स्थिति निम्न रोग उत्पन्न करती है—

- धनुर्वात
- प्रमेह रोग (मधुमेह)
- प्रदर रोग
- मूत्राशय सम्बन्धी रोग
- एडस
- उन्माद और अनिद्रा
- दन्त-शूल
- नकसीर
- हिस्टीरिया
- कफ, वात-प्रकोप
- स्वप्न-दोप
- श्वास सम्बन्धी रोग

धनुर्वात (टिटेनस)

टिटेनस की बीमारी को धनुस्तम्भ, पेशी तनाव, धनुष्टंकार, हनुस्तम्भ आदि कई नामों से जाना जाता है । यह रोग ''क्लोस्ट्रीडयम टिटेनी'' नामक जीवाणु के संक्रमण से होता है । यह एक ऐसा संक्रामक रोग है जिसके कीटाणु छोटी से छोटी खरोंच या घाव के माध्यम से रक्त में प्रवेश कर अपना असर दिखाते हैं । यह एक भयंकर जानलेवा रोग है ।

टिटेनस के जीवाणु के आक्रमण करने पर व्यक्ति को रह-रहकर आक्षेप आने लगते हैं, जिससे पूरा शरीर धनुप की तरह टेढ़ा होकर झुक जाता है । चेहरे की पेशियों का खिंचकर कड़ी हो जाना, आँखों का ऊपर की ओर चढ़ जाना, गले में दर्द, दाँत भिंच जाना, तेज बुखार, शरीर निर्जीव सा हो जाना, गर्दन अकड़ जाना आदि सब लक्षण टिटेनस के रोग में देखने को मिलते हैं ।

घरेलू औषधियाँ :

- योगेन्द्र रस, वात कुलान्तक रस दोनों की दो-दो गोली शहद के साथ दिन में तीन बार रोगी को देने से टिटेनस के रोग पर काबू पाया जा सकता है ।

■ दिन में चार पाँच बार टिटेनस से प्रभावित अंगों पर हल्की सेंक देने से भी रोग पर नियन्त्रण हो जाता है ।

होमियोपैथिक चिकित्सा

हाइड्रोसाएनिक एसिड 6— यदि टिटेनस के लक्षण माँसपेशियों, जबड़े, चेहरे तथा पीठ आदि पर दिखलाई पड़े तो इस औषधि की चार-पाँच गोली प्रत्येक चार घण्टे के अन्तराल में रोगी को देना चाहिएं ।

बेलाडोना 30— यह दवा बच्चों के लिए विशेष लाभकारी है । यदि बच्चों में टिटेनस के लक्षण जबड़ों में दिखलाई पड़े तो इसकी चार-पाँच गोली दिन में चार बार माँ के दूध में मिलाकर देनी चाहिएं ।

हाइपेरिकम 30— यदि शिराओं में चोट लगने के कारण अथवा रीढ़ में चोट लगने के कारण टिटेनस के लक्षण दिखलाई पड़ें तो इसकी दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार रोगी को देना चाहिए ।

नक्स वोमिका 30 अथवा इग्नेशिया 30— यदि रोग के लक्षण में आँख तथा चेहरे में टेढ़ापन दिखलाई पड़े, साँस भारी हो जाए, रोगी हाँफने लगे, श्वास-यंत्र में आक्षेप हो जाए, चेहरा नीला पड़ जाए तो इस दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार रोगी को देना चाहिए ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

टिटेनस से प्रभावित अंग में चुम्बकीय तेल लगायें तथा चुम्बक को उस अंग में 30-40 मिनट तक बाँधे रहें ।

विशेष— टिटेनस एक भयंकर जानलेवा रोग है । अतः किसी योग्य चिकित्सक से परामर्श अवश्य कर लें ।

मन्त्र प्रयोग—

सामान्यतया टिटेनस के रोगी से संकल्प कराकर योग्य विद्वान ब्राह्मण से निम्न शुक्र मन्त्र का ग्यारह माला जप कराने से यह रोग शान्त होता है । विशेष परिस्थितियों में किसी मंत्र विशेषज्ञ ज्योतिषी से परामर्श करें— **मन्त्र— ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः**

विशेष— उपरोक्त शुक्र मंत्र के जप का प्रारम्भ शुक्रवार से ही करें तथा मंत्र जप कम से कम 90 दिन अवश्य करायें ।

यंत्र-साधना—

शुक्र-जनित अशुभ प्रभाव से उत्पन्न रोगों से मुक्ति पाने के लिए निम्न शुक्र यंत्र का

पूजन व दर्शन लाभकारी तथा कल्याणकारी होता है ।

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

किसी शुभ मुहूर्त्त में स्वाति नक्षत्रगत शुक्रवार को शुक्र यंत्र की रचना भोजपत्र पर सफेद चन्दन की स्याही तथा अनार की कलम द्वारा करनी चाहिए । यन्त्र-लेखन के उपरान्त इसे विधि-विधान से शोधन व पूजन करके चाँदी के तावीज में भरकर टिटेनस के रोगी के गले में पहना देना चाहिए । इसके धारण करने से योग से मुक्ति मिल जाती है ।

तांत्रिक प्रयोग—

ग्यारह मुखी रुद्राक्ष को सफेद डोरी की सहायता से टिटेनस के रोगी के गले में धारण कराने से यह रोग चला जाता है ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतया टिटेनस से मुक्ति पाने के लिए सफेद तुरमली रत्न धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी रत्नविद् ज्योतिषी से परामर्श करें ।

एडस— एडस का पूरा नाम ''एक्वायर्ड इम्यूनिटी डिफिसिएन्सी सिन्ड्रोम'' है । इसका मतलब है कि शरीर में जो रोग-प्रतिरोधक शक्ति और शरीर को स्वस्थ रखने की क्षमता होती है, उसका ह्रास होना । इसका प्रतिफल यह होता है कि शरीर की कोशिकाएँ निर्जीव होती चली जाती हैं, मस्तिष्क विकृत हो जाता है और अन्त में रोगी की मृत्यु हो जाती है । एडस एक भयंकर बीमारी है तथा अभी तक इसके बचाव के लिए कोई औषधि चिकित्सा–जगत में तैयार नहीं हुई है । यह एक अति संक्रामक रोग है ।

इस रोग को उत्पन्न करने में सबसे प्रमुख कारण समलैंगिक यौनाचरण (होमो सेक्स) करना है । इसी प्रकार एडस रोगी के शरीर का रक्त किसी को दिया जाए तो उसे भी यह रोग हो जायेगा । नशीले पदार्थ का सेवन और दूसरों से सम्भोग ये कृत्त्य उसके शरीर में यह वायरस पहुँचा देते हैं ।

विशेष— अभी तक किसी भी मूल्य पर कैंसर से भी घातक इस व्याधि की चिकित्सा सम्भव नहीं हो पायी है । अतः **Prevent is the only best way because thene in on remedy** बचाव का उपाय ही एकमात्र इसका श्रेष्ठ इलाज है ।

स्वप्नदोष

यह बीमारी विशेषकर अविवाहित युवकों में पाई जाती है । इस बीमारी का मुख्य कारण दूषित मानसिक चिन्तन व स्थिति ही है । मनुष्य की अतृप्त वासना, कामुक-विचार,

दमित भावनाऐं ही हमें स्वप्न-जगत में ले जाती हैं । स्वप्न में कामुक अंग उत्तेजित होते हैं और स्वप्नदोष हो जाता है । सोते हुए वीर्यपात हो जाना स्वप्नदोष कहलाता है । स्वप्नदोष का रोगी ज्यादातर मानसिक कारणों से ही इस रोग का शिकार होता है । शारीरिक रूप से कब्ज रहना, ज्यादा तेज मिर्च मसाले वाले तले हुए, खट्टे, माँसाहारी व्यंजन और गर्म प्रकृति के पदार्थों का सेवन भी स्वप्नदोष के प्रमुख कारण बनते हैं ।

स्वप्न-दोष से ग्रसित रोगी सदैव खोया-खोया रहता है, तथा शारीरिक दुर्बलता क्रमशः बढ़ती जाती है । रोगी का किसी भी कार्य में मन नहीं लगता तथा सदैव आलस्य का बोध करता रहता है ।

घरेलू चिकित्सा :

- तीन-चार ग्राम मुलहठी का चूर्ण मधु में मिलाकर चाटने से स्वप्नदोष का रोग कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है ।
- रात में सोने के पूर्व एक चम्मच कतीरा गोंद का चूर्ण एक गिलास गोदुग्ध के साथ नियमित लेने से स्वप्नदोष का रोग गायब हो जाता है ।
- 50 ग्राम सफेद बहमन, 50 ग्राम सफेद मूसली को कूट पीसकर महीन चूर्ण बना लें । फिर इसमें पावभर ईसबगोल को बिना कूटे-पिसे मिला लें । इस मिश्रण की पाँच ग्राम मात्रा में पाँच ग्राम ही पिसी मिश्री मिलाकर सुबह–शाम एक गिलास गोदुग्ध के साथ सेवन करें । इसके कुछ दिन के सेवन से स्वप्नदोष का रोग समूल चला जाता है ।
- प्रातःकाल सूर्योदय से पूर्व वट वृक्ष के पत्ते तोड़-तोड़कर एक बतासे में 10 बूँद दूध भर लें और बताशे को खाकर एक पाव गोदुग्ध में पी लें ।

विशेष— उपरोक्त प्रयोग शौच आदि से निवृत्त होने के उपरान्त सर्वप्रथम खाली पेट करना चाहिए ।

- बनारसी आँवले का एक मुरब्बा प्रतिदिन सेवन करने से स्वप्नदोष का रोग कुछ ही दिनों में समाप्त हो जाता है ।
- आधा ग्राम अफीम में दो ग्राम कपूर मिलाकर रात्रि में सोते समय सेवन करने से स्वप्नदोष का रोग ठीक हो जाता है ।
- नियमित रूप से तीन ग्राम मात्रा में कबावचीनी का चूर्ण शीतल जल के साथ लेने से स्वप्नदोष का रोग दूर हो जाता है । इसका सेवन दिन में तीन बार अवश्य करना चाहिए ।

विशेष— स्वप्नदोष से पीड़ित रोगी को उपरोक्त उपचार के साथ-साथ अपने पाचन-

संस्थान तथा पेट को साफ रखना चाहिए । सोने से पूर्व मल–मूत्र का अवश्य त्याग करना चाहिए । रोगी को हल्का, खाद्य यथा-सुपाच्य, हरी शाक-सब्जी, मौसमी फल और कच्चे सलाद का अधिक सेवन करना चाहिए ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

पिकरिक एसिड 6— नींद में वीर्य निकल जाए, कमजोरी महसूस हो, सम्भोग की तीव्र इच्छा बनी रहे तथा ठण्ड अधिक पसन्द हो, तो ऐसे रोगी को इस दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देनी चाहिए ।

एसिड फास 30— यह दवा अविवाहित युवकों विशेषकर विद्यार्थियों के लिए बहुत लाभकारी है । नींद में स्वप्नदोष हो जाए, कमजोरी बनी रहे, याददाश्त क्षीण हो जाए, तो ऐसे रोगी को इसकी चार पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देनी चाहिएं ।

एनाकार्डियम 200— सम्भोग की इच्छा सदैव बनी रहे, स्वप्न-दोष प्रायः होता रहता है तो ऐसी अवस्था में इसकी दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ देने में स्वप्नदोष का रोग दूर हो जाता है ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

- आद्रा नक्षत्रगत शुक्रवार के दिन से चुम्बक सीट का प्रयोग करने से कुछ ही दिन में स्वप्नदोष का रोग दूर हो जाता है ।
- चुम्बक जल का नियमित सेवन करने से भी स्वप्नदोष के रोग सदैव के लिए समाप्त हो जाता है ।

विशेष- चुम्बक–सीट का प्रयोग करने के आधे घण्टे बाद तक कोई ठण्डी वस्तु का सेवन न करें । चुम्बक चिकित्सा के सम्बन्ध में विशेष जानकारी हेतु डा0 आर. एस. अग्रवाल कृत 'होम्यो. चुम्बक चिकित्सा' पुस्तक को भाषा भवन, हालनगंज से मँगाकर पढ़ें ।

मन्त्र प्रयोग—

स्वप्नदोष से मुक्ति पाने के लिए निम्न शुक्र मन्त्र का नित्य ग्यारह माला जप करें— **मन्त्र— ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं, सः शुक्राय नमः ।**

उपरोक्त मन्त्र का श्रद्धापूर्वक जप करने से शुक्र-जनित स्वप्नदोष का रोग कुछ ही दिनों में समूल नष्ट हो जाता है । स्मरण रहे कि यह उपरोक्त मन्त्र का जप शुक्रवार के

दिन से ही प्रारम्भ करना चाहिए । साधना काल में साधक को ब्रह्मचर्य के व्रत का कठोरता से पालन करना चाहिए ।

यन्त्र साधना—

स्वप्नदोष से मुक्ति पाने के लिए शुक्र यन्त्र की साधना व पूजन दर्शन करना चाहिए । शुक्र यन्त्र के विषय में पीछे के पृष्ठों में उल्लेख किया जा चुका है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

■ कृतिका नक्षत्र-गत शुक्रवार को काले धतूरे की जड़ कमर में बाँधने से स्वप्न-दोष का रोग ठीक हो जाता है ।

■ ज्येष्ठा नक्षत्रगत शुक्रवार की रात्रि से सोते समय अपनी माँ का नाम सिराहने रखकर सोने से स्वप्न-दोष का रोग ठीक हो जाता है ।

रत्न-प्रयोग—

सामान्यतया स्वप्नदोष से मुक्ति पाने के लिए फिरोजा रत्न चाँदी की अँगूठी में मढ़ाकर दाहिनी अनामिका में धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी रत्नविद् ज्योतिषी से परामर्श करना चाहिए ।

विशेष— स्मरण रहे कि उपरोक्त फिरोजा रत्न शुक्रवार के दिन धारण करना चाहिए तथा रत्न धारण करने से पूर्व उसे शोधित अवश्य कर लेना चाहिए । बिना शोधित किया हुआ रत्न धारण करने से रत्न का पूर्ण प्रभाव नहीं मिलता ।

दन्तशूल (दाँत का दर्द)

हमारे शरीर को स्वस्थ बनाए रखने में दाँतों का अति महत्त्वपूर्ण स्थान है । अतः दाँतों के प्रति सावधानी व दाँतों को निरोग, मजबूत और सुन्दर बनाए रखने के लिए सभी को प्रयत्नशील रहना चाहिए । बचपन की लापरवाही कभी-कभी गम्भीर बीमारी के उपरान्त दाँतों में रोग लग जाते हैं । जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति को भयंकर दर्द व यातना सहनी पड़ती है । दाँतों में रोग होने का मुख्य कारण शरीर में कैल्शियम की कमी है । दाँतों के रोग निम्न होते हैं ।

■ दन्त-क्षय (कीड़ा लगना)
■ दाँतों के जबड़ों में दर्द
■ दाँत गिरना
■ दाँतों का हिलना
■ मसूढ़ों में रोग

घरेलू औषधियाँ :

- बड़ के दूध को रुई के फाहे में लगाकर दाँत के नीचे रखने से दाँत का दर्द तुरन्त बन्द हो जाता है ।
- दाँतों में कीड़े लग जाने पर थोड़ा कपूर रात को सोते समय दाँतों में रखकर सोयें । इससे कीड़े अन्दर-अन्दर मर जायेंगे तथा दाँत का दर्द दूर हो जायेगा ।
- तुलसी की पत्ती व काली मिर्च की गोली बनाकर दाँत के नीचे रखने से दाँत का दर्द तुरन्त बन्द हो जाता है ।
- बड़ की दातुन नियमित करते रहने से दाँतों का हिलना कुछ ही दिनों में बन्द हो जाता है ।
- नीम की दातुन नियमित करके नीम की पत्ती उबालकर उस पानी से प्रतिदिन कुल्ले करने से मसूढ़ों के रोग, पायोरिया आदि नष्ट हो जाते हैं और मसूढ़े व दाँत मजबूत और निरोग होते हैं ।
- लौंग का तेल रुई की फुरेरी से दर्द वाले मसूढ़े पर लगाने से मसूढ़े का दर्द शीघ्र समाप्त हो जाता है । ध्यान रहे कि तेल दर्द वाले दाँत या मसूढ़े के अतिरिक्त अन्य स्थान पर लग जाने पर छाला पड़ जाता है ।
- कलमी शोरा और बिना बुझा चूना दोनों को समभाग में मिलाकर दर्द के स्थान पर रखने से दाँत दर्द की पीड़ा तुरन्त मिट जाती है ।
- नौसादर तथा अफीम दोनों समभाग में लेकर गोली बना लें । अब इस गोली को दाढ़ के छिद्र पर रखकर दबा दें । इससे छिद्र बन्द हो जायेगा तथा दाढ़-दर्द सदैव के लिए मिट जायेगा ।
- चार-पाँच दाने काली मिर्च को पानी में पीसकर जिस ओर दर्द हो उसके विपरीत कान में डालने से दाँत दर्द बन्द हो जायेगा ।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

फास्फोरस 30— दाँतों की जड़ों से खून आता हो, मसूढ़ों में पस पड़ने से दाँत गिरते हों, दाँतों का रंग बदल जाता हो, दाँत खोखले हों, तो ऐसे रोगी को इस दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देना चाहिए ।

कैलेण्डुला 30— यह दवा पायोरिया में रामबाण का काम करती है । पायोरिया के रोगी को इसकी चार-पाँच गोली दिन में चार बार चूसने के लिए देना चाहिए ।

कैल्केरिया कार्ब 30— छोटे बच्चे जिन्हें कण्ठमाला का रोग होने के पश्चात् दन्त

क्षय होना प्रारम्भ हो गया हो तो ऐसे रोगी को इसकी चार-पाँच गोली माँ के दूध के साथ मिलाकर दिन में तीन वार देना चाहिए ।

लाइकोपोडियम 30— दाहिने जबड़े में दर्द होता हो तथा शाम को दर्द बढ़ जाता हो तो ऐसे लक्षण होने पर दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देना चाहिए ।

कैलिबाइक्रोम 30—बायें जबड़े के दर्द में जबकि प्रातःकाल दर्द बढ़ जाता हो, ऐसे लक्षण होने पर इसकी चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसनी चाहिए ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

मसूढ़ों में दर्द, सूजन, दाँतों में कीड़ा लग जाना, पायोरिया आदि कष्टों में चुम्वक के उत्तरी ध्रुव को दिन में तीन-चार बार 30-40 मिनट तक दर्द की जगह पर लगायें ।

विशेष— उपरोक्त चुम्बकीय चिकित्सा स्वाति, ज्येष्ठा अथवा आद्रा नक्षत्रगत शुक्रवार के दिन अथवा शुक्र की होरा में प्रारम्भ करनी चाहिए ।

मन्त्र प्रयोग—

दाँत के सभी प्रकार के रोगों से मुक्ति पाने के लिए शुक्र मन्त्र का जप शुक्रवार के दिन से प्रारम्भ करें— **मन्त्र— ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः ।**

विशेष— उपरोक्त शुक्र मन्त्र का जप कम से कम नित्य ग्यारह माला अवश्य करें ।

यन्त्र साधना—

दाँत के रोगों से मुक्ति पाने के लिए शुक्र यन्त्र की साधना करनी चाहिए । शुक्र यन्त्र का उल्लेख पीछे के पृष्ठों में किया जा चुका है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

सेंहुड़ की जड़ दाँतों के नीचे दाबकर रखने से सभी प्रकार की दन्त-पीड़ा का शमन होता है ।

विशेष— उपरोक्त तान्त्रिक प्रयोग शुक्रवार के दिन अथवा शुक्र की होरा में ही करना चाहिए ।

रत्न प्रयोग—

सामान्य तथा दाँत सम्बन्धी रोगों से मुक्ति पाने के लिए दान्तला रत्न दाहिनी

अनामिका में धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी रत्नविद ज्योतिषी से परामर्श करना चाहिए ।

विशेष - उपरोक्त दान्तला रत्न शोधन करके शुक्रवार के दिन धारण करना चाहिए ।

नकसीर

इसमें रोगी की नाक से खून गिरता है । यह बहुत खतरनाक बीमारी होती है । यदि इस पर आरम्भ में ही नियन्त्रण नहीं किया जाए तो रोगी की जान भी जा सकती है । नकसीर रोग कई कारणों से होता है । शरीर में अत्यधिक गर्मी भर जाने पर भी कभी-कभी नाक से खून फूटकर निकल आता है । सामान्यतया गर्मियों में यह रोग विशेष होता है । नकसीर के रोगी को तली चीजों तथा मिर्च मसाले से युक्त चाट–पकोड़ी से सख्त परहेज करना चाहिए ।

घरेलू औषधियाँ :

- तीन-चार ग्राम सुहागे को शीतल जल में घोलकर नाक के ऊपर लेप करने से नाक से खून निकलता तुरन्त बन्द हो जाता है ।
- फिटकरी के पानी में कपड़ा तर करके ललाट पर रखने से 10 मिनट में नाक से रक्त निकलना बन्द हो जाता है । यह प्रयोग परीक्षित है ।
- दस-दस बूँद केले के पत्ते का रस कपड़े पर डालकर सुँघाने से नखुनों से खून निकलना अविलम्ब बन्द हो जाता है ।
- ताजे नींबू का रस निकाल कर रोगी के दोनों नथुनों में डालने से नाक से खून निकलना तुरन्त बन्द हो जाता है ।
- आधा किलो जल में दस ग्राम मुलतानी मिट्टी को रात्रि के समय भिगो दें । प्रातःकाल रोगी को यही पानी निथार कर सर्वप्रथम पिलायें । यह प्रयोग नियमित रूप से महीने भर करने से पुराना नकसीर रोग भी समूल चला जाता है ।

  विशेष - जल को मिट्टी के बर्तन में रखना आवश्यक है ।
- हरे धनिया के रस में दो ग्रेन कपूर को घोल कर नाक में टपकाने से नकसीर बहुत जल्दी रुक जाती है ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

पल्सेटिला 30 - यदि मासिक-स्राव अनियमित होना रुक जाता है उसके फलस्वरूप

नकसीर का रोग हो गया हो तो ऐसे रोगी को इसकी चार-पाँच गोली दिन में तीन-चार बार चूसने को दें, कुछ ही देर में खून गिरना बन्द हो जायेगा ।

हेमेमेलिस मूल अर्क 6— दोनों नथुनों से पतले खून की धार बहती हो, खून बन्द होने का नाम न लेता हो तो ऐसे रोगी को दवा के मूल अर्क की कुछ बूँद सुँघा दें, खून निकलना अविलम्व बन्द हो जायेगा ।

आर्निका— चोट लग जाने पर नाक से खून निकलता हो तो इसका प्रयोग किया जाता है । इसके प्रयोग करने से कुछ ही देर में खून निकलना बन्द हो जाता है ।

मिलेफोलियम मूल अर्क या 3— नाक से अकारण खून निकलने लगे तब इसकी कुछ बूँद नस्य की तरह लेने पर खून निकलना तुरन्त बन्द हो जाता है ।

एम्ब्राग्रीसिया मूल अर्क— नाक से खून निकलने पर यह दवा रामवाण औषधि का काम करती है । इसकी मूल अर्क का नस्य लेने पर नाक से खून तुरन्त बन्द हो जाता है ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

- नाक से खून निकलने पर चुम्बक के उत्तरी ध्रुव की बाँयी नथुनों में तथा दक्षिणी ध्रुव को दाहिनी नथुनों पर 20-40 मिनट तक लगाए रखें । नथुनों से खून निकलना बन्द हो जायेगा ।

मन्त्र प्रयोग—

नकसीर के रोग से मुक्ति पाने के लिए शुक्र मन्त्र का जप शुक्रवार के दिन से नित्य ग्यारह माला अवश्य करें— **मन्त्र— ॐ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः ।**

यन्त्र साधना—

सामान्यतया नकसीर के रोग से मुक्ति पाने के लिए शुक्र यन्त्र की साधना व दर्शन पूजन करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी मन्त्र-विशेषज्ञ ज्योतिषी से परामर्श करना चाहिए । शुक्र यन्त्र का विवरण पीछे के पृष्ठों में किया जा चुका है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

आर्दा नक्षत्रगत शुक्रवार के दिन सफेद कनेर की जड़ खोदकर घर ले आवें । तत्पश्चात इसे स्नान आदि कराकर शोधन कर लें । अब इस शोधित जड़ी का सफेद डोरे की सहायता से नकसीर के रोगी के गले में धारण करायें । इसको धारण करने से नकसीर का रोग सदैव के लिए चला जाता है ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतया नकसीर रोग से मुक्ति पाने के लिए सफेद तुरमली रत्न चाँदी की अंगूठी में मढ़ाकर दाहिनी अनामिका में धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी रत्नविद ज्योतिषी से परामर्श करें ।

विशेष— रत्न को धारण करने से पूर्व उसे विधिपूर्वक शोधन अवश्य कर लेना चाहिए अन्यथा रत्न अपना पूर्ण प्रभाव नहीं दिखलाते ।

प्रदर रोग

यह रोग महिलाओं को ही होता है । स्त्री की योनि से निकलने वाले स्राव को श्वेत प्रदर कहते है । जब यह स्राव सफेद पानी के रूप में बहता है तो इसे श्वेत प्रदर कहते है । रक्त प्रदर में खून जाता है ।

प्रदर रोग होने का मुख्य कारण योनि-मार्ग की सफाई न होना है । गर्भाशय में सूजन, विकार तथा मानसिक तनाव के कारण यह रोग महिलाओं को हो जाता है । सामान्तया यह रोग गर्म और तेज मिर्च मसाले वाले व खट्टे पदार्थों का अति सेवन, अधिक सहवास, पित्त का कुपित होना, गर्भाशय में शोथ व विकार, अत्यधिक कामुक विचार आदि के कारण होता है ।

प्रदर का रोग हो जाने पर महिलाओं को किसी योग्य डाक्टक व वैद्य से परामर्श करना चाहिए तथा साथ ही योनि-मार्ग की साफ-सफाई का ध्यान रखना चाहिए । प्रदर रोग से बचाव के लिए प्रतिदिन शौच जाते समय अथवा स्नान करते समय थोड़े गर्म गुनगुने पानी से योनि के अन्दर तक धुलाई-सफाई अवश्य करते रहना चाहिए ।

घरेलू चिकित्सा :

- बबूल की छाल का काढ़ा बनाकर पीने से श्वेत प्रदर के रोग में आराम होता है । इसी काढ़े में जरा सी फिटकरी डालकर नियमित डूस करने से प्रदर रोग कभी नहीं होता ।
- गूलर के सूखे फल को तथा मिश्री को कूट पीसकर चूर्ण बना लें । इस चूर्ण की एक छोटे चम्मच पर खुराक थोड़ा शहद मिलाकर प्रतिदिन सुबह मुँह साफ करके चाट लेने से प्रदर का रोग सदैव के लिए समाप्त हो जाता है ।
- गेंदा के फूल की पंखुड़ियों को एक कप पानी में ठण्डाई की तरह घोटकर छान लें । इस ठण्डाई में एक चम्मच शहद डालकर रोगी को नियमित पिलायें । कुछ ही दिनों में प्रदर रोग समूल नष्ट हो जायेगा ।

- 20 ग्राम कच्ची गुलाबी फिटकरी तथा 2 ग्राम गेरू दोनों को खरल में डालकर कूट-पीसकर बारीक चूर्ण बनाकर कपड़छन कर लें । इस चूर्ण की तीन ग्राम मात्रा प्रदर के रोगी को नित्य सुबह गोदुग्ध के साथ देने से कुछ ही दिनों में प्रदर रोग समूल चला जायेगा ।

विशेष— गोदुग्ध यथासंभव कच्चा ही देना चाहिए तथा रोगी को निराहार तथा प्रातःकाल सर्वप्रथम दवा देनी चाहिए ।

- तीन सौ लीटर जल में 300 ग्राम अशोक की छाल को इतना खौलायें कि पानी एक चौथाई रह जाए । अब इसे उतार कर छान लें तथा इसमें उतना ही गोदुग्ध मिला दें । यह औषधि प्रदर के रोगी को नित्य देने से हफ्ते भर में रोग समूल नष्ट हो जाता है ।
- 20 ग्राम फिटकरी तथा 10 ग्राम हल्दी को कूट पीसकर चूर्ण बना लें । अब इस चूर्ण की डेढ़ ग्राम मात्रा सुबह शाम प्रदर रोगी को जल के साथ दें। हफ्ते भर में रोग का कहीं पता न चलेगा ।
- दस ग्राम सफेद फिटकरी तथा तीन ग्राम चमेली के पत्ते, दोनों को कूट पीसकर रख लें अब इस चूर्ण की एक ग्राम मात्रा बतासे में भरकर नित्य रोगी को खिलायें तथा ऊपर से पाव भर गोदूग्ध पिलायें । हफ्तेभर में पुराने से पुराना प्रदर रोग का कहीं पता न चलेगा ।
- गन्दा बिरोजे का सत एक ग्राम मात्रा में पके हुए एक केले में भरकर प्रदर के रोगी को खिलाने से प्रदर रोग से मुक्ति मिलती है ।

होम्योपैथिक चिकित्सा—

पल्सेटिला 30— यदि योनि मार्ग से सफेद मलाई सा माहवारी थोड़ी मात्रा में, काला सा, थक्केदार निकलता हो, भीतर से ठण्ड महसूस होने पर भी ठण्डी हवा पसन्द हो, प्यास न लगती हो तो ऐसे रोगी को दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देनी चाहियें । कुछ ही दिनों में रोग समूल चला जायेगा ।

कैल्केरिया कार्ब 30— यह दवा कुआरी लड़कियों तथा किशोरियों के लिए रामबाण का काम करती है । ऋतु काल से पहले दर्द होता है, सिर भारी-भारी रहता है । और ठण्डक लगती है । तो ऐसे रोगी को इस दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देनी चाहिए ।

सेवाइना 30— यह दवा रक्त प्रदर होने पर ली जाती है । प्रदर रोगी के कमर

में ऐसा दर्द हो कि कमर टूट जायेगी, गर्भापात के बाद होने वाला अधिक रक्त-स्राव, हिलने-डुलने से रक्त-स्राव शुरू हो जाय तो ऐसे लक्षण होने पर इसकी चार-पाँच गोली दिन में तीन बार रोगी को चूसने के लिए देना चाहिए ।

चाइना 30— रक्त का स्राव अधिक मात्रा में और अधिक दिनों तक होता रहे, समय से पहले स्राव शुरू हो जाय, अधिक स्राव से शरीर दुवला व कमजोर हो गया हो तो ऐसे लक्षणयुक्त रोगी को इसकी दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देनी चाहिए । इसके नियमित सेवन से रोग समूल चला जाता है । यह दवा रक्त प्रदर के लिए उत्तम है ।

एलूमिना 30— प्रदर-स्राव अत्यधिक मात्रा में हो, स्राव का रंग पारदर्शक रहे तथा ठण्डे पानी से धोने पर राहत महसूस हो, ऋतु सदैव समय से पूर्व होता हो तो ऐसे लक्षण युक्त रोगी को दवा की चार पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देनी चाहिए ।

थेलास्पी बरसा पी० 6— अधिक स्राव के साथ-साथ भयंकर दर्द होता हो, स्राव का रंग गहरा हो तथा उसमें से दुर्गन्ध आती हो तो ऐसे लक्षण होने पर दवा की चार पाँच गोली दिन में तीन बार रोगी को चूसने के लिए देनी चाहिए । इसके नियमित सेवन से प्रदर रोग हमेशा के लिए चला जायेगा ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

प्रदर रोग से मुक्ति पाने के लिए नित्य चुम्बक सीट का 20-25 मिनट तक प्रयोग करें । चुम्बकीय जल से शौच के समय अथवा स्नान के समय योनि-मार्ग को सफाई करते रहने से प्रदर रोग कुछ ही दिनों में ठीक हो जाता है ।

विशेष— प्रदर जैसे गुप्त रोग से मुक्ति पाने के लिए नियमित रूप से चुम्बकीय जल का सेवन करना चाहिए ।

मन्त्र प्रयोग—

सामान्यतया प्रदर रोग से मुक्ति पाने के लिए नित्य शुक्र मन्त्र का इक्कीस माला जप करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी मन्त्र-विशेषज्ञ ज्योतिषी से परामर्श करें । स्मरण रहे कि शुक्र-मन्त्र का जप शुक्रवार के दिन से प्रारम्भ करें— **मन्त्र— ॐ वस्त्रं मे देहि शुक्राय स्वाहा ।**

यन्त्र साधना—

प्रदर रोग से मुक्ति पाने के लिए शुक्र यन्त्र की साधना व पूजन दर्शन करना चाहिए ।

शुक्र यन्त्र का विवरण पीछे के पृष्ठों में उल्लिखित है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

स्वाति नक्षत्रगत शुक्रवार के दिन अथवा शुक्र की होरा में अरण्ड की जड़ सफेद डोरी की सहायता से कमर में बाँधने से प्रदर रोग दूर हो जाता है ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतया प्रदर रोग से मुक्ति पाने के लिए सफेद पुखराज रत्न दाहिनी अनामिका में धारण करना चाहीए । विशेष परिस्थितियों में किसी रत्नविद से परामर्श लें ।

मधुमेह (डाइबिटीज)

मधुमेह प्रमेह जाति का एक रोग है । आयुर्वेद में बीस प्रकार के प्रमेह रोग बताये गए हैं । उनमें से एक प्रकार के प्रमेह को मधुमेह कहा गया है । मधुमेह रोग में पेशाब के साथ में शक्कर जाती है तथा यदि मधुमेह को रागी को फोड़े हो जाते हैं तो वे ठीक नही होते ।

मधुमेह का रोग अधिक श्रम करने वाले किसानों व मजदूरों को नहीं होता । यह मोटे व्यक्तियों को अक्सर होता है । मधुमेह का रोग होने पर सम्पूर्ण शरीर में खुजली चलती है । नेत्र-ज्योंति में गिरावट तथा शरीर में पीड़ा आदि लक्षण दिखलाई पड़ते हैं । रात दिन चिन्ता, तनाव, शोक आदि के कारण यह रोग उत्पन्न हो जाता है । मधुमेह के रोगी को भूख तो अधिक लगती है किन्तु उसका वजन कम होने लगता है ।

मधुमेह के रोग से मुक्ति पाने के लिए चिकित्सा के साथ-साथ सन्तुलित आहार और पथ्य पालन का ध्यान रखना चाहिए । रोगी को खुली स्वच्छ हवा में कुछ न कुछ शारीरिक श्रम अथवा व्यायाम करना तथा घूमना व टहलना चाहिए । भोजन में लौकी, आँवले, करेले, पत्ता गोभी जौ, चने अथवा ज्वार की रोटी लेना चाहिए । इसी प्रकार नीबू खीरा, ककड़ी, गन्ना, सन्तरा, अनार का रस, तरबूज तथा मूली लेना हितकारी रहता है । लहसुन, अंकुरित-अन्न, दही, मलाई-रहित दूध, सोयाबीन का सेवन भी मधुमेह के रोग को सन्तुलित करता है ।

घरेलू चिकित्सा—

- नियमित रूप से पूरे जाड़े भर पाँच ग्राम शिलाजीत को गोदुग्ध में मिलाकर पीने से मधुमेह का रोग सदैव के लिए चला जाता है ।

- 400 ग्राम वट वृक्ष की छाल को आधे लीटर पानी में इतना पकायें कि पानी जलकर एक कप रह जाये । अब इसे उतार कर छान लें । इस काढ़े को नियमित सेवन करने से पुराने से पुराना मधुमेह का रोग ठीक हो जाता है ।
- असगन्ध, शंकाहूली, शीतलचीनी, और गुड़मार बूटी इन सबको समभाग में लेकर खरल में कूट-पीसकर चूर्ण बना लें । अब इसकी 2 रत्ती मात्रा शीतल जल के साथ दिन में तीन बार मधुमेह के रोगी को दें । इसके नियमित सेवन करने से मधुमेह का रोग ठीक हो जाता है ।
- जामुन की गुठली तथा गुड़मार बूटी, दोनों को समभाग में लेकर कूट पीसकर चूर्ण बना लें । इस चूर्ण की 5 ग्राम मात्रा गुनगुने पानी के साथ नियमित लेने से मधुमेह रोग से मुक्ति मिलती है ।
- 50 ग्राम सोंठ, 100 ग्राम गुड़मार बूटी, 50 ग्राम जामुन की गुठली, सभी को लेकर खरल में कूट पीसकर चूर्ण बना लें । अब इस चूर्ण को कपड़छन कर ग्वारपाठे के रस में घोटकर चने के बराबर गोलियाँ बना लें । दिन में तीन बार इसकी एक-एक गोली शहद के साथ मधुमेह के रोगी को चटायें । कुछ ही दिनों में पुराने से पुराना मधुमेह रो समाप्त हो जायेगा ।
- नियमित रूप से छुआरे के टुकड़ों को मुँह में रखकर चूसने से मधुमेह का रोग ठीक हो जाता है । दिन में पाँच-सात बार यह प्रयोग करना चाहिए ।
- 20 ग्राम बिनौलों को कूटकर आधे लीटर पानी से पकायें । जब पानी चौथाई रह जाय तब उतार कर छान लें । इस पानी को दिन भर में तीन चार बार दस-दस ग्राम मात्रा में रोगी को पिलाने से कुछ ही दिनों में मधुमेह का रोग ठीक होना प्रारम्भ हो जाता है ।
- बबूल की छाल को छाया में सुखाकर रख लें । नित्य दो ढ़ाई तोला छाल को डेढ़ पाव पानी में डालकर इतना औटायें कि पानी चौथाई रह जाय अब इसे उतार कर छान लें । इस काढ़े को नियमित पीने से कुछ ही दिनों में मधुमेह का रोग ठीक हो जाता है ।
- तेजपात के एक चम्मच चूर्ण को दिन में तीन बार शीतल जल के साथ सेवन करने से मधुमेह का रोग ठीक हो जाता है । यह प्रयोग परीक्षित है ।

हौम्योपैथिक चिकित्सा :

अर्जेन्टम नाइट्रिकम 30— यदि मधुमेह के रोगी को मीठी चीजें अधिक प्रिय लगती हों तथा शरीर का वजन तेजी से घट रहा हो, तो ऐसे रोगी को इस दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने को देना चाहिए ।

फास्फोरिस एसिड 1x— रोगी कमजोरी का अनुभव करता है, हाथ पैर तथा शरीर की मांसपेशियाँ दुखती हैं, पेशाब अधिक आता है, किसी चिन्ता अथवा परेशानी से रोगी ग्रसित हो, पेशाब में शक्कर अधिक आती हो तो ऐसे लक्षण दिखलाई पड़ने पर दवा की चार पाँच गोलियाँ दिन में तीन बार रोगी को चूसने के लिए देना चाहिए । इसके कुछ दिन नियमित सेवन से मधुमेह रोग ठीक हो जाता है ।

आर्सेनिक ब्रोमाइड मूल अर्क— यदि मधुमेह के रोगी को पेशाब में शक्कर जाए तथा पेशाब में चींटी लग जाती हों तो ऐसे रोगी को इस दवा की तीन बूँद दिन में तीन बार आधे गिलास जल में डालकर देनी चाहिए । जब तक पूर्ण लाभ न हो जाये, यह दवा देते रहना चाहिए ।

सिजीजियम जिम्बोलिनम मूल अर्क—रोगी को दिन में कई बार पेशाव जाना पड़ता हो तथा अत्यधिक प्यास लगती हो, तो ऐसे लक्षण दिखलाई पड़ने पर इस दवा की पाँच बूँद मात्रा दिन में तीन बार देनी चाहिए । कुछ दिनों के नियमित सेवन से रोग सदैव के लिए चला जायेगा ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

नाभि में तुलसी की पत्ती का रस डालकर, ऊपर से चुम्बक रखें । यह प्रयोग दिन में दो बार करें तथा प्रत्येक बार नाभि के ऊपर चुम्बक कम से कम आधा-आधा घण्टा रखें । यह प्रयोग नियमित करने से कुछ ही दिनों में मधुमेह का रोग समूल चला जाता है । यह प्रयोग परीक्षित है ।

मन्त्र प्रयोग—

मधुमेह के रोग से मुक्ति पाने के लिए शुक्रवार के दिन से नित्य ग्यारह माला इस मन्त्र का जप करना चाहिए— **मन्त्र— ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः ।**

यन्त्र प्रयोग—

नियमित रूप से शुक्र यन्त्र की साधना व पूजन दर्शन करने से मधुमेह के रोग से मुक्ति मिल जाती है । शुक्र मन्त्र का विवरण पीछे के पृष्ठों में उल्लिखित है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

सरपंखी की जड़ शुक्रवार के दिन शुक्र की होरा में सफेद धागे की सहायता से दहिनी भुजा में धारण करने से मधुमेह का रो समाप्त हो जाता है ।

रत्न प्रयोग—

शुक्रवार के दिन हजरते ऊद की अंगूठी चाँदी में मढ़ाकर धारण करने से मधुमेह के रोग से मुक्ति मिलती है ।

तुरसावा रत्न चाँदी की अँगूठी में मढ़ाकर धारण करने से सभी प्रकार के मधुमेह रोग ठीक हो जाते है ।

विशेष— उपरोक्त शुक्रवार के दिन शोधन तथा पूजन करने के उपरान्त धारण करें । यदि सम्भव हो तो रत्न धाण के पूर्व 108 बार शुक्र मन्त्र का जप कर लें । रत्न को दाहिनी अनामिका में धारण करना चाहिए ।

रत्न परामर्श— अन्य ग्रह की भाँति शुक्र ग्रह का प्रभाव भी मानव शरीर पर पड़ता है । जिसके फलस्वरूप अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते है । ज्योतिपीय दृष्टिकोण तथा परामर्श के अन्तर्गत शुक्र के अशुभ प्रभाव से उत्पन्न रोगों से मुक्ति पाने के लिए हीरा रत्न धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है ।

शुक्र रत्न— जन्म कुण्डली में शुक्र के अशुभ भाव में विद्यमान होने पर अथवा क्षीण होने की दशा में जातक पर शुक्र ग्रह का प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है । शुक्र ग्रह के अशुभ प्रभाव से शुक्रजनित रोग उत्पन्न होते हैं । ऐसी दशा में मुक्ति पाने के लिए शुक्र रत्न के रूप में ज्योतिपीय परामर्श हीरा धारण करने को बताया गया है ।

हीरा परिचय— हीरा एक मूल्यवान रत्न है । यह 'रत्न-राज' कहलाता है क्योंकि अन्य समस्त रत्नों में यह दुर्लभ और कीमती होता है । प्राचीन काल से ही हीरा ध्यानाकर्षण का केन्द्र तथा लोकप्रिय रहा है । भारतीय वेद ग्रन्थों तथा पुराणों में भी हीरा के सन्दर्भ में उल्लेख मिलता है । संस्कृत में इसे वज्रमणि, हीरक, अभेद्य, इन्द्रमणि, फारसी में अलियास, लैटिन में एडामन्टेन, हिन्दी पंजाबी में हीरा तथा अंग्रेजी में डायमण्ड (Diamond) कहते हैं ।

यह माणिक को छोड़कर अन्य सारे रत्नों से कीमती होता है । संसार का सबसे बड़ा हीरा कुलिनन है जिसका वजन 530.2 कैरट है । शुद्ध रवादार कार्बन को ही हीरा कहा जाता है । सन् 1797 में कुछ वैज्ञानिकों ने अपने परीक्षण में हीरे को पिघले हुए शोरे के साथ गर्म करने पर देखा कि हीरा जल उठा तथा उसके जलने से पैदा होने वाली गैस उतनी ही थी जितनी कि इतने भार वाला कोयला जलाने से पैदा होती है । यह कई रंगों में मिलता है तथा इसकी खानें विश्व के कई देशों में है ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने पर हीरा रवेदार विशुद्ध कार्बन का ही एक रूप है । ग्रेफाइट और हीरा एक ही वस्तु के दो रूप हैं । दोनों में अन्तर

केवल कठोरता का है । हीरा एक पारदर्शक तथा कठोर रत्न होता है । इरीडियम को छोड़कर यह प्रकृति का सबसे कठोर खनिज है । हीरे के बनने का वैज्ञानिक निष्कर्ष यह है कि आज से लगभग 1,00,00,000 वर्ष पूर्व जब पृथ्वी ठण्डी हो रही थी तब इसके मध्य मौजूद एक तरल उष्ण चट्टान पर अत्यधिक दबाव पड़ा, जिससे रासायनिक प्रतिक्रिया हुई जिसके फलस्वरूप रवेदार कार्बन के रूप में हीरा परिवर्तित हो गया ।

हीरे की कठोरता 10, आपेक्षिक घनत्त्व 3.4, अपकिरण 0.44 तथा वर्तनांक-241 होता है । हीरे के फैलाव का गुणांक बहुत कम है । यह अत्यन्त ऊँचे तापमान पर भी कठोर बना रहता है । इसी कारण हीरे की चमक कभी समाप्त नहीं होती । हीरे का वर्तनांक अन्य रत्नों से बहुत अधिक है । यही कारण है कि इसके भीतर प्रवेश करने वाला प्रकाश पूरा का पूरा लौटकर आ जाता है ।

उत्तम हीरा के गुण— उत्तम श्रेणी के हीरे में निम्न गुण पाये जाते हैं ।

(1) यह पारदर्शक, चमकदार तथा कठोर होता है । (2) यह अच्छे पानी तथा अच्छे घाट का होता है । (3) यह चिकना होता है तथा हाथों से फिसलता है । (4) इसमें वशीकरण की अपूर्व क्षमता होती है तथा इसके धारण करने से भूत-प्रेत इत्यादि का बिल्कुल डर नहीं रहता है । (5) यह अँधेरे में जुगनू की तरह चमकता है । तथा इसमें सदैव किरणें निकलती रहती हैं ।

असली हीरे की पहचान— 1. गरम पिघले घी में हीरा डाल दिया जाये तो भी तुरन्त जमने लगता है ।

2. गरम दूध में हीरा डाल देने पर दूध ठण्डा हो जाता है ।

3. असली हीरे को चुम्बक पर घिसा जाय तो चुम्बक की चुम्बकीय शक्ति समाप्त हो जाती है । 4. असली हीरा धूप में रखें तो सूर्य की किरणों को शोषित कर लेता है । 5. हीरे में दूसरे रत्नों की अपेक्षा अधिक थर्मस कन्डेक्टिविटी होती है ।

हीरा रत्न तथा इससे जुड़े कुछ ऐतिहासिक तथ्य— नौ रत्नों में हीरे का अपना एक विशिष्ट स्थान है । यूरोप में प्राचीन काल से ही शादी में हीरे की अंगूठी बनबाने का रिवाज रहा है । भारतीय वांङ्मय के वेद तथा पुराणों में भी हीरा रत्न का उल्लेख आया है । भारतवर्ष में हीरे की खान तमिलनाडु, म. प्र. तथा उड़ीसा राज्यों में है । आधुनिक युग में सर्वाधिक हीरे दक्षिण अफ्रीका से प्राप्त होते हैं । भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका अनगढ़ हीरों के सबसे बड़े खरीददार हैं । विश्व में कई हीरे प्रसिद्ध हैं, लेकिन जो प्रसिद्धि कोहेनूर हीरे को मिली, वह किसी भी दूसरे हीरे को न मिल सकी । विश्व के कुछ प्रसिद्ध हीरे तथा उनके विवरण निम्न प्रकार से हैं—

कोहेनूर हीरा— यह विश्व का सबसे प्रसिद्ध हीरा है तथा आजकल ब्रिटिश शाही

परिवार की निजी सम्पत्ति है । कोहेनूर हीरा सन् 1904 में भारत की गोलकुण्डा की खानसे निकला था । उस समय इसका भार 785 कैरट था । बाद में ईरान के शाहं ने इसे मुहम्मदशाह से चतुराई से प्राप्त कर लिया । अन्त में वह हीरा महाराज रणजीत सिंह के पास आया जिन्होंने बाद में इस इग्लैंड की महारानी विक्टोरिया की भेंट कर दिया ।

अकबर शाह— यह हीरा सन् 1650 से सन् 1661तक शाहशहाँ और अकबर के पास रहा जिससे इसका नाम ही अकबर शाह पड़ गया । यह सफेद रंग का व इसका वजन 71.70 कैरट है ।

रीजेन्ट हीरा— यह हीरा भी कोहेनूर की भाँति विश्व विख्यात है तथा यह भी भारत के गोलकुण्डा के समीप एक खान से निकला था । उस समय के मद्रास के गवर्नर सर टामस पिट ने खरील लिया । तब से रीजेण्ट हीरे से बदलकर इसका नाम पिट के नाम पर 'पिट हीरा' पड़ गया । तब से रीजेण्ट हीरा हीरा के नाम से प्रसिद्ध है । वर्तमान में यह फ्रांस के लूबर की गैलरी में रखा है ।

होप हीरा— वर्तमान में यह हीरा एक अमरीकन महिला के पास है । यह नीले रंग का 112.50 कैरेट का हीरा है । सन् 1792 में चोरी जाने के बाद जब सन् 1830 में यह पुनः बाजार में आया तो इसका भार 44.50 कैरेट था । इस हीरे के बारे में यह प्रसिद्ध है कि यह जिसके पास रहा, उसकी ही मृत्त्यु हो गयी । लन्दन के धनी व्यापारी होप द्वारा खरीद जाने पर इसका नाम होप हीरा पड़ गया था ।

कुलीनन— यह हीरा सन् 1905 में दक्षिण अफ्रीका की प्रीमियर खान से निकला था । उस समय इसका वजन 3106 मैट्रिक कैरेट था । बाद में इसके दो तुकड़े हो गये जिसमें एक का नाम 'अफ्रीका तारा' तथा दूसरे का 'कुलीनन' रखा गया । कुलीनन हीरा का वजन 357.4 कैरेट है ।

ओर्लिफ हीरा— यह गुलाबी काट का भारतीय हीरा है, जिसका वजन 193 कैरेट है । इस हीरे को ओर्लिफ नाम के राजकुमार ने 90.000 पौड़ में खरीदा था । जिससे इसका नाम ओर्लिफ हीरा पड़ा । ऐसा कहा जाता है । कि यह हीरा पहले मैसूर स्थित एक मन्दिर की मूर्त्ति भी आँख में लगा हुआ था जिसे बाद में एक फ्रांसीसी सिपाही ने चुरा लिया था । कालान्तर में यह हीरा राजकुमार ओर्लिफ के हाथों में पहुँचा ।

महान मुगल— यह विश्व प्रसिद्ध हीरा सफेद रंग का है तथा गुलाब तराश में तराशा गया है । इसका वजन 280 कैरेट है । यह हीरा सन् 1650 में कौलूर की एक खान से मिला था । आखिरी बार इसे औरंगजेब के खजाने में देखा गया था, तब से इसका कोई पता नहीं है ।

शुक्र रत्न हीरा तथा उसके उपरत्न— ज्योतिषीय परामर्श के अनुसार शुक्र ग्रह के अशुभ प्रभाव तथा उससे उत्पन्न होने वाले रोगों से मुक्ति पाने के लिए हीरा रत्न धारण करना बताया गया है। हीरा एक बहुत मूल्यवान तथा दुर्लभ रत्न है। अतः सामान्य आय वाले व्यक्ति हीरा रत्न धारण करने में असमर्थ हैं जब कि शुक्र का अशुभ प्रभाव सभी व्यक्तियों पर पड़ता है— चाहे वे गरीब हों अथवा धनाढ्य। इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए रत्न विशेषज्ञ तथा ज्योतिर्विज्ञों ने हीरे के विकल्प की खोज की। हीरे के बदल के रूप में सफेद जिरकान, सफेद तुरमली, सफेद पुखराज अथवा सफेद स्फटिक धारण किया जाने लगा है। कुछ ज्योतिर्विज्ञ निम्न मणियों को भी हीरे के उपरत्न के रूप में धारण करना लाभकारी मानते हैं।

कुरंगी— यह गंगा के कछार तथा हिमालय की घाटियों में पाया जाता है। इसका रंग पीली सी खाई युक्त रहता है तथा यह वजन में भारी होता है।

दतला— यह देखने में सफेद तथा चमकदार होता है। वर्मा, श्याम तथा हिमालय में यह पाया जाता है।

सिम्मा— यह उत्तर दिशा के पहाड़ों में अधिक मिलता है तथा हीरा की तुलना में अल्पमोली है। इसमें सफेद काले धब्बों से चमकयुक्त आभा होती है।

तंफू हीरा— यह काबेरी और गंगा के कछारों में प्रचुर मात्रा में पाया जाता है। यह बहुत सस्ता मणि है तथा इसका रंग गुलाबी झाँई युक्त होता है।

हीरा रत्न तथा चिकित्सा से उसका प्रयोग— प्राचीन काल से ही आयुर्वेद तथा यूनानी चिकित्सा पद्धति में रत्नों का प्रयोग भस्म तथा पिष्टि वनाने में होता है। रत्न चिकित्सा के विशेषज्ञों डॉ. भट्टाचार्य ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक जेम्स थेरापी में रत्न चिकित्सा सम्बन्धी अपने अनुभवों का विस्तृत रूप से उल्लेख किया है। भाव प्रकाश नामक प्रसिद्ध आयुर्वेद ग्रन्थ के अनुसार हीरे की भस्म सम्भोग-शक्ति की कमी, हृदय रोग, नपुन्सकता, नासूर वजन में कमी होते जाना, पक्षाघात, प्रमेह पाण्डुरोग, भगन्दर, सूजन जलोदर तथा सूखा आदि सभी रोगों में चमत्कारी औषधि सिद्ध होती है। हीरे की भस्म शरीर को पुष्ट करती है। बल तथा वीर्य वर्धक है। एक प्रकार से हीरा भस्म सभी रोगों के लिए रामवांण औषधि है।

हीरे की केवल भस्म बनाई जाती है, पिष्टी नहीं। हीरे की भस्म बनाना बड़ा कठिन कार्य है, क्योंकि यह बहुत ऊँचे तापमान पर भी गलता नहीं। केवल बहुत अनुभवी वैद्य ही हीरे की भस्म बनाने में सफल होते है। हीरा भस्म आधा रत्ती से डेढ़ रत्ती तक दवा के रूप में मलाई मक्खन, शहद अथवा केपसूल में डालकर दिन में एक अथवा दो बार खिलाई जाती है। ■ ■ ■

आधि-व्याधि का कारक
शनि ग्रह

परिचय— शनि सौरमण्डल में सूर्य की परिक्रमा करने वाला छठा ग्रह है। यह सौरमण्डल का सबसे सुन्दर ग्रह माना जाता है। यह अत्यन्त मन्द गति से चलने वाला ग्रह है तथा सूर्य का एक चक्कर पूरा करने में इसे 30 वर्ष लगते हैं। इसी कारण से इसका नाम शनैश्चर अर्थात मन्द गति से चलने वाला ग्रह पड़ गया है। इस ग्रह के चारों ओर तीन वलय–कंकड़ जैसे चन्द्रमा बड़ी तीव्रता से चक्कर लगाते प्रतीत होते है। जिससे ऐसा लगता है किसी अण्डे को छल्ला पहना दिया हो। यह नीले रंग तथा अपनी खूबसूरती के कारण दर्शक का मन मोह लेता है।

शनि को अर्कपुत्र, सौरि, भास्करि, आर्कि, यम, शनैश्चर, छायासुत, नील, असित, कोण, तरणितनय आदि नामों से संस्कृत में अभिहित किया गया है। उर्दू, फारसी, में जुदुल, केदवाल तथा अंग्रेजी में यह सैटर्न के नाम से पुकारा जाता है।

पौराणिक दृष्टिकोण— भारतीय वांङ्मय के आदि ग्रन्थ वेद तथा पुराणों के अनुसार सूर्य की द्वितीय पत्नी छाया के गर्भ से शनि का जन्म हुआ था। शनि के श्याम वर्ण को देखकर सूर्य ने अपनी पत्नी छाया पर आरोप लगाया कि शनि मेरे वीर्य से उत्पन्न नहीं हुआ है। तभी से शनि अपने पिता सूर्य से शत्रुभाव रखता है।

पौराणिक मतानुसार शनि बृहस्पति से दो लाख योजन की दूरी स्थित है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— अन्तरिक्ष-ग्रह वैज्ञानिकों के अनुसार शनि ग्रह बृहस्पति की अपेक्षा अधिक ठण्डा है तथा अन्य ग्रहों की अपेक्षा बहुत हल्का है। इसका व्यास 1,42,60,00,000 किलोमीटर है। शनि ग्रह सूर्य से 88 करोड़ 60 लाख मील तथा पृथ्वी से 79 करोड 10 लाख मील की दूरी पर स्थित है। यह सूर्य की एक परिक्रमा करने में 30 वर्षों का लगा देता है। शनि ग्रह की गुरुत्त्वाकर्षण शक्ति पृथ्वी की अपेक्षा 95 अधिक है। अमेरिका ने अपने अन्तरिक्ष यान वाईजर - 1 के माध्यम से सैकड़ों चित्र शनि ग्रह के धरातल के लिए हैं।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण— ज्योतिषीय दृष्टिकोण से शनि को 'काल पुरुष का दुःख'

माना गया है । ग्रह मण्डल में इसे सेवक का पद प्राप्त है । सौर मण्डल की बारह राशियों में केवल मकर और कुम्भ राशि शनि ग्रह के प्रभाव क्षेत्र में आती हैं अतः शनि को इन्हीं दोनों राशियों का स्वामित्त्व प्राप्त है । यह तुला राशि के 20 अंश तक परम उच्चस्थ तथा मेष राशि के 20 अंश तक परम नीचस्थ माना जाता है । इसे सप्तम स्थान में बली माना जाता है । यह किसी बक्री ग्रह अथवा चन्द्रमा के साथ युति करके चेष्टाबली होता है ।

शनि की बुध एवं शुक्र से मित्रता है । बृहस्पति के साथ यह समभाव रखता है । शनि के शत्रु सूर्य चन्द्र तथा मंगल ग्रह हैं । यह बुध के साथ सात्विक तथा शुक्र के साथ राजस सम्बन्ध रखता है । इसे कर्म तथा व्यय भाव का कारक माना गया है ।

शनि ग्रह एक राशि पर 30 माह तक रहता है । शनि का विशेष फल जीवन के आरम्भ अथवा अन्त में प्राप्त होता है । शनि अंक 8 पर नियन्त्रण रखता है । गंगा से हिमालय तक का प्रदेश में उसका अधिकार क्षेत्र रहता है । इसकी गणना पाप ग्रहों मे की जाती है । शनि ग्रह का वाहन गिद्ध नामक पक्षी है ।

जन्मांक चक्र में शनि जिस भाव में बैठता है । वहाँ से तृतीय तथा दशम भाव को एक पाद दृष्टि से पंचम और नवमभाव को द्विपाद दृष्टि से तथा सप्तम, दशम एवं तृतीय भाव को पूर्ण दृंष्टि से देखता है । यह जातक के जीवन में 35 से 42 वर्ष की अवस्था में विशेष फल देता है ।

शनि ग्रह अधिपत्य तथा उत्पन्न होने वाले रोग—

शनि ग्रह को लोहा, भैंस, तैल, तिल, नमक, उड़द, नीलम, श्मशान, गन्दी तथा काले रंग की बस्तियों का अधिपति माना गया है । इसके द्वारा शारीरिक बल, विपत्ति, दुःख, मोक्ष, ख्याति, लोहे से सम्बन्धित काम, साहस, रोग शत्रुभाव तथा अभावों का विचार किया जाता है । शनि से ही कार्यकुशलता, कारावास, जमीदारी, पैतृक व्यवसाय, देवालयों तथा यूनियन आदि से सम्बन्धित तत्त्वों का वर्गीकरण किया जाता है ।

यदि जन्म कुण्डली में शनि ग्रह बली अथवा उच्च राशिस्थ होकर शुभ भाव में विद्यमान है तो लोकप्रियता, सार्वजनिक प्रसिद्धि, वाहन-सुख, गृह सुख तथा समृद्धि बढ़ाता है । अशुभ शनि अतुलनीय दुःख एवं मानसिक संत्रास उत्पन्न करता है । यदि जन्म कुण्डली में शनि निर्बल अथवा नीच राशिस्थ है तो यह दारिद्रय, चोर भय, लकवा, उदर-व्याधि, नेत्र रोग, चोट आदि से अंग–भंग, दमा, शरीर के गुप्त स्थानों के रोग, कुष्ठ, वात तथा कफजनित रोग उत्पन्न करता है । शनि के दुष्प्रभाव से मुक्ति पाने के लिए दान–पुण्य तथा मृत्युञ्जय मन्त्र का जप बड़ा प्रभावशाली रहता है ।

द्वादश भावों में शनि के उत्पन्न रोग—

जन्मांक चक्र में शनि के विभिन्न भावों में स्थिति के अनुसार नाना प्रकार के रोग जातक को पीड़ित रखते हैं । द्वादश भावों में निम्न रोग शनि की स्थिति के अनुसार होते हैं :—

प्रथम भाव— यदि जन्म कुण्डली में शनि प्रथम भाव में विद्यमान हो तो जातक का बाल्यकाल रोगमय बीतता है । जातक वात रोग, कफ प्रकृति के रोग तथा किसी चर्म रोग से ग्रसित रहता है । यदि प्रथम भाव में शनि कर्क राशि में विद्यमान हो तो जातक श्वास रोग से पीड़ित रहता है । कन्या राशिस्थ शनि प्रथम भाव में विद्यमान हो तो जातक पित्त रोगी रहता है ।

द्वितीय भाव— यदि जन्म कुण्डली में शनि द्वितीय भाव में विद्यमान हो तो जातक मानसिक रूप से चिंतित तथा दुःखी रहता है । यदि द्वितीय भावस्थ शनि पाप ग्रह से युक्त अथवा दृष्ट हो तो जातक नेत्र रोगी होता है तथा घोर नीच कर्म करके लोक निंदित होता है । जातक को जीवन में शस्त्र-भय बना रहता है ।

तृतीय भाव— यदि जन्म कुण्डली में शनि तृतीय भाव में विद्यमान हो तो जातक निरोगी, शत्रुहन्ता, मातृ-सुख से हीन तथा श्रेष्ठ वक्ता होता है । तृतीय भाव में शनि राहु की युति जातक के दाँये हाथ में चोट का कारक बनती है । तृतीय भाव में उच्च का शनि भाग्योदय कारक तथा सहसी बनाता है ।

चतुर्थ भाव— यदि जन्म कुण्डली में शनि चतुर्थ भाव में विद्यमान हो तो जातक नेत्र रोगी, वात, पित्त प्रकृति वाला तथा मानसिक पीड़ा से दुखी रहता है । चतुर्थ भाव में यदि वक्री होकर शनि विद्यमान हो तो जातक आजीवन रोगी बना रहता है । यदि चतुर्थ भाव में शनि एवं अष्टमेष की युति हो तो जातक तथा उसकी माता के लिए अनिष्टकारक होता है । इसी प्रकार यदि किसी क्रूर ग्रह के साथ शनि युति करते हुए चतुर्थ भाव में विद्यमान हो तो जातक नेत्र-रोगी होता है ।

पंचम भाव— यदि जन्म कुण्डली में शनि पंचम भाव में नीच राशिस्थ होकर विद्यमान हो तो जातक हृदय रोगी, गुप्त रोगी तथा अपयशी होता है । जातक को जल में डूबने का भय आजीवन बना रहता है । जातक को छठे वर्ष अग्नि-पीड़ा होती है तथा वह कामुक स्वभाव का भी होता है ।

षष्ठम भाव— यदि जन्म कुण्डली में शनि षष्ठ भाव में विद्यमान हो तो जातक कण्ठ रोगी, श्वास रोगी तथा तीव्र जठराग्नि वाला होता है । उच्च राशिस्थ शनि षष्ठ भाव में विद्यमान हो तो जातक प्रफुल्ल-चित्त, दीर्घायु तथा सभी मनोकामना को पूर्ण करने वाला

होता है । जातक को वाल्यकाल में वहुत चोट लगती हैं तथा वह व्रणयुक्त होता है । यदि शनि अप्टमेप होकर पष्ठ भाव में विद्यमान हो तो जातक को वातशूल होता है । इसी प्रकार मिथुन, कन्या, धनु, अथवा मीन राशिस्थ शनि पप्टम भाव में विद्यमान हो तो जातक को क्षय रोग तथा सन्धिवात रोग होता है ।

सप्तम भाव— यदि जन्म कुण्डली में शनि सप्तम भाव में विद्यमान हो तो जातक की पत्नी सदैव रुग्णा रहती है । जातक परस्त्री-गामी, दुर्बल देह वाला, ठग तथा मिथ्यावादी होता है । यदि सप्तम भाव में शनि उच्च राशिस्थ अथवा स्वराशि होकर विद्यमान हो तो जातक कामुक होता है । सप्तम भाव में शनि शुक्र की युति हो तो जातक जननेन्द्रिय का चुम्बन करने वाला होता है ।

अष्टम भाव— यदि जन्म कुण्डली में शनि अष्ठम भाव में विद्यमान हो तो जातक खाँसी, व्रण रोग, चर्म रोग, पाण्डु रोग, हृदय रोग, रक्त विकार, प्रमेह, संग्रहणी तथा भगन्दर जैसे रोगों से पीड़ित रहता हे । जातक को जीवन में सदैव कोई रोग बना रहता है । सप्तम भाव में नीच राशिस्थ शनि तथा मंगल की युति गुप्तांग रोग से पीड़ित रखती है । अष्टम भाव में राहु, सूर्य तथा शनि की युति दमा, क्षय अथवा अर्श रोग से जातक को पीड़ित रखते हैं ।

नवम भाव— यदि जन्म कुण्डली में शनि नवम भाव में हो तो जातक वात रोगी तथा कृश देह वाला होता है । जातक स्वभाव से वाचाल, गुप्त रोगी, प्रवासी, धर्मात्मा, साहसी तथा भ्रातृहीन होता है । यदि शनि उच्च राशिस्थ अथवा शुभ हो तो जातक अनेक शास्त्रों का ज्ञाता होकर वैभवशाली जीवन व्यतीत करता है । नीचस्थ अथवा अशुभ शनि धनहीन, रोगी तथा पिता के लिए अनिष्टकारक होता है ।

दशम भाव— यदि जन्म कुण्डली में दशम भाव में शनि विद्यमान हो तो जातक अपने बाहुबल पर भरोसा करने वाला, ज्योतिषी, संगीत प्रिय तथा उद्यमी होता है । जातक को यन्त्र तथा चमड़े के उद्योग से लाभ होता है किन्तु नीच राशिस्थ शनि जाँघ अथवा जननेन्द्रिय रोग से पीड़ित रखता है । दशम भाव में शनि मंगल की युति प्रमेह अथवा मधुमेह का रोगी मनाती है ।

एकादश भाव— यदि जन्म कुण्डली में शनि एकादश भाव में स्थिति हो तो जातक दीर्घायु, सुखी, व्यवसायी, विद्वान, रोगहीन, क्रोधी, नीतिवान तथा प्रज्ञाशील बनाता है । एकादश भाव में दूषित शनि हो तो जातक की पत्नी को वन्ध्या बनाता है ।

द्वादश भाव— यदि जन्म कुण्डली में शनि द्वादश भाव में विद्यमान हो तो जातक अपस्मार, उन्माद रोगी, अविश्वासी तथा निपट आलसी होता है । अशुभ शनि द्वादश भाव में होने पर व्यवसाय में हानि तथा नेत्र-पीड़ा पहुँचाता है ।

शनि तथा उसका राशिगत प्रभाव—

द्वादश राशियों में शनि का राशिगत प्रभाव निम्न प्रकार से पड़ता है—

मेष राशि— यदि जन्मांक चक्र में शनि मेष राशि में स्थिति हो तो जातक सज्जनों से बैर करने वाला, दरिद्रता से दुर्बल, आत्मबलहीन, कृतघ्न, अशान्त, दुःखी और रोगी होता है ।

वृष राशि— यदि जन्मांक चक्र में शनि वृष राशि में स्थित हो तो जातक असत्य वादी, वचनहीन, स्त्री-सुख से रहित, पुत्र सुख हीन, चुगलखोर का संग करने वाला, द्रव्यहीन, साहसी और पराक्रमी होता है ।

मिथुन राशि— यदि जन्मांक चक्र में शनि मिथुन राशि में स्थिति हो तो जातक बाहरी सुख से वंचित, कपटी, दरिद्र, बुद्धि-बल से लोगों को प्रभावित करने वाला तथा स्त्रियों से धन लाभ पाने वाला, मलिन हृदय, दुराचारी और कामुक होता है ।

कर्क राशि— यदि जन्मांक चक्र में शनि कर्क राशि में स्थित हो तो जातक शत्रुहन्ता, धन भोगने वाला, बाल्यावस्था में दुखी, विद्वान, नेत्र रोगी, स्वार्थी, दुर्बल-शरीर तथा स्त्री, पुत्र, का सामान्य सुख पाने वाला होता है ।

सिंह राशि— यदि जन्मांक चक्र में शनि सिंह राशि में स्थिति हो तो जातक लेखन में कुशल, भाई से से युक्त, पुत्रवान, परोपकारी, अपयशी तथा मानसिक रूप से पीड़ित रहता है ।

कन्या राशि— यदि जन्मांक चक्र में शनि कन्या राशि में स्थित हो तो जातक विनय रहित, चंचल, बलवान, सम्पादक, लेखक, कोई दुर्बल, कोई बलिष्ठ, निश्चित कार्यकर्ता तथा किसी कार्य में सफलता न पाने वाला होता है ।

तुला राशि— यदि जन्मांक चक्र में शनि तुला राशि में स्थिति हो तो जातक अपने कुल में राजा तुल्य, दानी, सुभाषी नेता, यशस्वी, वाहनादि से सुखी, स्वाभिमानी तथा स्वर्ण रत्नादि से युक्त होता है ।

वृश्चिक राशि— यदि जन्मांक चक्र में शनि बृश्चिक राशि में स्थित हो तो जातक शत्रु एवं रोग से पीड़ित, पुत्रहीन, विष, शस्त्र, अग्नि से भयभीत, स्त्रीहीन, क्रोधी, लोभी, देशान्तर, प्रवासी, नीच लोगों की संगति करने वाला तथा महत्त्वाकांक्षानुसार कार्य करके यश तथा सम्मान प्राप्त करने वाला होता है ।

धनु राशि— यदि जन्मांक चक्र में शनि धनु राशि में स्थित हो तो जातक पुत्र की कीर्ति से प्रसिद्ध, वृद्धावस्था से सुखी, अनेक प्रकार के भोग विलास तथा ऐश्वर्य से युक्त,

राजा का विश्वासपात्र, ग्राम अथवा नगर का प्रधान तथा स्त्री, पुत्र, धन आदि से सम्पन्न रहता है ।

मकर राशि— यदि जन्मांक चक्र में शनि मकर राशि में स्थित हो तो जातक मिथ्याभाषी, परिश्रमी, प्रवासी, शिल्पयज्ञ, धन ऐश्वर्य का चिरकाल तक भोग करने वाला, स्त्रियों का प्रेमी तथा राज्य प्रिय एवं सम्मानित होता है ।

कुम्भ राशि— यदि जन्मांक चक्र में शनि कुम्भ राशि में स्थित हो तो जातक शत्रुओं द्वारा पीड़ित, कर्तव्यहीन, व्यसनी, नास्तिक, किसी कार्य को प्रारम्भ करके बीच में छोड़ देने वाला, परिश्रमी तथा पराये धन का स्वामी होता है ।

मीन राशि— यदि जन्मांक चक्र में शनि मीन राशि में स्थित हो तो जातक उपकारी, विनयी, व्यवहार–कुशल, वैभव से युक्त, अविचारी, शिल्पज्ञ, बुद्धि बल से जीवन के अन्तिम दिनों में सुख प्राप्त करने वाला, राजा का विश्वासपात्र तथा समाज में प्रतिष्ठित होता है ।

शनि-प्रभाव से होने वाले रोग—

जन्म कुण्डली में शनि ग्रह की अशुभ स्थिति निम्न रोग उत्पन्न करती है—

- साइटिका (कमर दर्द)
- चर्म रोग
- अपस्मार (मिर्गी)
- गठिया
- मांस–पेशियों का खिंचाव
- फोड़ा-फुन्सी
- प्रदर रोग
- कुष्ठ रोग
- लकवा
- दमा
- उदर व्याधि

कुष्ठ रोग

यह एक प्रकार का त्वचा रोग है । इसमें त्वचा से पस निकलता है, त्वचा से छिछड़े झड़ते हैं तथा जख्म बन जाते हैं । यह रोग कई कारणों से होता है । वंशानुक्रम में भी यह रोग पलता है । छुआछूत के द्वारा भी यह रोग संक्रमित होता है । इस रोग में शरीर का अंग धीरे-धीरे गलना प्रारम्भ हो जाता है और अन्त में व्यक्ति को जान से हाथ धोना पड़ता है ।

अतः कुष्ठ रोग होने पर उपचार के साथ-साथ रोगी की साफ–सफाई तथा उसके अलग रहने की व्यवस्था करनी चाहिए, क्योंकि छुआछूत के द्वारा भी यह रोग एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में संक्रमित हो जाता है । कुष्ठ रोग के रोगी को नमक का प्रयोग न्यूनतम मात्रा में करना चाहिए ।

घरेलू औषधियाँ :

- नीम के पत्तों को जल में उबालकर उस जल के नित्य स्नान करें तथा गाय के दूध में तीन चार ग्राम नीम के पत्तों को पीसकर इनका नियमित सेवन करें । इसके नियमित सेवन करने से पुराने से पुराना कुष्ठ रोग ठीक हो जाता है । कुष्ठ रोगी को नीम की छाया मे सोने से काफी आराम मिलता है ।
- 10 ग्राम सरपंखा के पत्तों का रस नियमित सेवन करने से कुष्ठ रोग निश्चित रूप से दूर हो जाता है ।
- 4 बड़ी हरड़ के चूर्ण को 50 ग्राम गोमूत्र में मिलाकर नित्य सेवन करने से कुष्ठ रोग धीरे-धीरे ठीक हो जाता है ।
- एक चम्मच भाँगरा और बकुची के चूर्ण को शीतल जल के साथ नित्य लेने से तथा दोनों के चूर्ण को मलहम की भाँति जख्मों में लगाने से कुछ ही दिनों में कुष्ठ रोग समूल चला जाता है ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

ग्रेफाइटिस 6 अथवा 30— जब रोगी की त्वचा फटने लगे तथा जख्मों से चिपकता सा पस निकलने लगे, तब इस दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार रोगी को चूसने के लिए देना चाहिए ।

आरममेट 30 अथवा 200— रोगी का मन खिन्न रहता हो, आत्महत्या करने की भावना उत्पन्न होती हो तथा नाक से बदबूदार स्राव निकलता हो— ये लक्षण दिखलाई पड़ने पर दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देनी चाहिए । कुछ ही दिनों में कुष्ठ रोग ठीक होने लगेगा ।

बेसीलीनम 200— कोढ़ होने पर इस दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ पन्द्रह दिनों में एक बार देनी चाहिए । स्मरण रहे कि इस दवा के देने के पूर्व अथवा पश्चात कोई अन्य दवा नहीं देनी चाहिए ।

आर्स आयोडाइड 3x— जख्मों में काँटे जैसी जलन हो तथा अंगुलियाँ गलने लगें तो जिस दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देनी चाहिए । कुछ ही दिनों में जलन व अंगुलियों का गलना रुक जायेगा ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

चुम्वकीय जल से कोढ़ के जख्मों को दिन में तीन बार धौयें तथा सदैव चुम्बकीय जल का सेवन करें ।

चुम्बक के उत्तरी ध्रुव को बारी-बारी से कोढ़ के जख्मों पर 20-30 मिनट तक रखें ।

विशेष— उपरोक्त चुम्बकीय चिकित्सा शनिवार के दिन ही प्रारम्भ करें । यह प्रयोग कम से कम तीन माह अवश्य करें । कुष्ठ रोग समूल चला जायेगा ।

मन्त्र प्रयोग—

कुष्ठ रोग से निवृत्ति हेतु शनि यन्त्र का जप कम से कम ग्यारह माला नित्य करें

मन्त्र— ॐ ऐं ह्रीं श्रीं शनैश्चराय नमः ।

उपरोक्त शनि मन्त्र का श्रद्धा एवं विश्वास के साथ जप करने से कुष्ठ रोग से मुक्ति मिल जाती है । शनि मन्त्र के जप का अनुष्ठान शनिवार के दिन से प्रारम्भ करना चाहिए ।

यन्त्र साधना—

कुष्ठ रोग से मुक्ति पाने के लिए शनि-यन्त्र की साधना व पूजन दर्शन करना चाहिए । इस यन्त्र को किसी निर्दोष शनिवार के दिन पुष्य, अनुराधा अथवा उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के योग में लिखा जाता है । यन्त्र-लेखन भोजपत्र पर अष्टगन्ध की स्याही तथा अनार की कलम से किया जाता है ।

१२	७	१४
१३	११	९
८	१५	१०

यन्त्र लेखन के पश्चात् इस यन्त्र को चाँदी के ताबीज में भरकर कुष्ठ रोगी की दाहिनी भुजा में नीले डोरे की सहायता से बाँधने पर ही कुछ ही दिनों में रोग ठीक होने लगता है ।

तान्त्रिक प्रयोग—

पुष्य नक्षत्रगत किसी शनिवार के दिन बिछुआ बूँटी की जड़ खोदकर घर लावें । तत्पश्चात इसे स्नान आदि कराकर पूजन करके शोधित करें । अब इस जड़ को राँगे के ताबीज में भरकर काले डोरे की सहायता से शनिवार को दाहिनी भुजा में धारण करें । इसके धारण करने से कुष्ठ रोग कुछ दिनों में ठीक होने लगता है ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतया कुष्ठ रोग से मुक्ति पाने के लिए नीला स्पाइनल रत्न चाँदी की अंगूठी में मढ़ाकर शनिवार के दिन दाहिनी मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी रत्नविद ज्योतिषी से परामर्श लें ।

कमर दर्द

कमर-दर्द का मुख्य कारण वात है । कमर-दर्द का रोगी न तो सीधा होकर बैठ सकता है और न आराम से खड़ा हो सकता है । पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं को यह रोग

अधिक होता है । कमर दर्द होने के कई कारण हैं, जिनमें गर्भाशय की सूजन, मासिक-धर्म की विकृतियाँ, श्वेत प्रदर की तकलीफ होना, बार-बार प्रसव होना, गुर्दों की खराबी, कैंसर, मलेरिया, निमोनियाँ, गैस बनना, असंयम से रहना, लगातार मानसिक तनाव आदि मुख्य है । महिलाओं को अक्सर शारीरिक कमजोरी की वजह से कमर दर्द होने लगता है ।

वात प्रकृति लोगों को यह रोग अक्सर होता है । कमर का दर्द पीठ के निम्न भाग के कशेरुका से शुरू होकर नितम्ब में होते हुए पेट में पहुँचता है । कमर–दर्द के रोग में निम्न लक्षण दिखलाई पड़ते हैं :—

रोगी दर्द के कारण उठने बैठने तथा चलने–फिरने में कठिनाई महसूस करे, कमर के नीचे तकिया रखने से कुछ राहत मालूम दे, केवल करवट से पड़े रहने की इच्छा होना, कमर दबाने या हिलाने-डुलाने से रोग में बढ़ोत्तरी होना आदि ।

कमर दर्द के रोगी को डॉक्टर से उपचार कराने के साथ-साथ ठण्डक व भीगने से बचाव करना चाहिए । गहरे पानी में तैरना, नियमित दौड़ना, कुंऐ से पानी खींचना आदि कार्य करते रहने से कमर–दर्द की शिकायत कभी नहीं होती ।

घरेलू चिकित्सा :

- सोंठ और गोखरू दोनों की छः-छः ग्राम मात्रा लेकर आधे लीटर पानी में खौलायें । जब पानी एक चौथाई रह जाय तब उसे उतार कर छान लें । इस काढ़े को नियमित पीने से कुछ ही दिनों में कमर–दर्द सदैव के लिए चला जाता है ।
- मिश्री और खसखस, दोनों को समभाग में लेकर कूट-पीस कर बारीक चूर्ण बनालें । अब इस चूर्ण की दस ग्राम मात्रा खाकर ऊपर से गोदुग्ध पी लें । इसके नियमित प्रयोग से पुराना कमर दर्द कुछ दिनों में ही समूल चला जायेगा ।
- पाँच ग्राम असगन्ध का चूर्ण तथा पाँच ग्राम पिसी हुई मिश्री दोनों को पर्याप्त मात्रा में घी मिलाकर नियमित प्रातःकाल चाटने से कमर का दर्द ठीक हो जाता है ।
- आध पाव शुद्ध कड़वे तेल में तीस ग्राम देशी कपूर मिलाकर शीशी में भरकर धूप में रखें । कुछ देर में कपूर पिघल जायेगा अब इस तेल को कमर में लगायें । कुछ ही देर में कमर–दर्द जाता रहेगा ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

नक्सवोमिका 6, 30 अथवा 200— यह दवा कमर-दर्द में रामबाण का काम करती है । कमर में इतना दर्द हो कि रोगी करवट भी न बदल सकता हो, जरा सा हिलने-डुलने में दर्द बढ़ जाय, सदैव लेटे रहने का मन करे, तो ऐसे रोगी को दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देना चाहिए ।

कैलि कार्ब 1m— यह दवा महिलाओं के लिए विशेष लाभकारी होती है। गर्भावस्था में कमर में बेहद दर्द, गर्भावस्था में चलने में कठिनाई, यौनांगो में बोझ सा लगे, कमर में अकड़न, गर्भपात होने के बाद कमर में दर्द पैदा हो जाए— ऐसे लक्षण युक्त रोगी को यह दवा हफ्ते में एक बार देनी चाहिए। इसके सेवन करने से पुराने से पुराना कमर-दर्द ठीक हो जाता है।

रस टाक्स 30 अथवा 200— यह दवा तब दी जाती है, जब रोगी को उठते समय कमर दर्द की असह्य पीड़ा होती है। लेकिन चलने फिरने से दर्द बन्द हो जाता है। इसकी दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देना चाहिए।

बेल्लिस पेरेन्निस 3— कमर में ऐसा दर्द हो कि गर्भवती स्त्री से चला तक न जाए, गर्भवस्था में शरीर के अन्दर तक पेशियों में दर्द सा महसूस हो, तो ऐसे रोगी को इस दवा की चार-पाँच गोली प्रारम्भ में आधे घण्टे के अन्तराल में देना चाहिए। जब कमर में दर्द कम हो जाय तो दवा का अन्तराल छः-छः घण्टे कर दें।

पल्सेटिला 30 अथवा 200— यदि दवा महिलाओं को ऋतुकाल के समय दी जाती है। जब महिलाओं को ऋतुकाल से पूर्व अथवा ऋतु के समय कमर में दर्द हो, तो ऐसे रोगी को दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देनी चाहिए। इसके सेवन करने से कुछ ही देर में कमर का दर्द बन्द हो जायेगा।

लिडोनियम मूल अर्क 3 अथवा 6— जब जिगर रोग में कमर दर्द हो, दाहिने कन्धे के नीचे कोने में दर्द हो, जिगर से पीठ के नीचे के भाग तक दर्द आता हो तो ऐसे लक्षण युक्त रोगी को दवा के मूल अर्क की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देनी चाहिए।

चुम्बकीय चिकित्सा :

कमर दर्द में चुम्बक के दक्षिणी ध्रुव को कष्ट के स्थान पर लगायें और दूसरे चुम्बक के उत्तरी ध्रुव को उस पैर के तलवा पर रखें, जिसमें दर्द चलता है। यह प्रयोग दिन में तीन बार 40-40 मिनट के लिए करें।

चुम्बकीय तेल से दर्द बाले स्थान की मालिश नियमित रूप से करने से कमर दर्द कुछ ही दिनों में दूर हो जाता है।

विशेष— चुम्बकीय चिकित्सा में दो चुम्बकों की आवश्यकता पड़ती है। रोगी यथासंभव चुम्बक-जल का ही सेवन करें।

मन्त्र प्रयोग—

सामान्यतया कमर दर्द से मुक्ति पाने के लिय शनि मन्त्र की ग्यारह माला शनिवार

के दिन से, जप प्रारम्भ करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी मन्त्र विशेषज्ञ से परामर्श करना चाहिए । **मन्त्र— ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

यन्त्र साधना—

कमर-दर्द से मुक्ति पाने के लिए शनि यन्त्र की साधना व पूजन दर्शन करना चाहिए । शनि यन्त्र का पीछे के पृष्ठों में उल्लेख किया गया है । अतः पाठक वहाँ अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

अनुराधा नक्षत्रगत शनिवार के दिन से गोरखमुण्डी के रस से दर्द के स्थान की मालिस करने से कुछ ही दिनों में कमर का दर्द सदैव के लिए दूर हो जाता है ।

अष्टमुखी रुद्राक्ष के चार-पाँच दाने काँसे से बर्तन में पहले से रखे जल में भीगने के लीए डाल दें । यह प्रयोग पुष्य नक्षत्रगत शनिवार के दिन से अथवा किसी भी शनिवार के दिन शनि की होरा से प्रारम्भ करें । अब इस रुद्राक्ष को रात भर भीगते रहने दें । अगले दिन इस जल को सर्वप्रथम सेवन करें । इसके नियमित प्रयोग से कमर का दर्द सदैव के लिए जला जाता है । स्मरण रहे कि एक पानी निकाल कर दूसरा जल तुरन्त डाल देना चाहिए जिससे अगले दिन उसे सेवन किया जा सके ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतया कमर दर्द के रोगियों को कटैला रत्न धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी रत्नविद ज्योतिषी से परामर्श अवश्य कर लें ।

उदर रोग (पेट दर्द)

स्वस्थ रहने के लिए मनुष्य का पेट साफ रहना चाहिए, ऐसा आयुर्वेद में कहा गया है । पेट में खरावी होने से ही नाना प्रकार की व्याधियाँ आ घेरती हैं । पेट में दर्द होने का मुख्य कारण कब्ज का रहना बताया गया है । आजकल शायद ही कोई मनुष्य कब्ज से बचा हो । कब्ज होने का मुख्य कारण मानसिक तनाव, गलत अहार-विकार, स्वाद के वश में हानिकारक आहार लेना, मिर्च-मसाले युक्त पदार्थों का अतिसेवन तथा तामसी प्रवृति ही है । उपरोक्त कारणों से पेट में दर्द बना रहता है । क्योकि आमाशय की पाचन-क्षमता क्षीण हो जाती है । पेट में दर्द होने पर निम्न औषधियों के सेवन के साथ-साथ परहेज की अति आवश्यकता रहती है ।

घरेलू चिकित्सा :

- अजमोद का चूर्ण सेंधा नमक मिलाकर रात्रि में सोते समय अथवा जब पेट–दर्द होने लगे, तो रोगी को एक गिलास शीतल जल के साथ सेवन करायें। इसके सेवन करने के आधे घण्टे बाद पेट का दर्द एकदम गायब हो जायेगा।
- 10 ग्राम गीली सत्यानाशी की जड़ 10 ग्राम काली मिर्च तथा 6 ग्राम सोंठ, तीनों वस्तुओं को मिलाकर पेट दर्द के रोगी को चबाने के लिए दें। इसके सेवन करते ही पेट का दर्द शर्तिया गायब हो जाता है।
- 20 ग्राम इमली की पत्तियाँ खरल में घोंटकर ठण्डाई की तरह बनाकर पेट-दर्द के रोगी को पिलायें। कुछ ही देर में पेट दर्द शान्त हो जायेगा।
- 40 ग्राम पानी में 5 बूँद गन्धक का तेजाब मिलाकर पेट–दर्द के रोगी को पिलायें। इसके सेवन करने से पेट का दर्द तुरन्त बन्द हो जाता है।
- 50-60 ग्राम सौंफ के अर्क में तीन-चार बूँद तारपीन का तेल मिलाकर पेट में मलने से दर्द शान्त हो जाता है।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

बेलाडोना 30— जब पेट दर्द अचानक उठे तथा एकदम से बन्द हो जाए, भोजन करने से दर्द बढ़े तो ऐसे रोगी को दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देना चाहिए।

लाइकोपोडियम 30 अथवा 200— जब रोगी को गैस बनने की शिकायत रहती हो, पेट–दर्द भोजन करने से प्रारम्भ हो जाय तथा रोगी वेचैनी का अनुभव करे तो ऐसे लक्षण दिखलाई पड़ने पर दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देना चाहिए। इसके नियमित सेवन करने से पुराने से पुराना पेट–दर्द ठीक हो जाता है।

ऐनाकार्डियम 6, 30 अथवा 200— रोगी को सदैव पेट खाली-खाली महसूस हो, भोजन करने से पेट दर्द में आराम महसूस हो, लेकिन दो घण्टे बाद पेट फिर खाली-खाली सा लगे तथा दर्द की अनुभूति हो, ऐसे लक्षण होने पर दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देना चाहिए। इसके नियमित सेवन करने से पेट–दर्द के रोग से सदैव के लिए मुक्ति मिल जाती है।

कोलोसिन्थ 6 अथवा 30— जब रोगी को पेट–दर्द होने पर पेट दबाकर आगे झुकने से आराम मिलता हो तो ऐसे लक्षण प्रकट होने पर दवा की चार-पाँच गोली रोगी को चूसने के लिए दिन में तीन बार देनी चाहिए। पेट दर्द शान्त होगा।

नक्सवोमिका 30— रोगी को अजीर्ण की शिकायत बनी रहे, पेट में सदैव भारी-भारी बोझ सा लगे तथा भोजन करने के बाद दर्द बढ़ जाता हो तो ऐसे लक्षण दिखलाई पड़ने पर दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार रोगी को चूसने के लिए देना चाहिए ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

सामान्यतया पेट-दर्द से मुक्ति पाने के लिए चुम्बकीय पेटी पेट पर आगे से पीछे बाँधनी चहिए । ऐसा दिन में दो तीन बार 40-40 मिनट के लिए करना चाहिए । रोगी को दिन में 5-7 बार चुम्बक-जल का सेवन करना चाहिए । उपरोक्त प्रयोग हफ्तेभर नियमित करने से पेट का दर्द शान्त हो जाता है ।

मन्त्र प्रयोग—

पेट दर्द से मुक्ति पाने के लिए शनिबार के दिन से नित्य ग्यारह माला इस शनि मन्त्र का जप करना चाहिए— **मन्त्र— ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

यन्त्र प्रयोग—

पेट-दर्द से मुक्ति पाने के लिय शनिवार के दिन शनि की होरा में शनि यन्त्र की साधना पूजन दर्शन करना चाहिए । शनि यन्त्र के विषय में पीछे के पृष्ठों में उल्लेख किया जा चुका है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक साधना—

शनिवार के दिन कपूर को 108 बार "**ॐ नमः शिवाय**" मन्त्र से सिद्ध करके रोगी को खिलावें तो पेट-दर्द सदैव के लिए शान्त हो जाता है । यह प्रयोग परीक्षित है ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतया पेट दर्द से मुक्ति पाने के लिए लाजवर्त्त रत्न (काले रंग का लाजवर्त्त जिनमें स्वर्ण-कण दिखलाई पड़ते हों) चाँदी की अंगूठी में मढ़ाकर वाँये हाथ की मध्यमा अंगुली में शनिवार के दिन धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी रत्नविद ज्योतिषी से परामर्श करें ।

मिर्गी (अपस्मार)

यह बहुत ही भयंकर रोग होता है तथा कभी-कभी रोगी की जान भी ले लेता है । सामान्यतः मिर्गी को वंशानुक्रम में होने वाला रोग मानते है । किन्तु अन्य कई कारणों से

भी यह रोग वैसे भी हो सकता है । इस रोग के आक्रमण होने पर व्यक्ति अचानक चेतना-शून्य हो जाता है । इस रोग के आक्रमण का कोई समय नहीं होता किन्तु फिर भी यह मान्यता है कि जल और अग्नि इस रोग को प्रभावित करते हैं । इस रोग के आक्रमण में रोगी गिरकर तड़पने लगता है तथा उसके दाँत किट-किटाकर भिंच जाते हैं । किसी-किसी की जीभ भी बाहर निकल आती है, मुँह से फेन जैसा झाग निकलने लगता है ।

सामान्यतः इस रोग के आक्रमण तथा प्रभाव की अवधि 15 से 20 मिनट होती है । रोग के आक्रमण होने पर रोगी चेतना–शून्य तथा निष्क्रय हो जाता है । चेतना लौटने पर रोगी अत्यधिक कमजोरी का अनुभव करता है तथा वह आक्रमण के विषय में अनभिज्ञ रहता है । मिर्गी के रोगी को नदी, तालाब तथा आग से दूर रहना चाहिए क्योंकि ऐसे स्थान में रोग के आक्रमण होने पर जान जाने की सम्भावना रहती है ।

घरेलू चिकित्सा :

- रविवार के दिन अथवा सूर्य की होरा में ब्राह्मी बूटी से स्वरस में शहद मिलाकर मिर्गी के रोगी को चटाने से उसका रोग जाता रहता है ।
- भैंस के खुर की राख बनाकर महीन पीस लें । इसकी तीन ग्राम मात्रा नित्य सुबह शीतल जल के साथ रोगी को दें । हफ्तेभर में ही पुराने से पुराना मिर्गी का रोग ठीक हो जायेगा ।
- मिर्गी के रोग से मुक्ति पाने के लिए एक तोला करौंदे के पत्ते मट्ठे में पीसकर नियमित रूप से रोगी को पिलायें । इसका सेवन करने से मिर्गी रोग सदैव के लिए अच्छा हो जाता है ।
- दो रत्ती मीठी बच के चूर्ण को शहद के साथ मिलाकर नित्य मिर्गी के रोगी को चटायें, तत्पश्चात एक पाव गोदुग्ध पिलायें । इसके सेवन से तीन माह में रोग सदैव के लिए चला जाता है ।

विशेष— उपरोक्त औषधियों का सेवन रविवार के दिन से ही प्रारम्भ करायें तथा यह दवा कम से कम नब्बे दिन तक नित्य नियमित रूप से रोगी को दें ।

होमियोपैथिक चिकित्सा :

बेलाडोना 30— यह दवा विशेषकर तरुण रोगियों को लाभ करती है । इसकी दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार रोगी को देना चाहिए ।

नक्सवोमिका 30 अथवा 200— यदि मिर्गी का रोग कब्ज के कारण उत्पन्न हुआ

है । रोगी तेज तथा चिड़चिड़े स्वभाव का है तथा मिर्गी की लहर नाभि से उत्पन्न होती है । तो ऐसे रोगी को दवा की चार पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देनी चाहिए ।

कैल्केरिया कार्ब 30 अथवा 200— यह दवा विशेषकर बच्चों के लिए उपयोगी है । यदि रोग के आक्रमण में रोगी का बदन ऐंठ जाता हो तो ऐसे लक्षण दिखलाई पड़ने पर दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ रोगी को दिन में तीन बार पिलाना चाहिए

क्युप्रममेट 6 अथवा 30— रोग का आक्रमण होने पर रोगी वेहोश हो जाता है । मुँह से झाग आने लगते हैं। हवा की लहर घुटनों से उठती है, ऐसे रोगी को दवा की चार-पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देनी चाहिएं ।

साइलीसिया 30 अथवा 200— यदि रोगी के सिर तथा गर्दन में बदबूदार पसीना आता हो तथा रोगी बहुत जल्दी नर्वस हो जाता हो तो इस दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देनी चाहिए ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

- मिर्गी के दौरा पड़ने पर चुम्बक के उत्तरी ध्रुव क्रो नाभि पर रखें और दक्षिणी ध्रुव उसके विपरीत कमर के नीचे रखना चाहिए । इस प्रयोग के साथ सिर में चुम्बक-बेल्ट भी बाँधना चाहिए । यह प्रयोग दिन में 2 बार कम से कम 40-40 मिनट के लिए करना चाहिए ।
- दिन में 5-7 बार चुम्बक जल का सेवन करने से मिर्गी रोग से मुक्ति मिलती है ।

मन्त्र प्रयोग—

मिर्गी से मुक्ति पाने के लिए सूर्य मन्त्र का रविवार के दिन से नित्य पाँच माला जप करना चाहिए— **मन्त्र— ॐ ह्रीं घृणि सूर्य आदित्य श्रीं ।**

यन्त्र साधना—

मिर्गी के रोग से मुक्ति पाने के लिए सूर्य यन्त्र की साधना व पूजन दर्शन करना चाहिए । सूर्य यन्त्र का विवरण पीछे के पृष्ठों में उल्लिखित है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

तान्त्रिक प्रयोग—

जायफल में सुराख करके लाल डोरे की सहायता से रोगी के गले में सूर्य की होरा में बाँधने से मिर्गी का रोग सदैव के लिए चला जाता है । इस तान्त्रिक प्रयोग के साथ-साथ रोगी को गधे के खुर की अंगूठी बनाकर रविवार के दिन दाहिने हाथ की कनिष्का अंगुली में धारण करना चाहिए ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतः मिर्गी के रोग से मुक्ति पाने के लिए केसरी चन्द्रमणि कनिष्का अंगुली में धारण करनी चाहिए ।

विशेष— उपरोक्त रत्न धारण सूर्य की होरा में करना चाहिए तथा वह रत्न चाँदी की अंगूठी में मढ़ा जाना चाहिए ।

फोड़ा फुन्सी

शनि ग्रह के अशुभ प्रभाव से शरीर में अनेक प्रकार के फोड़ा फुन्सी हो जाते है । फोड़ा-फुन्सी होने पर जख्म से पस निकलता है तथा शारीरिक पीड़ा होती है । फोड़ा फुन्सी अनेक कारणों से होते हैं । यह रोग वर्षा ऋतु अथवा ग्रीष्म ऋतु में बड़ों की अपेक्षा छोटे बच्चों को अधिक होता है ।

फोड़ा फुन्सी होने पर ज्यादा तेज मिर्च मसालेदार वस्तुयें नहीं खानी चाहिएं । खटाई, वातकारक, चरपरे तथा पित्तकारक पदार्थों से परहेज रखना चाहिए । फोड़ा–फुन्सी होने का मुख्य कारण खून में खरावी आ जाना होता है ।

घरेलू औषधियाँ :

- फोड़ा–फुन्सी हो जाने पर नीम की पत्ती डालकर उवाले हुए पानी से घाव को धोना चाहिए । इससे घाव सड़ता नहीं, कीटाणु नष्ट होते हैं और घाव जल्दी भरता है ।
- फोड़े–फुन्सियों से मुक्ति पाने के लिए नियमित कालीजीरी को पानी में पीसकर घाव में लगायें । कुछ ही दिनों में फोड़ा फुन्सी ठीक होने लगेंगे ।
- दस ग्राम शंखाहूली (ब्रह्मदण्डी, हुलहुल) तथा आठ-दस दाने काली मिर्च, दोनों को पानी में घोट-पीस तथा छानकर नियमित पीते रहने से फोड़े–फुन्सियाँ तथा अन्य त्वचा रोग ठीक हो जाते हैं । यह प्रयोग परीक्षित है ।
- यदि फोड़ा पककर फूट नहीं रहा है तथा रोगी को दर्द के मारे रात को नींद नहीं आती है तो गूगल को पानी में घिसकर फोड़े पर लेप करने से फोड़ा फूटकर बह जाता है तथा रोगी को आराम मिलता है ।
- नियमित रूप से नीम की पत्तियाँ से डालकर उबाले हुए पानी से स्नान करने से सभी प्रकार की फोड़ा फुन्सी तथा अन्य चर्म विकार दूर होते हैं ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

बेलाडोना 30— यदि शरीर में फोड़ा हो गया हो, फोड़ा कड़ा हो, त्वचा लाल हो

किन्तु फोड़ा फूटता न हो तो ऐसे रोगी को इस दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार देनी चाहिए । दो ही दिनों में फोड़ा फूटकर बह जायेगा अथवा बैठ जायेगा ।

मर्कसौल 30— यदि फोड़ा पक न रहा हो तथा रोगी दर्द से बेहाल हो तो ऐसे रोगी को दवा की चार पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देनी चाहिए । दो ही दिन में फोड़ा पक कर बह जायेगा ।

पायरोजेन— यदि शरीर के खून की खराबी से फोड़ा–फुन्सी हो रहे हों तो यह दवा रामवाण का काम करती है । इस दवा की दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार रोगी को देना चाहिए ।

मेजेरियम 6 अथवा 30— यदि फोड़ों में पपड़ी पड़ गयी हो तथा उसके नीचे मवाद रहता हो— जिससे रोगी दर्द से परेशान रहता हो, तो ऐसे लक्षण दिखलाई पड़ने पर दवा की चार पाँच गोली दिन में तीन बार रोगी को चूसने के लिए देना चाहिए । दो तीन दिन में जख्म एकदम भर जायेगा तथा दर्द का पता न चलेगा ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

- फोड़े फुन्सियों के मुक्ति पाने के लिए नित्य चुम्बकीय जल से घाव को धोयें तथा चुम्बक के उत्तरी ध्रुव को 20 से 40 मिनट तक घाव के ऊपर लगायें । यह प्रयोग दिन में दो तीन बार करें । इसके नियमित प्रयोग से कुछ ही दिनों में रोग समूल चला जायेगा ।

मन्त्र प्रयोग—

फोड़े–फुन्सी के रोग से मुक्ति पाने के लिए नित्य शनि मन्त्र का जप किसी शनिवार के दिन से नित्य ग्यारह माला करना चाहिए— **मन्त्र— ॐ शं शनैश्चराय नमः ।**

यन्त्र साधना—

सामान्यतः फोड़े–फुन्सी के रोग से मुक्ति पाने के लिए नित्य शनि यन्त्र की साधना व पूजन दर्शन करना चाहिए । शनि यन्त्र का विवरण पीछे के पृष्ठों में उल्लेख किया जा चुका है । अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें ।

तांत्रिक प्रयोग—

बिछुआ की जड़, राँगे के ताबीज में काले धागे के द्वारा शनिवार के दिन धारण करने से फोड़ा–फुन्सी जैसे चर्म रोगों से मुक्ति मिलती है ।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतः फोड़ा–फुन्सी से मुक्ति पाने के लिए जमुनिया रत्न चाँदी की अंगूठी में मढ़ाकर दाहिनी मध्यमा अंगुली में शनिवार के दिन की होरा में धारण करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी रत्नविद ज्योतिषी से परामर्श करें ।

शनि ग्रह से उत्पन्न प्रभाव का उपचार— जन्मांक चक्र में शनि के अशुभ प्रभाव से उत्पन्न रोगों के निदान हेतु नीलम रत्न धारण करना बताया गया है । नीलम भी एक मूल्यवान कीमती रत्न है । अतः जो लोग नीलम न खरीद सकें, वे नीला जिरकान, कटैला, लाजवर्त, नीला तामड़ा (ब्लू गारनेट) अथवा नीले रंग का तुरमली बदल के रूप में धारण कर सकते हैं ।

शनि रत्न— जन्मांक चक्र में शनि के अशुभ प्रभाव होने की अवस्था में ज्योतिषी परामर्श नीलम रत्न धारण करना बताया गया है । रत्न–विशेषज्ञो की ऐसी मान्यता है कि नीलम रत्न धारण कर लेने से शनिजनित उत्पन्न राग तथा अन्य अशुभ प्रभावों से मुक्ति मिल जाती है ।

नीलम परिचय— नीलम शनि ग्रह का प्रधान रत्न है । नीलम की गणना नवरत्नों में की जाती है, माणिक्य की तरह नीलम भी कुरुन्दम समूह का रत्न है । जिस प्रकार माणिक्य और हीरा रत्नों के राजा कहलाते हैं उसी प्रकार नीलम को रत्नों का उपराजा कहलाने का अधिकार प्राप्त है । इसको अंग्रेजी में सैफायर कहते हैं । हिन्दी व उर्दू में नीलम बंगला में इन्द्रनील तथा संस्कृत में नील, शोरि रत्न, इन्द्रनील, तृणनील नीलमणि तथा शनि–रत्न इत्यादि कहते हैं । इसका रंग नीला, मोर की गर्दन जैसा भी होता है । हल्के रंगों से भी मिलता है । संसार का सबसे बड़ा नीलम 1444 कैरट का है । भारत के प्रान्त काश्मीर का नीलम सर्वश्रेष्ठ होता है । इसका रंग मोर की गर्दन के समान होता है । नीलम आस्ट्रेलिया, श्रीलंका, काबुल, मोनटाना, चीन, भारत, अमेरिका तथा थाइलैण्ड सहित विश्व के कई देशों में पाया जाता है ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने पर नीलम कोरण्डम अथवा एल्यूमीनियम आक्साइड होता है । यह अल्यूमिनियम तथा आक्सीजन का यौगिक है तथा इसमें थोड़ी मात्रा में कोबाल्ट, लोहा तथा टाइटेनियम मिला होता है । नीलम में जो नीला रंग दिखलाई पड़ता है उसका कारण कोबाल्ट एवं टाइटेनियम का होना ही है ।

नीलम का विशिष्ट गुरुत्त्व 4.08, वर्तनांक 1.76 से 1.77 व दुहरावर्त्तन 0.008 है । इसमें 97.5% एल्यूमिना, 1.89 प्रतिशत आयरन आक्साइड तथा 0.80 प्रतिशत सिलिकन होता है । इसको गर्म करने से इसका रंग नीला खराब हो जाता है । ठण्डा होने पर यह अपना चमकीला सुन्दर रंग खोकर बादलों जैसा रंग बदल लेता है ।

उत्तम नीलम के गुण तथा उसकी पहचान - उत्तम कोटि के नीलम में निम्न विशिष्ट गुण होते हैं—

(1) इसका रंग अलसी के फूल या मोर की गर्दन जैसे नीले रंग का होता है ।

(2) यह पारदर्शक तथा वजन में भारी होता है ।

(3) यह चिकना दाग धब्बे व चीर रहित तथा सुन्दर आकार वाला होता है।

(4) इसका पानी श्रेष्ठ होता है तथा इसके कोण सुडौल होते हैं ।

(5) यह कोमल-स्पर्शी तथा हाथ में से फिसलने वाला होता है ।

पहचान :

(1) पानी के गिलास में यदि असली नीलम डाल दिया जाय तो पानी में स्पष्ट रूप से नीली किरणें निकलती दिखलाई पड़ती हैं ।

(2) धूप में असली नीलम चमकने लगता है व इसमें से तेज किरणें निकलती हैं ।

(3) यदि 3.6 विशिष्ट गुरुत्त्व वाले मेथीलीन आयोडाइड के भारी विलियन में नीलम तीव्रता से डूब जाता है तो उसे असली जानिये ।

(4) असली नीलम को यदि दूध में डाल दिया जाय तो दूध का रंग नीला दिखलाई देने लगता है ।

नीलम रत्न तथा इससे जुड़े कुछ ऐतिहासिक तथ्य— सन् 1055 हैदराबाद के किसी नबाव के पास एक ऐसा नीलम था जिसकी कीमत ब्रिटेन की एक फर्म ने सन् 1920 में 40.000 पौंड लगायी थी । यह नीलम संसार का सबसे बड़ा त्रुटिहीन नीलम समझा जाता है । इस नीलम की शक्ल एक बड़े अण्डे जैसी थी तथा इसका वजन 916 कैरट था । ऐसा समझा जाता है कि किसी समय यह नीलम मैसूर के राजा टीपू सुल्तान के पास था । जिसे उन्होंने नबाव साहब के किसी पूर्वज को सन् 1794 के आसपास भेंट स्वरूप दे दिया था नबाव साहब के पूर्वज टीपू सुल्तान के दरवारी रहे थे ।

अमेरिका के अमेरिकन म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री में स्टार ऑफ इन्डिया के नाम से प्रसिद्ध एक नीलम रखा हुआ है जिसका वजन 536 कैरट है इसी प्रकार मिडनाइट स्टार के नाम से प्रसिद्ध एक नीलम इसी म्यूजियम में रखा हुआ है । इस नीलम का वजन 116 कैरट है ।

ब्रिटिश म्यूजियम के खनिज विभाग में सोने की पिन पर रखी हुई भगवान बुद्ध की मूर्ति एक ही नीलम रत्न को काटकर बनाई गई है । पेरिस के एक संग्रहालय में एक बिना तरासा हुआ रोजपोली के नाम से विख्यात नीलम रखा हुआ है । यह नीलम भारत के बंगाल प्रान्त में मिल था तथा इसका वजन 132 कैरट है ।

आस्ट्रेलिया की ग्रीनलैण्ड खान से सन् 1935 में सबसे बड़ा नीलम प्राप्त हुआ था। इसका वजन 2302 कैरट था। बाद में एक कुशल कारीगर ने 1800 घण्टे के कड़े परिश्रम के बाद राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के सिर के रूप में तराशा था। आजकल यह नीलम राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के संग्रहालय में रखा हुआ है।

रत्न विशेषज्ञों के अनुसार सर्वश्रेष्ठ तथा प्रसिद्ध नीलम भारत की खानों से ही मिले हैं। एक हृदय आकार का नीलम शाही ताज में हैं। ऐसा विश्वास किया जाता है कि उपरोक्त नीलम एक पादरी ने नैपोलियन को भेंट किया था।

संसार का सबसे बड़ा तराशा हुआ नीलम 1444 कैरट का है जिसे सन् 1948 में एक भारतीय ने विदरित किया था।

शनि रत्न नीलम तथा उसके उपरत्न—

सामान्य व्यक्तियों के लिए यह संभव नहीं है कि वह शनि के दोष से मुक्ति पाने के लिए शनि रत्न ''नीलम'' खरीद सके। इसका कारण यह है कि नीलम एक मूल्यवान रत्न है। अतः जो व्यक्ति नीलम न खरीद सकें वे नीलम के उपरत्न को धारण करके शनि के दुष्प्रभाव से मुक्ति पा सकते हैं। नीलम के उपरत्न अल्पमोली होते हुए भी गुणवत्ता तथा प्रभाव में शनि रत्न नीलम से कम नहीं है। नीलम के उपरत्न निम्न हैं :—

कटैला— यह नीलम का उपरत्न है। इसका रंग बैंगनी अथवा बनफशी जैसा होता है। यह एक पारदर्शक रत्न है तथा गर्म करके इसका रंग परिवर्त्तित किया जा सकता है। इसके प्राप्ति-स्थल भारत, श्रीलंका, बर्मा, ईरान, मैक्सिको, दक्षिणी अमेरिका, साइबेरिया, मेडागास्कर आदि हैं।

लाजवर्त्त— प्राचीन काल में लोग इसे ही नीलम के नाम से जानते थे। इसका रंग मोर की गर्दन जैसा नीला होता है। यह अपारदर्शक रत्न होता है तथा इसमें सोने की तरह जगमगाहट वाले धब्बे होते हैं। यह उत्तरी पूर्वी अफगानिस्तान, साइबेरिया और चिली आदि देशों में पाया जाता है।

नीला स्पाइनल— इसे भी नीलम के उपरत्न के रूप में धारण किया जाता है। स्पाइल रत्न कई रंगों में पाया जाता है। यह बहुत नरम व साफ पत्थर होता है। नीला स्पाइनल को नीलम के उपरत्न के रूप में धारण करते है। यह रत्न भारत श्रीलंका, वर्मा, अफगानिस्तान सहित विश्व के कई देशों में पाया जाता है।

जमुनिया— इसका रंग पके जामुन सा होता है। यह चिकना तथा पारदर्शी रत्न होता है तथा नीलम के उपरत्न के रूप में प्रयोग किया जाता है। हिमालय प्रदेश में यह अधिकतर पाया जाता है।

शनि रत्न तथा चिकित्सा में उसका प्रयोग— आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति में शनिजनित उत्पन्न रोगो की औषधि के रूप में नीलम-भस्म प्रयोग किया जाता है ।

(1) पागलपन की बीमारी में नीलम-भस्म श्रेष्ठ औषधि मानी गयी है ।

(2) नीलम-भस्म कफ, पित्त तथा वायु के उपद्रवों को नष्ट करती है ।

(3) मस्तिष्क की कमजोरी, फेंफड़ों में अत्यधिक बलगम बनना तथा बवासीर आदि रोगों को नीलम की भस्म मधु अथवा मलाई के साथ चौथाई से आधी रत्ती की खुराक में देने से रोगी को आराम मिलता है ।

(4) नीलम-भस्म खाँसी, उल्टी, रक्त विकार विषम ज्वर आदि रोगों में रामवाण औषधि का कार्य करती है ।

(5) नीलम-भस्म के नित्य सेवन से शारीरिक ताप तथा भूख बढ़ती है ।

(6) आँखों के रोग, धुन्ध, मोतियाबिन्द, जाला, पानी गिरना आदि में यदि नीलम केवड़ा के जल में घोटकर आखों में डालें तो शीघ्र आराम मिलता है ।

(7) नीलम की भस्म श्वास रोग, मिर्गी, उन्माद, दमा, मलेरिया आदि रोगों में रोगी को मलाई के साथ खिलावें तो बहुत जल्दी आराम मिलता है ।

■ ■ ■

पापकर्म, दुर्भाग्य, राजनीति तथा साहस का प्रतीक

राहु ग्रह

परिचय— सूर्य, चन्द्र तथा मंगल ग्रह की भाँति राहु सौरमण्डल में विचरण करने वाला कोई आकाश पिण्ड नहीं है। भारतीय ज्योतिष में राहु ग्रह को भी नवग्रहों की श्रेणी में रखा गया है। यद्यपि वास्तविक रूप में यह कोई ग्रह न होकर केवल छाया ग्रह है।

राहु को संस्कृत में विधुतुन्द, असुर, कबलादत्त, सेहिकेय, फणि कृष्णांग, स्वर्भानु आदि नामों से पुकारते हैं। उर्दू और फारसी में रास तथा अंग्रेजी में 'ड्रैगन्स हेड' के नाम से यह जाना जाता है।

पौराणिक दृष्टिकोण— भारतीय वांङमय के आदि ग्रंथ वेद तथा पुराणों के अनुसार राहु हिरण्यकशिपु की ''सिंहिंका'' नामक पुत्री का पुत्र है। राहु के पिता विप्रचित नामक दानव हैं। समुद्र मन्थन के समय राहु ने देवरूप धारण कर अमृत पान कर लिया था। सूर्य और चन्द्र द्वारा संकेत किए जाने पर विष्णु ने सुदर्शन चक्र से उसका सिर काट डाला। चूँकि राहु ने अमृतपान कर लिया था इसलिए उसके सिर तथा धड़ दोनों टुकड़े जीवित बने रहे। सूर्य और चन्द्र ने विष्मु को संकेत किया था, इसलिए राहु इन दोनों से शत्रुभाव रखता है। तभी से सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण द्वारा राहु समय-समय पर इन्हें अपना ग्रास बनाने की चेष्टा करता है। सिर का हिस्सा राहु तथा धड़ केतु के रूप में विख्यात है।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— अंतरिक्ष-वैज्ञानिक तथा खगोल-विदों के अनुसार राहु और केतु अन्य ग्रहों की कोई कोई आकाशीय पिण्ड अथवा ग्रह नहीं है। उनके अनुसार राहु और केतु पृथ्वी के उत्तरी एवं दक्षिणी ध्रुवों की छाया है।

भारतीय प्राचीन मत के अनुसार राहु ग्रह का व्यास 30,000 मील है तथा पृथ्वी से इसकी दूरी 90,00,000 मील है। लेकिन उपरोक्त भारतीय मत वैज्ञानिक परीक्षण पर खरा नहीं उतरता। वैज्ञानिक इसे कपोल–कल्पित गणना मानते हैं।

ज्योतिषीय दृष्टिकोण— ज्योतिषीय मत से राहु को 'कालपुरुष का दुःख' माना गया है। अन्य ग्रहों की तुलना में इसे ग्रह मण्डल में कोई पत प्राप्त नहीं है। ज्योतिषीय दृष्टिकोण में इसे दुःख और शोक का प्रतीक माना गया है। अनेक ज्योतिर्विज्ञों की इस बारे में असहमति है कि राहु की अपनी कोई राशि भी है। कुछ ज्योतिर्विज्ञों के अनुसार कन्यां राशि पर राहु का आधिपत्य स्वीकार किया गया है। इसी प्रकार राहु को उच्च राशि तथा

नीच राशि के विषय में असहमति है । कुछ विद्वान वृष राशि को उच्चतम राशि तथा वृश्चिक राशि को नीचस्थ राशि राहु के सन्दर्भ में मानते हैं । ज्योतिर्विज्ञों का एक वर्ग राहु की उच्चराशि मिथुन तथा नीचस्थ राशि धनु मानते हैं ।

राहु और केतु दोनों अन्य ग्रहों की अपेक्षा सदैव विपरीत गति से चलते हैं, इन्हें एक राशि पर भ्रमण करने में अठारह मास का समय लगता है । यदि जन्म कुण्डली में राहु तीसरे, छठे तथा नवे भावों में स्थित हो तो सब प्रकार के दोषों को समाप्त करता है ।

राहु आर्दा, स्वाति तथा शतभिषा नक्षत्रों पर शुभ फल देता है । सामान्य रूप में यह जिस भाव में बैठता है वहाँ की उन्नति को रोकता है । वृष तथा तुला लग्न में यह योगकारक माना गया है । राहु की बुध, शुक्र तथा शनि से भिन्नता है । गुरु से यह समभाव रखता है । सूर्य, चन्द्र तथा मंगल से साथ यह शत्रुभाव रखता है ।

राहु जन्म कुण्डली के जिस भाव में स्थित होता है । वहाँ से तृतीय तथा षष्ठम भाव को एकपाद दृष्टि से द्वितीय तथा दशम भाव को द्विपाद दृष्टि से तथा पंचम, सप्तम, नवम, एवं द्वादश इन चारों भावों को पूर्ण दृष्टि से देखता है । राहु जीवन पर प्रायः **42** से **48** वर्ष तक की अवस्था में अपना विशेष प्रभाव दिखाता है ।

राहु ग्रह आधिपत्य तथा उत्पन्न होने वाले रोग - राहु ग्रह को कलियुग में प्रत्यक्ष प्रभाव देने वाला माना गया है । इसे ज्योतिष शास्त्र में अत्यन्त शक्तिशाली ग्रह माना गया है । राहु का पाँवों पर आधिपत्य माना गया है । इसके द्वारा दुख, दुर्भाग्य, संकट, विध्वंसात्मक प्रवृत्ति, नौकाचालन, राजनीति, साहस, चिन्ता, पितामह, अनुसन्धान तथा विलासिता आदि का विचार किया जाता है ।

यदि जन्म कुण्डली में राहु ग्रह बली होकर शुभ भावों में विद्यमान हो तो जातक को राजनीति में सफलता देता है । राजनीति में सफलता दिलाने में राहु कारक ग्रह माना जाता है । जन्म कुण्डली में राहु बलवान तथा उच्चराशि है तो सामान्य रूप से राहु के द्वारा मुद्रण–कार्य, फोटोग्राफी, नीले रंग की वस्तुएं, चर्बी, हड्डी, सीमेंट चित्रकारी, मद्यपान, द्यूत-क्रीड़ा आदि विषयों का विचार किया जाता है ।

यदि जन्म कुण्डली में राहु अशुभ प्रभाव दे रहा है तो जातक चर्बी तथा हड्डी जनित रोगों से पीड़ित रहता है । राहु के दुष्प्रभाव से जातक आलसी तथा मानसिक दृष्टि से दुःखी बना रहता है ।

द्वादश भाव में राहु तथा उसका प्रभाव—

जन्मांक चक्र के द्वादश भावों में राहु के निम्न प्रभाव होते है :—

प्रथम भाव— यदि जन्म कुण्डली में राहु का प्रथम भाव में विद्यमान हो तो जातक पराक्रमहीन, अविवेकी, रोगी, व्यर्थ बहुत बोलने वाला, कुकर्मी, साहसी, दुखी, दुर्बल देह वाला तथा अपने स्वजनों का शत्रु होता है ।

द्वितीय भाव— यदि जन्म कुण्डली में राहु द्वितीय भाव में विद्यमान हो तो जातक चोरी करने वाला, मत्स्य–मांस से धनोपार्जन करने वाला, नीच सेबी, सुखी, चंचल, विलक्षण बुद्धि वाला होता है तथा स्त्री सुख से हीन होता है ।

तृतीय भाव— यदि जन्म कुण्डली में राहु तृतीय भाव में विद्यमान हो तो जातक चोरी करने वाला, मत्स्य–मांस से धनोपार्जन करने वाला, नीच सेबी, योगाभ्यासी, प्रवासी, प्रबल अध्यवसायी, दृढ़ विवेकी तथा बाहुबल में अपनी समता न रखने वाला होता है । तृतीय भाव में राहु उच्च राशिस्थ हो तो जातक वाहन-सुख से सम्पन्न होता है ।

चतुर्थ भाव— यदि जन्म कुण्डली में राहु चतुर्थ भाव में विद्यमान हो तो जातक नीच जनों का साथी, एक पुत्र वाला, अबला स्त्री वाला, वन्धुहीन, असन्तोषी, मातृ क्लेशयुक्त, कपटी, उदर व्याधि युक्त तथा विषधर प्राणी से अपघात पाने वाला होता है । यदि राहु पापग्रह से युक्त होकर चतुर्थ भाव में विद्यमान हो तो जातक की माता को कष्ट होता है ।

पंचम भाव— यदि जन्म कुण्डली में राहु पंचम भाव में विद्यमान हो तो जातक को एक पुत्र होता हैं । पंचम भावस्थ राहु उदर रोगी, धनहीन, शास्त्रप्रिय, पुत्रसुख से हीन, अल्प वेतन की नौकरी से निर्वाह करने वाला, कुमार्गगामी किन्तु भाग्यशाली बनाता है । जातक उदर–शूल रोग तथा वायु रोग में ग्रसित रहता है । पंचम भाव में राहु के साथ चन्द्र की युति सन्तान–नाश का कारण बनती है ।

षष्ठम भाव— यदि जन्म कुण्डली में राहु षष्ठ भाव में विद्यमान हो तो जातक शत्रु का नाश करने वाला, निरोगी, कमर–दर्द पीड़ित, अरिष्ट–निवारक, पराक्रमी एवं बड़े-बड़े कार्य करने वाला होता है । षष्ठ भावस्थ राहु यदि उच्च का हो तो सब अरिष्टों का नाश हो जाता है । राहु पीड़ित जातक परस्त्री से समागम करता है जातक को 20 तथा 28 वर्ष की आयु में शारीरिक पीड़ा तथा शत्रुभय की सम्भावना रहती है ।

सप्तम भाव— यदि जन्म कुण्डली में राहु सप्तम भाव में विद्यमान हो तो जातक की पत्नी खर्चीले स्वभाव की होती है । जातक व्यवसाय में मूर्ख, भ्रमणशील, चतुर, दुराचारी, वात–रोग पीड़ित, लोभी, जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग से ग्रस्त तथा व्यर्थ झगडने वाला होता है । सप्तम भावस्थ राहु यदि शुभ ग्रह से युक्त होते हैं तो पूर्वोक्त दोषी नहीं होता है । जातक की पत्नी अक्सर बीमार बनी रहती है तथा द्विभार्या योग भी सम्भव है । यदि पंचम भावस्थ राहु पाप ग्रहों से युक्त है तो जातक की पत्नी पापाचारिणी, कुटिला तथा गण्डमाला रोग में ग्रसित रहती है ।

अष्टम भाव— यदि जन्म कुण्डली में शनि अष्टम भाव में विद्यमान हो तो जातक रोगी, ढीठ, चोर, दुर्बल, शरीर वाला, मायाजाल रचने में प्रवीण, उदर-रोगी तथा कामुक स्वभाव का होता है । जातक को जीवन में गुदा रोग, प्रमेह, अण्डवृद्धि तथा जल–भय बना रहता है ।

नवम भाव— यदि जन्म कुण्डली में शनि नवम भाव में विद्यमान हो तो जातक निन्द्य कर्म करने वाला, चुगलखोर, धनहीन, अपने कुटुम्बियों को प्रसन्न रखने वाला, प्रवासी, वातरोगी, तीर्थाटन-प्रिय तथा धार्मिक प्रवृत्ति का होता है । यदि राहु दुषित हो तो जातक को कुटुम्ब तथा पिता का सुख नहीं मिलता ।

दशम भाव— यदि जन्म कुण्डली में शनि दशम भाव में विद्यमान हो तो जातक पापी, पराये धन का लोभी, व्यर्थ बोलने वाला, आलसी, अनियमित कार्यकर्ता, सन्तति-क्लेशी तथा मनःस्ताप में जलने वाला होता है । दशम भावस्थ राहु यदि शुभ ग्रहों से युक्त हो तो जातक व्यवसाय–कुशल, उत्तम स्त्री का भोग करने वाला, शत्रुहन्ता, नीचों का सम्पर्क करने वाला होता है । 52 वर्ष की आयु में उसे शस्त्र संकट प्राप्त होता है ।

एकादश भाव— यदि जन्म कुण्डली में राहु एकादश भाव में विद्यमान हो तो जातक शोभन व्यक्तित्त्व का स्वाभी, प्रवासी व्यवसाय युक्त, अरिष्टनाशक तथा राज्यद्वार से प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है । एकादश भावस्थ राहु जातक को विनोदी, स्वस्थ, वाहन–सुख को प्राप्त करने वाला किन्तु सन्तान सुख से पीड़ित रखता है ।

द्वादश भाव— यदि जन्म कुण्डली में राहु द्वादश भाव में स्थित हो तो जातक धर्म और धन से वंचित, प्रवासी, कुरूप अनेक प्रकार के दुखों से पीड़ित, विवेकहीन, मूर्ख, चिन्ताशील, कामुक, चर्मरोगी व्यर्थ समय नष्ट करने वाला, कुरूप नखों वाला होता है ।

राहु ग्रह तथा उसका राशिगत प्रभाव—

द्वादश राशियों में राहु के निम्न राशिगत प्रभाव होते हैं :—

मेष राशि— यदि जन्म कुण्डली में राहु मेष राशि में विद्यमान हो तो जातक पराक्रम हीन, आलसी, अविवेकी सदा रोग-ग्रसित रहने वाला तथा कामुक स्वभाव का होता है ।

वृष राशि— यदि जन्म कुण्डली में राहु वृष राशि में विद्यमान हो तो जातक सुखी, चंचल, कुरूप, शूरवीर, वाचाल, शत्रुहन्ता तथा सगे सम्बन्धी व मित्रों की सलाह न मानने वाला होता है ।

मिथुन राशि— यदि कुण्डली में राहु मिथुन राशि में विद्यमान हो तो जातक दीर्घायु, बलवान, व्यवसाय से धन–लाभ अर्जित करने वाला, यशस्वी, साहसी योगाभ्यासी होता है ।

कर्क राशि— यदि जन्म कुण्डली में राहु कर्क राशि में विद्यमान हो तो जातक कपटी उदार, शत्रुओं से पीड़ित, उदर रोगी, धन हीन तथा पुत्र–सुख युक्त होता है ।

सिंह राशि— यदि जन्म कुण्डली में राहु सिंह राशि में विद्यमान हो तो जातक सत्पुरुष के समान आचरण करने वाला, चतुर नीतिज्ञ, विचारक, सन्तान के लिए चिन्ताशील तथा राज्यदंड का भय पाने वाला होता है ।

कन्या राशि— यदि जन्म कुण्डली में राहु कन्या राशि में विद्यमान हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कवि, लेखन कार्य में दक्ष, संगीत-प्रिय तथा निरोग होता है ।

तुला राशि— यदि जन्म कुण्डली में राहु तुला राशि में विद्यमान हो तो जातक दन्त-रोगी, कार्यकुशल, अल्पायु, मृत व्यक्ति का धनाधिकारी तथा अग्नि और वायु से कष्ट पाने वाला होता है ।

वृश्चिक राशि— यदि जन्म कुण्डली में राहु वृश्चिक राशि में विद्यमान हो तो जातक रोगी धन का नाश करने वाला, धूर्त्त, विद्वानों द्वारा अपमानित, निर्धन तथा किसी रोग से युक्त होता है ।

धनु राशि— यदि जन्म–कुण्डली में राहु धनु राशि में विद्यमान हो तो जातक दत्तक पुत्र के रूप में जाने वाला, मित्र–द्रोही, भाइयों से स्नेह रखने वाला, दुःखी तथा बाल्यावस्था में सुखी होता है ।

मकर राशि— यदि जन्म कुण्डली में राहु मकर राशि में विद्यमान हो तो जातक दस्त रोगी, कुटुम्बहीन, मितव्ययी, जल से भय पाने वाला तथा लेखन में रुचि रखने वाला होता है ।

कुम्भ राशि— यदि जन्म कुण्डली में राहु कुम्भ राशि में विद्यमान हो तो जातक विद्वान, लेखन, मितभाषी शत्रुहन्ता तथा परदेश में प्रतिष्ठा पाने वाला होता है ।

मीन राशि— यदि जन्म कुण्डली में राहु मीन राशि में स्थित हो तो जातक कुलीन, शान्त, ईश्वर को मानने वाला, कला-प्रिय तथा धन संचय में बाधा पाने वाला होता है । जन्म कुण्डली में राहु के अशुभ प्रभाव से निम्न रोग उत्पन्न होते हैं ।

- चर्बी ग्रसित रोग
- उदर रोग
- कमर–दर्द
- प्रमेह
- बवासीर
- अण्डवृद्धि
- वात रोग
- चर्म रोग

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

अण्डवृद्धि

यह केवल पुरुषों के होने वाला रोग है । अण्डकोषों में जल भर जाने से वे फूल जाते हैं । यह पानी सुई के द्वारा अथवा आपरेशन करके निकालते है । अण्डकोष बढ़ जाने पर रोगी को दर्द की अनुभूति होती है । कभी-कभी तो इतनी तीव्र वेदना होती है कि रोगी बेहोश तक हो जाता है ।

अण्डकोषों में वृद्धि होने के कई कारण होते हैं । किसी-किसी को जन्म से ही यह रो रहता हे । अण्डकोष बढ़ जाने पर रोगी को चलने फिरने में कष्ट होता है ।

घरेलू औषधियाँ :

- 20 ग्राम आम के पत्ते तथा 10 ग्राम सेंधा नमक दोनों को खरल में बारीक पीसकर थोड़ा गरम करलें । फिर इस लेप को अण्डकोष में लगायें । इसके कुछ दिन नियमित प्रयोग से अण्डकोष की सूजन समाप्त हो जाती है ।
- तम्बाकू का पत्ता गर्म करके अण्डकोषों पर बाँधकर ऊपर लंगोटा चढ़ा लें । कुछ देर में लंगोट भीग जाये तो दूसरा लंगोट बदल लें । इस प्रकार दो तीन बार लंगोट बदलते रहें । अगले दिन सुबह लंगोटा खोल दें । इसके कुछ दिन के प्रयोग से सूजन एकदम गायब हो जाती है ।

विशेष— यदि तम्बाकू का गीला पत्ता न मिले तो सूखे पत्ते को दिनभर पानी में भिगोकर रात्रि में प्रयोग करें । पत्तों के बाँधने से खुजली होगी, लेकिन उसे खुजाएं नहीं । पत्तों के बाँधने से अण्डकोषों में छिद्र हो जायेगें । लेकिन आप इससे घबराये नहीं । उन छिद्रों में ताजा मक्खन लगा देने से छिद्र बन्द हो जायेगें ।

- इन्द्रायण की जड़ कपड़छन करके अरण्डी के तेल में मिला लें । अब इसका लेप बढ़े हुए अण्डकोषों पर करें । इस प्रयोग के साथ-साथ दो ग्राम मात्रा इन्द्रायण के चूर्ण को प्रातःकाल नियमित रूप से गोदुग्ध के साथ लेना चाहिए । दोनों प्रयोग महीना भर करते रहें । अण्डकोष की सूजन सदैव के लिए समाप्त हो जायेगी ।
- 10-15 ग्राम छोटी कटेली की जड़ तथा 7-8 दाने काली मिर्च, दोनों को खरल में कूट पीस कर आधा कप जल के साथ रोगी को नियमित पिलायें । इसके महीना भर नियमित सेवन से पुराने से पुराना रोग सदैव के लिए गायब हो जाता है ।
- 15-20 ग्राम माजूफल तथा 3 ग्राम फिटकरी, दोनों को पानी में पीस कर बढ़े हुए अण्डकोषों पर थोड़ी-थोड़ी देर में लेप करें । इसके नियमित महीना भर प्रयोग से अण्डकोषों का पानी तथा सूजन समाप्त हो जाती है ।

होम्योपैथिक चिकित्सा :

पल्सेटिला 30— यदि बायीं ओर के अण्डकोष में पानी भर गया हो तथा इसमें दर्द न हो रहा हो तो ऐसे लक्षण युक्त रोगी को इस दवा की चार पाँच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देना चाहिए ।

आर्निका 12— यदि अण्डकोषों की बृद्धि व किसी दुर्घटना अथवा चोट लगने के कारण हुई हो तो यह दवा दी जाती है । इसकी दो बूँद मात्रा आधे कप जल के साथ दिन में तीन बार रोगी को देनी चाहिए । इसके सेवन से कुछ ही दिनों में अण्डकोष सामान्य हो जायेगा ।

ऐब्रोटेनम 3 अथवा 30— यह दवा विशेष करके छोटे बच्चों को दी जाती है । कुछ छोटे बच्चों में असामान्य रूप से अण्डकोषों में वृद्धि होती हुई देखी जाती है । ऐसी अवस्था में इस दवा की चार-पाँच गोली बच्चे को माँ के दूध में मिलाकर दिन में तीन-चार बार देनी चाहिए । कुछ ही दिनों में अण्डकोष सामान्य हो जाते हैं ।

साइलीशिया 30— यदि अण्डकोषों में पानी के साथ-साथ आस-पास ऊपर खुजलाहट और पसीना आये, रोगी देखने में दुर्बल शरीर का हो तथा रोगी के सिर में पसीना अधिक आता हो, तो ऐसे लक्षण होने पर इस दवा की चार पांच गोली दिन में तीन बार चूसने के लिए देना चाहिए । कुछ ही दिनों में अण्डकोष की सूजन व खुजलाहट गायब हो जायेगी ।

चुम्बकीय चिकित्सा :

चुम्बक–सीट का दिन में दो तीन बार 40-40 मिनट एक प्रयोग करें । अण्डकोषों में चुम्बक–बैल्ट बाँधकर ऊपर से लंगोट चढ़ा लें । यही प्रयोग कम से कम आधे घण्टे अवश्य करें ।

चुम्बक जल का दिन में 5-7 बार सेवन करें ।

विशेष— उपरोक्त दोनों प्रयोग नियमित करने से कुछ ही दिनों में अण्डकोष की सूजन समाप्त हो जायेगी ।

मन्त्र प्रयोग—

अण्डकोषों की वृद्धि सम्बन्धी रोग से मुक्ति पाने के लिए राहु मन्त्र का ग्याहर माला जप करना चाहिए । विशेष परिस्थितियों में किसी मन्त्र विशेषज्ञ ज्योतिषी का परामर्श लेना आवश्यक है— **मन्त्र— ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः ।**

विशेष— राहु मन्त्र का जप किसी बुधवार के दिन से प्रारम्भ करना चाहिए ।

यन्त्र प्रयोग—

अण्डकोष के रोग से मुक्ति पाने के लिए शनि यन्त्र की साधना करनी चाहिए। शनि यन्त्र का पीछे के पृष्ठों में उल्लेख किया गया है। अतः पाठक वहीं देखें।

तान्त्रिक प्रयोग—

शनिवार के दिन सफेद चन्दन की जड़ खोदकर घर ले आवें। तत्पश्चात इसे स्नान आदि कराकर पूजन करके शोधित कर लें। फिर इसे काले डोरे की सहायता से दाहिनी भुजा में धारण कर लें। ऐसा करने से धीरे-धीरे अण्डकोष की सूजन कम होने लगेगी और कुछ दिन उपरान्त यह सामान्य हो जाता है।

रत्न प्रयोग—

सामान्यतः अण्डकोष के सूजन से मुक्ति पाने के लिए तुरसा रत्न धारण करना चाहिए। विशेष परिस्थितियों से किसी रत्नविद ज्योतिषी से परामर्श करें।

जन्मांक चक्र में राहु के अशुभ प्रभाव से उत्पन्न रोगों के निदान में रत्न परामर्श गोमेद धारण करना बताया है। जो लोग गोमेद न खरीद सकें वे गोमेद के रंग का हकीक इस्तेमाल कर सकते है।

राहु रत्न— रत्न विशेषज्ञों तथा ज्योतिर्विज्ञों के अनुसार राहु के दुष्प्रभाव को समाप्त करने के लिए गोमेद रत्न धाण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है। अन्य रतनों की भाँति यह कीमती नहीं होता। इसे सामान्य आर्थिक स्रोत वाले व्यक्ति भी धारण करने में समर्थ हैं।

गोमेद परिचय— गौ–मूत्र के समान इस रत्न का रंग होने के कारण ही इसका नाम गोमेद रखा गया है। यह प्रमुख रूप से राहु का रत्न माना गया है। यह कई रंगो में पाया जाता है। यह हरे, सुनहरे, पीले और गहरे रंग में सबसे अधिक आकर्षक होता है। यह हल्के आसमानी, भूरे, हल्के हरे रंगों में भी मिलता है। यह रत्न एक प्रकार से हीरे का जुड़वाँ भाई है। रंगहीन गोमेद तथा हीरे में फर्क तथा पहचान करने में बड़े-बड़े जौहरी भी असमंजस में पड़ जाते हैं।

अंग्रेजी में गोमेद को जिकरन (zircon) कहते हैं। हिन्दी व पंजाबी में गोमेद, संस्कृत में गोमेद, राहुरत्न, पिग स्फटिक, गोमेद तथा उर्दू फारसी में जरकूनिय अथवा जारगुन के नाम से यह रत्न विख्यात है। संसार का सबसे बड़ा गोमेद मणिभ 25 पौंड वजन का है। भारत में उत्तम श्रेणी के गोमेद नहीं पाये जाते। सिर्फ उ० प्र० प्रांत में केदारनाथ के निकट तथा त्रावणकोर के एरानियल तालुका के अप्पी योडे में क्रमशः लाल तथा भूरे श्वेत कर्ण के कुछ गोमेद मणिभ पाये जाते हैं। आस्ट्रलिया, ब्राजील, श्री लंका, नार्वे आदि देशों में गोमेद

उत्तम श्रेणी के मिलते हैं । श्री लंका से मिलने वाले गोमेद रत्न सबसे सुन्दर होते हैं ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखने पर गोमेद निरकोनियम नामक तत्त्व का सिलिकेट है । इसका रासायनिक सूत्र $Zr (Sso_4)$ है । इसमें जिरसोनियम आक्साइड 67.2 प्रतिशत तथा सिलिकन आक्साइड 32.8 प्रतिशत होता है । इसकी कठोरता 7.5 तथा आपेक्षिक घनत्त्व 4.65 से 4.71 तथा वर्तनांक 1.93 से 1.98, दुहरावर्तन 0.06 होता है । यह परिदर्शक, अर्द्ध पारदर्शक और अपारदर्शक तीनों तीनों रूपों में मिलता है ।

गोमेद साधारणतः हर प्रकार की अग्नेय चट्टानों से प्राप्त होता है । यह ग्रेनाइट, साइनाटक और ग्रेनजोनाइट के साथ भी मिलता है । कभी-कभी यह झरनों, नदियों और तटीय रेत में सोने के साथ तलहटी में मिलता है ।

उत्तम गोमेद के गुण तथा उसकी पहचान— उत्तम कोटि के गोमेद में निम्न विशिष्ट गुण होते हैं ।

(1) हल्के रंग का गोमेद आभावान अथवा केसरी झलक वाला होता है ।

(2) यह स्निग्ध तथा वजन में भारी होता है ।

(3) यह चिकना, सुन्दर, साफ तथा देखने में चमकीला होता है ।

(4) यह अच्छे घाट का, निर्मल, सुडौल तथा मृदु प्रकाश वाला होता है ।

(1) पहचान— गोमूत्र में गोमेद को रखकर एक दिन पड़ा रहने दें । असली गोमेद होने पर गोमूत्र का रंग बदल जायेगा अन्यथा नहीं ।

(2) असनी गोमेद की चमक लकड़ी के बुरादे में घिसने पर बढ़ जाती है । जबकि नकली में चमक नष्ट हो जाती है ।

(3) यदि किसी पात्र में दूध के साथ गोमेद रत्न को रखने से दूध का रंग गौमूत्र के रंग सा दिखलाई पड़ने लगे तो यह समझना चाहिए कि रत्न असली है । नकली होने पर ऐसा नहीं होता है ।

राहु रत्न गोमेद तथा उसके उपरत्न— रत्न विशेषज्ञों तथा ज्योतिर्विज्ञों के अनुसार राहु–पीड़ा से मुक्ति पाने के लिए गोमेद रत्न धारण करना सर्वश्रेष्ठ माना गया है । गोमेद एक अल्पमोली रत्न है । फिर भी यदि कोई इसे खरीदने में असमर्थ हो तो यह निम्न उपरत्नों को गोमेद के स्थान पर धारण कर सकता है ।

हकीक (एजेट)— यह एक चमकीला पत्थर है तथा कई रंगों में मिलता है । यह रत्न गोमेद के उपरत्न के रूप में बहुत प्रचलित है । इसमें लोहा और मैगनीशियम नामक धातु अधिक मात्रा में पायी जाती है । रोमन काल में इस रत्न की बड़ी मान्यता थी । रोमनों

का ऐसा विश्वास था कि अगर इस रत्न को दाहिनी बाजू में बाँधा जाय तो ईश्वर की कृपा बनी रहती है । इस रत्न की एक विशेषता होती है कि इसमें लाल और सफेद रंग की पट्टियाँ होती है । प्राचीन काल में वैद्य व हकीम आँख की दवा इस पत्थर से ही बनाते थे । यह एक बहुत ही अल्पमोली पत्थर होता है ।

साफी— यह भी राहु का उपरत्न है । इसका प्राप्ति-स्थल हिमालय विन्ध्य आदि पहाड़ी क्षेत्र हैं । यह देखने में मटमैला सा चिकना तथा कम चमकदार होता है ।

तुरसा— ज्योतिर्विज्ञ तथा रत्न विशेषज्ञों ने इस अल्पमोली रत्न को राहु के उपरत्न के रूप में धारण करना सर्वश्रेष्ठ बताया है । यह कई रंगों में पाया जाता है । यह देखने में चिकना, हल्का पीला, साफ तथा तमकदार होता है । इसके प्राप्तिस्थल अरब, इराक, इरान, मक्का आदि खाड़ी देश हैं ।

राहु रत्न तथा चिकित्सा में उसका प्रयोग—

आयुर्वेदिक औषधि में निम्न रोगों के लिए गोमेद भस्म प्रयोग की जाती है ।

(1) मिर्गी, बवासीर, तिल्ली, प्लीहा, धुन्ध आदि रोगों में गोमेद की भस्म दूध के साथ सेवन करने से लाभ होता है ।

(2) आयुर्वेद ग्रन्थों के अनुसार गोमेद कफ पित्त को नष्ट करता है । क्षय तथा पाण्डु रोग को दूर भगाता है ।

(3) कृमि रोग, वजन कम होते रहना, चर्म रोग, जोरदार खाँसी तथा अधिक पसीना आने पर गोमेद की पिष्टी बहुत लाभदायक होती है ।

(4) मानसिक दुर्बलता, अपच तथा बल, बुद्धि एवं वीर्य बढ़ाने के लिए गोमेद की भस्म रामवाण औषधि का काम करती है ।

■ ■ ■

दुःख, रोग, दुर्घटना एवं शोक का प्रतीक

केतु ग्रह

परिचय— राहु की भाँति केतु ग्रह भी सौरमण्डल में विचरण करने वाला कोई आकाश पिण्ड नहीं है। यद्यपि भारतीय ज्योतिष में इसे नवग्रहों की श्रेणी में रखा गया है तथापि ग्रह न होकर केवल छाया ग्रह है।

अंग्रेजी में इसे dragon's tail के नाम से जाना जाता है। संस्कृत में इसे कई नामों से पुकारते है। यथा– राहु पृच्छ–शिखी, ध्वज आदि। उर्दू और फारसी में यह जनब के नाम से पहचाना जाता है।

पौराणिक परिचय— राहु के समान।

ज्योतिषीय परिचय— राहु के समान। राहु का ज्योतिषीय परिचय पीछे के पृष्ठों में उल्लिखित है। अतः पाठक उसका अवलोकन करलें।

द्वादश भाव में केतु तथा उसका प्रभाव - राहु के समान। राहु का द्वादश भाव में प्रभाव पीछे के पृष्ठों में उल्लिखित है। अतः पाठक उसका अवलोकन कर लें।

केतु ग्रह तथा उसका राशिगत प्रभाव— राहु के समान।

विशेष टिप्पणी— केतु ग्रह में एक विचित्रता यह है कि यदि यह किसी स्वक्षेत्री नैसर्गिक शुभ करता है तो जिस भाव में इन ग्रहों की स्थिति होगी उस भाव सम्बन्धी बातें ऊँचे और शानदार ढंग से तथा प्रचुर मात्रा में जीवन में देखने तथा अनुभव करने को मिलेगी।

केतु— जन्म कुण्डली में केतु के अशुभ प्रभाव से राहु ग्रह जनित रोग ही उत्पन्न होते हैं। राहु और केतु दोनों छाया ग्रह हैं तथा दोनों की अशुभ स्थिति का प्रभाव एक समान ही होता है। अतः पाठक केतु जनित अशुभ प्रभाव उत्पन्न रोगों से मुक्ति पाने के लिए राहु साधना के समान केतु साधना करें।

जन्म कुण्डली में केतु के अशुभ प्रभाव होने से निम्न रोग उत्पन्न होते हैं :—

- चर्म रोग
- हाथ पाँव में कष्ट
- कुष्ठ रोग
- वायु रोग
- स्नायु सम्बन्धी रोग
- बवासीर
- क्षुधा जनित कष्ट

केतु रत्न–वैदुर्य मणि (लहसुनिया)

केतु रत्न— केतु के अशुभ प्रभाव से मुक्ति पाने के लिए लहसुनियाँ रत्न धारण करना चाहिए । माणिक्य तथा हीरा की तुलना में यह रत्न सस्ता होता है ।

रत्न परिचय— केतु रत्न लहसुनिया को संस्कृत में सूत्रमणि अथवा वैदूर्य मणि के नाम से जाना जाता है । यह रत्न रात्रि में अथवा अन्धकार में बिल्ली की आँख की तरह चमकता है । इसलिए अंग्रेजी में इसका नामकरण Cats eye stone पड़ गया । यह रत्न देखने में बड़ा मोहक होता है तथा इसके अन्दर बड़ी चमकदार धारी होती है— जो इधर-उधर घुमाने पर लहरें मारती हैं ।

सामान्य रूप से यह रत्न सफेद काला, हरा, पीला, सूखे पत्ते जैसे रत्नों में पाया जाता है । सभी प्रकार लहसुनिया रत्न में सफेद सूत सी धारी अवश्य दिखाई पड़ती है । भारत में यह रत्न पहले खम्भात और गुजरात में बहुतायत में पाया जाता था । यह रत्न अधिकतर विन्ध्याचल के अंचलों में हिमालय, महानदी तथा राजस्थान प्रदेश में मिलता है । भारत के अतिरिक्त यह रत्न उत्तरी अमेरिका, अरब, श्री लंका, ब्राजील और यूराल में भी पाया जाता है । श्री लंका का वैदूर्य सर्वश्रेष्ठ माना जाता है ।

अंग्रेजी ज्योतिष के अनुसार जिन व्यक्तियों का जन्म 15 मार्च से 14 अप्रैल के मध्य हुआ हो उनके लिए लहसुनिया रत्न धारण करना लाभकारी होता है ।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण— लहसुनिया रत्न दो प्रकार के खनिज वर्गों में प्राकृतिक रूप में प्राप्त होता है । सामान्य रूप से यह रत्न पैग्मेटाइट नाइस तथा अभ्रकमय परतदार शिलाओं में बनता है । लहसुनियां के प्रथम खनिज वर्ग का नाम क्राइसोबेरील कहलाता है तथा दूसरी किस्म स्फटिक वर्ग कहलाता है ।

क्राइसोबेरील बर्ग का लहसुनिया रत्न एल्यूमोनियम और बेरोनियम का यौगिक होता है । जिसका रासायनिक सूत्र $Be\,Al_2O$ है । इसका आवर्तनांक 1,76, कठोरता 8.5 द्विवर्तनांक 0.009 तथा विशिष्ट गुरुत्व 3.71 है ।

स्फटिक वर्ग को लहसुनिया रत्न सिलिका और आक्सीजन तत्त्वों के यौगिक से बना होता है जिसका रासायनिक सूत्र Sio_2 है । इसका अवर्तनांक 1.54, कठोरता 7, द्विवर्तनांक 0.009 तथा विशिष्ट गुरुत्त्व 2.65 है ।

स्फटिक वर्ग का लहसुनिया रत्न क्राइसोबेरिस वर्ग के लहसुनिया से सस्ता होता है । स्फटिक वर्ग का लहसुलनिया फ्लूरिक अम्ल में घुलनशील होता है तथा स्फटिक के सहयोग से आग में गर्म करने से टूट जाता है । क्राइसोबेरील वर्ग का लहसुनिया अति

मूल्यवान होता है । इस वर्ग का लहसुनिया हीरे, माणिक्य व नीलम के बाद सर्वाधिक कठोर होता है ।

उत्तम लहसुनिया के गुण तथा उसकी पहचान— उत्तम कोटि के लहसुनिया रत्न में निम्न विशिष्ट गुण होते हैं ।

यह चिकना और फिसलने वाला तथा चमकदार होता है ।

उत्तम कोटि के लहसुनिया रत्न में तीन रेखाओं वाली धारियाँ होती· हैं ।

यह औसत से कुछ अधिक वजनदार होता है ।

यह अच्छे घाट का होता है तथा इसमें चीर, विन्दु, जाल तथा अन्य दाग धब्बे नहीं होते हैं ।

पहचान— यदि रत्न को सफेद कपड़े से रगड़ा जाए तो इसकी चमक में वृद्धि हो जाती है । नकली रत्नों में ऐसा नही होता ।

अंधेरे में यदि लहसुनिया रत्न रखा जाये तो उसमें से किरणें निकलती भी दिखाई देती हैं ।

उत्तम कोटि के लहसुनिया को यदि हड्डी पर रख दिया जाये तो चौबीस घण्टों में यह हड्डी में आर–पार छेद कर देता है ।

केतु रत्न लहसुनिया तथा उसके उपरत्न उत्तम कोटि का लहसुनिया रत्न बहुत कीमती होता है । यदि केतु ग्रह के अशुभ प्रभाव से मुक्ति पाने के लिए लहसुनिया के बदल अथवा उपरान्त रत्न धारण करें तो उसका प्रभाव लहसुनिया के समान ही होता है ।

निम्न उपरत्न केतु के बदल के रूप में जाने जाते है :—

संगी— यह रत्न हिमालय से निकलने वाली नदियों में अधिकतर पाया जाता है । यह देखने में चिकना तथा चमकदार होता है ।

गोदन्ती— यह रत्न गाय के दाँत के समान चमकीला होता है । इसलिए इसका नाम गोदन्ती पड़ गया है । यह रत्न गोमती, गंडक आदि नदियों में अधिकतर मिलता है ।

गोदन्ता— यह रत्न विन्ध्य एवं हिमालय के अंचलों में पाया जाता है । यह सफेद रंग का रत्न देखने में चिकना, चमकीला तथा वजन में अपेक्षाकृत हल्का होता है ।

लहसुनिया रत्न तथा उसका चिकित्सा में उसका प्रयोग— केतु–जनित अशुभ प्रभाव से उत्पन्न रोगों से मुक्ति दिलाने में लहसुनिया भस्म रामवाम औषधि का कार्य करती है । लहसुनिया भस्म का प्रभांव निम्न है ।

■ लहसुनिया की भस्म को यदि पीपल की राख के साथ बुधवार के दिन सेवन करें

तो समस्त नेत्र–रोगों से मुक्ति मिलती है । यह प्रयोग कम से कम 21 सप्ताह अवश्य करें ।

- नामर्दी तो दूर करने में लहसुनिया–भस्म चमत्कारिक रूप से कार्य करती है । शुक्रवार के दिन से नियमित लहसुनिया भस्म को गोघृत के साथ मिलाकर सेवन करने से नामर्दी का रोग सदैव के लिए चला जाता है ।
- गुप्त रोगों में लहसुनिया भस्म बहुत शीघ्र अपना प्रभाव दिखलाती है । गर्मी सुजाक, उपदंश जैसे गुप्त रोगों में इसका सेवन नियमित रूप से दूध के साथ करने से कुछ ही दिनों में रोग का पता नहीं चलता ।
- शुद्ध शहद के साथ इसके भस्म का नियमित सेवन करने से पुराने से पुराना खूनी दस्त नामक रोग दूर हो जाता है । यह दवा परीक्षित है ।

सब सुखी हों, सब निरोगी हों

समाप्त